

केवलणाणुज्जोस्यसहव्वमणिज्जियं पवादहि ।
 णामिउण जिणं णणिमो दव्वणिओगं णणिचसारं ॥

जिनोंने केवलज्ञानके द्वारा छह द्रव्योंको प्रकाशित किया है और जो प्रवादियोंके द्वारा नहीं जीते जा सके ऐसे जिनेन्द्रदेवको मैं नमस्कार करके गणितकी जिसमें मुख्यता है ऐसे द्रव्यानुयोगका प्रतिपादन करता हूँ ।

द्रव्यानुयोग — संख्याप्ररूपणा

द्रव्य → त्रिकालगोचर अनन्त पर्यायोंकी परस्पर अपृथग्भूति द्रव्य है ।

प्रमाण → जिसके द्वारा पदार्थ मापे जाते हैं उसे प्रमाण कहते हैं ।

अनुगम → वस्तुके अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं । अथवा केवली और श्रुत-केवलियोंके द्वारा परंपरासे आये हुए अनुरूप ज्ञानको अनुगम कहते हैं ।
 द्रव्यके प्रमाणके अनुगमको द्रव्यप्रमाणानुगम कहते हैं ।

निर्देश दो प्रकारका — 1) ओद्य 2) आदेश — विशेष

ओद्यनिर्देश → गत्यादि मार्गणास्थानोंसे विशेषताको नहीं प्राप्त हुए केवल चौदहों गुणस्थानवती जीवोंके प्रमाणका प्ररूपण करना ओद्यनिर्देश है ।
 आदेशनिर्देश → गति आदि मार्गणाओंके भेदोंसे भेदको प्राप्त हुए चौदह गुणस्थानोंका प्ररूपण करना आदेशनिर्देश है ।

अनन्त के ग्यारह भेद हैं —

- 1) नामानन्त — कारणके बिना किसी द्रव्यकी अनन्त ऐसी संज्ञा करना नाम अनन्त है ।
- 2) स्थापना अनन्त — काष्ठकर्म इत्यादीमें यह अनन्त है इस प्रकारकी स्थापना करना स्थापना अनन्त है ।

काष्ठकर्म — काष्ठमें जो प्रतिमाए बनाई जाती हैं उन्हें काष्ठकर्म कहते हैं ।

चित्रकर्म — मिति, वंश और स्तम्भ आदिपर रंगविशेषोंसे जो चित्र बनाए जाते हैं वह चित्रकर्म है ।

पोतकर्म — वस्त्रोंमें बुनकरोंके द्वारा बुनने रूप क्रियासे जो आकार बनाये जाते हैं वह पोतकर्म है ।

लेपकर्म — मिट्टी खडिया और बालू आदिके लेपसे जो प्रतिमाएं बनाई जाती हैं उन्हें लेपकर्म कहते हैं ।

लयनकर्म - शिलास्वरूप पर्वतोंसे अभिन्न जो प्रतिमाए बनाई जाती हैं उन्हें लयनकर्म कहते हैं।

शैलकर्म - पृथक् पड़ी हुई शिलाओंमें जो प्रतिमाए बनाई जाती हैं वह शैलकर्म हैं।

गृहकर्म - मृत्तिकापिण्डके द्वारा प्रासादोंमें जो आकार घटित करते हैं वे गृहकर्म हैं।

भित्तिकर्म - उसीसे दीवारोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे भित्तिकर्म कहलाते हैं।

भेंडकर्म - भेंडोंसे जो आकार बनाये जाते हैं वे भेंडकर्म कहलाते हैं।

दंतकर्म - हाथीके दांतोंमें जो आकार बनाये जाते हैं वे दंतकर्म कहलाते हैं।

इससे पत्रकर्म, भृंगकर्म, तालिपत्रकर्म, भोजपत्रकर्म, सोनेका कर्म, आदिको ग्रहण करना चाहिए।

3) द्रव्यानन्त
आगम नोआगम

शायक शरीर, भावी, तदव्यतिरिक्त
कर्म नोकर्म

आगम द्रव्यानन्त - अनन्तविषयक शास्त्रको जाननेवाले परंतु वर्तमानमें उसके उपयोगसे रहित जीवको आगम द्रव्यानन्त कहते हैं।

४) शाश्वतानन्त - धर्मादि द्रव्य शाश्वतिक होनेसे उन्हें शाश्वतानन्त कहते हैं।

५) गणनानन्त - परितानन्त, युक्तानन्त, अनन्तानन्त संख्या

६) अप्रदेशिकानन्त - एकप्रदेशी परमाणुमें उस एक प्रदेशको छोड़कर अन्त इस संज्ञाको प्राप्त होनेवाला दूसरा प्रदेश नहीं पाया जाता है इसलिये परमाणु अप्रदेशिकानन्त है।

७) एकानन्त - लोकके मध्यसे आकाशप्रदेशोंकी एक श्रेणीको देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है, इसलिये उसे एकानन्त कहते हैं।

८) उभयानन्त - लोकके मध्यसे आकाश प्रदेशांशिको दो दिशाओंमें देखने पर उसका अन्त नहीं पाया जाता है इसलिये उसे उभयानन्त कहते हैं।

९) विस्तारानन्त - आकाशप्रतर

१०) सर्वानन्त - धर्म-आकाश

११) भावानन्त - आगम भावानन्त - अनन्तविषयक शास्त्रका जानकारी उपयोगसे उपयुक्त जीव नोआगम - भावानन्त - त्रिकात्मजात अनन्त पर्यायोंसे परिणत जीवादि द्रव्य

पृ. 14

गणनानन्त तीन प्रकारका → 1) परितानन्त, 2) युक्तानन्त 3) अनन्तानन्त
जधन्य युक्तानन्त -

जधन्य परितानन्तका विरलन करके उस एक-एकपर जधन्य परितानन्त स्थापन करके परस्पर गुणा करनेपर जो प्रमाण आता है वह जधन्य युक्तानन्त है।

जैसे जधन्य परितानन्त 2 माना. उसका विरलन किया 1, 9 उसपर जधन्य परितानन्त रखना $\frac{9}{2}$ इनका परस्पर गुणा किया = $2 \times 2 = 4$ वह जधन्य युक्तानन्तका प्रमाण है अर्थात् ज.परितानन्त = जधन्य युक्तानन्त
ज.परितानन्त

जधन्य अनन्तानन्त -

जधन्य युक्तानन्त \times जधन्य युक्तानन्त = जधन्य अनन्तानन्त

मिथ्यादृष्टि जीवराशि मध्यम अनन्तानन्त प्रमाण है।

जधन्य अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान उपर जाकर और उत्कृष्ट अनन्तानन्तसे अनन्त वर्गस्थान नीचे आकर मध्यमें जिनेन्द्रदेवके द्वारा देखी गयी राशि यहा पर अभिप्रेत है।

जधन्य अनन्तानन्तके तीनवार वर्गितसंवर्गित करनेपर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी और छह द्रव्योंके प्रक्षिप्त करने पर जो राशि उत्पन्न होती है उससे अनन्तगुणी तीन मध्यम अनन्तानन्त प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवोंकी राशि है।

पृ. 20

तीन वार वर्गितसंवर्गित राशि -

जधन्य अनन्तानन्तका विरलन करके और विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर जधन्य अनन्तानन्तको देखरूपसे देकर उनके परस्पर गुणा करने पर जो महाराशि उत्पन्न हो उसकी पुनः द्वाे सक्ति विरलन करके उस विरलित राशिके ऊपर उसी उत्पन्न महाराशिको देकर परस्पर गुणा करना उससे जो महाराशि उत्पन्न हो उसे पुनः विरलित कर उसीको देखरूपसे देकर परस्पर गुणा करनेपर जो महाराशि उत्पन्न हो उसे तीनवार वर्गितसंवर्गित राशि कहते हैं। जैसे बीजगणितसे जधन्य अनन्तानन्त = क

एकवार वर्गित संवर्गित राशि = ~~क~~ क = क^क - प्रथम उत्पन्न महाराशि

दोवार वर्गित संवर्गित राशि = प्रथम उत्पन्न महाराशिको प्रथम उत्पन्न महाराशि वार परस्पर गुणा करना

$$\binom{k}{k} (a^m)^n = a^{m \times n} \text{ इस घातांक के नियमानुसार}$$

$$\frac{k \times k}{k} \text{ हुआ } a^m \times a^n = a^{m+n} \text{ इस नियमानुसार } \frac{k \times k}{k} = \frac{k+1}{k} \text{ हुआ}$$

किसी संख्यापर घात नहीं लिखा हो तो वहां एक संख्या है ऐसा समझना इसलिए $\frac{k \times k}{k} = \frac{k+1}{k}$ हुआ दो बार वर्गित संवर्गित मंडल शशि

तीन बार वर्गित संवर्गित शशि = $\frac{k+1}{k}$

$$\binom{k+1}{k} (a^m)^n = a^{m \times n} \text{ इस नियमानुसार}$$

$$\frac{k+1}{k} \times \frac{k+1}{k} \text{ पुनः } a^m \times a^n = a^{m+n}$$

इस नियमानुसार

$$\frac{k+1+k}{k} = \text{तीन बार वर्गित संवर्गित शशि}$$

अंकुराणितसे अधन्य अनन्तानन्त 2 माना

$$2 \times 2 = 4 \text{ अर्थात् } 2^2 \text{ दो का दो घात } = \text{एक बार वर्गित संवर्गित शशि}$$

दो बार वर्गित संवर्गित शशि

$$\binom{2}{2}^2 = 2 \times 2 = 2^{\frac{2+1}{2}} = 2^{\frac{3}{2}} = 2^1 \times 2^{\frac{1}{2}} = 2 \times \sqrt{2} = 2\sqrt{2}$$

$$2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 = 2^8 = 256$$

तीन बार वर्गित संवर्गित शशि

$$\binom{2+1}{2}^2 = \frac{2+1}{2} \times \frac{2+1}{2} = \frac{2+1+2}{2} = \frac{3+2}{2} = \frac{5}{2} = 2.5$$

यदि 256 को 256 बार परस्पर गुणा करने पर 690 अंकवाली संख्या आती है। इस प्रकार छोटी सी 2 संख्या को लेकर तीन बार वर्गित-संवर्गित करने पर 690 अंक प्रमाण राशि आती है तो जघन्य अनन्तमन्त राशियों को वर्गित-संवर्गित करने पर कितनी बड़ी संख्या आयेगी इसका अनुमान कर सकते हैं।

9 नियम - जो राशि विरलन क्रम से उत्पन्न होती है उस उत्पन्न राशि के अर्धच्छेद विरलन राशि के देय राशि के अर्धच्छेदों से गुणा करने पर आते हैं।

विरलन राशि \times देय राशि के अर्धच्छेद = उत्पन्न राशि के अर्धच्छेद

उदा. विरलन 8, देय 8 $\frac{8}{9} \frac{8}{9} \frac{8}{9} \frac{8}{9} = 256$

8 \times 2 = 16 = 256 के अर्धच्छेद 16. 8 के अर्धच्छेद 2 आते हैं।

2 नियम - उत्पन्न राशि की वर्गशलाकाए विरलित राशि के अर्धच्छेदों में देय राशि के अर्धच्छेदों के अर्धच्छेद मिलाने पर आती है।

विरलन राशि के अर्धच्छेद + देय राशि के अर्धच्छेदों के अर्धच्छेद = उत्पन्न राशि की वर्गशलाका (अर्थात् देय राशि की वर्गशलाका)

2 + 1 = 3 256 की वर्गशलाका 3

8 के अर्धच्छेद 2 और 8 के अर्धच्छेद 2 के अर्धच्छेद 1 दोनों को जोड़ने पर 3 आते हैं।

अर्धच्छेद - विवक्षित संख्या को 9 संख्या तक आधा-आधा करने पर जितनी बार वह संख्या आधा होती उसके उतने अर्धच्छेद होते हैं।

उदा. 8 संख्या का आधा 2 दो का आधा 9 = इसलिए 8 के अर्धच्छेद 2

वर्गशलाका = विवक्षित संख्या का वर्गमूल निकालते जाने पर 2 तक जितने वर्गमूल होंगे उतनी उस संख्या की वर्गशलाका होती है।

उदा. 256 का वर्गमूल 16, 16 का वर्गमूल 4, 4 का वर्गमूल 2 इसलिए 256 की वर्गशलाका 3 है।

विवक्षित वर्गसे ऊपरके वर्गके अर्धच्छेद और वर्गशलाकाए निकालने का नियम -

3 नियम \rightarrow विवक्षित वर्गके अर्धच्छेदोंसे ऊपरके अर्धच्छेद दुगुणे होते है। जैसे ४ के अर्धच्छेद २ तो १६ के अर्धच्छेद ४ होते है

$$4 \times 2 = 8, \quad 16 \div 4 = 4$$

4 नियम - विवक्षित वर्गकी वर्गशलाकाओंसे ऊपरके वर्गकी वर्गशलाकाए एक अधिक होती है।

$$4 \text{ की वर्गशलाका } 9, \quad 16 \text{ की वर्गशलाकाए } 2, \quad 2 \times 9 \text{ की } 3 \text{ वर्गशलाकाए}$$

पृ. 29 से
256

तीनवार वर्गित संवर्गित करनेसे उत्पन्न हुई यह भवराशि संपूर्ण जीवराशिसे और मिथ्यादृष्टि जीवराशिसे अनन्तगुणी हीन है यह कैसे?

जघन्य परितानन्तको विरक्तने व देखरूप वर्गित संवर्गित करनेसे जघन्य युक्तानन्त राशि आती है अतः ज. युक्तानन्तके अर्धच्छेद नियम 9 के अनुसार

जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेद = ज. युक्तानन्तके अर्धच्छेद

जघन्य युक्तानन्तको एकवार वर्गित करनेपर जघन्य अनन्तानन्त आता है अतः नियम 3 के अनुसार

जघन्य युक्तानन्तके अर्धच्छेद $\times 2 =$ जघन्य अनन्तानन्त के अर्धच्छेद

अतः जघन्य परितानन्त \times ज. परितानन्तके अर्धच्छेद $\times 2 =$ जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद

यह संख्या अर्धच्छेद परितानन्त प्रमाण है अर्थात् जघन्य परितानन्तसे असंख्यातगुणी और जघन्य परितानन्तके उपरिम वर्गसे असंख्यातगुणी हीन है क्योंकि जघन्य परितानन्तको जघन्य परितानन्तसे गुणित करनेपर उपरिम वर्ग होता है यह ^{यह राशि} जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेदोंसे और 2 से गुणित है जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेद असंख्यातासंख्यात है।

नियम 2 और 4 के अनुसार

जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेद + ज. परितानन्तकी वर्गशलाकाए $+ 9 =$

जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए

यह संख्या असंख्यातासंख्यात में आती है क्योंकि जघन्य परितानन्तके

अर्धच्छेद और वर्गशलाकाए असंख्यातसंख्यात राशि में है।

जघन्य अनन्तानन्तके \times जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद = प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशिके अर्धच्छेद

जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद + जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए = प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए

प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशिके अर्धच्छेद जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्तगुणे लेकर भी उसके ज. अनन्तानन्तके उपरके वर्गसे अनन्तगुणे हीन है। प्र. व. सं. राशिकी वर्गशलाकाए अर्धम परितानन्त में आते हैं।

प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशिके अर्धच्छेद + प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए = द्वितीयवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए

प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशि \times प्र. व. सं. राशिके अर्धच्छेद = द्वितीयवार वर्गित संवर्गित राशिके अर्धच्छेद

द्वितीय वार संवर्गित राशिके अर्धच्छेद प्र. व. सं. राशिसे अनन्तगुणे और उसके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणे हीन है। और द्वितीयवार संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए जघन्य अनन्तानन्तके उपरिम वर्गसे भी अनन्तगुणी हीन है।

द्वितीयवार वर्गित संवर्गित राशिके अर्धच्छेद + द्वि. व. सं. राशिकी वर्गशलाकाए = तृतीयवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए

यह क्रम तृतीयवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशिके उपरिम वर्गसे भी भीतर ही है। न्यों कि प्रथम वार वर्गित संवर्गित राशिको उसीके अर्धच्छेदसे गुणित करनेपर द्वितीय वार वर्गित संवर्गित राशिके अर्धच्छेद हुए जो प्रथम व. सं. राशिके उपरिम वर्गसे अनन्तगुणे हीन है और इसमें द्वि. व. सं. राशिकी वर्गशलाकाए जो कि जघन्य अनन्तानन्तके उपरिम वर्गसे भी अनन्तगुणी हीन है मिलानेपर तृतीयवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए आती है।

अतः प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए और तृतीयवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए समान है।
 वह जघन्य परितानन्तसे असंख्यातगुणी है यह पहले सिद्ध कर आये हैं।

यदि तृतीयवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाराशि संपूर्ण जीवोंकी वर्गशलाका राशिके समान नहीं है क्योंकि जघन्य अनन्तानन्तके उत्तरोत्तर वर्ग करनेपर जघन्य अनन्तानन्तके ऊपर अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाए उत्पन्न होती हैं। इसप्रकार परिक्रम में कहा है। परंतु तृतीयवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए जघन्य अनन्तानन्तके अर्धस्तर वर्गस्थानसे ऊपर अनन्तगुणे वर्गस्थान जाकर नहीं उत्पन्न होती है किंतु जघन्य अनन्तानन्तके अर्धस्तर वर्गस्थानोंसे ऊपर कुछ अधिक जघन्य परितानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर उत्पन्न हैं। इसलिए संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाओंसे तीनवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाए अनन्तगुणी न्यून है।
 इसका भी कारण बताते हैं -

तीसरीवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए - कुछ जघन्य अनन्तानन्त की वर्गशलाकाए अधिक जघन्य परितानन्त तीसरीवार व.सं. राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंसे समान है यह ऊपर बताया है तदनुसार

जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद + ज. अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए =

तृतीयवार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाए

अतः जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद + जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए =
 जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए

कुछ अधिक जघन्य परितानन्त आता है

क्योंकि

जघन्य अनन्तानन्तके अर्धच्छेद जघन्य परितानन्त गुणित जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेदोंसे दो गुणित है और जघन्य अनन्तानन्तकी वर्गशलाकाए जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेदोंमें उसीकी वर्गशलाकाए और एक अधिक मिलानेपर आती है। अतः उपर्युक्त भाज्य और भागहरेका अपवर्तन

उदा. जघन्य परितानन्त १६ माना

$$(१६ \times ४ \times २) + (४ + २ + १) = \frac{१२८ + ७}{६} = \frac{१३५}{६} = २२.५$$

करनेपर जघन्य परितानन्तसे कुछ अधिक जघन्य परितानन्त आयेगा।

$$\frac{(जघन्य परितानन्त \times जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेद) + (ज.परितानन्तके अर्धच्छेद + ज.प.वर्गशलाका + १)}{जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेद + ज.प.वर्गशलाका + १}$$

इसका अपवर्तन करनेपर कुछ अधिक जघन्य परितानन्त आता है।

परंतु जघन्य अनन्तानन्तके अधस्तन वर्गस्थानोंकी अपेक्षा जघन्य अनन्तानन्तसे कुछ अधिक जघन्य परितानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाए नही उत्पन्न होती है किंतु जघन्य अनन्तानन्तसे अनन्तानन्तगुणे वर्गस्थान जाकर संपूर्ण जीवराशिकी वर्गशलाकाए उत्पन्न होती है। क्योंकि अनन्तानन्तके विषयमें गुणकार और भागहार मध्यम अनन्तानन्तरूप ही होता है।

किसी विवक्षित वर्गस्थान की वर्गशलाकाओंको पीछेकी वर्गस्थान की वर्गशलाकाओंसे भाग देनेपर जितना प्रमाण आता है उतने वर्गस्थान जानेपर विवक्षित वर्गरूप संख्या आती है।

उदा. ६५५३६ की वर्गशलाकाए ४ है और १६ की वर्गशलाकाए २ है

२५६	४
१६	२
४	
२	

$४ \div २ = २$ सोलह के आगे दो वर्गस्थान जानेपर ६५५३६ वर्गस्थान आता है।

यहां तीसरी वार वर्गित संवर्गित राशी की वर्गशलाकाओंकी वर्गशलाकाओंका जघन्य अनन्तानन्त की वर्गशलाकाओंसे भाग दे देनेपर कुछ अधिक जघन्य परितानन्त लब्ध आया अर्थात् इतने जघन्य अनन्तानन्तके उपर इतने वर्गस्थान जानेपर तृतीय वार वर्गित संवर्गित राशिकी वर्गशलाका राशिकी स्थान आता है परंतु जीवराशिकी वर्गशलाका राशिकी नही आती है।

जघन्य परितानन्तमें कुछ अधिक का प्रमाण असंख्यातरूप है क्योंकि जघन्य परितानन्तके अर्धच्छेद और वर्गशलाकाए असंख्यातरूप है।

पृ. 23

बीजगणितसे तीन वार वर्गित संवर्गित राशियोंके अर्धचंद्र और वर्गशलाकाए

जघन्य परीतानन्त $\frac{अ}{2}$ माना

जघन्य परीतानन्तकी वर्गित संवर्गित राशि जघन्य युक्तानन्त राशि आती है
उसका एक वार वर्ग करनेपर जघन्य अनन्तानन्त राशि आती है

$$\left(\frac{अ}{2}\right)^2 = \frac{अ}{2} \times \frac{अ}{2} = \frac{अ+अ}{2} \quad \text{ऊपरका जघन्य युक्तानन्त}$$

ऊपरका वर्ग ग्रहण करने के लिए वर्गमें एक मिलाना

$$\frac{अ}{2} + अ + 9 = \frac{अ+अ+18}{2} \quad \text{इसीको } \frac{क}{2} \text{ माना यह जघन्य अनन्तानन्त राशि है}$$

$$\left(\frac{अ}{2}\right)^2 = \frac{क}{2} \quad \text{जघन्य अनन्तानन्त} \quad \text{प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशि}$$

$$\left(\frac{अ}{2}\right)^2 = \frac{क}{2} \quad \text{इस नियमानुसार } \frac{क}{2} \times \frac{क}{2} = \frac{क}{2} \times \frac{क}{2} = \frac{क+क}{2} \quad \text{इस नियमानुसार}$$

$$\frac{क+क}{2} = \frac{क}{2} + \frac{क}{2} = \text{इसीको } \frac{ख}{2} \text{ माना} = \text{प्रथमवार वर्गित संवर्गित राशि}$$

$$\text{प्रथम वार वर्गित संवर्गित राशि} \quad \text{द्वितीय वार व.सं. राशि} = \left(\frac{ख}{2}\right)^2$$

$$\left(\frac{ख}{2}\right)^2 = \frac{ख}{2} \times \frac{ख}{2} = \frac{ख+ख}{2} = \frac{ख}{2} + \frac{ख}{2} \quad \text{इसीको } \frac{ग}{2} \text{ माना} = \text{द्वितीय वार वर्गित संवर्गित राशि}$$

द्वितीयवार वर्गित सं. राशि

(द्वितीय वार वर्गित संवर्गित राशि) = तृतीयवार वर्गित सं. राशि

$$\binom{g}{2}^2 = \frac{g}{2} \times \frac{g}{2} = \frac{g+2}{2} = \frac{g}{2} + \frac{g}{2}$$

तृतीयवार वर्गित संवर्गित राशि

अंकगणितसे अर्धच्छेद और वर्गशलाका

$$\frac{3}{2} = 2 \text{PE}$$

 $\frac{3}{2}$ के अर्धच्छेद $\frac{3}{2}$ और वर्गशलाका 3 आती है

दो को $\frac{3}{2}$ बार रखकर गुणा करने पर 2PE आते हैं अतः उसके अर्धच्छेद $\frac{3}{2} = 2 \times 2 \times 2 = 6$ इसलिये है। दो का तीन बार वर्ग

करने पर 2PE आते हैं इसलिये 2PE की वर्गशलाका $\frac{3}{2}$ आती है।

बीजगणितसे $\frac{a}{2}$ राशि के अर्धच्छेद $\frac{a}{2}$ होंगे और वर्गशलाका a होगी।

पृ. 28

राशिका नाम	संरूपि	अर्धच्छेद	वर्गशलाका
अधन्य परितान्त	$\frac{a}{2}$	$\frac{a}{2}$	a
अधन्य अनन्तान्त	$\frac{a}{2+2a+1}$	$\frac{a}{2+2a+1}$	a
प्रथम वर्गित राशि	$\frac{k}{2+k}$	$\frac{k}{2+k}$	k
द्वितीयवर्गित राशि	$\frac{x}{2+2x}$	$\frac{x}{2+2x}$	x
तृतीय वर्गित सं. राशि	$\frac{g}{2+2g}$	$\frac{g}{2+2g}$	g

इस प्रकार तीन वार वर्गित संवर्गित राशिसे अनन्तगुणी मिथ्यादृष्टि जीवराशि है।

तीन वार वर्गित संवर्गित राशिमें सिद्ध, निगोदजीव, वनस्पतिकायिक, पुद्गल, कालके समय और अलोकाकाश ये छह राशिया मिला देनेपर जो राशि आती है उससे अनन्तगुणी हीन मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

पृ. 30

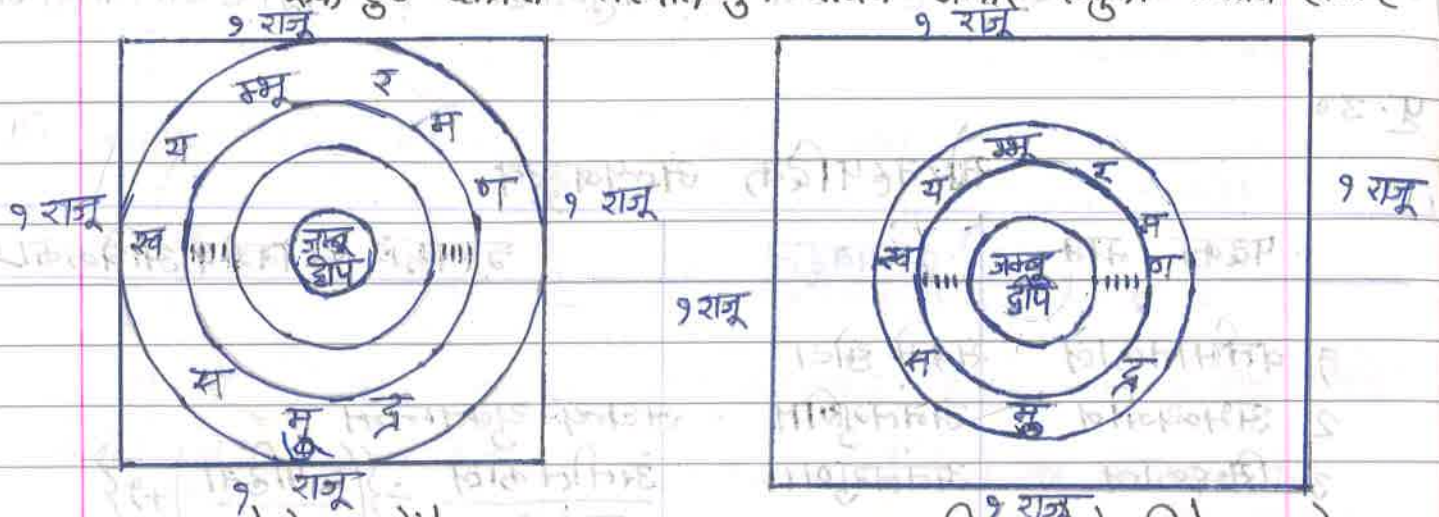
सोलहपदिक अल्पबहुत्व

पदका नाम	अल्पबहुत्व	गुणकार व विशेष अधिकका प्रमाण
1 वर्तमानकाल	सबसे छोटा	
2 अभव्यजीव	अनंतगुणित	जघन्य युक्तानन्त
3 सिद्धकाल	अनंतगुणित	अतीतकाल $\div \left\{ \left(\frac{\text{द्वि महिना}}{2} \right) + 9 \right\}$ अनंत
4 सिद्ध	संख्यातगुणित	दसपृथक्त्वरूप (एकसमयमें उत्कृष्टरूपसे 100 जीव मोक्ष जाते हैं)
5 असिद्धकाल	असंख्यातगुणित	संख्यात आवली
6 अतीतकाल	विशेष अधिक	सिद्धकाल (असिद्धकाल + सिद्धकाल = अतीतकाल)
7 भव्यमिथ्यादृष्टि	अनंत गुणित	मिथ्यादृष्टि \div अनंत
8 भव्यजीव	विशेष अधिक	सासादनादि तेरहगुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण
9 सामान्य मिथ्यादृष्टि	विशेष अधिक	अभव्यराशि - सासादनादि तेरह गुणस्थान वर्ती जीवराशि = अवशिष्ट राशि
10 संसारी जीव	विशेष अधिक	सासादनादि 13 गुणस्थानवर्ती जीव
11 संपूर्ण जीव	विशेष अधिक	सिद्धराशि
12 पुद्गल द्रव्य	अनंतगुणित	जीवराशि \times अनंत = लब्धप्रमाण
13 अनागत काल	अनंतगुणित	पुद्गल \times अनंत = "
14 संपूर्ण काल	विशेष अधिक	वर्तमानकाल + अतीतकाल = प्रमाण
15 अलोकाकाश	अनन्तगुणित	संपूर्णकाल \times अनंत = प्रमाण
16 संपूर्ण आकाश	विशेष अधिक	लोकाकाशके प्रदेश

पृ. 38

तिर्यग्लोकका विस्तार एक राजू, उसका स्पर्शीकरण रज्जुके विषयमें दो मत -

- 1) प्रथम मत - स्वयंभूरमण समुद्रकी बाह्य वेदिका पर जाकर रज्जु समाप्त होती है।
- 2) दूसरा मत - स्वयंभूरमण^{समुद्र}के आगे असंख्यात द्वीपों और समुद्रोंकी चौड़ाईसे ^{रुके हुए क्षेत्रसे} संख्यात गुणे योजन जाकर रज्जुकी समाप्ति होती है।



इन दोनों मतोंके अनुसार रज्जुका प्रमाण निकालनेके लिये रज्जुके जितने अर्धच्छेद हो उतने स्थानपर 2 रस्सकर परस्पर गुणा करके जो लब्ध आवे उसका अर्धच्छेद करनेके अनन्तर जो भाग अवशिष्ट रहे उससे गुणा कर देना चाहिए। इसप्रकार करनेसे रज्जुका प्रमाण आ जाता है।

रज्जुके अर्धच्छेद निकालनेकी प्रक्रिया →

मध्यसे रज्जुके दो भाग करना चाहिये। मेरु पर्वतके मध्यभागमें यह प्रथम आधा भाग होता है यह प्रथम अर्धच्छेद है। अनन्तर आधा आधा करनेसे (प्रथम मतके अनुसार) दूसरा अर्धच्छेद स्वयंभूरमण समुद्रमें, तीसरा अर्धच्छेद स्वयंभूरमण द्वीपमें, इसप्रकार एक एक अर्धच्छेद उत्तरोत्तर एक एक द्वीप और एक एक समुद्रमें पड़ता है। किन्तु लवण समुद्रमें दो अर्धच्छेद पड़ेंगे उनमेंसे पहला डेढ़ लाख योजन भीतर जाकर और दूसरा पचास हजार योजन भीतर जाकर पड़ता है। इनमेंसे दूसरा अर्धच्छेद जम्बूद्वीपका मान लेनेपर जितने द्वीप और समुद्र हैं उतने अर्धच्छेद होते हैं। अन्तमें पचास हजार योजन लवण समुद्रके और इतने ही योजन जम्बूद्वीपके अवशिष्ट रहते हैं। इनको मिला देनेपर एक लाख योजन होता है।

एक लाख योजनके अर्धच्छेद 90

- 1,00,000 9) 50,000^{यो} 2) 25,000^{यो} 3) 12,500^{यो} 4) 6,250^{यो} 5) 3,125^{यो}
 6) 1562 1/2^{यो} 7) 781 1/4^{यो} 8) 390 3/4^{यो} 9

अंतिम अर्धच्छेद 9 योजना अवशिष्ट रहता है।

एक योजनाके 9⁹ अर्धच्छेद = 9 योजनाके सूच्यंगुल 66000 होते हैं।
66000 अंगुलोंके एक अंगुलतक आधा आधा करनेसे 99 अर्धच्छेद होते हैं।

- 1) 3,4,000 2) 992000, 3) 86000, 4) 66000 5) 28000 6) 92000
 7) 6000 8) 3000 9) 9400 10) 640 11) 364 12) 960 $\frac{1}{2}$ 13) 93 $\frac{3}{8}$
 14) 86 $\frac{1}{2}$ 15) 23 16) 11 17) 4 18) 2
 19) 9 अंगुल

एक सूच्यंगुल शेष रहता है। पत्थके अर्धच्छेदोंके कर्गप्रमाण एक सूच्यंगुलके 8 अर्धच्छेद होते हैं। क्योंकि पत्थके अर्धच्छेदोंका विरलन करके प्रत्येक पर पत्थको देयरूपसे रखकर परस्पर गुणा करनेपर जो प्रमाण जाता है उतना सूच्यंगुलप्रमाण है। इसलिये

$$\begin{aligned} \text{विरलन राशि} \times \text{देयराशिके अर्धच्छेद} &= \text{उत्पन्न राशिके अर्धच्छेद} \\ \text{पत्थके अर्धच्छेद} \times \text{पत्थके अर्धच्छेद} &= \text{सूच्यंगुलके अर्धच्छेद} \\ \text{छे} \times \text{छे} &= \text{छेछे} \end{aligned}$$

इसलिए प्रथम मतके अनुसार रज्जुके अर्धच्छेद =

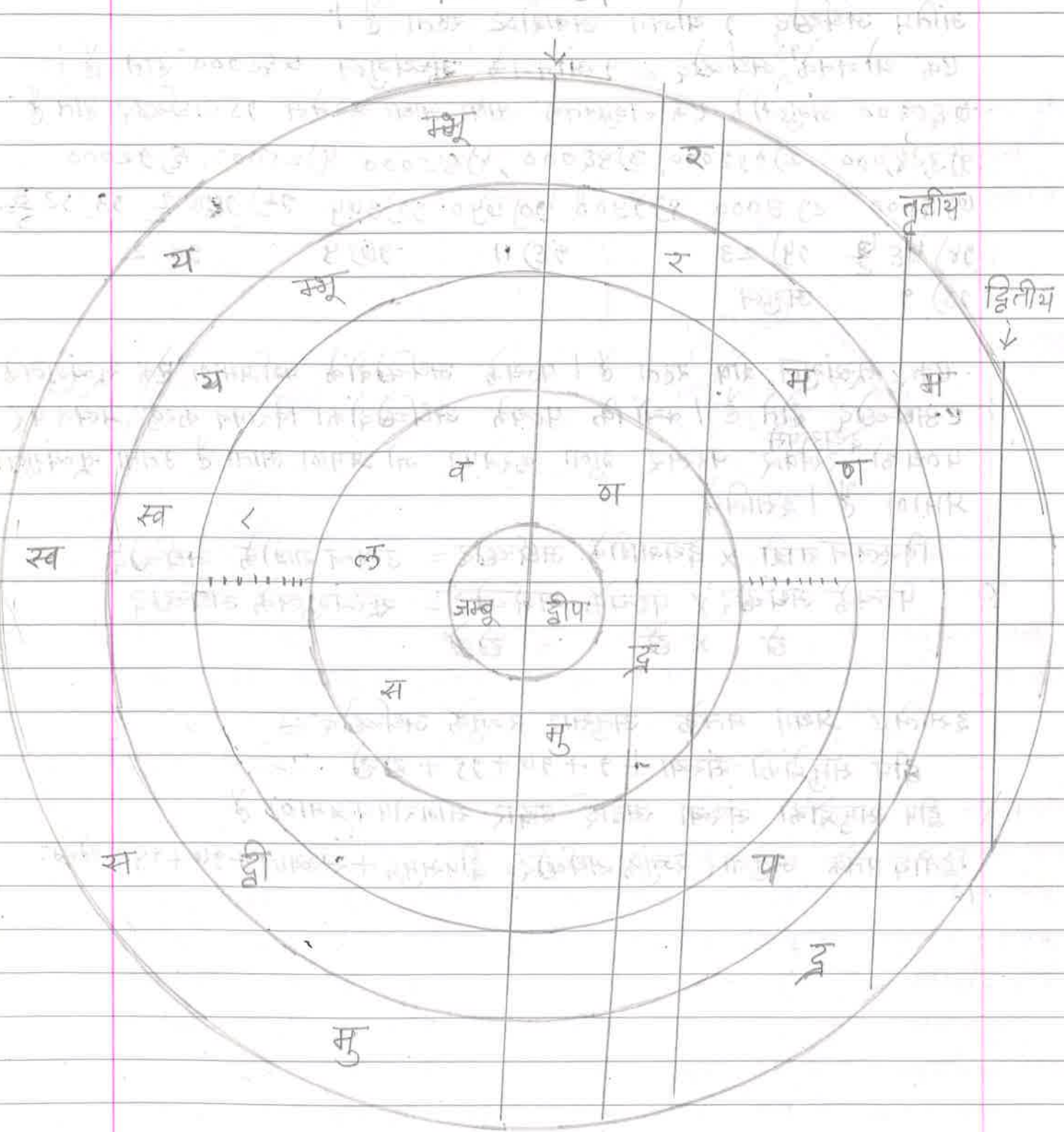
$$\text{द्वीप समुद्रोंकी संख्या} + 9 + 96 + 99 + \text{छेछे}$$

द्वीप समुद्रोंकी संख्या अढाई उद्धार सागरोपमप्रमाण है

$$\text{द्वितीय मतके अनुसार रज्जुके अर्धच्छेद} = \text{द्वीपसमुद्र} + \text{संख्या} + 96 + 99 + \text{छेछे}$$

शजूचे अर्धच्छेद

प्रथम अर्धच्छेद



पृ. 35

भावप्रमाणसे मिथ्यादृष्टि जीवराशि

$$\text{सर्वपर्याय} \div \frac{\text{सर्वपर्याय}}{\text{मिथ्यादृष्टि राशि}} = \text{सर्वपर्याय} \times \frac{\text{मिथ्यादृष्टि}}{\text{सर्वपर्याय}} = \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

सर्वपर्याय
मिथ्यादृष्टि इस भागहारको स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंके ऊपर खंडित, भाजित, विरलित, और अपहृत इनका कथन करते हैं।

1) खंडित → संपूर्ण पर्यायोंके भागहारप्रमाण खंड करनेपर एक खण्डका जितना प्रमाण हो उतनेमात्र मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है।

उदा. सर्वपर्यायोंका प्रमाण 930 और मिथ्यादृष्टिका प्रमाण 93, भागहार का प्रमाण $\frac{930}{93} = 10$

93 26 35 930

||||| | | | | | | | |

$$\frac{930}{93} = 10 \text{ मिथ्यादृष्टि राशि}$$

2) भाजित → पूर्वोक्त भागहारका ही संपूर्ण पर्यायोंमें भाग देनेपर जो भजनफल लब्ध आवे उतने मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है।

$$930 \div \frac{930}{93} = 930 \times \frac{93}{930} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

3) विरलित - पूर्वोक्त भागहारका विरलन करके प्रत्येक एकके ऊपर संपूर्ण पर्यायोंके समान खण्ड करके देखनेपर एक विरलनके ऊपर जितना प्रमाण आता है उतना मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है

93 93 93 93 93 93 93 93 93 93

9 9 9 9 9 9 9 9 9 9

4) अपहृत - पूर्वोक्त भागहारको शलाकारूपसे स्थापित करके संपूर्ण पर्यायोंमेंसे मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण कम करना और शलाकाराशिमेंसे एक कम करना इसप्रकार पुनः करने पर संपूर्ण पर्याय और उसीप्रकार शलाकाराशि युगपत् समाप्त होती हैं। यहाँपर संपूर्ण पर्यायोंमेंसे जितना प्रमाण एकबार घटाया गया है तत्प्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशि होती है।

शलाकराशि 90

$$\begin{array}{r} -9 \\ \hline 81 \\ -9 \\ \hline 72 \\ -9 \\ \hline 63 \\ -9 \\ \hline 54 \\ -9 \\ \hline 45 \\ -9 \\ \hline 36 \\ -9 \\ \hline 27 \\ -9 \\ \hline 18 \\ -9 \\ \hline 9 \\ -9 \\ \hline 0 \end{array}$$

संपूर्ण पययि 936

$$\begin{array}{r} -93 \\ \hline 843 \\ -93 \\ \hline 750 \\ -93 \\ \hline 657 \\ -93 \\ \hline 564 \\ -93 \\ \hline 471 \\ -93 \\ \hline 378 \\ -93 \\ \hline 285 \\ -93 \\ \hline 192 \\ -93 \\ \hline 99 \\ -93 \\ \hline 6 \end{array}$$

पृ. 89 मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण निकालने के लिए ध्रुवराशिका प्रमाण

$$\text{सिद्ध, तेरह गुणस्थान वर्ती जीवराशि} + \frac{(\text{सिद्ध तेरसराशि})^2}{\text{मिथ्यादृष्टि राशि}} + \text{सर्व जीवराशि} = \text{ध्रुवराशि}$$

$$\text{क्षि } 3 + \frac{(3)^2}{93} + 98$$

सिद्ध तेरस राशि 3 मानी
मिथ्यादृष्टि 93 "
सर्व जीवराशि 98 "

$$= 3 + \frac{9}{93} + 98 = \frac{(3 \times 93) + 9 + (98 \times 93)}{93} \text{ समन्वित किया}$$

$$\frac{39 + 9 + 204}{93} = \frac{248}{93} \text{ ध्रुवराशि}$$

बीजगणितसे जीवराशि अ+ब, सिद्ध तेरह गुणस्थान वर्ती राशि = अ
मिथ्यादृष्टि जीवराशि - ब

पुष्पयुक्त सूत्रानुसार

$$अ + \frac{अ^2}{ब} + (अ+ब) \text{ समानच्छेद करना}$$

$$\frac{अब + अ^2 + ब(अ+ब)}{ब} \text{ कंस छुडाना}$$

$$= \frac{अब + अ^2 + अब + ब^2}{ब}$$

$$\frac{अ^2 + 2अब + ब^2}{ब}$$

$$\frac{(अ+ब)^2}{ब} = \text{ध्रुवराशि}$$

$$\frac{3^2 + 2 \times (3 \times 93) + 93^2}{93} = \frac{9 + 648 + 9849}{93}$$

248

$$\frac{(3+93)^2}{93} = \frac{96^2}{93} = \frac{9216}{93}$$

93 93 93

1) खण्डित →

संपूर्ण जीवराशिके (9E) उपरिम वर्ग (25E) के ध्रुवराशिप्रमाण $\frac{25E}{93}$ खण्ड करनेपर उनमेंसे एक खण्ड 93 मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण आता है।



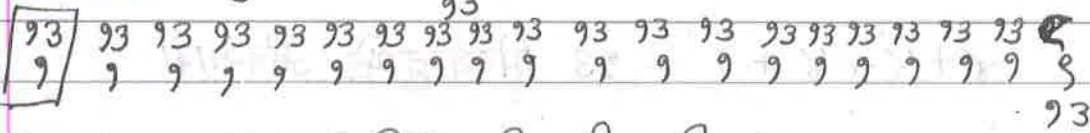
2) भाजित →

$$\frac{(\text{संपूर्ण जीवराशि})^2}{\text{ध्रुवराशि}} = \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

$$\frac{(9E)^2}{93} = 25E \div \frac{25E}{93} = \frac{25E \times 93}{25E} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

3) विरलित -

ध्रुवराशि 9E का विरलन, जीवराशिके उपरिम वर्गके समान खण्ड करके देना।



एक खण्डप्रमाण 93 मिथ्यादृष्टि जीवराशि

4) अपहृत -

$$\begin{array}{r} \text{शलाका} \\ \text{ध्रुवराशि} \quad 9E \\ \hline - 9 \\ \hline 9E \\ \hline - 9 \\ \hline 9E \end{array}$$

संपूर्ण जीवराशिका उपरिम वर्ग - 25E

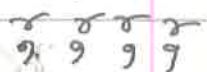
$$\begin{array}{r} - 93 \text{ मिथ्यादृष्टिराशि} \\ \hline 25E \\ \hline - 93 \\ \hline 230 \end{array}$$

इस क्रमसे उपरिम वर्गमेंसे मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण और ध्रुवराशिमेंसे एक एक घटाते जाने पर शलाकाराशि और उपरिम वर्गराशि एक साथ समाप्त होंगे इनमें एकबार घटाई जानेवाली संख्या 93 प्रमाण मिथ्यादृष्टि है।

5) प्रमाण -

संपूर्ण जीवराशिके अनन्त बहुभागप्रमाण मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है, जो प्रमाण संपूर्ण जीवराशिके अनन्त प्रथम वर्गमूलके बराबर होता है।

संपूर्ण जीवराशि 9E प्रथम वर्गमूल 3 प्रथम वर्गमूलका विरलन करके संपूर्ण जीवराशिके समान खण्ड करके देना



प्रत्येक एकपर संपूर्ण जीवराशि का प्रथम वर्गमूल प्राप्त होता है।

$$\frac{\text{प्रथम वर्गमूल}}{\text{सिद्ध तेरसराशि}} = \text{लब्ध} \quad \frac{4}{3} = 1\frac{1}{3}$$

उपर्युक्त लब्ध का विरलन करके उपरिम विरलनके एकके प्रति प्राप्त प्रथम वर्गमूल को समान खण्ड करके देनेपर प्रत्येक एकके उपर सिद्ध तेरस राशि का प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\begin{array}{r} 3 \quad 9 \\ 9 \quad \frac{9}{3} \end{array} \quad 3 = \text{सिद्ध तेरस जीवराशि}$$

उपरिम विरलनमें से एक कम प्रथम वर्गमूलोंको और एक कम अधस्तन विरलनके प्रमाणको मिला देनेपर मिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण होता है।

$$4 + 4 + 4 + 9 = 21 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

द) कारण →

$$1) \frac{(\text{संपूर्ण जीवराशि})^2}{\text{संपूर्ण जीवराशि}} = \text{संपूर्ण जीवराशि} \quad \frac{(9E)^2}{9E} = \frac{9E \times 9E}{9E} = 9E$$

बीजगणितसे जीवराशि = क

$$\frac{(k)^2}{k} = \frac{k \times k}{k} = k$$

$$2) \frac{(\text{संपूर्ण जीवराशि})^2}{\text{संपूर्ण जीवराशि} + \text{संपूर्ण जीवराशि}} = \text{संपूर्ण जीवराशि} - \frac{\text{संपूर्ण जीवराशि}}{3}$$

$$\frac{9E^2}{9E + 9E} = \frac{9E \times 9E}{32 + 9E} = \frac{9E \times 9E}{82} = \frac{2E \times 9E}{28} = \frac{3E}{3} = 10\frac{2}{3}$$

अर्थात् $9E - \frac{9E}{3}$ सोलहका तीसरा भाग कम सोलह

$$\frac{9E}{3} = 4\frac{2}{3}$$

$$\frac{9E - 3E}{3} = \frac{82 - 9E}{3} = \frac{32}{3} = 10\frac{2}{3}$$

बीजगणितसे -

$$\frac{k^2}{k+k} = \frac{k-k}{3}$$

$$= \frac{k^2}{2k+k} = \frac{3k-k}{3}$$

$$= \frac{k^2}{2k+k} = \frac{2k}{3}$$

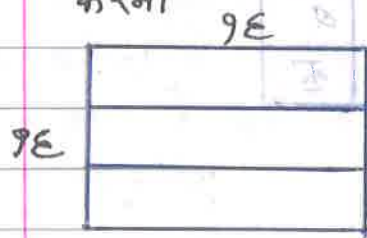
$$= \frac{2k}{3k}$$

अर्थात्

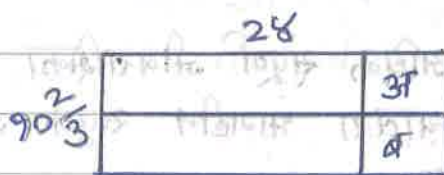
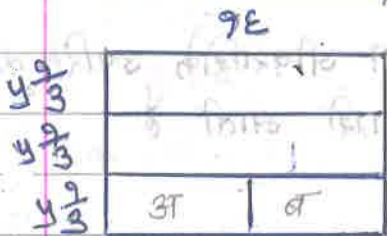
$$= \frac{2 \times k \times \frac{1}{k}}{3 \times \frac{1}{k}} = \frac{2}{3} k \cdot k - \frac{1}{3} k = k - \frac{k}{3}$$

दूसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिभ वर्गमें भाग देनेपर तीसरा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है। किस कारणसे ? उसका कारण आकृति से दिखाते हैं।

संपूर्ण जीवराशि के वर्गरूप क्षेत्रके पूर्व पश्चिम के विस्तारसे तीन खंड करना



इसमेंसे एक खंडके दो खंड करके ऊपरके खंडोपर प्रसारित कर देनेपर प्रत्येक एकके प्रति तीसरा भागहीन संपूर्ण जीवराशि प्राप्त होती है।



Handwritten notes and calculations at the bottom of the page, including algebraic expressions like $(k+k)$ and $(k+k)$.

लीसरा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर बोधा भागहीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

$$\frac{(\text{संपूर्ण जीवराशि})^2}{\text{संपूर्ण जीवराशि} + \text{सं.जी}} = \text{संपूर्ण जीवराशि} - \frac{\text{सं.जी}}{3}$$

$$\frac{9E^2}{9E + 9E} = \frac{9E \times 9E}{8E + 9E} = \frac{9E \times 9E \times 3}{8E} = 92 = \frac{9E - 9E}{3}$$

$$\frac{8E - 9E}{3} = \frac{3E}{3} = 92$$

बीजगणितसे -

$$\frac{k^2}{k + \frac{k}{3}} = \frac{k^2}{\frac{3k + k}{3}} = \frac{k \times k \times 3}{4k} = \frac{3}{4}k$$

अर्थात् $\frac{k - \frac{k}{3}}{9E} = \frac{3k - k}{9E} = \frac{2k}{9E}$

8		8	अ
8		8	ब
8		8	क
8	अ	ब	क

संख्यातवा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर संख्यातवा भागहीन संपूर्ण जीवराशि आती है
बीजगणितसे संख्यात = n

$$\frac{k^2}{k + \frac{k}{n}} = \frac{k^2}{\frac{kn + k}{n}} = \frac{k^2 \times n}{kn + k} = \frac{k^2 \times n}{k(n+1)} = \frac{k \times k \times n}{k(n+1)}$$

= $\frac{k \times n}{n+1}$ इसका ही अर्थ $\frac{k - \frac{k}{n}}{n+1}$ इसको सिद्ध करते है

$$\frac{k - \frac{k}{n}}{n+1} = \frac{k(n+1) - k}{n+1} = \frac{kn + k - k}{n+1} = \frac{kn}{n+1}$$

उत्कृष्ट संख्यातवा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देनेपर जघन्य परीतासंख्यातवा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातवा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर जघन्य परीतानन्तवा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

अनन्तवा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गमें भाग देने पर अनन्तवा भाग हीन संपूर्ण जीवराशि आती है।

किसी भी विवक्षित संख्याके वर्गमें उस विवक्षित संख्यासे जितनेवा भाग अधिक करके भाग देते हैं उस भागमें एक अधिक करके उतनेवा भाग हीन विवक्षित संख्या लब्ध आता है। जैसे दूसरा भाग अधिक किया तो तीसरे भागसे हीन, तिसरा भाग अधिक किया तो चतुर्थ भागसे हीन विवक्षित राशि लब्ध आता है।

पृ-४६
गा. २४ १) अब यहांपर उपर्युक्त गणितसूत्र बताते हैं
भागहारमें उसीके वृद्धिरूप अंशके रहनेपर भाग देनेसे जो लब्ध भागहार आता है वह ^{हानिरूप} एक अधिक आता है।
बीजगणित से — $(\text{विवक्षित संख्या})^2 = \text{वि.संख्या} - \text{वि.संख्या}$

$$\frac{k^2}{k+k} = k - \frac{k}{n+9}$$

इसको पीछे सिद्ध किया है।

अंक गणित से $\frac{9}{9+9} = \frac{9}{2+9} = \frac{9 \times 2}{3}$ अर्थात् $9 - \frac{9}{3}$

भागहारमें उसीके हानिरूप अंशके रहनेपर भाग देनेसे जो लब्ध भागहार आता है वह वृद्धिमें एक कम होता है। अर्थात् किसी संख्यामें उसीका जितनेवा भाग हीन करके उसके उपरिम वर्गमें भाग देते हैं तो लब्धमें उसमें एक कम करके उतनेवा भाग अधिक वह संख्या लब्ध आता है।

सूत्र $\frac{k^2 - (\text{विवक्षित संख्या})^2}{\text{विवक्षित संख्या} - \text{विवक्षित संख्या}} = \text{विवक्षित संख्या} + \frac{\text{विवक्षित संख्या}}{\text{विवक्षित भाग} - 9}$

बीजगणितसे -

$$\frac{k^2}{k - \frac{k}{n}} = \frac{k^2}{\frac{kn - k}{n}} = \frac{k^2 \times n}{k(n-1)} = \frac{k \times k \times n}{k(n-1)} = \frac{k \times n}{n-1}$$

अर्थात् $k + \frac{k}{n-1} = \frac{k(n-1) + k}{n-1} = \frac{k \times n - k + k}{n-1}$

$$\frac{k \times n}{n-1}$$

अंकगणितसे

$$\frac{(9E)^2}{9E - 9E} = \frac{(9E)^2}{9E \times 3 - 9E} = \frac{(9E)^2}{32 - 9E} = \frac{9E^2}{32} = \frac{9E \times 9E \times 3}{9E \times 2}$$

= $\frac{9E \times 3}{2} = 28$ इसीको अन्य शब्दोंमें कहे तो $9E + \frac{9E}{2}$

अर्थात् $9E + \frac{9E}{2} = \frac{32 + 9E}{2} = \frac{32}{2} = 28$

यहा सोलहमें उसका तिसरा भाग हिन करके सोलह के वर्गमें भाग देनेपर सोलहका दुसरा भाग अधिक सोलह लब्ध आता है।

दूसरा उदाहरण

$$\frac{9}{9-9} = \frac{9}{3-9} = \frac{9 \times 3}{3-9} = \frac{3}{2} \text{ अर्थात् } 9 + \frac{9}{2}$$

$9 + \frac{9}{2} = \frac{2+9}{2} = \frac{3}{2}$ दोनोंका अर्थ एक है।

गा. 25 भागहार विशेषसे भागहारको छिन अर्थात् भाजित करने पर जो संख्या लब्ध आती है उसे एक अधिक करनेपर हानिमें भागहार होता है और एक कम करनेपर वृद्धिमें भागहार होता है।

श्री किसी भाज्यशक्तिको अलग अलग दो भागहारोंसे भाग दिया तो दो अलग अलग लब्ध प्राप्त हुए वे दोनों लब्ध एक भागहारसे निकालना हो तो भागहारका प्रमाण क्या होता है यह निकालनेके लिए यह सूत्र बताया है। अंकगणितसे $\frac{3E}{9} = 8$ $\frac{3E}{E} = 8$

प्रथम भागहार द्वितीय भागहार

वृद्धिरूप लब्ध प्राप्त करने के लिए सूत्र

प्रथम भागहार \div (प्रथम भागहार) + 9 = हानिरूप अवहार
(द्वितीय भागहार)

$$9 \div \left(\frac{9}{6} + 9 \right) = 9 \div \frac{3}{2} + 9 = 9 \div \frac{3+2}{2} =$$

$$= 9 \div \frac{5}{2} = 9 \times \frac{2}{5} = \frac{18}{5} \text{ हानिरूप अवहार}$$

पूर्वोक्त भाज्य \div हानिरूप अवहार = वृद्धिरूप लब्ध

$$38 \div \frac{18}{5} = \frac{38 \times 5}{18} = 10 \text{ वृद्धिरूप लब्ध (6+8=14)}$$

बीजगणितसे भाज्यराशि क, प्रथम भागहार व, द्वितीय भागहार स

$$\frac{क}{व} = प, \frac{क}{स} = म$$

वृद्धिरूप लब्धमें हानिरूप भागहार

$$\frac{क}{प+म} = \frac{क}{9प+मप} \text{ मको पसे गुणा किया और म से भाग दिया}$$

$$= \frac{क}{प(9+म)} \text{ समान संख्याको निकालकर शेष संख्या कंसमे रखी}$$

$$= \frac{क}{प(9+म)} \text{ यहाँ प और म का मूल्य रखकर}$$

$$प = \frac{क}{व} \quad म = \frac{क}{स}$$

भागहारका भागहार गुणाकार

$$= \frac{क}{प \left(9 + \frac{क}{व} \times \frac{व}{क} \right)} = \frac{क}{प(9+\frac{व}{स})}$$

$$\frac{क}{व} = प \text{ अथवा}$$

$$\frac{क}{प} = व$$

$$\frac{\frac{क}{प}}{9 + \frac{व}{स}} = \frac{व}{9 + \frac{व}{स}} = \text{हानिरूप अवहार}$$

हानिरूपे लब्ध लाने के लिए वृद्धिरूप भागहार निकालने का सूत्र =

$$\text{प्रथम भागहार} \div \left(\frac{\text{प्रथम भागहार} - 9}{\text{द्वितीय भागहार}} \right) = \text{वृद्धिरूप भागहार}$$

पूर्वोक्त उदाहरण

$$9 \div \left(\frac{9 - 9}{6} \right) \\ = 9 \div \left(\frac{3 - 2}{2} \right) = 9 \div \frac{3 - 2}{2} = 9 \div \frac{1}{2} = 9 \times \frac{2}{1} = 18 \quad \text{वृद्धिरूप भागहार}$$

पूर्वोक्त भाज्य \div वृद्धिरूप भागहार = हानिरूप लब्ध

$$36 \div 18 = 2 \quad \text{हानिरूप लब्ध} \quad 6 - 4 = 2$$

बीजगणित से

$$\frac{k}{p-m} = \frac{k}{\frac{pm}{m} - m} = \text{यहां } p \text{ को } m \text{ से गुणा किया और भाग दिया} \\ \text{संख्या समान ही रही}$$

$$= \frac{k}{m \left(\frac{p}{m} - 1 \right)} = \frac{k}{\frac{p}{m} - 1} \quad \left| \quad \begin{array}{l} \frac{k}{s} = m \\ \frac{k}{m} = s \end{array} \right.$$

इसलिए

$$\frac{s}{\frac{p}{m} - 1}$$

$$\frac{k}{v} = p \quad \text{--- (1)} \quad \frac{k}{s} = m \quad \text{--- (2)}$$

सभी एक को सभी 2 से भाग देना

$$\frac{\frac{k}{v}}{\frac{k}{s}} = \frac{p}{m} \quad \frac{k}{v} \times \frac{s}{k} = \frac{p}{m} \quad \text{इसलिए } p, m \text{ का मूल्य} \\ \text{रखकर}$$

$$\frac{s}{\frac{p}{v} - 1}$$

गा. 26 लब्धरूप विशेषसे लब्धको छिन्न अर्थात् भाजित करनेपर जो संख्या उत्पन्न हो उसे एक अधिक कर देनेपर भागहारकी हानिरूप भागहार होता है और एक कम कर देनेपर वृद्धिरूप भागहार होता है।

वृद्धिरूप भागहार निकालनेके लिए हानिरूप लब्ध निकालनेका सूत्र -

$$\frac{3E}{E} = \frac{E}{\text{प्रथम लब्ध}} \quad \frac{3E}{9} = \frac{E}{\text{द्वितीय लब्ध}}$$

$$\text{प्रथम लब्ध} \div \frac{\text{प्रथम लब्ध}}{\text{द्वितीय लब्ध}} + 9 = \text{हानिरूप लब्ध}$$

$$E \div \left(\frac{E}{9} + 9 \right) = E \div \frac{3}{2} + 9 = E \div \frac{3+2}{2}$$

$$= E \div \frac{5}{2} = E \times \frac{2}{5} = \frac{92}{5} = \text{हानिरूप लब्ध}$$

पूर्वोक्त भाज्य \div हानिरूप लब्ध = वृद्धिरूप भागहार

$$3E \div \frac{92}{5} = \frac{3 \times 3E \times 5}{92} = 95 = \text{वृद्धिरूप भागहार} \quad 9+6=95$$

हानिरूप भागहार निकालनेके लिए वृद्धिरूप लब्ध निकालनेका सूत्र

$$\text{प्रथम लब्ध} \div \frac{\text{प्रथम लब्ध}}{\text{द्वितीय लब्ध}} - 9 = \text{वृद्धिरूप लब्ध}$$

$$E \div \left(\frac{E}{9} - 9 \right) = E \div \frac{3}{2} - 9 = E \div \frac{3-2}{2}$$

$$= E \div \frac{1}{2} = E \times \frac{2}{1} = 92 \text{ वृद्धिरूप लब्ध}$$

पूर्वोक्त भाज्य \div वृद्धिरूप लब्ध = हानिरूप भागहार

$$3E \div 92 = 3 \text{ हानिरूप भागहार} \quad 9-6=3$$

पृ. ४७

भा. २७

दो लब्ध राशियों के अन्तरसे भागहारको गुणित करके और इससे जो उत्पन्न हो उसे भज्यमान राशिमें मिला देनेपर अधिक लब्धकी जो भज्यमान राशि होगी वह उत्पन्न होती है।

इस गायमें जहांपर भाज्य राशि अलग अलग हो और भागहार राशि समान हो वहां बड़ी भाज्यराशि निकालने का सूत्र बताया है।

अधिक लब्धकी भाज्यराशि निकालने का सूत्र

$$\left\{ (\text{प्रथम लब्ध} - \text{द्वितीय लब्ध}) \times \text{भागहार} \right\} + \text{द्वितीय भज्यमान राशि} \\ = \text{अधिक लब्धकी भाज्यमान राशि}$$

अंकगणितसे $\frac{९}{४} = १०$ प्रथम लब्ध $\frac{३६}{४} = ९$ द्वितीय लब्ध

उपर्युक्त सूत्रानुसार

$$\left\{ (१० - ९) \times ४ \right\} + ३६$$

$$१ \times ४ + ३६ = ४ + ३६ = ४० \text{ बड़ी भज्यमान राशि}$$

$$\frac{४०}{४} = १०$$

बीजगणितसे $\frac{अ}{व} = \frac{स}{\text{प्रथम लब्ध}}$ $\frac{क}{व} = \frac{उ}{\text{द्वितीय लब्ध}}$

उपर्युक्त सूत्रानुसार

$$\left\{ (स - उ) \times व \right\} + क$$

$$वस - वउ + क$$

$$व \times उ = क \text{ होता है अतः}$$

$$वस - क + क = व \times स = अ \text{ अधिक लब्धकी भज्यमान राशि}$$

भा. २८

हारांतरसे अर्थात् हारके एक खंडसे हारको अपहृत करके जो लब्ध आवे उससे पूर्व लब्धको गुणित करनेपर उत्पन्न हुई राशिका (और नये लब्धका) भागहारसे भाजित भाज्यशेष ही अन्तर है जो हानि और वृद्धिरूप होता है।

विवक्षित भाज्यराशिको किसी विवक्षित भागहारसे भाग देकर लब्ध निकाला. फिर उसी भाज्यराशिको पूर्व भागहारके एक खंडसे भाग देनेपर कितना लब्ध आता है उसे निकालनेका सूत्र बताया है। जैसे भाज्यराशि 2६३, पूर्व भागहार ७२ उसका एक खंड ९ है।

१) $\frac{2६३}{७२}$ (३ पूर्व लब्ध $\frac{2६३}{९}$ = कितना लब्ध आता है ?

$\frac{२९६}{४७}$ - भाज्यशेष उस नये लब्धको निकालनेका सूत्र =

$$\left(\frac{\text{पूर्व भागहार}}{\text{पूर्व भागहारका एक खंड}} \times \text{पूर्व लब्ध} \right) + \frac{\text{भाज्यशेष}}{\text{पूर्व भागहारका एक खंड}} = \text{नया लब्ध}$$

$$\left(\frac{७२}{९} \times ३ \right) + \frac{४७}{९} = ८ \times ३ + \frac{४७}{९} = \text{नया लब्ध } \frac{२६३}{९} = २९ \frac{२}{९} \text{ नया लब्ध}$$

इसी लब्धको हानिरूप में भी निकालते हैं -

२) $\frac{२६३}{७२} = ४ - \frac{२५}{७२}$ $\frac{२६३}{९} =$ हानिरूप अंतर कितना होगा ? यहाँ २५ भाज्य शेष

$$\left(\frac{७२}{९} \times ४ \right) - \frac{२५}{९} = ८ \times ४ - \frac{२५}{९} = ३२ - \frac{१०}{९} \text{ नया लब्ध हानिरूप अंतर}$$

हानिरूप लब्ध निकालने के लिए पूर्व लब्धमें १ अधिक करना और भागहारमें से भाज्यशेष घटाना = $३+१ = ४$ $७२-४७ = २५$

$$४ - \frac{२५}{७२} \text{ आता है}$$

बीजगणितसे - भाज्यराशि न, पूर्व भागहार स = अ x ब, भागहारका

एक खंड अ, पूर्व लब्ध क, नया लब्ध क+१ $\frac{स}{अ} = \frac{ब}{अ}$
भाज्यशेष र (वृद्धिरूप) भाज्यशेष र' (हानिरूप)

१) $\frac{न}{स} = \frac{क+१}{स}$ $\frac{न}{अ} = ?$ कितना लब्ध

उपर्युक्त सूत्रानुसार - $\frac{स}{अ} \times क + \frac{१}{अ} = ब \times क + \frac{१}{अ}$ वृद्धिरूप नया लब्ध

२) हानिरूप लब्ध = $\frac{न}{स} = \frac{(क+१) - \frac{१}{अ}}{स}$ $\frac{न}{अ} = ?$

पूर्व सूत्रानुसार = $\frac{स}{अ} \times (क+१) - \frac{१}{अ} = ब \times (क+१) - \frac{१}{अ}$ हानिरूप नया लब्ध

उपर्युक्त लब्धमें $\frac{१}{अ}$ अधिक ^{करना} है इसलिए उसे वृद्धिरूप ^{अंतर} कहा है और दूसरे लब्धमें $\frac{१}{अ}$ कम करना है इसलिए उसे हानिरूप अंतर कहा है।

पृ. 46

गा. 25 भागहारको अपनयन राशिसे गुणा कर देनेपर और अपनयन राशिको लब्ध राशिमेंसे घटाकर जो शेष रहे उसका भाग दे देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें प्रक्षेप राशि होती है।

जहां भाज्य राशि समान हो उसको ^{किमी} एक भागहारसे भाग देकर जो लब्ध आया उससे कम लब्ध प्राप्त करना हो तो उस पूर्व भागहारमें कितनी संख्या जोड़नी पड़ेगी उसका प्रमाण निकालनेका यह सूत्र है।
जैसे 36 को 8 से भाग देनेपर 4 लब्ध आता है और ^{नया} 6 लब्ध जाना हो तो भागहारमें कितनी संख्या बढ़ेगी?

भाज्य राशि 36, भागहार 8, इष्ट लब्ध = 6, $36 \div 8 = 4$ पूर्व लब्ध.

प्रक्षेप भागहार निकालनेका सूत्र -

$$\frac{\text{भागहार} \times \text{अपनयन राशि}}{\text{पूर्व लब्ध} - \text{अपनयन राशि}} = \text{प्रक्षेप भागहार}$$

$$\frac{\text{पूर्व लब्ध} - \text{इष्ट लब्ध}}{\text{अपनयन राशि}}$$

$$\frac{8 \times 3}{(6-3)} = \frac{24}{3} = 8 \text{ प्रक्षेप भागहार}$$

$$8 - 6 = 2$$

पूर्व भागहार + प्रक्षेप भागहार = इष्ट राशि लानेके लिए भागहार

$$8 + 2 = 10$$

भाज्य \div नया भागहार = इष्ट राशि

$$36 \div 10 = 3.6$$

बीजगणितसे $\frac{व}{क} = क$ इष्ट लब्ध = स्व अपनयन राशि = क - स्व

$$\frac{व \times (क - स्व)}{क - (क - स्व)} = \text{प्रक्षेप भागहार}$$

$$\frac{वक - वस्व}{क - (क - स्व)} = \frac{वक - वस्व}{क - क + स्व} = \frac{वक - वस्व}{स्व} = \text{प्रक्षेप भागहार}$$

पूर्व भागहार + प्रक्षेप भागहार = नया भागहार

$$\frac{व}{क} + \frac{वक - वस्व}{स्व} = \text{समच्छेद} \quad \frac{वस्व + वक - वस्व}{स्व} = \frac{वक}{स्व} \text{ नया भागहार}$$

भाज्यराशि ÷ नया भागहार = इष्टलब्ध

$$\begin{aligned}
 अ ÷ \frac{वक}{ख} &= वक ÷ \frac{वक}{ख} & अ &= वक \\
 &= \frac{वक \times ख}{वक} & &= ख \text{ इष्टलब्ध}
 \end{aligned}$$

गा. 30

भागहारको प्रक्षेपराशिसे गुणा कर देनेपर और प्रक्षेपसे अधिक लब्धराशिका भाग देने पर जो लब्ध आता है वह भागहारमें अपनेय राशि होती है।

जहांपर किसी भाज्यराशिको किसी एक भागहारसे भाग देकर जो लब्ध आया उससे अधिक लब्ध प्राप्त करने के लिए पूर्व भागहारमें से कितना घटाना पड़ेगा उसका प्रमाण निकालनेका यह सूत्र है।

जैसे 36 को 8 से भाग दिया तो 9 लब्ध आता है, अब 92 लब्ध प्राप्त करने के लिए भागहारमें से कितना घटाना पड़ेगा?

भाज्य 36, पूर्व भागहार 8, पूर्व लब्ध 9, इष्टलब्ध 92

$$\text{पूर्व इष्टलब्ध} - \text{पूर्व लब्ध} = \text{प्रक्षेपराशि } 92 - 9 = 83 \text{ प्रक्षेपराशि}$$

अपनेय भागहार निकालनेका सूत्र

$$\frac{\text{पूर्व भागहार} \times \text{प्रक्षेपराशि}}{\text{पूर्व लब्ध} + \text{प्रक्षेपराशि}} = \text{अपनेय भागहार}$$

$$\frac{8 \times 83}{9 + 83} = \frac{664}{92} = 7 \text{ अपनेय भागहार}$$

पूर्व भागहार - अपनेय भागहार = इष्ट ^{नया} भागहार

$$8 - 7 = 1 \text{ इष्ट भागहार}$$

भाज्य राशि ÷ इष्ट भागहार = इष्ट लब्ध

$$36 \div 1 = 36 \text{ इष्ट लब्ध}$$

बीजगणितसे $\frac{अ}{व} = क$ इष्ट लब्ध = ख प्रक्षेप राशि ख-क

$$\frac{व \times (ख-क)}{क \times (ख-क)} = \text{अपनेय भागहार}$$

$$\frac{वख - बक}{क + ख - क} = \frac{वख - बक}{ख} = \text{अपनेय भागहार}$$

$$\text{पूर्व भागहार} - \text{अपनेय भागहार} = \text{नया भागहार}$$

$$व - \frac{वख - बक}{ख} = \frac{वख - वख - बक}{ख} = \frac{बक}{ख}$$

$$\text{भाज्यराशि} \div \text{नया भागहार} = \text{इष्ट लब्ध}$$

$$अ \div \frac{बक}{ख} = बक \div \frac{बक}{ख} = बक \times \frac{ख}{बक} = ख \text{ इष्ट लब्ध}$$

पृ. ४९
गा. ३१

भागहारमें जितनी अधिक संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा अधिक अवहारसे हत अर्थात् भाजित करनेपर जो आवे उसे पूर्व फलमेंसे घटा देनेपर नया लब्ध आता है।

किसी भाज्यराशिको पहले छोटी संख्यासे भाग दिया, उसी संख्याको उससे बड़ी संख्यासे भाग दिया तो कितना लब्ध आता है उसका प्रमाण निकालनेका सूत्र इसमें बताया है।

जैसे ३६ संख्याको ९ से भाग दिया तो ४ आता है, ३६ संख्याको ही १२ संख्यासे भाग दिया तो कितना लब्ध आता है?

भाज्य ३६, पूर्व भागहार ९, पूर्व लब्ध ४, नया भागहार १२,
भागहारमें अधिक संख्या $१२ - ९ = ३$

$$\text{पूर्व लब्ध} - \left(\frac{\text{पूर्व लब्ध} \times \text{अधिक संख्या}}{\text{नया भागहार}} \right) = \text{नया लब्ध}$$

$$४ - \left(\frac{४ \times ३}{१२} \right) = ४ - \left(\frac{१२}{१२} \right) = ४ - १ = ३ \text{ नया लब्ध}$$

बीजगणितसे - $\frac{अ}{ब} = स$ नया भागहार $ब + ३$ अधिक संख्या ३

$$स - \left(\frac{स \times ३}{ब + ३} \right) = \frac{स(ब + ३) - स \times ३}{ब + ३} = \frac{सब + स \times ३ - स \times ३}{ब + ३}$$

$$\frac{स \times ब}{ब + ३} = \text{नया लब्ध} \cdot सब = अ \text{ इसलिये } \frac{अ}{ब + ३} = \text{नया लब्ध}$$

गा. 32

भागहारमें जितनी न्यून संख्या होती है उससे पूर्व फलको गुणित करके तथा न्यून भागहारसे हट करनेपर जो आवे उसे पूर्वफलमें जोड़ देनेपर नया लब्ध आता है।

किसी भाज्यराशि को पहले बड़ी संख्यासे भाग देकर लब्ध निकाला उसी भाज्य राशि को छोटी संख्यासे भाग देनेपर कितना लब्ध आता है उसका प्रमाण निकालनेका सूत्र इस गाथामें बताया है।

जैसे 36 संख्याको 92 से भाग दिया तो 3 तीन लब्ध आया, अब 3 संख्यासे भाग देनेपर कितना लब्ध आयेगा ?

भाज्य = 36, पूर्व भागहार 92, पूर्व लब्ध 3, नया भागहार 9
 $92 - 3 = 3$ न्यून संख्या फल

$$\text{पूर्वलब्ध} + \left(\frac{\text{पूर्वलब्ध} \times \text{न्यूनसंख्या}}{\text{नया भागहार}} \right) = \text{नया लब्ध}$$

$$3 + \left(\frac{3 \times 3}{9} \right) = 3 + \left(\frac{9}{9} \right) = 3 + 1 = 4 \text{ नया लब्ध (भजनफल)}$$

बीजगणितसे $\frac{अ}{ब} = स$ नया भागहार ब-3 न्यूनसंख्या 3

$$स + \frac{स \times 3}{ब-3} = \frac{स(ब-3) + स3}{ब-3} = \frac{सब - स3 + स3}{ब-3}$$

$$\frac{स \times ब}{ब-3} = स \times ब = अ \text{ होता है अतः } \frac{अ}{ब-3} = \text{नया लब्ध}$$

पृ. 50

सब गणित सूत्र बताने के बाद यहां उपस्थित की है कि सिद्धराशि और तैरह गुणस्थानवर्ती जीवराशिका मिथ्यादृष्टि जीवराशि में भाग देने पर जो भाग लब्ध आवे, उतनेवा भाग अधिक संपूर्ण जीवराशिका संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्गमें भाग देनेपर कौनसी राशि आती है ? समाधान - सिद्धराशि और तैरह गुणस्थानवर्ती राशिका संपूर्ण जीवराशिमें भाग देनेपर जो भाग लब्ध आवे, उतनेवा भाग कम संपूर्ण जीवराशि आती है।

बिंदी भाषांतरमें समझने में गलती दिखायी देती है। वहांपर

उतनेवा भाग कम ऐसा अर्थ न कर उतनी संख्या कम

उतनेवा भाग अधिक ऐसा अर्थ न कर उतनी संख्या अधिक
ऐसा अर्थ करनेसे गड़बड़ हो गयी ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि
अभी तक गणित सूत्रों से ये सिद्ध किया है कि किसी संख्याके वर्गमें
उस संख्याका जितनेवा भाग अधिक उस संख्याका भाग देते हैं उसके
लब्धके में भागदारके उस भागमें एक अधिक करके उतनेवा भाग कम वह संख्या
लब्ध आता है।

जैसे

$$\frac{98^2}{98+98} = 98 - \frac{98}{3} \text{ आता है इसी रीती के अनुसार उपर्युक्त गणित समझना चाहिये।}$$

उपर्युक्त

$$\frac{98^2}{98 + \frac{98}{3}} = 98 - \frac{98}{3}$$

भागदार 93 में एक मिलाने पर $\frac{98}{3}$ आता है अतः उतनेवा भाग कम संपूर्ण जीवराशि लब्ध आता है

$$\frac{93+9}{3} = \frac{93 \times 3}{3} = \frac{98}{3}$$

$$= \frac{98^2}{98 + 98 \times 3} = \frac{98 - (98 \times 3)}{98} \text{ समच्छेद}$$

$$= \frac{98^2}{98 \times 93 + 98 \times 3} = \frac{98 \times 98 - 98 \times 3}{98} \text{ समान संख्या}$$

$$= \frac{98^2}{98(93+3)} \text{ समान संख्या निकालकर} = 98 - 3 = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

$$= \frac{98^2 \times 93}{98 \times 98}$$

$$= 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

हिंदी अनुवादमें गल्ती होनेसे विरोधार्थमें पाठ बदलकर अर्थ किया है

उसकी बदलने की आवश्यकता महसूस नहीं होती।
बीजगणित से -

क = संपूर्ण जीवराशि
अ = सिद्ध तेरस राशि
ब = मिथ्यादृष्टि राशि

$$\frac{k^2}{k + \frac{b}{a}} = \frac{k - \frac{k}{a}}$$

$$\frac{k^2}{k + \frac{k \times a}{b}} \quad \text{भागहरका भागहर गुणकार होता है}$$

$$\frac{k - \frac{k \times a}{k}}$$

$$\frac{k^2}{(k \times b) + (k \times a)} \quad \text{समघोर}$$

$$\frac{k \times k - k \times a}{k}$$

$$\frac{k(k - a)}{k}$$

$$\frac{k^2 \times b}{k \times b + k \times a} \quad \text{भागहरका भागहर राशिका गुणकार}$$

मिथ्यादृष्टि जीवराशि
 $k - a = \frac{b}{k}$ होती है

संपूर्ण जीवराशि में सिद्ध तेरस राशि कम करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

$$\frac{k^2 \times b}{k \cdot (b + a)} \quad \text{ब + अ = क होता है}$$

अतः ब + अ की जगह क करना

$$\frac{k^2 \times b}{k \times k}$$

$$\frac{k \times k \times b}{k \times k} = b \quad \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

निरुक्ति →

सर्व जीवराशि = विरलन राशि देयराशि = संपूर्ण जीवराशि
सिद्ध तेरस राशि

$$\frac{9E}{3} = 4 \frac{2}{3} \quad \text{विरलन राशि}$$

$$9E = \text{देयराशि}$$

$$\begin{array}{cccccc} 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 9 \\ 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 \\ & & & & & 3 \end{array} = \text{एक खंड पर जो राशि}^3 \text{ आयी उतनी } \times$$

 सिद्ध और तेरह गुणस्थान वाली जीवराशि है
 शेष सब खंडों पर प्राप्त राशियों को मिलाने पर
 बहुभाग प्रमाण $3+3+3+3+9 = 93$ मिथ्यादृष्टि राशिका प्रमाण है।

विकल्प → दो प्रकारका है १) अधस्तन विकल्प २) उपरिम विकल्प
 १) अधस्तन विकल्प → विवक्षित भाजकका किसी विवक्षित भाज्यमें भाग देनेसे जो लब्ध आता है वही लब्ध जब उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे नीचेकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है तब वह अधस्तन विकल्प कहलाता है। और
 उपरिम विकल्प → जब वही लब्ध उस विवक्षित भाज्य और भाजकसे ऊपरकी संख्याओंका आश्रय लेकर निकाला जाता है, तब उसे उपरिम विकल्प कहते हैं।

द्विरूपवर्गधारा → 2 के वर्गसे लेकर केवलज्ञानपर्यंत वर्ग करते जाना
 $4, 9, 16, 25, 36, 49, 64, 81, 100, \dots$ --- संपूर्ण जीवराशि, जीवराशिका
 वर्ग, --- केवलज्ञान

द्विरूपघनधारा → 2 को घन करके उस घनका वर्ग करते जाना केवलज्ञान के द्वितीय वर्गमूलतक के घन घन इस धारामें आते हैं।
 $8, 27, 64, 125, \dots$ --- जगत्त्रेणि --- संपूर्ण जीवराशिका घन,
 जीवराशिके वर्गका घन, --- केवलज्ञान का द्वितीय वर्गमूल

द्विरूपघनाघनधारा - 2 के घन के घनसे प्रारंभ करके केवलज्ञानके चतुर्थ वर्गमूल के

$492, 2$

१) अधस्तन विकल्प →

१) द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है, क्योंकि संपूर्ण जीवराशि से जीवराशिका प्रमाण अधिक है।

2) द्विरूप धनधारामें अधस्तन विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{संपूर्ण जीवराशिका धन}}{\text{ध्रुवराशि} \times \text{संपूर्ण जीवराशि}} = \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

$$\frac{(9E)^3}{9E \times \frac{24E}{93}} = \frac{9E \times 9E \times 9E}{9E \times \frac{24E}{93}} \quad \begin{matrix} \text{जीवराशि } 9E \\ \text{ध्रुवराशि } 9E \frac{9}{93} \end{matrix} \quad \frac{(9E)^3}{9E} = 9E^2$$

$$\frac{9E \times 9E \times 93}{9E \times 9E} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

द्विगुणादिकरण विधि \rightarrow

1) संपूर्ण जीवराशिका धन \div संपूर्ण जीवराशि = संपूर्ण जीवराशिका वर्ग
 $(9E)^3 \div 9E = 9E^2$ अर्थात् 24E

2) (संपूर्ण जीवराशि)³ \div संपूर्ण जीवराशि $\times 2$ = संपूर्ण जीवराशिके उपरिम वर्गका द्वितीय भाग
 $(9E)^3 \div 9E \times 2 = 405E \div 32 = 92E$ अर्थात् 24E का दूसरा भाग

3) (संपूर्ण जीवराशि)³ \div संपूर्ण जीवराशि $\times 3$ = सं. जीवराशिके वर्गका तृतीय भाग
 $(9E)^3 \div 9E \times 3 = 405E \div 48 = 8\frac{5}{8}$ अर्थात् $\frac{24E}{3} = 8E$

4) (संपूर्ण जीवराशि)³ \div संपूर्ण जीवराशि \times ध्रुवराशि = सं. जीवराशिके वर्गका ध्रुवराशि के प्रमाणका भाग
 $(9E)^3 \div 9E \times 9E \frac{9}{93} = 9E^3 \div 9E \times \frac{24E}{93}$ अर्थात् मिथ्यादृष्टि राशि
 $= 405E \div \frac{405E}{93} = 405E \times \frac{93}{405E} = 93$ मिथ्यादृष्टि जीवराशि

3) द्विरूप धन धनधारामें अधस्तन विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{संपूर्ण जीवराशिके धन धन का प्रथम वर्गमूल}}{\text{सं. जीवराशिके} \times \text{सं. जीवराशि} \times \text{ध्रुवराशि}} = \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

किसी भी संख्या के घनाघन के प्रथम वर्गमूल को उसके घन के प्रथम वर्गमूल से भाग देने पर उस संख्या का घन आता है।

जैसे 98 के घनाघन 98^3 प्रथम वर्गमूल 282988 ,

98 के घनाघन का प्रथम वर्गमूल 98

$$282988 \div 98 = 8098 \text{ जो } 98 \text{ का घन } 8098 \text{ है।}$$

$$\frac{282988}{98 \times 98 \times 98} = \frac{282988}{282988} = \frac{282988 \times 93}{282988} = 93$$

मिथ्यादृष्टि राशि

उपरिम विकल्प — 3 प्रकार 1) गृहीत 2) गृहीत गृहीत 3) गृहीत गुणकार

द्विरूप कंधारामें उपरिम गृहीत विकल्प →

$$\frac{\text{जीवराशि}^2}{\text{ध्रुवराशि}} = \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि} \quad \frac{248}{93} = \frac{248}{93} = \frac{248 \times 93}{248} = 93$$

ध्रुवराशि प्रमाणा भागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीबार जीवराशि के उपरिम वर्गरूप राशि के अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

जैसे ध्रुवराशि 93 अर्थात् $\frac{248}{93}$ इसके अर्धच्छेद अर्धच्छेद निकालने के लिए दो का भाग देते जावा

$$\frac{248}{93} \text{ का प्रथम अर्धच्छेद } \frac{248}{93 \times 2} = 92$$

$$\text{दूसरा अर्धच्छेद } \frac{92}{93 \times 2} = 46$$

$$\text{तीसरा अर्धच्छेद } \frac{46}{93 \times 2} = 23$$

$$\text{चौथा अर्धच्छेद } \frac{23}{93 \times 2} = \frac{98}{93} \text{ अर्थात् } \frac{98}{93}$$

अर्थात् $\frac{258}{93}$ के चार अर्धच्छेद लेकर $\frac{3}{93}$ अधिक रहा अतएव

जीवराशि का उपरिम वर्ग 258 के इतने अर्धच्छेद करना

258, 92, 88, 32, 98 अंतिम अर्धच्छेद 98 को $\frac{98}{93}$ का

भाग देनेपर मिथ्यादृष्टि जीवराशि का प्रमाण आता है

$$\frac{98}{93} \div \frac{98}{93} = \frac{98 \times 93}{98} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

प्र. 54

संपूर्ण जीवराशि के उपरिम वर्ग के अर्धच्छेदों के बराबर ध्रुवराशि $\frac{258}{93}$ के अर्धच्छेद करनेपर अंतिम अर्धच्छेद मिथ्यादृष्टि जीवराशि से एक को खंडित करनेपर जितना प्रमाण आता है उतना होता है।

पूर्व में $\frac{258}{93}$ के 8 अर्धच्छेद किये हैं चौथा अर्धच्छेद $\frac{98}{93}$ है

$$\frac{98}{93 \times 2} = \frac{2}{93} \text{ पांचवा अर्धच्छेद, } \frac{2}{93 \times 2} = \frac{8}{93} \text{ छठा अर्धच्छेद}$$

$$\frac{8}{93 \times 2} = \frac{2}{93} \text{ सातवा अर्धच्छेद, } \frac{2}{93 \times 2} = \frac{9}{93} \text{ आठवा अर्धच्छेद}$$

इन आठ अर्धच्छेदों को शलाकारूपसे स्थापित करके इतनी बार 258 के अर्धच्छेद करनेपर 9 आता है। पुनः इस एक को ध्रुवराशि के आठवे अर्धच्छेद से भाग देनेपर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

$$9 \div \frac{9}{93} = \frac{9 \times 93}{9} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

दूसरा गृहीत उपरिम निकल्प -

$$\frac{(\text{सर्व जीवराशि})^2 \times (\text{सर्व जीवराशि})^2}{(\text{सर्व जीवराशि})^2 \times \text{ध्रुवराशि}} = \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

$$\frac{(98^2 \times 98)^2}{(98^2 \times \frac{258}{93})} = \frac{98^2}{\frac{258}{93}} = \frac{258 \times 93}{258} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

भागदारके जितने अर्धच्छेद होते हैं उतने भाज्य राशि के अर्धच्छेद

करने पर भी मिथ्या दृष्टि जीवराशि आती है। अंतिम अर्धच्छेद में भागहारक $\frac{258 \times 258}{93}$ के अर्धच्छेद 92 होकर $\frac{3}{93}$ अधिक होता है।

द्विरूपवर्धिका अर्धच्छेद निकालने की विधि →

संपूर्ण जीवराशि से जितने वर्गस्थान ऊपर गये हैं उतनेका विरलन करके उस विरलित राशि पर दो को देयरूपसे देकर परस्पर गुणा करके जो लब्ध आता है उसमें से एक कम करके शेष राशिको संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदों से गुणित करने पर ^{भागहारक} अर्धच्छेद शलाकाए आती है।

$$\frac{2 \times 2}{9} = 4 - 1 = 3 \times 4 = 92 \text{ पूर्ण और } \frac{3}{93} \text{ अधिक}$$

इसलिए $98^2 \times 98^2$ इस भाज्यराशिके 92 अर्धच्छेद करा पर 98 आते हैं। अनन्तर उसमें $\frac{98}{93}$ का भाग देने पर मिथ्या दृष्टि राशि आती है।

$$98 \div \frac{98}{93} = 98 \times \frac{93}{98} = 93 \text{ मिथ्या दृष्टि जीवराशि}$$

भागहारके जितने त्रिकच्छेद होते हैं उतने भाज्यराशिके त्रिकच्छेद करने पर मिथ्या दृष्टि जीवराशि आती है।

त्रिकच्छेद निकालने की विधि → जिस राशिके त्रिकच्छेद निकालने हो उस राशिको 3 से भागते जाना। जब अंतिम राशि 3 से कम आयेगी वहां रुकना चाहिए। अर्थात् आगे 3 से भाग नहीं देना।

भागहार राशि $\frac{258}{93}$ के त्रिकच्छेद

$$\text{प्रथम त्रिकच्छेद } \frac{258}{93 \times 3} = \frac{258}{39} = 6 \frac{22}{39}$$

$$\text{दूसरा त्रिकच्छेद } \frac{258}{39 \times 3} = \frac{258}{99} = 2 \frac{22}{99}$$

यह राशि 3 से कम होनेसे $\frac{258}{93}$ इस राशिके के 2 ही त्रिकच्छेद होते हैं।

258 के त्रिकच्छेद →

$$\frac{258}{3} = 86 \frac{2}{3} \quad \text{① प्रथम त्रिकच्छेद}$$

$$\frac{258}{3 \times 3} = 28 \frac{2}{3} \quad \text{② दूसरा त्रिकच्छेद}$$

$\frac{24E}{93}$ का अंतिम त्रिकच्छेद $\frac{24E}{93}$ है एक नहीं है एकसे

अधिक अतः उसे $\frac{24E}{93}$ इस $24E$ के दूसरे त्रिकच्छेद को उस अधिक त्रिकच्छेद से भाग देने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

$$\frac{24E}{9} \div \frac{24E}{93} = \frac{24E}{9} \times \frac{93}{24E} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

इसी प्रकार चतुर्थादि च्छेद शलाकाओं के द्वारा भी राशि के छिन्न करने पर मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

धनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प

$$\frac{(\text{संपूर्ण जीवराशि})^3 \times (\text{संपूर्ण जीवराशि})^3}{(\text{संपूर्ण जीवराशि})^2 \times (\text{संपूर्ण जीवराशि})^2 \times \text{ध्रुवराशि}} = \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

$$\frac{(9E)^3 \times 9E^3}{9E^2 \times 9E^2 \times \frac{24E}{93}} = \frac{9E \times 9E}{\frac{24E}{93}} = \frac{24E \times 93}{24E} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

अथवा

$$\frac{(9E^3)^2}{(9E^2)^2 \times \frac{9E^2}{93}}$$

$$(a^m)^n = a^{m \times n} \text{ इस घातांकके नियमानुसार}$$

$$9E^6 \div 9E^4 = \frac{9E^{6-4}}{9E^2} \text{ आता है। } 9E^2 \div \frac{9E^2}{93} = 9E^2 \times \frac{93}{9E^2} = 93$$

भागहार के जितने अर्धच्छेद होते हैं उतने भाज्यराशिके

अर्धच्छेद करने पर भी मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

धनधारामें त्रिकच्छेद अर्धच्छेद निकालनेकी रीति—

जितने वर्गस्थान आगे गये हैं उतनेका विरलन करके उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि रहे आवे उसे त्रिगुणित करके उसमेंसे एक कम करके जो राशि रहे उससे संपूर्ण जीवराशिके अर्धच्छेदोंको गुणित करने पर जो संख्या आवे उतने भागहारके अर्धच्छेद होते हैं।

$$\text{विरलन}^2 \times = \text{लब्ध} \times 3 = \text{लब्ध} - 9 = \text{लब्ध} \times \text{जीवराशिके अर्धच्छेद} = \text{भागहारके अर्धच्छेद}$$

$9E^8 \times 24E$ के अर्धच्छेद

$$\frac{2}{9} = 2 \times 3 = 6 - 9 = 4 \times 8 = 20 \text{ अर्धच्छेद}$$

अंतिम अर्धच्छेद $9 \frac{3}{93}$ होता है।

$9E$ के 20 अर्धच्छेद करने पर $9E$ का भाग देने पर $9E \div 93 = 9E \times \frac{23}{9E} = 93$ मिथ्यादृष्टि जीवराशि

धनाधनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\left((\text{संपूर्ण जीवराशि})^3 \right)^2 \text{ धनके धनका वर्ग}$$

= मिथ्यादृष्टि जीवराशि

$$\left((\text{संपूर्ण जीवराशि})^2 \right)^2 \times \text{धुकराशि}$$

धनके वर्गका वर्ग

$$\left((9E^3)^3 \right)^2$$

$$(9E^2)^2 \times \left((9E^3)^2 \right)^2 \times \frac{9E^2}{93}$$

$$= \frac{9E^6}{9E^8 \times 9E^{12} \times \frac{9E^2}{93}}$$

$$= \frac{9E^6}{9E^{20} \times \frac{9E^2}{93}}$$

$$= \frac{9E^6 \times 93}{9E^{22}}$$

$$= \frac{9E^{6-22}}{93} = \frac{9E^{-16}}{93}$$

इस घातांकके नियमानुसार

$$= \frac{9E^2}{93}$$

$$= \frac{9E^2 \times 93}{9E^2} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेद $9E$ और अंतिम अर्धच्छेद $9 \frac{3}{93}$ होता है।

अतः इतनीवार उक्त भाज्यराशि के अर्धच्छेद करने पर 93 मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

धनाधनधारामें भागहारके अर्धच्छेद निकालनेकी रीति

जितने वर्गस्थान ऊपर जावे उतनेका बिलन कर उसपर दो देकर परस्पर गुणा करना

$$\frac{2}{2} = 2 \times 5 = 10 - 9 = 10 \times 8 = \text{भागहारके अर्धच्छेद}$$

$$\frac{2}{9} = 2 \times 5 = 10 - 9 = 10 \times 8 = 80 \text{ भागहारके अर्धच्छेद}$$

द्विरूपवर्गधारामें
गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प -

$$\frac{\text{इच्छित वर्ग} \div \text{इच्छित वर्ग}}{\text{मिथ्याहृष्टि जीवराशि}} = \text{मिथ्याहृष्टि जीवराशि}$$

इच्छित वर्ग = ६५५३६

$$\frac{६५५३६ \div ६५५३६}{१३} = \frac{६५५३६ \times १३}{६५५३६} = १३ \text{ मिथ्याहृष्टि जीवराशि}$$

भाज्य राशि के अर्धच्छेद - भागहारके अर्धच्छेद = लब्ध राशि के अर्धच्छेद
६५५३६ के अर्धच्छेद १६ होते हैं १३ के अर्धच्छेद $3\frac{10}{13}$ होते हैं

अतः ६५५३६ के अर्धच्छेद =

$$\frac{१६}{१३} - 3\frac{10}{13} = 12\frac{3}{13} \text{ अर्धच्छेद}$$

इतने ही ६५५३६ के अर्धच्छेद करने पर १३ मिथ्याहृष्टि जीवराशि आती है।

धनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प ->

$$\frac{(\text{संपूर्ण जीवराशि}^3)^2}{\text{मिथ्याहृष्टि राशि}} \div \frac{(\text{संपूर्ण जीवराशि}^3)^2}{\text{मिथ्याहृष्टि राशि}} = \text{मिथ्याहृष्टि राशि}$$

$$\frac{(१६^3)^2}{१३} \div \frac{(१६^3)^2}{१३} = \frac{१६^६ \div १६^६}{१३} = \frac{१६^६ \times १३}{१६^६} = १३ \text{ मिथ्याहृष्टि राशि}$$

१६^६ = १६७७७२१६ आता है जो ४०९६ का वर्ग है।

१६ के अर्धच्छेद ४ तो १६^६ के अर्धच्छेद ४ x ६ = २४ होते हैं

१३ के अर्धच्छेद $3\frac{10}{13}$ होते हैं

$$24 - 3\frac{10}{13} = 20\frac{3}{13} \text{ अर्धच्छेद उक्त भागहारके होते हैं अतः}$$

इतनी बार १६^६ भाज्यराशि के अर्धच्छेद करने पर मिथ्याहृष्टि जीवराशि आती है।

धनाधनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प -

$$\frac{(\text{संपूर्ण जीवराशि के धनाधन का प्रथम वर्गमूल})^2}{\text{संपूर्ण जीवराशि के धनाधन का प्रथम वर्गमूल}} = \text{मिथ्याहृष्टि जीवराशि}$$

$$\frac{(\sqrt{(१६^3)})^2}{\sqrt{(१६^3)}} = \frac{१६^३ \text{ का धनाधन } १६^१ \text{ उसका वर्गमूल } १६^2 \text{ उसका वर्ग } १६^१}{१३}$$

$$\frac{(\sqrt{(१६^3)})^2}{\sqrt{(१६^3)}} = \frac{१६^३ \text{ का धनाधन } १६^१ \text{ उसका वर्गमूल } १६^2 \text{ उसका वर्ग } १६^१}{१३}$$

$$\frac{9E^2 \times 93}{9E^2}$$

= 93 मिथ्यादृष्टि जीवराशि

9E के घनाघन का प्रथम वर्गमूल = $9E \times 9E \times 9E \times 9E \times 9E = 2E2988$
उसका वर्ग पुनः 9E का घनाघन अर्थात् 9E ही आता है।

उक्त भागहारके अर्धच्छेद = 9E के $\frac{10}{13}$ तो 9E के $\frac{10}{13} \times 9E = 3E$ होते
अर्धछेद हैं उसमेंसे 93 के $3 \frac{10}{13}$ अर्धच्छेद कम करनेपर

$$3E - 3 \frac{10}{13} = 32 \frac{3}{13} \text{ अर्धच्छेद होते हैं।}$$

इतनीवार उक्त भज्यमान राशि 9E के अर्धच्छेद करनेपर 93
मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

पृ. 61 द्विरूपवर्गधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\left(\left(\text{संपूर्ण जीवराशि}^2 \right)^2 \right)^2 \div \left(\text{संपूर्ण जीवराशि}^2 \right) \times \left(\text{संपूर्ण जीवराशि}^2 \right)^2 = \text{मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

$$\left((9E^2)^2 \right)^2 \div (9E^2)^2 \times (9E^2)^2 =$$

$$9E^6 \div \frac{9E^4 \times 9E^2}{93} = 9E^6 \div \frac{9E^6}{93} = \frac{9E^6 \times 93}{9E^6} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

उक्त भागहार $\frac{9E^6}{93}$ के अर्धच्छेद =

9E के 4 अर्धच्छेद तो 9E के $4 \times 9E = 36$ अर्धच्छेद होते हैं।
उसमें से 93 के अर्धच्छेद $3 \frac{10}{13}$ घटानेपर $36 - 3 \frac{10}{13} = 32 \frac{3}{13}$

अर्धच्छेद आते हैं। उक्त भज्यमान राशिके इतने अर्धच्छेद करनेपर
93 मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

पृ. 62 घनधारामें (अष्टरूपधारामें) गृहीत गुणकार उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\left(\left(\text{सं. जी}^3 \right)^2 \right)^2 \div \left(\text{सं. जी}^3 \right)^2 \times \left(\text{सं. जी}^3 \right)^2$$

$$= 9E^2 \div \frac{9E^2 \times 9E^2}{93} = 9E^2 \div \frac{9E^4}{93} = \frac{9E^2 \times 93}{9E^2} = 93 \text{ मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

9E का घन 409E

409E का वर्ग 9E66629E

उक्त भागहार $\frac{92}{93}$ के अर्धच्छेद = $92 \times 8 = 84$ अर्धच्छेद 92 के
 उसमेंसे 93 के अर्धच्छेद $3\frac{18}{13}$ घटाने पर $84 - 3\frac{10}{13} = 84\frac{3}{13}$ होते हैं
 इतनी बार भाज्यशशि 92 के अर्धच्छेद करने पर 93 मिथ्यादृष्टि
 जीवशशि होती है।

घनाघनघारामें गृहीत गुणकार उपरिम विकल्प -

$$\frac{(\text{संपूर्ण जीव घनाघन का प्रथम वर्गमूल})^2}{\text{संपूर्ण जीव घनाघन प्रथम वर्गमूल}} \times \frac{\text{संपूर्ण जीव घनाघन प्रथम वर्गमूल}^2}{\text{मिथ्यादृष्टि शशि}} = \text{मिथ्यादृष्टि}$$

92 का घनाघन 92^3 उसका प्रथम वर्गमूल 92 उसका वर्ग
 92^2 आता है क्योंकि घातांकित संख्याका वर्गमूल निकालने के लिए घातको
 दोसे भाग देना और उसका वर्ग निकालने के लिए दोसे गुणा
 करना।
 $(92^3) \div 92^2 = 92 = 92 \times 93 = 93$ मिथ्यादृष्टि

घनाघन का प्रथम वर्गमूल $92 \times 92 \times 92 = 282988$ उसका
 इच्छित वर्ग 64095408032 होता है अर्थात् 92 का 9 बार परस्पर
 गुणा करना

उक्त भागहार $\frac{92}{93}$ के अर्धच्छेद = 92 के अर्धच्छेद $8 \times 92 = 84$
 93 के अर्धच्छेद $3\frac{90}{13}$ घटाने पर $84 - 3\frac{90}{13} = 84\frac{3}{13}$ होते हैं

इतनी बार उक्त भाज्यमान शशि 92 के अर्धच्छेद करने पर मिथ्यादृष्टि शशि
 93 आती है।

शाखादनादि संयतासंयत पर्यंत जीवशाशि = $\frac{\text{पर्यापम}}{\text{अंतमुहूर्त}}$

जघन्य युक्तासंख्यात समय = 9 आवली
 संख्यात आवली = 9 उच्छ्वास
 सात (6) उच्छ्वास = 9 स्तोक
 सात (7) स्तोक = 9 लव
 साडे अठतीस $3\frac{1}{2}$ लव = 9 नाली (घटिका)
 दो (2) नाली = 9 मुहूर्त
 मुहूर्त - 9 समय = भिन्नमुहूर्त
 मुहूर्त - 2 आदि समय = अन्तमुहूर्त
 3003 उच्छ्वास = 9 मुहूर्त

$$6 \times 6 \times 3 \frac{1}{2} \times 2 = 6 \times 6 \times 6 \frac{1}{2} = 6 \times 39 = 3003$$

एक मुहूर्तमें 3003 उच्छ्वास तो एक दिनमें कितने उच्छ्वास
 एक दिनके मुहूर्त 30 होते हैं।

प्रमाण	फल	इच्छाशाशि
9 मुहूर्त	3003 उच्छ्वास	30 मुहूर्त
$3003 \times 30 = 9,93,90$ एक दिनके उच्छ्वास		

गुणस्थान	अवलरकाल
असंयतं सम्यग्दृष्टि	आवली ÷ असंख्यात
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} \times \frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}}$ असंख्यात आवली
शाखादन सम्यग्दृष्टि	$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} \times \frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} \times \frac{\text{संख्यात}}{\text{असंख्यात}}$))
संयतासंयत	$\frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} \times \frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} \times \frac{\text{संख्यात}}{\text{असंख्यात}} \times \frac{\text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = \frac{\text{असंख्यात}}{\text{आवली}}$

आवलीके असंख्यातके भागको आवलीके असंख्यातके भागसे गुणित करनेपर असंख्यात आवली कैसे आती है।
 जैसे आवली 100 समय माना, असंख्यात 4 माना

$$\frac{900}{6} \times \frac{900}{8} = 24 \times 24 = 624 \text{ यहाँ } 900 \text{ संख्या } 6 \frac{1}{2} \text{ बार आती अर्थात् असंख्यात आवली होती है।}$$

आवली को छोटे असंख्यातसे भाग देनेपर बड़ी असंख्यात संख्या आती है दोनों का परस्पर गुणा करनेपर असंख्यात आवली उत्तर आता है।

दो आवलीके असंख्यातवे भागको परस्पर गुणा करनेपर आवलीका असंख्यातवा भाग अथवा आवलीका संख्यातवा भाग अथवा संख्यात आवलियों अथवा असंख्यात आवलियों आती है।

प्रमाण	फल	इच्छा
9 वर्ष पृथक्त्वमें (संख्यात आवली)	संख्यात क्षायिक सम्यग्दृष्टि	संख्यात पल्योपममें कितने?

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{\text{संख्यात} \times \text{संख्यात पल्योपम}}{\text{संख्यात आवली}}$$

$$\text{पल्योपम} \div \text{संख्यात आवली} = \text{क्षायिक सम्यग्दृष्टि}$$

प्राज्य शाशिकी संख्यात संख्यासे भागहार शाशिकी संख्यात संख्या बड़ी है इसलिये भागहारमें संख्यात आवलियां ही रहती हैं।

यहां पर सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयत के भागहारमें अन्तर्मुर्त का प्रमाण है वह असंख्यात आवलीप्रमाण लेना है। यहाँ अन्तर शब्द का समीप अर्थ लिया है जो मुर्त के समीप (अधिक) उसे अन्तर्मुर्त कहते हैं।

सासादन, सम्यग्दृष्टि जीवशाशिकी का प्रमाण खण्डित, भाजित, विरलित, प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पक इन आठ प्रकारोंसे कहते हैं।

1) खण्डित -

पल्योपमके असंख्यात आवलीके समयों प्रमाण खण्ड करना। उनमेंसे एक खण्ड = सासादन सम्यग्दृष्टि जीवशाशिकी प्रमाण 89938 अवहारक (असंख्यात आवली) 32 माना 89938 के 32 खण्ड करनेपर एक खण्ड = 2054 सासा. जीवशाशिकी

2) भाजित → पल्योपम ÷ असंख्यात आवली = सासादन सम्यग्दृष्टि

उदा. $६५५३६ \div ३२ = २०४८$ सासादन सम्यग्रुष्टि

उ) विरलित -

विरलन राशि = असंख्यात आवली (कल्पित ३२)

देयराशि = पल्योपमके समान खण्ड करके देना अंकसंहारिसे ६५५३६

२०४८ २०४८ २०४८ २०४८ २०४८

१ १ १ १ १ — ३२ बार

एक खण्डप्रमाण सासादन सम्यग्रुष्टि जीवराशि अंकसंहारिसे २०४८

४) अपहृत \rightarrow शलाकाराशि = ३२

पल्योपम ६५५३६

असंख्यात आवली (३२)

- १

- २०४८

३१

६३६८८

- १

- २०४८

३०

६१४४०

इस क्रमसे पल्योपममेंसे सासादन सम्यग्रुष्टि राशि और शलाकाराशिमेंसे एक एक कम करते जानेपर दोनों राशियां एकसाथ समाप्त होती हैं। पल्योपममेंसे एकवार घटाई जानेवाली राशिप्रमाण ^{२०४८} सासादन सम्यग्रुष्टि है।

५) प्रमाण = $\frac{\text{पल्योपम}}{\text{असंख्यात}}$ = पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण सासादन सम्यग्रुष्टि राशि

उदा. ६५५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६ सासादन सम्यग्रुष्टि = २०४८

$२५६ \times ८ = २०४८$ अर्थात् ८ प्रथम वर्गमूल होते हैं।

६) कारण \rightarrow $\frac{\text{पल्योपम}}{\text{प्रथम वर्गमूल}} = \frac{६५५३६}{२५६} = २५६$

$\frac{\text{पल्योपम}}{\text{द्वितीय वर्गमूल}} = \frac{\text{प्रथम वर्गमूल} \times \text{द्वितीय वर्गमूल}}{\text{द्वितीय वर्गमूल}} = \frac{६५५३६}{९६} = ६८२६ = २५६ \times २६$ प्र.क. द्विव

$\frac{\text{पल्योपम}}{\text{तृतीय वर्गमूल}} = \frac{\text{प्रथम वर्गमूल} \times \text{द्वि.व.} \times \text{तृ.व.}}{\text{तृतीय वर्गमूल}} = \frac{६५५३६}{४८} = १३६४ = २५६ \times ५४$ प्र.क. त्रिव

इस क्रमसे असंख्यात वर्गस्थान नीचे उतरकर जो असंख्यात भागदशियां (सासादन सम्यग्रुष्टिका भागहार) स्थित है उसका पल्योपममें भाग देनेपर असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं।

$\frac{\text{पल्योपम}}{\text{असंख्यात आवली}} = \frac{\text{असंख्यात प्रथम वर्गमूल सासादन सम्यग्रुष्टि}}{\text{प्रथम वर्गमूलसे लेकर भागहारप्रमाण वर्गमूलों तकके}} =$

वर्गमूलोंका परस्पर गुणाकार प्रमाण वह राशि आती है।

6) निरुक्ति \rightarrow पल्योपमके प्रथम वर्गमूल \times असंख्यात आवली = लब्ध प्रमाण प्रथम वर्गमूल सासा. राशि

$$\frac{24E}{32} \times 24E = 208E \text{ सासा. राशि}$$

(पल्योपमका द्वितीय वर्गमूल \times असंख्यात आवली) \times द्वितीय वर्गमूल = लब्ध प्रमाण प्रथम वर्गमूल

$$\left(\frac{9E}{32}\right) \times 9E = \frac{9}{2} \times 9E = 4 \text{ प्रथम वर्गमूल} \times 24E = 208E$$

(पल्योपमका तृतीय वर्गमूल \times असंख्यात आवली) \times तिसरा वर्गमूल \times दूसरा वर्गमूल = लब्ध प्रमाण प्रथम वर्गमूल

$$\left(\frac{8}{32}\right) \times 8 \times 9E = \frac{9}{2} \times 8 \times 9E = 4 \text{ प्रथम वर्गमूल}$$

(प्रतरावली \times असंख्यात आवली) \times प्रतरावली \times उपरिम वर्गसे ^{उसके} द्वितीय वर्गमूलपर्यन्तके वर्गस्थानोंका परस्पर गुणाकार = लब्ध प्रमाण प्रथम वर्गमूल

इससे यह सिद्ध होता है कि पल्योपममें असंख्यात आवलियोंका भाग देनेपर ^{पल्योपमके} असंख्यात प्रथम वर्गमूल आते हैं उनसे सासादन जीव हैं।

7) विकल्प \rightarrow द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प \rightarrow

1) पल्योपमका प्रथम वर्गमूल \times असंख्यात आवली = सासादन सम्यग्दृष्टि
अथवा $24E \times 4 = 208E = \text{सासा. सम्यग्दृष्टि}$

2) (पल्योपमका द्वितीय वर्गमूल \div अवहारकाल) \times द्वितीय वर्गमूल \times प्रथम वर्गमूल = सासादन सम्यग्दृष्टि
 $(9E \div 32) \times 9E \times 24E = \frac{9}{2} \times 9E \times 24E = 208E$

3) (पल्योपमका तृतीय वर्गमूल \div अवहारकाल) \times तृ. मू. \times द्वि. मू. \times प्र. मू. = सासादन जीव
 $(8 \div 32) \times 8 \times 9E \times 24E = \frac{9}{4} \times 8 \times 9E \times 24E = 208E$ " \rightarrow

4) (प्रतरावली \div अवहारकाल) \times प्रतरावली \times उसके उपरिम वर्गसे प्रथम वर्गमूल =

पर्यन्त वर्गस्थानोंको परस्पर गुणा = सासादन सम्यग्दृष्टि जीवराशि

धनधारामें अधस्तन विकल्प →

धनपत्न्यका प्रथम वर्गमूल = सासादन सम्यग्दृष्टि

पत्न्योपमका प्रथम वर्गमूल × असंख्यात आवली

६५५३६ का धन ६५५३६ × ६५५३६ × ६५५३६

इसका प्रथम वर्गमूल २५६ × २५६ × २५६

उपर्युक्त सूत्रानुसार

$$\frac{256 \times 256 \times 256}{256 \times 32} = \frac{65536}{32} = 2048 \text{ सासादन सम्यग्दृष्टि}$$

किसी भी राशिके धनके प्रथम वर्गमूल में उस राशिके प्रथम वर्गमूलका भाग देनेपर वही राशि आती है।

४ का धन ६४ उसका प्रथम वर्गमूल = ८

४ का प्रथम वर्गमूल = २ अतः $\frac{८}{२} = ४$

धनाधनधारामें अधस्तन विकल्प →

धनाधनपत्न्यका द्वितीय वर्गमूल

धनपत्न्यका द्वितीय वर्गमूल × पत्न्योपमका प्रथम वर्गमूल × असंख्यात आवली

= सासादन जीवराशि

धनाधनपत्न्यका द्वितीय वर्गमूल =

धनाधनपत्न्य ६५५३६^२ इसका प्रथम वर्गमूल २५६^२ द्वितीय वर्गमूल १६^२

१६ × १६ × १६ × १६ × १६ × १६ × १६ × १६ × १६ × १६

अर्थात् २५६ × २५६ × २५६ × २५६ × १६ धनाधनपत्न्यका द्वितीय वर्गमूल

— ६५५३६ × २५६ × ४०९६

धनपत्न्यका द्वितीय वर्गमूल

१६ × १६ × १६ = ४०९६

पत्न्योपमका प्रथम वर्गमूल २५६

सब राशियां सूत्रमें रखकर अपवर्तन करना

$$\frac{65432 \times 24 \times 805}{805 \times 24 \times 32} = 208 \text{ सासादन सम्यञ्छि}$$

द्विरूपवर्गधारामें गृहीत उपरिम विकल्प →

1) पल्योपम ÷ असंख्यात आवली = सासादन सम्यञ्छि

$$65432 \div 32 = 208 \text{ सासा.}$$

भागहारके अर्धच्छेदप्रमाण पल्योपम के अर्धच्छेद करनेपर सासादन सम्यञ्छि जीवराशि का प्रमाण आता है। 32 के अर्धच्छेद 16

भागहार	32	पल्योपम	65432
प्रथम	9		3208
द्वितीय	4		9834
तृतीय	8		1982
चतुर्थ	2		805
पंचम	1		208 - सासादन सम्यञ्छि

इसीप्रकार त्रिक छेद, चतुष्कछेद और पंचछेद आदिका अवलंबन करके भी सासा. सम्य. जीवराशि उत्पन्न कर लेना चाहिए

32 के त्रिकछेद: $\frac{32}{3}$ प्रथम, $\frac{32}{5}$ द्वितीय, $\frac{32}{16}$ तृतीय

65432 के त्रिकछेद $\frac{65432}{3}$, $\frac{65432}{5}$, $\frac{65432}{16}$

अंतिम त्रिकछेदको 32 के अंतिम त्रिकछेदसे भाग देनेपर सासा. राशि आती है $\frac{65432}{16} \div \frac{32}{16} = \frac{65432}{32} \times \frac{16}{32} = 208 \text{ सासा.}$

2) $\frac{\text{अंतरपल्य}}{\text{पल्योपम} \times \text{अवहारकाल}} = \text{सासा.}$ $\frac{65432^2}{65432 \times 32} = \frac{65432}{32} = 208$

भागहारके 65432 x 32 के अर्धच्छेद = 65432 के 98 अर्धच्छेद और 32 के 16 अर्धच्छेद दोनोंका जोड़ करना $98 + 16 = 208$

65432 x 65432 के इतने अर्धच्छेद करनेपर 208 प्रमाण सासा. राशि अहांपर गुणाकाररूप संख्या हो उनके अर्धच्छेदोंको जोड़नेपर उत्पन्न राशिके अर्धच्छेद होते हैं। जैसे $8 \times 4 = 32$ इसके अर्धच्छेद $2 + 3 = 5$

3) $\frac{(\text{पल्योपम}^2)}{\text{पल्योपम}^2 \times \text{पल्योपम} \times \text{अवहारकाल}} = \text{सासादन राशि}$

$$\frac{EYU^2 \times EYU^2}{EYU^2 \times EYU \times 32} = \frac{EYU}{32} = 208 \text{ सासा.}$$

भागहारके अर्धच्छेद - दो वर्गस्थान ^{अपर} है इसलिए दो का विरलन
 $\frac{2}{9} = 8-9 = 3 \times 9E = 84 + 9 = 93$

(परस्पर गुणा लब्ध-9 = लब्ध \times पल्योपमके अर्धच्छेद) + अवहारकालके अर्धच्छेद =
 भागहारशाशिके अर्धच्छेद

अथवा
 - पल्योपमके वर्गके अर्धच्छेद + पल्योपमके अर्धच्छेद + असंख्यात आवलियोंके अर्धच्छेद
 $32 + 9E + 9 = 93$ भागहारके अर्धच्छेद

इतनीवार EYU^2 रूप भाज्यशाशिके अर्धच्छेद करनेपर 208 <
 सासा, शाशि आती है।

पृ. 10 धनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow

1) $\frac{\text{धनपल्य}}{\text{पल्योपम}^2 \times \text{असंख्यात आवली}} = \text{सासादन जीवशाशि}$

$$\frac{EYU^3}{EYU^2 \times 32} = \frac{EYU}{32} = 208 \text{ सासा.}$$

भागहारके अर्धच्छेद = प्रतरपल्यके अर्धच्छेद + असंख्यात आवलीके अर्धच्छेद

$$9E \times 2 + 9 = 32 + 9 = 36$$

इतनीवार भाज्यशाशि धनपल्य EYU^3 के अर्धच्छेद करनेपर भी
 208 < सासा, शाशि आती है।

2) $\frac{\text{धनपल्य}^2}{\text{धनपल्य} \times \text{प्रतरपल्य} \times \text{असंख्यात आवली}} = \text{सासा.}$

$$\frac{EYU^3 \times EYU^3}{EYU^3 \times EYU^2 \times 32} = \frac{EYU}{32} = 208 \text{ सासा.}$$

धनधारामें अर्धच्छेद निकालनेका सूत्र -

{ (वर्गस्थानप्रमाण 2 का परस्पर गुणा करना $\times 3$) - 9 \times पल्यके अर्धच्छेद + अवहारकालके अर्धच्छेद }
 भागहारके अर्धच्छेद

$\frac{2}{9} = 2 \times 3 = 6 - 9 = 4 \times 9 = 10 + 4 = 14$ भागहारके अर्धच्छेद

इतनीवार भ्रज्यमान राशि $६५५३६^९$ के अर्धच्छेद करनेपर २०४८ सासादन सम्यग्दृष्टिका प्रमाण आता है।

पृ. ८२ घनाधनधारामें गृहीत उपरिम विकल्प →

१) $\frac{\text{घनाधनपल्य अर्थात् (पल्योपम)}^3}{\text{घनपल्य}^2 \times \text{प्रतरपल्य} \times \text{असंख्यात आवली}} = \text{सासादन}$

$$\frac{(६५५३६)^3}{(६५५३६)^2 \times ६५५३६ \times ३२} = \frac{६५५३६^९}{६५५३६^९ + ६५५३६^२ \times ३२} =$$

$$\frac{६५५३६^९}{६५५३६^९ \times ३२} = \frac{६५५३६^९}{३२} = २०४८ \text{ सासा.}$$

भागहारके अर्धच्छेद

६५५३६ के ९६ अर्धच्छेद तो $६५५३६^९$ के कितने अर्धच्छेद

$९६ \times ८ = ७६८$ * भागहारके अर्धच्छेद $५ = १३३$ भागहारके अर्धच्छेद असंख्यात आवलीके

अथवा $(९-९ = ८ \times \text{पल्योपमके अर्धच्छेद}) + \text{असंख्यात आवलीके अर्धच्छेद} =$
 $(८ \times ९६) * ५ = ७६८ + ५ = ७७३$

इतनीवार उक्त भ्रज्यमान राशिके अर्धच्छेद करनेपर २०४८ सासादन शरी आती है।

२) $\frac{\text{घनाधनपल्य}^2}{\text{घनाधनपल्य} \times \text{घनपल्य}^2 \times \text{प्रतरपल्य} \times \text{असंख्यात आवली}} = \text{सासादन सम्यग्दृष्टि}$

$$\frac{(६५५३६)^2}{६५५३६^९ \times (६५५३६)^2 \times ६५५३६^२ \times ३२}$$

$$\frac{६५५३६^{१८}}{६५५३६^९ \times ६५५३६^९ \times ६५५३६^२ \times ३२} = \frac{६५५३६^{१८}}{६५५३६^{१०} \times ३२} = \frac{६५५३६^{१८}}{३२} = २०४८ = \text{सासा.}$$

उक्त भागहार ९६×३२ के अर्धच्छेद = ३०७२ द्वारा प्रकृतित वगैरहान रूपर गये हो उतनेका धनाधनरूप वगैरहान विरलन करके उसे दो रूप करके परस्पर गुणा करके उत्पन्न शाही को नोखे गुणा करके लब्धमेसे एक कम करना

$$\left[(उत्पन्न शाही \times ९) - १९ \times \text{पल्योपमके अर्धच्छेद} \right] + \text{असंख्यात आवलीके अर्धच्छेद} =$$

$$१ = २ \times ९ = १८ - १ = १७ \times १९ = २०२ + ५ = २०७ \text{ भागहार शाहीके अर्धच्छेद}$$

अथवा

९६×३२ के १९ अर्धच्छेद तो ९६×३२ के किलने अर्धच्छेद ?

$$१९ \times १७ = ३२२ \text{ उसमे गुणकर शाही } ३२ \text{ के } ५ \text{ अर्धच्छेद जोडना } ३२२ + ५ = ३२७$$

इतनी वर भाज्यशाही ९६×३२ के अर्धच्छेद करनेपर ३०७२ सासादन सम्यग्रुष्टि शाही आती है।

पृ. ८४ गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow द्विरूपवगैरहाने \rightarrow

$$\frac{\text{पल्योपम}^2}{\text{सासादन सम्यग्रुष्टि}} = \frac{\text{सासादन सम्यग्रुष्टि}^2}{\text{गृहीतगृहीत}} = \frac{९६ \times ३२^2}{३०७२} = \frac{९६ \times १०२४}{३०७२} = ३२$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेद = $९६ \times ३२^2 \div ३०७२$ के अर्धच्छेद

९६×३२ के १९ अर्धच्छेद तो ९६×३२ के अर्धच्छेद लोतेहोते उसमेसे $१९ \times १७ = ३२२$ उतनेका धनाधनरूप वगैरहान विरलन भागहार ३०७२ के ११ अर्धच्छेद धरानेपर

$३२ - ११ = २१$ अर्धच्छेद उक्त भागहारके लोतेहोते।

इतनीपर उक्त ९६×३२^2 भाज्यशाहीके अर्धच्छेद करनेपर ३०७२ सासादन सम्यग्रुष्टि शाही आती है।

धनधारामे गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{धनपल्य}^2}{\text{सासादन सम्यग्रुष्टि}} = \frac{\text{धनपल्य}^2}{\text{सासादन सम्यग्रुष्टि}} = \text{सासा.}$$

$$= \frac{(९६ \times ३२^3)^2}{३०७२} \div \frac{(९६ \times ३२^3)^2}{३०७२} = ९६ \times ३२ \div ९६ \times ३२ = ३२$$

$$\frac{EYUZE^E \times 208C}{EYUZE^E} = 208C \text{ सासा.}$$

उक्त भागहारके अर्धच्छेद = ८७ अर्धच्छेद

$EYUZE^E$ के अर्धच्छेद $9E \times E = 9E$ इसमेंसे

२०८ के अर्धच्छेद ११ घटाना $9E - 11 = ८७$

इतनीवार उक्त भज्यमान $EYUZE^E$ के अर्धच्छेद करनेपर सासादन साम्यवृष्टि जीवराशि २०८ आती है।

पृ. ८५ घनाधनधारामें गृहीतगृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{घनाधनपल्य}^2}{\text{घनाधनपल्य}^2} = \text{सासादन राशि}$$

$$\frac{(EYUZE^E)^2}{208C} = \frac{EYUZE^E \times 208C}{EYUZE^E} = 208C \text{ सासा.}$$

घनाधनपल्यके द्वितीय वर्गमूल का भी असंख्यातवा भागरूप सासादन साम्यवृष्टि राशि है।

घनाधनपल्यका द्वितीय वर्गमूल $9E^E$ उसको असंख्यात $2 \times 9E^E$ इस संख्यासे भाग देना

$$\frac{9E^E}{9E^E \times 2} = \frac{9E^E}{2} = \frac{809E}{2} = 208C \text{ सासा. राशि}$$

उक्त भागहार $EYUZE^E \div 208C$ के अर्धच्छेद :

$EYUZE^E$ के अर्धच्छेद $9E \times 9C = 2CC$ इसमें २०८ के अर्धच्छेद घटाना

$2CC - 11 = 2७७$ अर्धच्छेद उक्त भागहारके होते हैं।

इतनीवार $EYUZE^E$ इस भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करनेपर २०८ सासादन साम्यवृष्टि राशि आती है।

द्विरूपवर्गधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{पल्योपम}^2 \times \text{पल्योपम}^2}{\text{पल्योपम}^2 \times \text{पल्योपम}^2} = \text{सासा. साम्यवृष्टि}$$

$$\frac{EYUZE^2 \times EYUZE^2}{208C} = \frac{EYUZE^2 \times EYUZE^2}{208C} = \frac{EYUZE^2}{208C} =$$

$$\frac{६५५३६^२ \times २०४८}{६५५३६} = २०४८ \text{ सासा.}$$

भागहार $६५५३६ \div २०४८$ के अर्धच्छेद \rightarrow
 ६५५३६ के अर्धच्छेद = $१६ \times ४ = ६४$, २०४८ के अर्धच्छेद ११
 $६४ - ११ = ५३$ उक्त भागहारके अर्धच्छेद

इतनीवार उक्त भज्यमान राशि ६५५३६ के अर्धच्छेद करनेपर २०४८ सासादन राशि आती है।

धनधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{धनपल्य}^2 \times \text{धनपल्य}^2}{\text{धनपल्य}^2 \times \text{धनपल्य}^2} = \frac{\text{सासादन सम्यग्दृष्टि}}{\text{सासादन सम्यग्दृष्टि}} = \frac{\text{धनपल्यका प्रथमवर्गमूल} = \text{सासादन असंख्यात्} = २५६^3 = २०४८}{३२ \times २५६}$$

$$\frac{(६५५३६^3)^2 \times (६५५३६^3)^2}{(६५५३६^3)^2 \times (६५५३६^3)^2}$$

$$\frac{६५५३६^६ \times ६५५३६^६}{६५५३६^६ \times ६५५३६^६} = \frac{६५५३६^१२}{६५५३६^१२} = \frac{२०४८}{२०४८}$$

$$\frac{६५५३६^१२ \times २०४८}{६५५३६^१२} = २०४८ \text{ सासादन राशि}$$

भागहार $६५५३६^१२ \div २०४८$ के अर्धच्छेद

$६५५३६^१२$ के अर्धच्छेद - २०४८ के अर्धच्छेद = उत्पन्न राशिके अर्धच्छेद
 $१६ \times १२ = १९२ - ११ = १८१$ उक्त भागहारके अर्धच्छेद

धन इतनीवार उक्त भज्यमान राशि $६५५३६^१२$ के अर्धच्छेद करनेपर २०४८ सासादन सम्यग्दृष्टि आते हैं।

धनाधनधारामें गृहीतगुणकार उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{धनाधनपल्यका द्वितीयवर्गमूल} = \text{सासा.}}{\text{असंख्यात्}} = \frac{१६^3}{१६ \times २} = \frac{१६^3}{२} = २०४८ \text{ सासा.}$$

घनाधनपत्य² × घनाधनपत्य² ÷ घनाधनपत्य² × घनाधनपत्य² = सासा.

$$(९५५३९)^2 \times (९५५३९)^2 \div (९५५३९)^2 \times (९५५३९)^2 = \text{सासादन सम्यग्दृष्टि}$$

$$९५५३९ \times ९५५३९ \div ९५५३९ \times ९५५३९ = २०४८$$

$$९५५३९ \div २०४८ = ९५५३९ \times २०४८ = २०४८ \text{ सासा.}$$

उक्त भागहार ९५५३९ ÷ २०४८ के अर्धच्छेद =

$$९९ \times ३९ = ५७६ - ११ = ५६५ \text{ उक्त भागहारके अर्धच्छेद}$$

इतनीवार उक्त भागहार ९५५३९ के अर्धच्छेद करनेपर २०४८ सासादन सम्यग्दृष्टि राशि आती है।

गुणस्थान	भाज्यराशि	भागहार	संख्या
सासादनसम्यग्दृष्टि	९५५३९	३२	२०४८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	९५५३९	१९	४०९६
असंयत सम्यग्दृष्टि	९५५३९	४	१९३८४
संयतसंयत	९५५३९	१२८	५१२

प्रमत्तसंयत	पाच करोड सैरानवे लाख अठानवे हजार दोसौ छह	५,९३,९८,२०६
अप्रमत्तसंयत	दो करोड सैरानवे लाख निब्यानेवे हजार एकसौ तीन	२,९९,९९,१०३
४ उपशामक	प्रवेश की अपेक्षा १,२३,---५४	संचित ३०४
४ क्षपक	" " १,२३,---१०८	संचित ६०८
सयोगकेवली	" " १,२३,---१०८	संचित ८९८,५०२
अयोगकेवली	" " १०८	संचित ६०८

आठ समय अधिक वर्षपृथक्त्वके भीतर उपशामश्रेणिके योग्य लगातार आठ समय होते है। छह महिना आठ समयके क्षपकश्रेणिके योग्य लगातार आठ समय होते है।

निरन्तर आठ समयपर्यन्त उपशम और क्षपक श्रेणी - घटनेवालोंकी उल्टा संख्या

समय	उपशम श्रेणी	क्षपक श्रेणी
प्रथम	96	32
द्वितीय	28	42
तृतीय	30	60
चतुर्थ	36	62
पंचम	42	68
छठा	48	66
सातवा	54	90
आठवा	54	90

इन संख्याओंको एक स्तंभके द्वारा जोड़ने के लिए इन संख्याओंको समान चररूप बनाने के लिए कुछ संख्याओंको घटाना/कुछ संख्याओंमें जोड़ना।

उपशम श्रेणीकी संख्या	क्षपक श्रेणीकी संख्या
$96 + 9 = 105$	$32 + 2 = 34$
$28 - 9 = 19$	$42 - 2 = 40$
$30 - 9 = 21$	$60 - 2 = 58$
$36 - 9 = 27$	$62 - 2 = 60$
$42 - 9 = 33$	$68 - 2 = 66$
$48 - 9 = 39$	$66 - 2 = 64$
$54 - 9 = 45$	$90 - 2 = 88$
$54 + 9 = 63$	$90 + 90 = 180$

उपशम श्रेणीकी बीचकी छह संख्याओंमेंसे एक एक कम किया और प्रथम संख्यामें एक और अंतिम संख्यामें पाच इसप्रकार मिला दिया। इसलिये क्षपक श्रेणीकी बीचकी छह संख्याओंमेंसे दो दो कम किया और उन बारहको प्रथम संख्यामें 2 और अंतिम संख्यामें दस 90 इसप्रकार मिला दिया।

संकलन सूत्र - 1 -

$$\frac{n}{2} \left(\frac{a_1 + a_n}{2} \right) \times \text{गण्ड} = \text{संकलन धन}$$

उपशम श्रेणीकी संख्याओंका संकलन \rightarrow गण्ड = 8 चर 6 आदि 96

$$\left\{ \left(\frac{C-9}{2} \times 6 \right) + 96 \right\} \times C = \left(\frac{10}{2} \times 6 \right) + 96 \right\} \times C =$$

$$(10 \times 3) + 96 \right\} \times C = \{ 29 + 96 \} \times C = 3C \times C = 308 \text{ संकलन घन}$$

क्षपकश्रेणीकी संख्याओंका संकलन \rightarrow गच्छ = C चय = 92 आदि = 38

$$\left\{ \left(\frac{C-9}{2} \times 92 \right) + 38 \right\} \times C = \left(\frac{10}{2} \times 92 \right) + 38 \right\} \times C$$

$$= (10 \times 46) + 38 \right\} \times C = (46 + 38) \times C = 66 \times C = 60C \text{ संकलन घन}$$

दूसरा संकलन सूत्र

$$\left[\left(\frac{\text{चय}}{2} \times \text{गच्छ} \right) - \frac{\text{चय}}{2} + \text{आदि} \right] \times \text{गच्छ} = \text{संकलन}$$

उपशम श्रेणी

$$\left[\left(\frac{6}{2} \times C \right) - \frac{6}{2} + 96 \right] \times C = 24 - 3 = 29 + 96 = 3C \times C = 308$$

क्षपकश्रेणी

$$\left[\left(\frac{92}{2} \times C \right) - \frac{92}{2} + 38 \right] \times C = 46 - 46 = 42 + 38 = 66 \times C = 60C$$

त्रैराशिक

प्रमाण

फलराशि

इच्छाराशि

6 माह + C समयमें

C सिद्ध समय

40, 49 x 6 माह C समयोंमें कितने सिद्ध

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{C \times 40 \times 49 \times 6 \text{ माह } C \text{ समय}}{6 \text{ माह } C \text{ समय}} = C \times 40 \times 49$$

$$= 3,26,02C \text{ सिद्ध समय}$$

प्रमाणराशि

फलराशि इच्छाराशि

लब्धप्रमाण

C समय 22 केवली 32602C समय $\frac{32602C \times 22}{C}$ C 94502

C समय 48 केवली 96336C समय $\frac{96336C \times 48}{C}$ C 94502

C समय 88 केवली 29612C समय $\frac{29612C \times 88}{C}$ C 94502

दक्षिण प्रतिपत्तिके अनुसार

पृ. 96	सब संयतोंका जोड = 4939206 29899903	प्रमत्त संयत अप्रमत्त संयत
	उपशमक 299 x 8 = 9992	
	क्षपक 492 x 8 = 2352	
	संयोग केवली = 292402	
	अयोग केवली = 492	
	<u>29899999</u> सब संयतोंका जोड	
	उपशमक व क्षपकोंका प्रमाण 9992 + 2352 + 292402 + 492 = 9,02,668	
	सर्व संयत 29999999	
	उपशमक, क्षप - 9,02,668	
	प्रमत्ताप्रमत्त संयत 29899999	
	$\frac{29899999}{3} = 29899999$ अप्रमत्त संयत	
	$29899999 \times 2 = 4,93,9206$ प्रमत्त संयत	

पृ. 95	उत्तर मान्यताके अनुसार →	
	प्रमत्त संयत 8,66,66,668	
	अप्रमत्त संयत 2,26,99,892	
	8 उपशमक 9992	
	8 क्षपक 2990	
	संयोग केवली 4,29,842	
	<u>6,66,66,668</u> सब संयतोंका जोड	
	$\frac{6,66,66,668}{3} = 2,33,33,332$ अप्रमत्तादि शेष संयत	
	$2,33,33,332 \times 2 = 4,66,66,664$ प्रमत्त संयत	

संयोग केवलीकी संख्या

त्रैशशिक - प्रमाणशशि	फल्मराशि	इच्छाराशि	प्रबंध
6 माह 2 समय	2 समय	8029 x 6 माह 2 समय	30 232 समय
2 समय में	992 केवली	30 232 समयोंमें	$\frac{30 232 \times 992}{2}$
			= 42,98,842

उपशमक व क्षपकोंका जोड = 9992 + 2990 + 429842 = 4,33,238

पृ. १०२ भागभाग

$$\frac{\text{सर्व जीवराशि}}{\text{सिद्ध तैरस राशि}} = \frac{१६}{३} = ५ \frac{१}{३}$$

संपूर्ण खीवराशिके इतने भाग करना

3	3	3	3	3	9
9	9	9	9	9	9
					3

एक भाग सिद्ध तैरस ३ शेष बहुभाग १३ = मिथ्यादृष्टि जीवराशि
 एकभागमें सिद्ध २, सासादनादि १

शेष राशियोंके भागभागके प्ररूपण करनेके लिए शेष राशियां एक भाग-
 हारसे लार्ई जाती है।

संयतासंयत जीवराशिके द्रव्यकी एक शलाका, अन्य गुणस्थानोंका
 द्रव्य संयतासंयतके प्रमाणसे कवने के लिए संयतासंयतके अवहारकाल
 को अपने अपने अवहारकालसे भाग देकेपर जो लब्ध आयेगा उतनी
 शलाकाप्रमाणा संयतासंयत द्रव्य अपना अपना द्रव्य होता है।

गुणस्थान	अवहारकाल	शलाका	संयतासंयतद्रव्य	अपना द्रव्य
संयतासंयत	१२८ ÷ १२८	१	× ५१२	५१२
सासादन सम्यग्दृष्टि	१२८ ÷ ३२	४	× ५१२	२०४८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१२८ ÷ १६	८	× ५१२	४०९६
असंयत	१२८ ÷ ४	३२	× ५१२	१६३८४
छठसे चौदहवे गुण.	२ ÷ ५१२	$\frac{१}{२५६}$	× ५१२	२
सब शलाकाओंका जोड़		$\frac{४५१}{२५६}$		

सब गुणस्थानवर्ती जीवोंका प्रमाण एक भागहारसे -

$$\text{पल्योपम} = \frac{\text{संयतासंयत अवहारकाल}}{\text{सर्व शलाका}} = \frac{\text{सासादनादि तैरस गुणस्थानवर्ती जीवराशि}}{\text{सर्वशलाका}} = \frac{५१२}{२५६} = \frac{११५२१}{२५६}$$

$$\frac{६५५३६ ÷ १२८}{११५२१} = \frac{६५५३६ ÷ १२८ \times २५६}{११५२१} = \frac{६५५३६ \times ११५२१}{३२७६८} = २२३०४२$$

सासा १३ गुण जीवराशि

इसी प्रकार जिन जिन गुणस्थानों के द्रव्य का प्रमाण एक भागदार से लाने की इच्छा हो उन उन गुणस्थानों की शलाकाओं से संयता संयत संयती अवहार काल को अपवर्तित करके जो लब्ध आवे उसका पल्योपम में भाग देने पर उन उन गुणस्थानों की राशियां आ जाती हैं।

$$\text{सासादन, संयता} \rightarrow \frac{६५५३६ \div १२८}{५} = \frac{६५५३६ \times ५}{१२८} = ५१२ \times ५ = २५६०$$

$$\text{सासादन, मिश्र, संयता संयत} \rightarrow \frac{६५५३६ \div १२८}{१३} = \frac{६५५३६ \times १३}{१२८} = ५१२ \times १३ = ६६५६$$

$$2, 3, 4, 5 \text{ गुणस्थानवर्ती} \rightarrow \frac{६५५३६ \div १२८}{४५} = \frac{६५५३६ \times ४५}{१२८} = ५१२ \times ४५ = २३०४०$$

अन्य प्रकार से

१) संयता संयत और सासादन का अवहार काल =

$$\frac{\text{संयता संयत अवहार} \times \text{सासादन अवहार}}{\text{सासादन अवहार}} \div \frac{\text{संयता संयत अवहार}}{\text{सासादन अवहार}} + १$$

$$\left(\frac{१२८ \times ३२}{३२} \right) \div \frac{१२८}{३२} + १ = १२८ \div \frac{१२८ + ३२}{३२}$$

$$= १२८ \div \frac{१६०}{३२} = १२८ \div ५ = २५ \frac{३}{५} \text{ सासादन संयता संयत दोनों का अवहार काल}$$

पल्योपम \div पूर्वोक्त अवहार काल = सासादन और संयता संयत जीवराशि

$$\frac{६५५३६ \div १२८}{५} = \frac{६५५३६ \times ५}{१२८} = ५१२ \times ५ = २५६०$$

२) सासादन, मिश्र और संयता संयत अवहार काल =

$$\frac{\text{संयता संयत और सासादन अवहार काल} \times \text{सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहार}}{\text{सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहार}} \div \frac{\text{संयता संयत अवहार}}{\text{सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहार}} + १$$

$$\left(\frac{१२८ \div १६}{५} \right) \times १६ = \frac{१२८ \times १६}{८०} = \frac{१२८}{५} \div \frac{१२८ + १६}{८०}$$

$$= \frac{१२८}{५} \div \frac{२०८}{८०} = \frac{१२८ \times १६}{५ \times २०८} = \frac{२०४८}{२०८} = ९ \frac{११}{१३} = \text{सा. संय. संयता संयत अवहार}$$

पल्योपमः लीनोंका अवहारकाल = सा. सम्य. संयतासंयत जीवराशि

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{१३} = \frac{६५५३६ \times १३}{१२८} = ५१२ \times १३ = ६६५६$$

उ) सासा, सम्य. असंयत, संयतासंयत अवहारकाल =

$$\left(\frac{\text{पूर्वोक्त लीनोंका अवहारकाल} \times \text{असंयत अवहारको}}{\text{असंयत अवहारकाल}} \right) \div \frac{\text{पूर्वोक्त लीनोंका}}{\text{असंयत अवहार}} + १$$

$$\left(\frac{१२८}{१३ \times ४} \times ४ \right) \div \frac{१२८}{१३ \times ४} + १ = \left(\frac{१२८}{१३} \right) \div \frac{१२८}{५२} + १ = \frac{१२८}{१३} \div \frac{१८०}{५२}$$

$$= \frac{१२८}{१३} \times \frac{५२}{१८०} = \frac{५१२}{१८०} = २ \frac{१५२}{१८०} = २ \frac{३६}{४५} = \text{सासादनादि ४ गुणस्थानोंका अवहारकाल}$$

पल्योपमः पूर्वोक्त ४ गुण अवहारकाल = सासादनादि ४ गुणस्थानवर्ती जीव

$$६५५३६ \div \frac{१२८}{४५} = \frac{६५५३६ \times ४५}{१२८} = ५१२ \times ४५ = २३०४०$$

घ) सासादनादि तेरह गुणस्थान राशिका अवहारकाल =

$$\left(\frac{\text{सासादनादि ४ गुणस्थान राशि} \times \text{४ गुणस्थानोंका अवहार}}{\text{प्रमत्तादि नव संयत राशि}} \right) \div \frac{\text{सा. ४ गुण. राशि}}{\text{प्र. ९ संयत राशि}} + १$$

$$\left(\frac{२३०४०}{२} \times \frac{१२८}{४५} \right) \div \frac{२३०४०}{२} + १$$

$$\frac{११५२०}{१} \times \frac{१२८}{४५} \div \frac{११५२०}{१} + १ = \frac{११५२० \times १२८}{४५} \div ११५२९$$

$$\frac{२९४९१२}{९} \div ११५२९ = \frac{२९४९१२}{९ \times ११५२९} = \frac{२,९४९१२}{१०३६८९} = २ \frac{२०१५८}{३४५६३}$$

अथवा २५२

$$\frac{११५२० \times १२८}{४५} = ३२६६८ \div ११५२९ = \frac{३२६६८}{११५२९} \text{ सासादनादि तेरह गुणस्थानोंका अवहारकाल}$$

पल्योपम ÷ लेख गुणस्थानोंका अवहारकाल = लेख गुणस्थान राशि

$$\frac{६५५३६}{३४५६३} \div २ = \frac{६५५३६}{३४५६३} \div २ = \frac{६५५३६}{३४५६३} \div २$$

$$= \frac{६५५३६ \times ३४५६३}{३६२०४} = \frac{६५५३६ \div ३२०६८}{११५२१} = \frac{६५५३६ \times ११५२१}{३२०६८} = २३०४२$$

सासा लेख गुणस्थान राशि

यहां अन्य प्रकारसे अनेक गुणस्थानोंका समुचित भागहार निकालते हैं।

संयतासंयत और प्रमत्तादि नव संयतराशिका अवहारकाल =

संयतासंयतके अवहारकालका निरूलन करके पल्योपमको समान खंड करके देना। संयतासंयत अवहारकाल अंकसंज्ञासे १२८, पल्योपम =

$$६५५३६$$

$$६५५३६ \div १२८ = ५१२$$

$$\begin{array}{cccccc} \text{उपरिम विरलन} & ५१२ & ५१२ & ५१२ & ५१२ & ५१२ & ५१२ \\ & १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array}$$

१२८ बार

एक-एकके प्रति संयतासंयत द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है।

$$\frac{\text{संयतासंयत द्रव्य}}{\text{प्रमत्तादि नव संयत द्रव्य}} = \frac{\text{अधस्तन विरलन}}{२} = \frac{५१२}{२} = २५६ \text{ अधस्तन विरलन}$$

अधस्तन विरलनपर उपरिम विरलन के प्रथम अंक पर प्राप्त संयतासंयत द्रव्यको समान खंड करके देनेपर एक-एकके प्रति नवसंयत द्रव्य प्राप्त होता है।

$$\begin{array}{cccccc} \text{अधस्तन विरलन} & २ & २ & २ & २ & २ & २ \\ & १ & १ & १ & १ & १ & १ \end{array}$$

२५६ बार

उपरिम विरलनके दूसरे अंकपर स्थित द्रव्य + अधस्तन विरलनके प्रथम अंकपर स्थित द्रव्य = संयतासंयत और नव संयत द्रव्य

$$५१२ + २ = ५१४ \text{ संयतासंयत और नव संयत द्रव्य}$$

इस प्रकार उपरिम विरलनके तृतीयादि विरलनों के ऊपर स्थित संयतासंयतके द्रव्योंमें अधस्तन विरलन राशिके द्वितीयादि अंकोपर स्थित नवसंयत द्रव्य तबतक मिलाते जाना जबतक अधस्तन विरलन समाप्त हो।

संयतासंयत और नवसंयत द्रव्य को एक ही भागहारसे लानेके लिए संयतासंयतके अवहारकालमें कितने अंकोकी हानि होती है उसका प्रमाण निकालते हैं -

यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक हवे तो एककी हानि होती है।

जैसे उपरिम विरलन ५, देयराशि ८० का समान खंड करके देना

(१६) १६ १६ १६ १६
१ १ १ १

$८० \div ५ = १६$

अधस्तन विरलन = $\frac{१६}{१} = १६$

देय राशि = १६ उपरिम प्रथम विरलन पर स्थित

उपरिम विरलन

अधस्तन विरलन

४ ४ ४ ४
१ १ १ १

उपरिम विरलनके द्वितीयादि अंकपर स्थित १६ में अधस्तन प्रत्येक विरलन पर स्थित ४ को मिलाना

$१६ + ४ = २०$

२० संख्या लब्ध प्राप्त करने के लिए ८० में किलनेका भाग देना पड़ेगा यहां अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन एक अधिक है इसलिए भागहारमें एककी हानि होती है।

$५ - १ = ४, ८० \div ४ = २०$

यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन दो अधिक दुगुने हवे तो दो की हानि होती है।

जैसे उपरिम विरलन १०, देयराशि = १६० को समान खंड करके देना

$१६० \div १० = १६$

(१६) १६ १६ १६ १६ (१६) १६ १६ १६ १६
१ १ १ १ १ १ १ १ १ १

अधस्तन विरलन = ४

अधस्तन देयराशि = प्रथम अंकपर स्थित सोलहको

समान खंड करके देना $१६ \div ४ = ४$

उपरिम विरलन पर स्थित द्रव्य + अधस्तन प्रथम विरलन पर स्थित द्रव्य =

$१६ + ४ = २०$

इसीप्रकार उपरिम विरलनपर स्थित द्रव्यमें अधस्तन विरलन पर स्थित द्रव्य मिलाते जाना। पुनः यहांपर एक अंककी हानि होती है। पुनः उपरिम

विरलनके छठे अंकपर स्थित राशिको अधस्तन विरलनपर समान खंड करके देना और सातके आदि अंकपर स्थित द्रव्यमें अधस्तन विरलन पर स्थित द्रव्य मिलाना। सर्व अधस्तन और उपरिम विरलन पर समाप्त होता है यहां भागहारमें दूसरे अंककी हानि होती है।

अधस्तन विरलन समाप्त होता है

उपरिम विरलन १० है और अधस्तन विरलन ४ है अर्थात् अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन दो अधिक दुगुणे है अतः दो अंककी हानि प्राप्त होती है।

उपरिम विरलन $90 - 2 = 88$ दोनों सम्मिलित शाशिका भागहार हानि

$980 \div 88 = 11$ दोनों सम्मिलित शाशि.

यदि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन तीन अधिक तिगुना होवे तो तीनकी हानि होती है।

यहां प्रकृतमें तो उपरिम विरलनसे अधस्तन विरलन असंख्यातगुणा है अतः पूरे एककी भी हानि न होकर एके असंख्यातके भागकी हानि होती है।

त्रैशाशिक - प्रमाण

१. अधिक अधस्तन विरलन
 $9 + 258 = 267$

फलशाशि

१ अंककी हानि
१

इच्छा

उपरिम विरलनमें कितनी हानि।
१२८

फल \times इच्छा \div प्रमाण = लब्ध

$$1 \times 128 \div 267 = \frac{128}{267} \text{ हानिका प्रमाण}$$

उपरिम विरलन \times हानिका प्रमाण = नवसंयतसहित संयतासंयत अवहारकाल

$$128 - \frac{128}{267} = \frac{(128 \times 267) - 128}{267} = \frac{128 \times 266}{267}$$

$$\frac{32688}{267} = 122 \frac{240}{267}$$

पल्योपम \div उपर्युक्त अवहार काल = नवसंयतसहित संयतासंयत शाशि

$$85538 \div \frac{32688}{267} = \frac{85538 \times 267}{32688} = 698$$

५) सासादन, संयतासंयत, नव संयतोंका सम्मिलित अवहारकाल \rightarrow

उपरिम विरलन = सासादन का अवहारकाल अंकसंख्यासे 32

देयराशि = पल्पोपमके समान खंड करके देना $६५५३६ \div ३२ = २०४८$
 सासादन' द्रव्य

उपरिम विरलन १ १ १ १ - - - ३२ बार

$\frac{\text{सासादन द्रव्य}}{\text{संयतासंयत और नवसंयत द्रव्य}} = \text{अधस्तन विरलन}$

$\frac{२०४८}{५९४} = ३ \frac{२५३}{२५६}$ अधस्तन विरलन, अधस्तन देयराशि = उपरिम

एक अंकपर स्थित द्रव्य समान खंड करके देना $२०४८ \div \frac{२०४८}{५९४}$
 $= २०४८ \times \frac{५९४}{२०४८} = ५९४$ नवसंयत सहित संयतासंयत द्रव्य

उपरिम द्वितीय अंकके ऊपर स्थित द्रव्य + अधस्तन प्रथम अंकपर स्थित द्रव्य = सासादन', संयतासंयतादि द्वा गुणस्थानवर्ती जीवराशि

$$२०४८ + ५९४ = २६४२$$

अधस्तन विरलन

५९४ ५९४ ५९४ ५०६
 १ १ १ $\frac{२५३}{२५६}$

$\frac{२५३}{२५६}$ विरलन पर कितनी राशि प्राप्त होती है उसे त्रैराशिक विधिसे निकालते हैं :-

प्रमाण फलराशि इच्छा
 १ विरलनपर ५९४ $\frac{२५३}{२५६}$ विरलनपर कितना ?

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = २ \frac{५९४ \times २५३}{१ \times २५६} = ५०६$$

→ इस प्रकार अधस्तन विरलनमात्र द्वा गुणस्थानोंके द्रव्यको उपरिम विरलनमें स्थित सासादन सम्यग्दृष्टिके द्रव्यमें मिला देनेपर अधस्तन विरलनमात्र द्वा गुणस्थानोंकी राशि समाप्त हो जाती है और यहां एक अंककी हानि प्राप्त होती है। अनन्तर जहांतक उपरिम विरलनमें द्वा गुणस्थान राशि मिलाई है उसके अनन्तर विरलित अंकपर स्थित सासादन सम्यग्दृष्टिके द्रव्यको अधस्तन विरलनपर समान खंड करके देना और पहलेके समान ही अधस्तन और उपरिम विरलनके द्रव्यको मिलाकर

जहाँ अधस्तन विरलनमात्र शशी समाप्त हो वहाँ भागहारमें दूसरे अंककी हानि होती है। इसप्रकार उपरिम विरलन समाप्त होनेतक यही विधि पुनः पुनः करते जाना।

इसप्रकार समीकरण करके हानिका प्रमाण लाते हैं → त्रैशशिक

प्रमाण फलशशि इच्छा
अधस्तन विरलन 9में 9 अंककी हानि उपरिम विरलनमात्र स्थानोंमें किलनी हानि 9

$$3 \frac{253}{250} + 9$$

9

32

$$\frac{(3 \times 250) + 253 + 250}{250} = \frac{1009 + 253 + 250}{250} = \frac{1512}{250}$$

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 32}{\frac{1512}{250}} = \frac{32 \times 250}{1512} = \frac{8000}{1512} = 5 \frac{53}{1512} \text{ हानिका प्रमाण}$$

उपरिम विरलन - हानिका प्रमाण = सासादन, संयता संयतादि 90 गुणस्थानोंका समुचित अवहारकाल

$$32 - \frac{8000}{1512}$$

$$\frac{32 \times 1512 - 8000}{1512} = \frac{48384 - 8000}{1512} = \frac{40384}{1512}$$

$$= 26 \frac{64}{1512}$$

सासादन और संयतासंयतादि 90 गुणस्थानोंका अवहारकाल

पल्योपम ÷ उपर्युक्त अवहारकाल = सासादन और संयतासंयतादि दश जिवराशि

$$85438 \div \frac{40384}{1512} = \frac{85438 \times 1512}{40384} = 2 \times 1512 = 3024$$

3) सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि दश गुणस्थानोंका सम्मिलित

अवहारकाल =

उपरिम विरलन = सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल अंकसंज्ञादिसे 98

देयशशि = पल्योपमके समान खंड करके देना $\frac{85438}{98} = 871.816$

805E 805E 805E 805E

उपरिम विरलन 9 9 9 9 9 — — 9E वार

$$\text{अधस्तन विरलन} = \frac{\text{सम्यग्मिथ्यादुष्टि द्रव्य}}{\text{आसादन, संयतासंयतादि दशा राशि}} \frac{805E}{24E2} =$$

$$9 \frac{9538}{24E2} = \text{अधस्तन विरलन}$$

अधस्तन विरलनपर देयराशि = उपरिम एक विरलनपर स्थित द्रव्य समान खंड करके देना

$$805E \div \frac{805E}{24E2} = \frac{805E \times 24E2}{805E} = 24E2 \text{ देयराशि}$$

अधस्तन विरलन	9	$\frac{9538}{24E2}$	उपरिम विरलनपर स्थित द्रव्य + अधस्तन विरलन पर स्थित द्रव्य = 92 गुणस्थानवती राशि
			$805E + 24E2 = 885E$

प्रेरणाशिक → एक अधिक अधस्तन विरलन मात्र स्थान जाकर यदि उपरिम विरलनमें एक अंककी हानि होती है तो संपूर्ण विरलनमें कितने अंकोंकी हानि होगी?

प्रमाण फलराशि इच्छा राशि

अधस्तन विरलन + 9	9	उपरिम विरलन
$9 \frac{9538}{24E2} + 9$	9	9E

$$9 \frac{9538}{24E2} + 9 = \frac{805E}{24E2} + 9 = \frac{805E + 24E2}{24E2} = \frac{885E}{24E2}$$

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 9E}{\frac{885E}{24E2}} = \frac{9E \times 24E2}{885E} = \frac{2085E}{885E} = \frac{2085E}{3325}$$

$$E = \frac{422}{3325} \text{ हानि का प्रमाण}$$

उपरिम विरलन - हानिप्रमाण = 92 गुणस्थानोंका अवहारकाल

$$9E - \frac{2085E}{3325} = \frac{9E \times 3325 - 2085E}{3325} = \frac{432E5 - 2085E}{3325}$$

$$\frac{320E2}{3325} = 9 \frac{2085}{3325} = 92 \text{ गुणस्थानोंका अवहारकाल}$$

उपर्युक्त

$$\text{पल्योपम} \div 92 \text{ गुणस्थानोंका अवतारकाल} = \frac{६५५३६}{३३२९} = \frac{६५५३६ \times ३३२९}{३२७६८} = 2 \times ३३२९ = ६६५८$$

४) सासादनादि १३ गुणस्थानोंका अवतारकाल =

उपरिम विरलन = असंयत सम्यग्दृष्टि अवतारकाल अंकसंज्ञादिसे च

$$\text{देयराशि} = \frac{\text{पल्योपम}}{\text{उपरिम विरलन}} = \frac{६५५३६}{२} = १६३८४$$

$$१६३८४ \quad १६३८४ \quad १६३८४ \quad १६३८४$$

उपरिम विरलन १ १ १ १

अधस्तन विरलन = असंयत द्रव्य

$$\frac{८९९२}{३३२९} = \frac{१६३८४}{६६५८} = 2 \frac{१५३४}{३३२९} \text{ अधस्तन विरलन}$$

देयराशि = उपरिम एक विरलनपर स्थित राशि समान खंड कर देना

$$\frac{१६३८४ + १६३८४}{६६५८} = \frac{१६३८४ \times ६६५८}{१६३८४} = ६६५८ \text{ देयराशि}$$

$$६६५८ \quad ६६५८ \quad ३०६८$$

अधस्तन विरलन १ १ १

उपरिम एक विरलनपर स्थित राशि + अधस्तन एक विरलन पर स्थित राशि =

$$१६३८४ + ६६५८ = २३०४२ \text{ सासादनादि १३ गुणस्थानवर्ती जीवराशि}$$

लानिका प्रमाण = त्रैशिक विधिसे

प्रमाण फल इच्छा
अधस्तन विरलन + १ १ उपरिम विरलन

$$\frac{८९९२}{३३२९} + १ \quad १ \quad ४$$

$$\frac{८९९२}{३३२९} + १ = \frac{८९९२ + ३३२९}{३३२९} = \frac{१२३२१}{३३२९}$$

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 8 \div 99429}{3325} = \frac{8 \times 3325}{99429} = \frac{93398}{99429}$$

$$= 9 \frac{9684}{99429} \text{ हानिका प्रमाण}$$

उपरिष्ठ विरलन - हानिका प्रमाण = सासादनादि 93 गुणस्थानोंका अवहार काल

$$8 - \frac{93398}{99429} = \frac{99429 \times 8 - 93398}{99429} = \frac{88064 - 93398}{99429}$$

$$= \frac{32664}{99429} = 2 \frac{9628}{99429} = 93 \text{ गुणस्थानोंका अवहारकाल}$$

पत्थोपम \div 93 गुणस्थानोंका अवहारकाल = सासादनादि 93 गुणस्थानवर्ती राशि

$$\frac{84438}{99429} \div \frac{32664}{99429} = \frac{84438 \times 99429}{32664} = 2 \times 99429 = 23082$$

भागभाग कहे हैं -

(असंयत जीवराशि
साम्यगमिथ्यादृष्टि आदि 92 गुणस्थानवर्ती राशि) + 9 = विरलन राशि

$$\frac{98368}{8842} + 9 = \frac{98368 + 8842 \times 9}{8842} = \frac{23082}{8842} = 3 \frac{3082}{8842} = 3 \frac{9438}{9348}$$

अत्येक विरलनपर तैरह गुणस्थानवर्ती राशिको समान खंड करके देना।

$$\frac{8842}{9} \quad \frac{8842}{9} \quad \frac{8842}{9} \quad \frac{3082}{9} \quad \frac{23082 \div 23082}{8842} = \frac{23082 \times 8842}{23082}$$

$$9 \quad 9 \quad 9 \quad \frac{9438}{3325} = 8842 = \text{देयरशि}$$

प्रमाण फल इच्छा
एक विरलन पर 8842 तो $\frac{9438}{3325}$ विरलन पर कितनी राशि?

$$2 \frac{8842 \times 9438}{3325} = 3082 \text{ राशि}$$

इसमेंसे एक विरलनपर प्राप्त साम्यगमिथ्यादृष्टि आदि (असंयत खंडकर) गुणस्थानवर्ती जीवराशिका प्रमाण है। शेष बहुभाग असंयत साम्यगमिथ्यादृष्टि जीवराशिका प्रमाण है $8842 + 8842 + 3082 = 9438$ असंयत राशि

एकभाग प्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि 12 गुणस्थानवर्ती राशि है उसमें एकभाग प्रमाण सासादनदि 91 गुणस्थानवर्ती राशि और बहुभाग प्रमाण सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि है। उसको दिखाते हैं -

सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि + 9 = विरलन
सासादन और संयतासंयतादि 90 राशि

$$\frac{405E}{24E2} + 9 = \frac{405E + 24E2}{24E2} = \frac{EE4L}{24E2} = 2 \frac{9438}{24E2}$$

देखराशि → सम्यग्मिथ्यादृष्टि, सासादन और संयतासंयतादि 90 गुणस्थानवर्ती जीवराशि को समान खंड करके देना

$$\frac{EE4L}{24E2} \div \frac{EE4L}{24E2} = \frac{EE4L \times 24E2}{EE4L} = 24E2 \text{ देखराशि}$$

$$\begin{array}{r} 24E2 \\ 9 \end{array} \quad \begin{array}{r} 24E2 \\ 9 \end{array} \quad \begin{array}{r} 9438 \\ 9438 \\ \hline 24E2 \end{array}$$

एकभाग → 24E2 सासादन और संयतासंयतादि 90 राशि

बहुभाग 24E2 + 9438 = 405E
सम्यग्मिथ्यादृष्टि राशि

एकभाग प्रमाण सासादन और संयतासंयतादि 90 राशि है उसमें एकभाग प्रमाण संयतासंयतादि 90 गुणस्थानवर्ती राशि और बहुभाग प्रमाण सासादन सम्यग्दृष्टि राशि है। उसे दिखाते हैं -

सासादन राशि + 9 = विरलन
संयतासंयतादि 90 राशि

$$\frac{208L}{998} + 9 = \frac{208L + 998}{998} = \frac{24E2}{998} = 8 \frac{40E}{998} = 8 \frac{243}{249}$$

देखराशि = सासादन और संयतासंयतादि 90 राशि को समान खंड करके देना

$$\frac{24E2}{998} \div \frac{24E2}{998} = \frac{24E2 \times 998}{24E2} = 998$$

$$\begin{array}{r} 998 \\ 9 \end{array} \quad \begin{array}{r} 998 \\ 9 \end{array} \quad \begin{array}{r} 998 \\ 998 \\ \hline 243 \end{array} \quad \begin{array}{r} 998 \\ 998 \\ \hline 249 \end{array}$$

एकभाग 998 → संयतासंयतादि 90 राशि
बहुभाग 998 + 998 + 998 + 998 = 405E
208L = सासादन राशि

एकभाग प्रमाण संयतासंयतादि 90 गुणस्थानवर्ती राशि है उसमें एकभाग प्रमाण प्रमत्तसंयतादि नव राशि और बहुभाग प्रमाण सासादन संयतासंयत जीवराशि है। उसको दिखाते हैं -

संयतासंयत राशि $\div 9 =$ विरलन $\frac{492}{2} = 246 + 9 = 255$
 प्रमत्तादि नव संयत राशि

देयराशि = संयतासंयतादि दश गुणस्थानसम्बन्धी राशिको सामान खण्ड करके देना। $498 \div 255 = 2$ देयराशि

एकभाग 2 = नव संयत राशि
 $\frac{2}{9} \frac{2}{9} \frac{2}{9} \frac{2}{9} \frac{2}{9}$ 255 वार बहुभाग 492 = संयतासंयत राशि

शेष एकभागका बहुभाग = प्रमत्तसंयत एकभाग = अप्रमत्तादि 6 संयत
 शेष " संख्यात बहुभाग = अप्रमत्त एकभाग = अपूर्वकरणादि
 शेष " " " = सयोगकेवली एकभाग = शेष क्षपक; उपशमक
 शेष " " " पांच क्षपक " = चार उपशमक

पृ. 998 स्वस्थान अल्पबहुत्व - सासादन सम्यग्दृष्टि राशिका ^{स्वस्थान} अल्पबहुत्व =

अल्पबहुत्व स्थान	अल्पबहुत्व प्रमाण	गुणकारका प्रमाण	संख्या
उ अवहारकाल द्रव्य	स्तोक असंख्यातगुणा	द्रव्य अवहारकाल $\frac{2084}{32} = 65$	अंतमुहूर्त 32 पल्योपम $\frac{6543E}{32} = 2044$ अंतमुहूर्त
पल्योपम	असंख्यातगुणा	अवहारकाल 32	पल्योपम 6543E

अवहारकालसे द्रव्य असंख्यातगुणा है। उस गुणकारका प्रमाण अन्यप्रकारसे बताते हैं

गुणकार = $\frac{\text{पल्योपम}}{\text{प्रतिभाग अवहारकालका वर्ग}}$ = पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण

$$\frac{6543E}{32 \times 32} = \frac{6543E}{9024} = 65$$

$$32 \times 65 = 2080 \text{ सासादन राशि}$$

द्वि गुणादिकरणविधि →

$$\frac{\text{पल्योपम}}{\text{अवहारकाल}} = \text{सासादन सम्यग्दृष्टि राशि} \quad \frac{6543E}{32} = 2044$$

$$\frac{\text{पल्योपम}}{\text{अवहारकाल} \times 2} = \text{सासादन सम्यग्दृष्टि राशिका दूसरा भाग} \quad \frac{6543E}{32 \times 2} = 9024$$

$$\frac{\text{पतयोपम}}{\text{अवहारकाल} \times 3} = \frac{\text{सा. सम्यग्दृष्टि शाशिका}}{\text{तीसरा भाग}} = \frac{६५५३६}{३२ \times ३} = ६८२ \frac{१}{३}$$

इस प्रकार जब तक सा. सम्य. अवहारकालके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनीवार द्विगुणादिकरण विधि हो जावे तब तक यह विधि करते जाना चाहिए $\frac{2}{9} \frac{2}{9} \frac{2}{9} \frac{2}{9} \frac{2}{9} = 32$ 32 के अर्धच्छेद ५

$$\frac{\text{पतयोपम}}{३२ \times ३२} = \frac{\text{गुणकारका प्रमाण}}{१०२४} = ६६$$

इसी प्रकार सम्यग्भिद्यादृष्टि, असंयत सम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंके अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये।

सर्व परस्थान अल्पबहुत्व

स्थान	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण	संख्याप्रमाण
४ उपशमक स्तर	स्तोक		१२१६/११६६
५ क्षपक संयोगकेवली	संख्यातगुणे	दोई $\frac{५}{२}$	३०४०/२९९०
	संख्यातगुणे	संख्यात $\frac{८९८५०२}{३०४०}$	८९८५०२
अप्रमत्तसंयत	संख्यातगुणे	३३ $\frac{५८५३०}{८९८५०२}$	२,९६,९९,१०३
प्रमत्तसंयत	संख्यातगुणे	दो २	५,९३,९८,२०६ (२)
असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	असंयत अवहार $\frac{४}{२} = २$ प्रमत्तसंयत	असंख्य. अंकसंज्ञ आवली ४ असंख्यात
सम्यग्भिद्यादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	सम्य. अवहार $\frac{१६}{४} = ४$ असंयत अवहार	असंख्यात १६ आवली
शासादन सम्यग्दृष्टि अवहारकाल	संख्यातगुणा	शासादन अवहार $\frac{३२}{१६} = २$ सम्य. अवहार	असंख्यात ३२ आवली
संयतासंयत अवहारकाल	असंख्यातगुणा	संयतासंयत अवहार $\frac{१२८}{३२}$ शासादन अवहार	असंख्यात ३२ आवली १२८

स्थान	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण	संख्याप्रमाणा
संयतासंयत द्रव्य	असंख्यातगुणा	① $\frac{\text{संयतासंयत द्रव्य } 492}{\text{संयतासंयत अवहार } 72} = 8$ ② $\frac{\text{पल्योपम } 8443E}{\text{अवहारकालकावर्ग } 72 \times 72}$	पल्योपम 492 अंतर्भूत
सासादन द्रव्य	असंख्यातगुणा	① $\frac{\text{सासादन द्रव्य } 492}{\text{संयतासंयत } 72} = 8$ ② $\frac{\text{संयतासंयत अवहारकाल}}{\text{सासादन अवहारकाल}} = 8$ ③ $\frac{\text{पल्योपम } 8443E}{\text{सासादन अवहार } \times \text{संयतासंयत द्रव्य } 492} = 8$	108
साम्यगृहिण्या दृष्टि द्रव्य	संख्यातगुणा	① $\frac{\text{साम्यगृहिण्यादृष्टि द्रव्य } 408E}{\text{सासादन द्रव्य } 208E} = 2$ ② $\frac{\text{सासादन अवहार } 32}{\text{साम्य. अवहार } 9E} = 2$ ③ $\frac{\text{पल्योपम } 8443E}{\text{साम्य. अवहार } \times \text{सासा. द्रव्य } 208 \times 9E}$	पल्योपम 408E अंतर्भूत
असंयत साम्य गृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	① $\frac{\text{असंयत द्रव्य } 9836E}{\text{साम्य. द्रव्य } 408E} = 8$ ② $\frac{\text{साम्य. अवहार } 9E}{\text{असंयत अवहार } 8} = 8$ ③ $\frac{\text{पल्योपम } 8443E}{\text{असंयत अवहार } \times \text{साम्य. द्रव्य } 8 \times 408E} = 8$	पल्योपम 9836E अंतर्भूत
पल्योपम	असंख्यात गुणा	असंयत अवहारकाल 8	पल्योपम 8443E
सिद्ध मिथ्यादृष्टि	अनंतगुणे अनंतगुणे	अभ्रव्यसिद्धोंसे अनंतगुणा सिद्धोंसे अनंतगुणा	अनंतानंत 3 अनंतानंत 93

असंख्यात चारह (११) प्रकारका है -

- १) नाम असंख्यात → जीव अजीव, मिश्ररूप पदार्थकी असंख्यात ऐसी संज्ञा रखना।
- २) स्थापना असंख्यात → काष्ठकर्मादिकमें 'यह असंख्यात है' ऐसी स्थापना करना।
- ३) द्रव्य असंख्यात → ① आगम - असंख्यात विषयक प्राप्तका ज्ञाता उपयोगरहित जीव
 ② नो आगम - ज्ञायकशरीर, भावी तद्व्यतिरिक्त
 भूत वर्तमान भावी भविष्यकालको कर्म नोकर्म
 ज्ञाता अर्थात् उल्लेख स्थिति द्वीपसमुद्रादि
- ४) शाश्वत असंख्यात → धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय प्रदेशोंकी गणनासे अवस्थित
- ५) गणनासंख्यात → परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात, असंख्यातासंख्यात रूपसंख्या
- ६) अग्रदेशासंख्यात → योगके अविभागप्रतिच्छेदकी अपेक्षा जीवका एकप्रदेश
- ७) एकासंख्यात → लोकाकाशकी एक दिशास्थित प्रदेशापंक्ति
- ८) उभयासंख्यात → लोकाकाशकी उभय दिशाओंमें स्थित प्रदेशापंक्ति
- ९) विस्तारासंख्यात → प्रतररूप लोकाकाश
- १०) स्वसिंख्यात → धनलोक
- ११) भाव असंख्यात → ① आगम - असंख्यात विषयक प्राप्तका ज्ञाता उपयोगसे युक्त जीव
 ② नो आगम - अवधिज्ञानसे परिणत जीव

१.१२७ गतिमार्गिका -

नरकगति - मिथ्यादृष्टि - अज्ञ द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात जघन्य असंख्यातासंख्यातसे पत्न्योपमके असंख्यातव भागमात्र वर्गस्थान ऊपर जाकर और जघन्य परीतानन्तसे असंख्यात लोकमात्र वर्गस्थान नीचे जाकर दोनोंके मध्यमें जिमन्द्रदेवद्वारा हृष्ट राशि। अथवा तीनवार वर्गित संवर्गित राशिसे असंख्यातगुणी और छह द्रव्य प्रक्षिप्त राशिसे असंख्यातगुणी तीन राशि प्रकृतमें लेना चाहिए।

तीनवार वर्गित संवर्गित राशि

जघन्य असंख्यातासंख्यातका विरत्न करके और उसीको देयराशि करके उनका परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न हो पुनः उस उत्पन्न राशि को विरत्न और देयराशिरूपसे स्थापित कर उनका परस्पर गुणा करना उससे उत्पन्न महाराशिको पुनः विरत्न देयक्रमसे स्थापित कर परस्पर

गुणा करने पर तीसवार वर्गित संवर्गित राशि उत्पन्न होती है।

उपर्युक्त राशि + ¹धर्मद्रव्य प्रदेश + ²अधर्मद्रव्य प्रदेश + ³लोकप्रदेश + ⁴अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति + ⁵एक जीवके प्रदेश + ⁶वाटर प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति = एकद्रव्य प्रक्षिप्त राशि

नारक मिथ्यादृष्टि & कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के जितने समय उतने है।

पृ. 139 नारक मिथ्यादृष्टि क्षेत्रकी अपेक्षा = जगत्प्रतर = सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल \times द्वितीय वर्गमूल \times जगत्क्षेत्री

सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलको ^{उसीके} द्वितीय वर्गमूलसे गुणित करने पर जो प्रमाण आता है उतनी जगत्क्षेत्रीप्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि है।

जैसे सूच्यंगुल 96 माना उसका प्रथम वर्गमूल 4, द्वितीय वर्गमूल 2

$$4 \times 2 = 8 \text{ जगत्क्षेत्री} = \text{विष्कंभसूची}$$

अथवा सूच्यंगुल = $2 \times 2^{\frac{2}{3}}$ माना इसका प्रथम वर्गमूल $2^{\frac{2}{3}}$

घातांकित संख्याका प्रथम वर्गमूल निकालने के लिए घात को दो से भाग देना

$$2 \times 2^{\frac{2}{3}} = 2 \times 2^{\frac{1}{3}} = 2^{1+\frac{1}{3}} = 2^{\frac{4}{3}} \text{ सूच्यंगुलका प्रमाण}$$

$$\frac{2^{\frac{4}{3}}}{2} = 2^{\frac{1}{3}} \text{ प्रथम वर्गमूल}$$

द्वितीय वर्गमूल निकालने के लिए घात को 4 से भाग देना अथवा प्रथम वर्गमूलके घात को 2 से भाग देना।

$$\frac{2^{\frac{1}{3}}}{2} = 2^{-\frac{2}{3}} \text{ द्वितीय वर्गमूल अथवा } \frac{2^{\frac{1}{3}}}{2^{\frac{2}{3}}} = 2^{-\frac{1}{3}} \text{ द्वितीय वर्गमूल}$$

$$\text{विष्कंभसूची} = 2^{-\frac{2}{3}} \times 2^{\frac{1}{3}} = 2^{-\frac{2}{3} + \frac{1}{3}} = 2^{-\frac{1}{3}} = 2 \text{ विष्कंभसूची}$$

सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल \times द्वितीय वर्गमूल

अथवा विष्कंभसूची = घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल

किसी भी संख्याके प्रथम और द्वितीय वर्गमूलका गुणकार उस संख्याके घनका द्वितीय वर्गमूल प्रमाण ही होता है।

जैसे 96 का प्रथम वर्गमूल \times द्वितीय वर्गमूल = 96 के घनका द्वितीय वर्गमूल

$$4 \times 2 = 8 = 96 \text{ का घन } 7896 \text{ उसका द्वितीय वर्गमूल } 8$$

$$\frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{द्वितीय वर्गमूल}} = \frac{\text{विष्कंभसूची}}{\text{प्रथम वर्गमूल} \times \text{द्वितीय वर्गमूल}} \quad \frac{9E}{2} = C = 8 \times 2$$

किसी भी वर्गरूप संख्याको उसके द्वितीय वर्गमूल से भाग देनेपर प्रथम वर्गमूलगुणित द्वितीय वर्गमूल लब्ध आता है।

इसलिए सूच्यंगुल विष्कंभसूची मानकर खंडित, भाजित, विरलित, अपहृत द्वितीय वर्गमूलको आदिका प्रतिपादन करना चाहिए।

4) विष्कंभसूचीका प्रमाण = $\frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{असंख्यात}} = \text{असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण}$

द) कारण $\rightarrow \frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{प्रथम वर्गमूल}} = \text{प्रथम वर्गमूल उदा. 1) } \frac{9E}{2} = 8$

उदा. 2) $\frac{2 \times \frac{9}{2}}{\frac{2}{2}} = \frac{9}{2 \times \frac{2}{2}} = \frac{9 \times \frac{2}{2}}{2} = \frac{9}{2} = \frac{8}{2} = 2 \times \frac{2}{2}$

= $\frac{2}{2}$ प्रथम वर्गमूल

2) $\frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{प्रथम वर्गमूल}} = 2 \text{ प्रथम वर्गमूल उदा. 1) } \frac{9E}{\frac{8}{2}} = \frac{9E \times 2}{8} = C = 2 \times 8$

उदा. 2) $\frac{\frac{8}{2}}{\frac{2}{2}} = \frac{\frac{8}{2}}{2 \times 2} = \frac{8 \times 2}{2} \times 2 = 2 \times 2 = 2 \times 2 = \text{दो प्रथम वर्गमूल}$

3) $\frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{प्रथम वर्गमूल}} = \text{तीन प्रथम वर्गमूल उदा. 1) } \frac{9E}{\frac{8}{3}} = \frac{9E \times 3}{8} = 92 = 3 \times 8$

उदा. 2) $\frac{\frac{8}{3}}{\frac{2}{3}} = \frac{\frac{8}{3}}{2 \times 3} = \frac{8 \times 3}{2} \times 3 = 2 \times 3 = 2 \times 3 = \text{तीन प्रथम वर्गमूल}$

4) $\frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{प्रथम वर्गमूल}} = \text{असंख्यात प्रथम वर्गमूल उदा. } \frac{9E}{\frac{8}{2}} = \frac{9E \times 2}{8} = C =$

(द्वितीय वर्गमूलप्रमाण)

उदा. $\frac{\frac{4}{3}}{\frac{2}{3}} = \frac{\frac{4}{3} \times \frac{3}{3}}{\frac{2}{3} \times \frac{3}{3}} = \frac{\frac{4}{3} + \frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} = \frac{\frac{4}{3} - \frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} = \frac{\frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} = 2 = 2$

सूच्यंगुलके अंशस्थान
विष्कंभसूची
प्रथम वर्गमूलप्रमाण

6) निरुक्ति \rightarrow $\frac{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल द्वितीय वर्गमूल}} = \text{विष्कंभसूची}$
इतने प्रथम वर्गमूलप्रमाण

विष्कंभसूची होती है।

सूच्यंगुलके द्वितीय वर्गमूलप्रमाण प्रथम वर्गमूलको जोड़ देनेपर विष्कंभसूची होती है।

जैसे 98 का द्वितीय वर्गमूल 2 प्रथम वर्गमूल 8

दो बार प्रथम वर्गमूल 8 का जोड़ = $8 + 8 = 16$ विष्कंभसूची

अथवा प्रथम वर्गमूल \times द्वितीय वर्गमूल = विष्कंभसूची

$$8 \times 2 = 16$$

7) विकल्प \rightarrow द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल द्वितीय वर्गमूल}} \times \text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल} = \text{विष्कंभसूची}$$

उदा. 9) $\frac{8}{2} \times 8 = 16$ विष्कंभसूची

10) $\frac{\frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} \times \frac{2}{3} = \frac{\frac{2}{3} - \frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} = \frac{\frac{2}{3} \times \frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} = \frac{\frac{4}{3} + \frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} = \frac{\frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} = 2$ विष्कंभसूची

अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{घनांगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल द्वितीय वर्गमूल} \times \text{प्रथम वर्गमूल}} = \text{विष्कंभसूची}$$

उदा. $\frac{98^{\frac{3}{2}}}{2 \times 8} = \frac{98 \times 8}{16} = \frac{784}{16} = 49$ विष्कंभसूची

98 का घन 8058 और उसका प्रथम वर्गमूल 88.

उदा-2) सूच्यंगुलका घन = $\left(\frac{2}{23}\right)^3 = \frac{8}{23} \times 3 = 8$

घनांगुलका प्रथम वर्गमूल $\frac{2}{2}$

$$\frac{\frac{2}{2} \times \frac{2}{2}}{\frac{2}{2} \times \frac{2}{2}} = \frac{\frac{2}{2} + \frac{2}{2}}{\frac{2}{2} + \frac{2}{2}} = \frac{\frac{2}{2}}{\frac{2}{2}} = \frac{2}{2} = 2 = 2 = 2$$

विष्कमसूची

द्विगुणादिकरण विधि →

1) $\frac{\text{घनांगुलका प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल}} = \text{सूच्यंगुल}$ उदा. 1) $\frac{64}{8} = 8$ सूच्यंगुल

उदा. 2) $\frac{\frac{2}{2}}{\frac{2}{2}} = \frac{2 - \frac{2}{3}}{\frac{2}{3}} = \frac{4-2}{3} = \frac{2}{3}$ सूच्यंगुल

2) $\frac{\text{घनांगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल} \times 2} = \text{सूच्यंगुलका दूसरा भाग}$

उदा. 1) $\frac{64}{8 \times 2} = 4$ सूच्यंगुल 16 उसका दूसरा भाग $\frac{16}{2} = 8$

उदा. 2) $\frac{\frac{2}{2}}{\frac{2}{2} \times 2} = \frac{2 - \frac{2}{3}}{2} = \frac{4-2}{2} = \frac{2}{2}$ सूच्यंगुलका दूसरा भाग

3) $\frac{\text{घनांगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल} \times 3} = \text{सूच्यंगुलका तीसरा भाग}$

उदा. 1) $\frac{64}{8 \times 3} = \frac{16}{3}$

उदा. 2) $\frac{\frac{2}{2}}{\frac{2}{2} \times 3} = \frac{2 - \frac{2}{3}}{3} = \frac{4-2}{3} = \frac{2}{3}$ सूच्यंगुलका तीसरा भाग

इस प्रकार जबतक सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूलका गुणकार द्वितीय वर्गमूलके ममाणको प्राप्त होवे तबतक इसी क्रमसे ले जाना चाहिये।

पृ. 93 <

$$8) \frac{\text{धनांगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल द्वितीय वर्गमूल} \times \text{द्वितीय वर्गमूल}} = \frac{६४}{४ \times २} = ८ \text{ विष्कंभसूची}$$

उदा. ६) $\frac{2^2}{2^{\frac{2}{3}} \times 2^{\frac{2}{3}}} = \frac{2^2}{2^{\frac{2}{3} + \frac{2}{3}}} = \frac{2^2}{2^{\frac{4}{3}}} = \frac{2^2}{2^{\frac{4}{3}}} = 2^{2-1} = 2$ विष्कंभसूची

धनाधनमें अधस्तन विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{धनाधनांगुलका द्वितीय वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल} \times \text{द्वितीय वर्गमूल} \times \text{धनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} = \text{विष्कंभसूची}$$

उदा ७) १६ का धनाधन १६^३ उसका द्वितीय वर्गमूल १६^{३/२} अर्थात्

$$१६ \times १६ \times १६ = ५१२$$

१६ का घन ४०९६ उसका द्वितीय वर्गमूल ८

उपर्युक्त सूत्रानुसार

$$\frac{५१२}{४ \times २ \times ८} = \frac{५१२}{६४} = ८ \text{ विष्कंभसूची}$$

$$\frac{\text{धनाधनांगुल द्वितीय वर्गमूल}}{\text{धनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} = \text{धनांगुल प्रथम वर्गमूल}$$

$$\frac{५१२}{८} = ६४ = \text{धनांगुल ४०९६ का प्रथम वर्गमूल}$$

$$\frac{\text{धनांगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल}} = \text{सूच्यंगुल } \frac{६४}{४} = १६ \text{ सूच्यंगुल}$$

$$\frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{सू. द्वि. वर्गमूल}} = \text{विष्कंभसूची} - \frac{१६}{२} = ८ \text{ विष्कंभसूची}$$

उदा ८) सूच्यंगुलका धनाधन = $\left(\frac{४}{२}\right)^3 = \frac{४ \times ४ \times ४}{२ \times २ \times २} = \frac{६४}{८} = ८$

धनाधनांगुलका द्वितीय वर्गमूल $\frac{९}{२} = \frac{९२}{२} = ३$

उपर्युक्त सूत्रानुसार $\frac{2^3}{2^{\frac{3}{2}} \times 2^{\frac{3}{2}} \times 2} = \frac{2^3}{2^{\frac{3}{2} + \frac{3}{2}} \times 2} = \frac{2^3}{2^3 \times 2} = 2$ विष्कंभसूची

पृ. 135

द्विरूपधारामें
उपरिम विकल्प \rightarrow गृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow

$$(9) \frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{सूच्यंगुल द्वितीय वर्गमूल}} = \text{विष्कंभसूची} \quad \text{उदा. (1)} \quad \frac{9E}{2} = 4$$

$$\text{उदा. 2} \quad \frac{2 \times 2^{\frac{9}{2}}}{2^{\frac{9}{2}}} = 2 \quad \text{अथवा} \quad \frac{2^{\frac{9}{2}}}{2^{\frac{9}{2}}} = \frac{2^{\frac{9}{2}} - \frac{9}{2}}{2^{\frac{9}{2}}} = \frac{3}{2} = 2 \quad \text{विष्कंभसूची}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करनेपर भी विष्कंभसूची आती है।

उदा. (1) भागहार 2 के अर्धच्छेद 9 होता है अतः भज्यमान राशि 9E के एकवार अर्धच्छेद करनेपर 4 विष्कंभसूची आती है।

उदा. (2) 2^9 के अर्धच्छेद 9 और 2^8 के इतने अर्धच्छेद करनेपर अंतिम अर्धच्छेद 2^{8-9} आता है = $\frac{3}{2}$

सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल $2^{\frac{9}{2}}$ के अर्धच्छेद $\frac{9}{2}$ है इतनीवार $\frac{9}{2}$ के अर्धच्छेद करनेपर अंतिम अर्धच्छेद $\frac{9}{2} - \frac{9}{2} = \frac{3}{2} = 2$ विष्कंभसूची

$$2) \frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{सूच्यंगुल} \times \text{सूच्यंगुलका द्वितीय वर्गमूल}} = \text{विष्कंभसूची}$$

$$\text{उदा. (1)} \quad \frac{9E \times 9E}{9E \times 2} = 4 \quad \text{विष्कंभसूची} \quad \frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{सूच्यंगुल}} = \text{सूच्यंगुल} \quad \frac{9E \times 9E}{9E} = 9E$$

$$\text{उदा. (2)} \quad \frac{\left(\frac{3}{2}\right)^2}{2^{\frac{9}{2}} \times 2^{\frac{9}{2}}} = \frac{\frac{9}{4}}{2^{\frac{9}{2} + \frac{9}{2}}} = \frac{\frac{9}{4}}{2^9} = \frac{\frac{9}{4} - 9}{2^9} = \frac{3}{2} = 2 \quad \text{विष्कंभसूची}$$

उदा. (1) भागहारके अर्धच्छेद 9 इतनीवार $9E \times 9E$ के अर्धच्छेद करनेपर $29E, 92E, 8E, 32, 9E, 4$ अंतिम अर्धच्छेद 4 आता है

भागहार $\frac{9}{2}$ के अर्धच्छेद 9 और 2 का अंतिम अर्धच्छेद $\frac{9}{2} - 9 = \frac{3}{2}$ इतनीवार आज्यके अर्धच्छेद करनेपर

आता है अर्थात् $2 \times 2 \times 2 = 4$ विष्कंभसूची

उदा. ② $2^{\frac{4}{3}}$ के अर्धच्छेद $\frac{4}{3}$ अतः इतनीबार $2^{\frac{4}{3}}$ के अर्धच्छेद करनेपर $\frac{4}{3} - \frac{4}{3} = \frac{0}{3} = 0 = 2$ विष्कंभसूची

पृ. 960

अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्प -

$\frac{\text{घनांगुल}}{\text{प्रतरांगुल} \times \text{सूच्यंगुल द्वितीय वर्गमूल}} = \text{विष्कंभसूची}$

उदा. ① $\frac{9E^3}{9E^2 \times 2} = \frac{9E^{3-2}}{2} = \frac{9E}{2} = 4 \text{ विष्कंभसूची}$

उदा. ② $\frac{\left(\frac{8}{2}\right)^3}{\left(\frac{8}{2}\right)^2 \times \frac{9}{2}} = \frac{\frac{92}{3}}{\frac{4}{3} \times \frac{9}{2}} = \frac{\frac{92}{3}}{\frac{2+9}{2}} = \frac{\frac{92}{3}}{\frac{11}{2}} = \frac{92}{3} \times \frac{2}{11} = \frac{184}{33} = 5.575757575757576$

$= \frac{2^8}{3} = 2^{8-3} = 2^5 = 32 \text{ विष्कंभसूची}$

उक्त भागहारके जिलने अर्धच्छेद हो उतनीबार उक्त भाज्यराशिके अर्धच्छेद करनेपर भी विष्कंभसूची आती है।

$\frac{3}{2}$ भागहारके अर्धच्छेद 3 होते हैं इतनीबार $\frac{3}{2}$ भाज्यराशिके अर्धच्छेद करनेपर $\frac{3-3}{2} = \frac{0}{2} = 0 = 2$ विष्कंभसूची आती है।

घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow

$\frac{\text{घनाघनांगुल}}{\text{घनांगुल}^2 \times \text{प्रतरांगुल} \times \text{सूच्यंगुल का द्वितीय वर्गमूल}}$

उदा. ① $\frac{(9E^3)^3}{(9E^3)^2 \times 9E^2 \times 2} = \frac{9E^9}{9E^6 \times 9E^2 \times 2} = \frac{9E^9}{9E^8 \times 2} = \frac{9E^{9-8}}{2} = \frac{9E}{2} = 4 \text{ विष्कंभसूची}$

उदा. ② $\frac{(2)^3}{(2)^2 \times \left(\frac{8}{2}\right)^2 \times \frac{9}{2}} = \frac{2^3}{2^2 \times 2^4 \times \frac{9}{2}} = \frac{2^3}{2^6 \times \frac{9}{2}} = \frac{2^3}{2^5 \times 9} = \frac{2^3}{2^5 \times 3^2} = \frac{2}{2^2 \times 3^2} = \frac{2}{36} = \frac{1}{18}$

$$\frac{2^{92}}{2^L \times 2^3} = \frac{2^{92}}{2^{L+3}} = \frac{2^{92}}{2^{99}} = 2^{92-99} = 2^{-7} = \frac{1}{2^7} = \frac{1}{128} \text{ विष्कंभ सूची}$$

उक्त भागहार 2^9 के अर्धच्छेद 99 होते हैं इतनीवार 2^{92} के अर्धच्छेद करनेपर $\frac{2^{92-99}}{2} = \frac{1}{2} = 2^{-1} = 2$ विष्कंभसूचीका प्रमाण आता है।

नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि के भागहारके उत्पन्न करनेकी विधि—

अंकगणितसे जगत्श्रेणिका प्रमाण $5453E$ माना, जगत्प्रतर = $5453E^2 = 62588E628E$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी}} = \text{जगत्श्रेणी} \frac{5453E^2}{5453E} = 5453E$$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी}^2} = 2 \text{ जगत्श्रेणीयां} \frac{5453E^2}{5453E} = \frac{5453E^2 \times 2}{5453E} = 5453E \times 2$$

$$= 939062$$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी}^3} = 3 \text{ जगत्श्रेणीयां} \frac{5453E^2}{5453E} = \frac{5453E^2 \times 3}{5453E} = 5453E \times 3 = 958804$$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी} \times \text{विष्कंभसूची}} = \text{विष्कंभसूची प्रमाण जगत्श्रेणीयां} \frac{5453E^2}{5453E} = \frac{5453E^2 \times 2}{5453E}$$

$$= 5453E \times 2 = 939062 \text{ नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

भागहार $\left(\frac{5453E}{2}\right)$ का आश्रय करके प्रमाण, कारण, निरुक्ति और विकल्पका कथन करते हैं।

भागहारका प्रमाण = $\frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{असंख्याल}} = \text{जगत्श्रेणीके असंख्याल प्रथम वर्गमूल}$

$$\frac{5453E}{2} = 3268E \text{ जगत्श्रेणीका प्रथम वर्गमूल } 25E$$

$$\frac{3268E}{25E} = 92L \text{ इतने प्रथम वर्गमूलप्रमाणों भागहारका प्रमाण होता है।}$$

$$92L \times 25E = 3268E \text{ भागहार}$$

2) कारण — ६५५३६ का प्रथम वर्गमूल २५६, द्वितीय वर्गमूल १६, तृतीय ४ वर्गमूल

$$\frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{प्रथम वर्गमूल}} = \text{जगत्श्रेणीका प्रथम वर्गमूल} \frac{६५५३६}{२५६} = २५६$$

$$\frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{द्वितीय वर्गमूल}} = \text{प्रथम वर्गमूल} \times \text{द्वितीय वर्गमूल} \frac{६५५३६}{१६} = ४०९६$$

$$\frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{तृतीय वर्गमूल}} = \text{प्रथम वर्गमूल} \times \text{द्वितीय वर्गमूल} \times \text{तृतीय वर्गमूल} \frac{६५५३६}{४} = १६३८४$$

इसी विधिसे पत्योपमकी वर्गशालाकाओंके असंख्यातवे भागप्रमाण वर्गस्थान नीचे उतरनेपर

$$\frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल}} = \text{असंख्यात प्रथम वर्गमूल}$$

$$\frac{६५५३६}{३२७६८} \text{ भागहार} = २५६ \times १२८$$

जगत्श्रेणीके द्वितीय वर्गमूलसे लेकर घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलतकके वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करनेपर जितना प्रमाण आता है उतने प्रथम वर्गमूल भागहारके प्रमाणमें आ जाते हैं।

3) निरुक्ति → $\frac{\text{जगत्श्रेणीका प्रथम वर्गमूल}}{\text{घनांगुलका द्वितीय वर्गमूल}} = \text{लब्ध प्रमाण} \frac{२५६}{२} = १२८$

उपर्युक्त लब्धप्रमाण जगत्श्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालमें होते हैं।

$$\text{अथवा} \frac{\text{जगत्श्रेणी द्वितीय वर्गमूल}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} \times \text{जगत्श्रेणी द्वितीय वर्गमूल} = \text{लब्ध}$$

$$\left(\frac{१६}{२}\right) \times १६ = ८ \times १६ = १२८$$

उपर्युक्त लब्धप्रमाण जगत्श्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें आते हैं।

$$\text{अथवा} \frac{\text{जगत्श्रेणी तृतीय वर्गमूल}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} \times \frac{\text{जगत्श्रेणी तृतीय वर्गमूल}}{\text{जगत्श्रेणी द्वितीय वर्गमूल}} = \text{लब्ध}$$

$$\frac{8}{2} \times 2 \times 9E = 2 \times 8 \times 9E = 92L$$

उपर्युक्त लब्धप्रमाण जगत्प्रेणीके प्रथम वर्गमूल सामान्य अवहारकालमें आते हैं।

$$\frac{\text{घनांगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} \times \text{घनांगुल प्रथम वर्गमूल} \times \text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल} \times$$

इसी क्रमसे जगत्प्रेणीके द्वितीय वर्गमूल पर्यन्त ऊपर ऊपर अवस्थित संपूर्ण वर्गस्थानोंको गुणित करना। इसप्रकार गुणा करनेसे जो लब्ध आवे उतने प्रथम वर्गमूल सामान्य मिथ्यादृष्टि नारक अवहारकालमें होते हैं।

$$\frac{8}{2} \times 8 \times 9E = 92L$$

इतने जगत्प्रेणीके प्रथम वर्गमूल अवहारकालमें आते हैं।

विकल्प — द्विरूपवर्गधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं हैं क्योंकि जगत्प्रेणीके समान द्विरूप वर्गके प्रथम वर्गमूलको किसी भी भागहारसे अपहृत करनेपर अवहारकाल नहीं उत्पन्न हो सकता है। उसके समान जगत्प्रेणी द्विरूप घनधारामें आती है और उसका घनमूल, द्विरूपवर्गधारामें आता है। उस जगत्प्रेणीके घनमूल का प्रथम वर्गमूल अधस्तन विकल्प होता है वह संख्या अवहारकालसे भी छोटी है।

जगत्प्रेणीके समान द्विरूपवर्गधारामें जगत्प्रेणीका घनमूल आता है। वह अधस्तन विकल्प न लेकर मध्यम विकल्पमें आता है।

अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प →

$$1) \frac{\text{जगत्प्रेणी प्रथम वर्गमूल}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} \times \text{जगत्प्रेणी प्रथम वर्गमूल} = \text{अवहारकाल}$$

$$\frac{24E}{2} \times 24E = 92L \times 24E = 326EL \text{ अवहारकाल}$$

$$2) \frac{\text{जगत्प्रेणी द्वितीय वर्गमूल}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} \times \text{जगत्प्रेणी द्वितीय वर्गमूल} \times \text{जगत्प्रेणी प्रथम वर्गमूल} = \text{अवहारकाल}$$

$$\frac{9E}{2} \times 9E \times 24E = 9E \times 9E \times 24E = 92L \times 24E = 326EL \text{ अवहारकाल}$$

$$3) \frac{\text{जगत्प्रेणी तृ. वर्गमूल}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} \times \text{जगत्प्रेणी तृ. मू.} \times \text{द्वि. मू.} \times \text{प्र. मू.} = \text{अवहारकाल}$$

$$\frac{4}{2} \times 4 \times 9E \times 24E = 4 \times 9E \times 24E = 92 \times 24E = 326E < \text{अवहार काल}$$

अंतिम विकल्प

$$\frac{\text{घनांगुल प्र. मू.} \times \text{घनांगुल प्र. मू.} \times \text{घनांगुल} \times \text{घनांगुल}^2}{\text{घनांगुल द्वि. मू.}} = \text{अवहार काल} \quad \text{जगत्प्रेणी प्रथम वर्ग मूल}$$

घनाघनमें अधस्तन विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{घनलोकका प्रथम वर्गमूल}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल} \times \text{जगत्प्रेणी प्रथम वर्गमूल}} = \text{सामान्य अवहारकाल}$$

$$\text{घनलोक} = 8443E^3 \quad \text{घनलोकका प्रथम वर्गमूल} = 24E^3$$

$$\frac{24E^3}{2 \times 24E} = \frac{24E^2}{2} = \frac{8443E}{2} = 326E < \text{अवहारकाल}$$

घनलोक द्वि. मू.

$$\frac{\text{घनलोक द्वि. मू.}}{\text{घनांगुल द्वि. मू.} \times \text{जगत्प्रेणी प्र. मू.}} \times \text{घनलोक द्वि. मू.} = \text{अवहारकाल}$$

$$\frac{9E^3}{2 \times 24E} \times 9E^3 = \frac{9E \times 9E \times 9E}{2 \times 9E \times 9E} \times 9E \times 9E \times 9E$$

$$= \frac{9E \times 9E \times 9E \times 9E}{2} = \frac{8443E}{2} = 326E < \text{अवहारकाल}$$

गृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{जगत्प्रेणीसमान द्विरूपवर्गधारका वर्गका वर्ग}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल} \times \text{जगत्प्रेणीसमान द्विरूपवर्गधारका वर्ग}} = \text{अवहारकाल}$$

यहांपर अंकगणितमें उदाहरणरूपसे जगत्प्रेणीको 8443E माना है किन्तु यह 8443E द्विरूपवर्गधारामें आता है और जगत्प्रेणी द्विरूपवर्गधारामें आती है अतः उपर्युक्त सूत्रके अनुसार अंक नहीं लिख सकते हैं। इसलिए इसको समझने के लिए अलगसे अंकगणित मानना पड़ेगा और अलग अंक माननेपर भागहारका पूर्वोक्त प्रमाण नहीं आयेगा। यहां जगत्प्रेणीका प्रमाण 805E माना, घनांगुल का द्वितीय वर्गमूल 2

अवहारकालको प्रमाण आता है। अंकगणितसे भागहारका अर्धच्छेद 9 भाज्यराशि 809E का एकबार अर्धच्छेद करनेपर 208C अवहारकालका प्रमाण आता है।

$$2) \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्त्रेणी} \times \text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} = \text{अवहारकाल}$$

$$\frac{809E^2}{809E \times 2} = \frac{809E}{2} = 208C \text{ अवहारकाल}$$

अथवा $\frac{8443E^2}{8443E \times 2} = 320E$
अवहार

भागहारके अर्धच्छेद 809E x 2 के अर्धच्छेद 9 2 + 9 = 93 इतनी बार भाज्य राशि 809E के अर्धच्छेद करनेपर 208C अवहारकालका प्रमाण आता है। भागहारके अर्धच्छेद = जितने वर्गस्थान उपर गये उतनीबार रखकर परस्पर गुणा करना

$$\frac{2}{9} = 2 - 9 = \text{लब्ध} \times \text{जगत्त्रेणी के अर्धच्छेद} + \text{घनांगुल के द्वितीय वर्गमूल के अर्धच्छेद}$$

$$\frac{2}{9} = 2 - 9 = 9 \times 92 \neq 9 = 93$$

घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प →

$$9) \frac{\text{घनलोक}}{\text{जगत्प्रतर} \times \text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} = \text{अवहारकाल}$$

$$\frac{809E^3}{809E^2 \times 2} = \frac{809E^{3-2}}{2} = \frac{809E}{2} = 208C \text{ अवहार काल}$$

$$\text{अथवा} \frac{8443E^3}{8443E^2 \times 2} = \frac{8443E}{2} = 320E \text{ अवहारकाल}$$

$$2) \frac{\text{घनलोक}^2}{\text{घनलोक} \times \text{जगत्प्रतर} \times \text{घनांगुल द्वि. मू.}} = \text{अवहारकाल}$$

$$\frac{(809E^3)^2}{809E^3 \times 809E^2 \times 2} = \frac{809E^6}{809E^5 \times 2} = \frac{809E^{6-5}}{2} = \frac{809E}{2} = 208C$$

$$\text{अथवा} \frac{(8443E^3)^2}{8443E^3 \times 8443E^2 \times 2} = \frac{8443E^6}{8443E^5 \times 2} = \frac{8443E}{2} = 320E$$

भागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त मंज्यमान राशि के अर्धच्छेद करने पर अवहारकालका प्रमाण आता है।

भागहारके अर्धच्छेद = धनलोकके अर्धच्छेद + जगत्प्रतरके अर्धच्छेद + घनांगुल द्वि.मू. के अर्धच्छेद = $3E + 28 + 9 = 49$ अर्धच्छेद

४०९६ के १२ अर्धच्छेद तो उसके धनके तिगुने अर्धच्छेद अतः $92 \times 3 = 3E$

उसके वर्गके दुगुने अर्धच्छेद अतः $92 \times 2 = 28$

दुसरे अंकगणितसे-

$$48 + 32 + 9 = 49 \text{ अर्धच्छेद}$$

घनाधनधारामें अर्धच्छेद निकालनेकी रीति →

जितने वर्गस्थान ऊपर गये हो उतनी वर्गशलाकाओं प्रमाण दो अंक रखकर परस्पर गुणा करना

देय विरलन = $(\text{लब्ध} \times 3 - 9) \times \text{जगत्त्रेणीके अर्धच्छेद} + \text{घनांगुल द्वि.मू. अर्धच्छेद}$

$$\frac{2}{9} = \{(2 \times 3) - 9\} \times 92 + 9 =$$

$$\text{प्रथम उदाहरण} - 6 - 9 = 4 \times 92 + 9 = 40 + 9 = 49$$

अथवा दुसरा उदाहरण

$$\frac{2}{9} = (2 \times 3) - 9 \times 92 + 9 = 6 - 9 = 4 \times 92 = 40 + 9 = 49$$

जगत्प्रतर = नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि
अवहारकाल

$$\frac{4543E \times 4543E}{324E} = 939062 \text{ नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$$

पृ. १५१ अंशपर ^१ स्वच्छित, ^२ भाजित, ^३ विरलित और ^४ अपहतकी प्ररूपणा पहलेके समान करना चाहिये।

५) प्रमाण → $\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{असंख्यात}} = \text{असंख्यात जगत्त्रेणी प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि}$

६) कारण → $\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्त्रेणी}} = \text{जगत्त्रेणी} \frac{4543E^2}{4543E} = 4543E \text{ जगत्त्रेणी}$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी}} = \text{दो जगत्श्रेणियां} \frac{६५५३६^2}{६५५३६} = \frac{६५५३६^2 \times 2}{६५५३६} = ६५५३६ \times 2$$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी}} = \text{तीन जगत्श्रेणियां} \frac{६५५३६^2}{६५५३६} = \frac{६५५३६^2 \times 3}{६५५३६} = ६५५३६ \times 3$$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी}} = \frac{\text{असंख्यात}}{\text{विष्कंभसूचीप्रमाण}} \frac{६५५३६^2}{६५५३६} = \frac{६५५३६^2 \times 2}{६५५३६} = ६५५३६ \times 2$$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी}} = \frac{\text{असंख्यात}}{\text{जगत्श्रेणियां}} \frac{६५५३६^2}{६५५३६} = \frac{६५५३६^2 \times 2}{६५५३६} = ६५५३६ \times 2$$

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्श्रेणी}} = \frac{\text{असंख्यात}}{\text{विष्कंभसूची}} \frac{६५५३६^2}{६५५३६} = \frac{६५५३६^2 \times 2}{६५५३६} = ६५५३६ \times 2$$

$$= 939062$$

७) निरुक्ति →

$$\frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{जगत्श्रेणी}} = \frac{\text{असंख्यात}}{\text{असंख्यात}} \frac{६५५३६}{६५५३६} = \frac{६५५३६ \times 2}{६५५३६} = 2$$

इतनी जगत्श्रेणियां जगत्प्रतरके असंख्यातवे भागमें ली है।
अथवा विष्कंभसूचीका जितना प्रमाण है उतनी जगत्श्रेणियां जगत्प्रतरके असंख्यातवे भागमें ली है।

विकल्प → द्विरूपधारामें अधस्तन विकल्प संभव नहीं है।
अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प -

$$१) \frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{अवतारकाल}} \times \text{जगत्श्रेणी} = \text{नारक मिथ्यादृष्टि} \frac{६५५३६ \times ६५५३६}{३२७६८} = ६५५३६ \times 2$$

$$\text{विष्कंभसूची} \times \text{जगत्श्रेणी} = \text{नारक मिथ्यादृष्टि} \frac{६५५३६ \times २}{३२७६८} = ९३९०६२$$

$$२) \frac{\text{जगत्श्रेणी द्वि.मू.}}{\text{अवतारकाल}} \times \text{जगत्श्रेणी द्वि.मू.} \times \text{जगत्श्रेणी त्रयम वर्गमूल} \times \text{जगत्श्रेणी} = \text{नारक मिथ्या.}$$

$$\frac{१६}{३२७६८} \times १६ \times २५६ \times ६५५३६ = \frac{६५५३६ \times ६५५३६}{३२७६८} = २ \times ६५५३६ = १३९०६२$$

$$३) \frac{\text{जगत्श्रेणी तृ.मू.}}{\text{अवतारकाल}} \times \text{जगत्श्रेणी तृ.मू.} \times \text{जगत्श्रेणी द्वि.मू.} \times \text{जगत्श्रेणी प्र.मू.} \times \text{जगत्श्रेणी} = \text{नारक मिथ्यादृष्टि}$$

$$\frac{४}{३२७६८} \times ४ \times १६ \times २५६ \times ६५५३६ = \frac{६५५३६ \times ६५५३६}{३२७६८} = ९३९०६२ \text{ ना.मि.}$$

धनाद्यनमें अधस्तन विकल्प -

$$\frac{\text{धनलोक}}{\text{जगत्प्रती X अवहारकाल}} = \text{नारक मिथ्यादृष्टि} \frac{E^3}{E^3 \times 326E} = \frac{E^2}{326E}$$

939062 नारक मिथ्या.

$$\frac{\text{धनलोक प्रथम वर्गमूल} \times \text{धनलोक प्रथम वर्गमूल}}{\text{जगत्प्रती X अवहारकाल}} = \text{नारक मिथ्यादृष्टि}$$

$$\frac{24E^3 \times 24E^3}{E^3 \times 326E} = \frac{24E^6}{24E^2 \times 326E} = \frac{24E^4}{326E} = \frac{24E^3}{326E} =$$

939062 नारक मिथ्यादृष्टि

उपरिम विकल्प → द्विरूपमें गृहीत उपरिम विकल्प -

$$\frac{\text{जगत्प्रतरके समान द्विरूपवर्गके वर्गका वर्ग}}{\text{जगत्प्रतर समान द्विरूपवर्ग X अवहारकाल}} = \text{नारक मिथ्यादृष्टि}$$

यहांपर 809E जगत्प्रती मानकर उदाहरण लेना चाहिये। 809E का वर्ग 809E x 809E अर्थात् 24E³ उसके समान द्विरूपवर्ग 24E उसके वर्गका वर्ग E³ 24E²

$$\frac{E^3 \times 24E^2}{24E \times 208E} = \frac{24E^5}{24E \times 208E} = \frac{24E^3}{208E} = \frac{24E \times E^3}{208E} = \frac{24E^3}{208E}$$

1952 = नारक मिथ्यादृष्टि

$$\frac{\text{जगत्प्रतरके समान द्विरूपवर्गके वर्गका वर्ग}}{\text{जगत्प्रतर समान द्विरूपवर्ग}} = \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{जगत्प्रतर}} \frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{अवहारकाल}} = \text{ना. मि.}$$

$$\frac{E^3 \times 24E^2}{24E} = \frac{24E \times E^3 \times 24E}{24E \times 208E} = 1952 \text{ नारक मि.}$$

उक्त भागहार (24E x 208E) के अर्धच्छेद 2+99 = 101 होते हैं। उतने भाज्यराशि E³ 24E² के अर्धच्छेद करनेपर 1952 नारक मिथ्यादृष्टि राशि आती है।

भागहारके अर्धच्छेद = जगत्प्रतरसमान द्विरूपवर्गके अर्धच्छेद + अवहारकालके अर्धच्छेद
2+99 = 101

अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्प =

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}^2}{\text{अवहारकाल}} = \text{नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि} \frac{EY43E^2}{320EL} = 939062$$

$$\text{अथवा } \frac{24E \times EY43E}{208L} = 1952$$

जगत्प्रेणीके अर्धच्छेद - घनांगुलके द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद = लब्धि

$$96 - 9 = 95$$

इतनीवार जगत्प्रतरके अर्धच्छेद करनेपर भी नारक मिथ्यादृष्टि राशि आती है। $EY43E^2$ के 95 अर्धच्छेद करनेपर 939062 प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि राशि आती है।

$$\frac{\text{जगत्प्रतर}^2}{\text{जगत्प्रतर} \times \text{अवहारकाल}} = \text{नारक मिथ्या} \frac{(EY43E^2)^2}{EY43E^2 \times 320EL} = \frac{EY43E^2}{EY43E^2 \times 320EL}$$

$$= \frac{EY43E^2}{320EL} = 939062 \text{ नारक मिथ्यादृष्टि राशि}$$

उक्त भागहार $(EY43E^2 \times 320EL)$ के अर्धच्छेद $32 + 95 = 127$ होते हैं।

इतनीवार $EY43E^2$ के अर्धच्छेद करनेपर 939062 नारक मिथ्या राशि आती है।

घनाघनमें गृहीत उपरिम विकल्प

$$\frac{\text{घनलोक}^2}{\text{जगत्प्रतर}^2 \times \text{अवहारकाल}} = \frac{(EY43E^3)^2}{(EY43E^2)^2 \times 320EL} = \frac{EY43E^6}{EY43E^4 \times 320EL}$$

$$\frac{EY43E^2}{320EL} = \frac{EY43E^2}{320EL} = 939062 \text{ नारक मिथ्यादृष्टि}$$

उक्त भागहार $(EY43E^6 \times 320EL)$ के अर्धच्छेद $96 \times 8 = 768 = 768 + 95 = 863$ होते हैं।

इतनीवार उक्त मज्यमान राशिके $(EY43E^6)$ अर्धच्छेद करनेपर 939062 प्रमाण नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि आती है।

जगत्प्रतरके समान द्विरूपवर्गके वर्गके वर्गके असंख्यातवे भागरूप, जगत्प्रतरके असंख्यातवे भागरूप और घनलोकके असंख्यातवे भागरूप नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशिके द्वारा गृहीत गृहीत और गृहीतगुणकारका कथन करना चाहिए। जैसे जगत्प्रेणीका प्रमाण 105E माना तो जगत्प्रतरका प्रमाण

$409E^2$ होता है उसके समान द्विरूपवर्ग $24E$ होता है उसके वर्गका वर्ग अर्थात् $6443E^2$ इसके असंख्यातवे भागरूप भिन्नाङ्किकी नारक राशि है (939062 अथवा 1952)

पृ. 19E

सासादन सम्यग्रष्टि गुणस्थानसे असंयत सम्यग्रष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें नारकी जीव पल्योपमके असंख्यातवे भाग है।

सामान्यसे कही गई असंयत सम्यग्रष्टि जीवराशिका असंख्यातवे बहुभागप्रमाण देवोंसम्बन्धी असंयत सम्यग्रष्टि जीवराशि है और शेष तीन गतिसंबन्धी असंयत सम्यग्रष्टि जीवराशि असंख्यातवे भागप्रमाण है।

सामान्य असंयत सम्यग्रष्टि जीवराशि = आवलीका असंख्यातवा भाग
तीन गतिसंबन्धी असंयत सम्यग्रष्टि जीवराशि

$\frac{9E348}{409E} = 8$ इसका विरलन करके सामान्य असंयत राशिको समान खंड करके देना

$409E \quad 409E \quad 409E \quad 409E$
9 9 9 9

एक विरलनके प्रति प्राप्त प्रमाण, तीन गतिसंबन्धी असंयत जीवराशिका है शेष प्रमाण $9E348 - 409E = 92244$ देवगति संबन्धी असंयत जीवराशिका प्रमाण है।

उपरिम विरलनमात्र तीन गतिसंबन्धी असंयत सम्यग्रष्टि जीवराशिको देव असंयत सम्यग्रष्टि जीवराशिके प्रमाणसे करके बतलाते हैं। अर्थात् पल्योपमको कितने भागहरसे भाग देनेपर देव असंयत सम्यग्रष्टि राशिका प्रमाण आता है उस भागहरका प्रमाण निकालते है।

एक कम अधस्तन विरलनप्रमाण तीन गतिसंबन्धी असंयत सम्यग्रष्टि द्रव्यको मिलानेपर देव असंयत सम्यग्रष्टि जीवराशिका प्रमाण प्राप्त होता है।

$409E + 409E + 409E = 92244$ उपरिम विरलनमें एक कम अधस्तन स्थान जानेपर अवहारकालमें प्रक्षेपबालाका प्राप्त होती है। पुनः एक कम अधस्तन विरलनमात्र स्थान जानेपर अवहारकालमें दूसरी प्रक्षेपबालाका प्राप्त होती है इसीप्रकार पुनः पुनः करनेपर आवलीके असंख्यातवे भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेप बालाका प्राप्त होती है क्योंकि अधस्तन विरलनसे उपरिम विरलन असंख्यात गुणा है।

१९३८४ १९३८४ १९३८४ १९३८४

उपरिम
विरलन

४०९९ ४०९९ ४०९९ / १ प्रक्षेप शलाका $\frac{१०९९}{३}$ प्रक्षेप शलाका

प्रमाणराशि

फलराशि

इच्छाराशि

अधस्तन विरलन-१ १ अक्षर प्रक्षेपशलाका उपरिम विरलन में कितनी प्रक्षेप शलाका?

$$४-१=३$$

१

४

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{१ \times ४}{३} = \frac{४}{३} \text{ प्रक्षेपशलाका}$$

सामान्य असंयत अवहारकाल + प्रक्षेपशलाका = देव असंयत अवहारकाल

$$४ + \frac{४}{३} = \frac{१२+४}{३} = \frac{१६}{३}$$

पल्योपम ÷ देव असंयत अवहारकाल = देव असंयत सम्यग्दृष्टि द्रव्य

$$९५५३९ \div \frac{१६}{३} = १२२८८ \text{ देव असंयत सम्यग्दृष्टि द्रव्य।}$$

सामान्य असंयत राशि - देव असंयत राशि = तीन गतिसंबंधी असंयत द्रव्य

$$१९३८४ - १२२८८ = ७०९६ \text{ तीन गतिसंबंधी असंयत सम्यग्दृष्टि द्रव्य}$$

पृ. १५९

अक्षरकाल

पूर्वस्थानसे कितना गुणा

१) देव असंयत सम्यग्दृष्टि	
२) देव सम्यग्मिथ्यादृष्टि	आवलीका असंख्यातवा भाग गुणित
३) देव सासादन सम्यग्दृष्टि	संख्यात गुणित
४) तिर्यच असंयत सम्यग्दृष्टि	आवलीका असंख्यातवा भाग गुणित
५) " सम्यग्मिथ्यादृष्टि	" " " "
६) " सासादन सम्यग्दृष्टि	संख्यात गुणित
७) " संयतासंयत	आवलीका असंख्यातवा भाग गुणित
८) नारक असंयत सम्यग्दृष्टि	" " " "
९) नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि	" " " "
१०) नारक सासादन सम्यग्दृष्टि	संख्यात गुणित

अपने अपने अवहारकालसे पल्योपमके भाजित करनेपर अपने-अपने द्रव्यका प्रमाण आता है।

प्रथम पृथिवीमें नारकियोंका द्रव्यप्रमाण =

सामान्य नारकियोंका द्रव्यप्रमाण - असंख्यातवा भाग

सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि - छहों नरकोंकी मिथ्यादृष्टि जीवराशि =
प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण

सामान्य विष्कंभसूची - $\frac{\text{द्वितीयादि पृथिवी मिथ्यादृष्टि}}{\text{जगत्प्रेणी}} = \text{प्रथम नरक विष्कंभसूची}$

$$2 - \frac{32258}{85438} = 2 - \frac{83}{928} = \text{समच्छेद करनेपर}$$

$$\frac{258-83}{928} = \frac{175}{928} = \text{प्रथम पृथिवी नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची}$$

	वास्तविक प्रमाण	सांकेतिक संख्या
द्वितीय पृथिवी मिथ्यादृष्टि	जगत्प्रेणी ÷ बारहवा वर्गमूल	$85438 \div 8 = 10679.75$
तृतीय पृथिवी	जगत्प्रेणी ÷ दसवा वर्गमूल	$85438 \div 10 = 8543.8$
चवथी	जगत्प्रेणी ÷ आठवा वर्गमूल	$85438 \div 9 = 9493.11$
पाचवी	जगत्प्रेणी ÷ छहवा वर्गमूल	$85438 \div 32 = 2670.87$
छठी	जगत्प्रेणी ÷ तीसरा वर्गमूल	$85438 \div 27 = 3164.37$
सातवी	जगत्प्रेणी ÷ दूसरा वर्गमूल	$85438 \div 928 = 92.07$
		32258

प्रमाण फल इच्छा
9 जगत्प्रेणी कम करनेपर एक शलाका कम जगत्प्रेणी इच्छा
कुछ कम बारहवा वर्गमूल कम करनेपर कितनी शलाका कम?

$$\text{कुछ कम बारहवा वर्गमूल} = \frac{928}{83} \quad \text{जगत्प्रेणी } 85438$$

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 85438}{\frac{928}{83}} = \frac{85438 \times 83}{928} = \frac{83}{928}$$

सामान्य विष्कंभसूची - अर्थात् शलाका = प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

$$2 - \frac{83}{928} = \frac{258-83}{928} = \frac{175}{928}$$

जगत्प्रेणी ÷ प्र.पृ. मिथ्या. विष्कंभसूची = प्र.पृ. मिथ्यादृष्टि अवतारकाल

$$EYUZE \div 953 = \frac{EYUZE \times 92L}{953} = \frac{L3LL60L}{953} \text{ प्र. पृ. मिथ्यादृष्टि अवलोकन}$$

छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यका आप्रय लेकर अवलोकन प्रक्षेपशलाकाए = उपरिम विरलन = सामान्य ना. मि. अवलोकन (326EL)
 देयशाही = जगत्प्रतरको समान खण्ड करके देना (EYUZE²)

उपरिम विरलन	939062	139062	939062	139062	— सामान्य नारक मिथ्यादृष्टिका प्रमाण
	9	9	9	9	— 326EL बार

सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि = अधस्तन विरलन = विष्कंभसूची X कुछ कम
 द्वितीयादि छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि बारहवा वर्गमूल

$$\frac{939062}{3224E} = \frac{24E}{E3} = 8 \frac{4}{E3} \text{ अर्थात् } 2 \times \frac{92L}{E3}$$

अधस्तन विरलन

अधस्तन विरलनपर देयद्रव्य = उपर एक विरलनपर स्थित द्रव्य समान खण्ड
 $939062 \div \frac{24E}{E3} = 939062 \times \frac{E3}{24E} = 3224E$ करके देना

अधस्तन विरलन	3224E	3224E	3224E	3224E	267L
	9	9	9	9	$\frac{8}{E3}$

एक विरलनके प्रति द्वितीयादि छह पृथिवीसंबंधी नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है। उसे उपरिम विरलनके प्रत्येक एकके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमेंसे पृथक् पृथक् निकाल देने पर उपरिम विरलन पर प्रथम पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवशाशिका प्रमाण प्राप्त होता है। द्वितीयादि छह पृथिवीगत नारक मिथ्यादृष्टि जीवशाशिका उपरिम विरलनमात्र होती है।

$$939062 - 3224E = 9449E \text{ प्रथम पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि}$$

प्र. पृ. मि.	9449E	9449E	9449E	9449E	
	9	9	9	9	— 326EL बार

द्वितीयादि मि.	3224E	3224E	3224E	3224E	
	9	9	9	9	— 326EL बार

अब उपरिम विरलनप्रमाण छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि द्रव्यको प्रथम पृथिवी

गत मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणरूप करके अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाए लाने हैं।

एक कम अधस्तन विरलन x द्वितीयादि छह पृथिवी मिथ्यादृष्टि = प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि

$$\frac{24E-9}{E3} \times 3224E = \frac{24E-63}{E3} = \frac{993}{E3}$$

$$\frac{993}{E3} \times 3224E = 18876E$$

प्रमाण	फल	इच्छाराशि
अधस्तन विरलन-9 x द्वितीयादि छह मिथ्यादृष्टि	9 अवहार प्रक्षेप शलाका	उपरिम विरलन x द्वितीयादि छह पृथिवीगत मिथ्यादृष्टि कितनी अवहार प्रक्षेप ?
$\frac{993}{E3} \times 3224E$	9	$326E \times 3224E$

$$\frac{326E \times 3224E}{\frac{993}{E3} \times 3224E} = \frac{326E \times E3}{993}$$

$\frac{20E83 \cancel{C}8}{993}$ अवहार प्रक्षेपशलाका

सामान्य अवहारकाल + अवहार प्रक्षेपशलाका = प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

$$\frac{326E \times 3224E}{993} + \frac{20E83 \cancel{C}8}{993} = \frac{326E \times 993 + 20E83 \cancel{C}8}{993}$$

$$= \frac{432 \cancel{C}60 \cancel{C}}{993} \text{ प्र.पु. मिथ्या. अवहारकाल}$$

द्वितीय पृथिवीके द्रव्यके धरानेके प्रति विष्कंभसूचीमें अपनीयमान संख्याका प्रमाण →

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि
9 जगत्प्रेणी धरानेके प्रति	9 संख्या कम होती है	द्वितीय पृथिवीके द्रव्य धरानेके प्रति कितनी संख्या कम होगी
६५५३६	9	९६३८४

फल x इच्छा = $\frac{9 \times 963 \cancel{C}8}{65536} = 9$ अपनीयम संख्या

अर्थात् जगत्प्रेणीके वारहवे वगमूलसे एक भाजित एक अपनीयनरूप संख्याका प्रमाण

सामान्य विष्कम्भसूची - अपनयन संख्या = द्वितीय पृथिवी के बिना शेष छह पृथिवीसंबंधी मिथ्याहासि विष्कम्भसूची

$$2 - \frac{9}{8} = \frac{6}{8} \neq 1$$

	अपनीयमान संख्या	
तीसरी पृथिवी	$\frac{9}{\text{जगत्प्रेणीका दशावा वर्गमूल}}$	$\frac{9}{8}$
चौथी पृथिवी	$\frac{9}{\text{जगत्प्रेणीका उन्नावा वर्गमूल}}$	$\frac{9}{14}$
पाचवी पृथिवी	$\frac{9}{\text{जगत्प्रेणीका छठा वर्गमूल}}$	$\frac{9}{32}$
छठी पृथिवी	$\frac{9}{\text{जगत्प्रेणीका तीसरा वर्गमूल}}$	$\frac{9}{27}$
सातवी पृथिवी	$\frac{9}{\text{जगत्प्रेणीका दूसरा वर्गमूल}}$	$\frac{9}{2}$

पृ. 985

1) जगत्प्रेणी \times उपर्युक्त विष्कम्भसूची = दूसरी पृथिवीके द्रव्यके बिना छह पृथिवियोंका
 $84438 \times \frac{6}{8} = 994866 =$ " " " " " मिथ्याहासि द्रव्य

जगत्प्रेणी \div उपर्युक्त विष्कम्भसूची = दूसरी पृथिवीके अवहारकालके बिना शेष पृथिवी
 $84438 \div \frac{6}{8} = \frac{84438 \times 8}{6} = \frac{2829888}{6} =$ " " योंका अवहारकाल

2) छह पृथिवीसंबंधी विष्कम्भसूची - तृ.पृ. अपनीयमान संख्या = दूसरी तीसरी पृथिवीके
 $\frac{6}{8} - \frac{9}{8} = \frac{6 \times 2}{8 \times 2} - \frac{9}{8}$ बिना शेष पांच पृथिवीसंबंधी
विष्कम्भसूची

$= \frac{12-9}{8} = \frac{3}{8}$ दूसरी तीसरीके बिना शेष पांच पृथिवियोंकी विष्कम्भसूची

जगत्प्रेणी \div पांच पृथिवियोंकी विष्कम्भसूची = दूसरी तीसरी के बिना शेष पृथिवियोंका
 $84438 \div \frac{3}{8} = \frac{84438 \times 8}{3} = \frac{528224}{3}$ " " " " " अवहारकाल

जगत्प्रेणी \times उपर्युक्त पांच पृथिवियोंकी विष्कम्भसूची = दूसरी तीसरी के बिना शेष पृथिवियोंका
 $84438 \times \frac{3}{8} = 1952 \times 93 = 906,894 =$ " " " " " अब मिथ्याहासि द्रव्य

3) उपर्युक्त पांच पृथिवीसंबंधी विष्कम्भसूची - चौथी पृथिवीकी अपनयन संख्या = दूसरी तीसरी
और चौथी पृथिवीको छोड़कर शेष चार पृथिवियोंकी विष्कम्भसूची

$$\frac{93}{2} - \frac{9}{98} = \frac{93 \times 2}{2 \times 2} - \frac{9}{98} = \frac{28-9}{98} = \frac{24}{98} \text{ चार पृथिवियों की विष्कंभ सूची}$$

जगत्श्रेणी = चार पृथिवियों की विष्कंभसूची = ^{उपर्युक्त} चार पृथिवियों का अवहारकाल इ. ती. चौ. के बिना

$$84438 \div \frac{24}{98} = \frac{84438 \times 98}{24} = \frac{9052408}{24} \text{ चार पृथिवियों का मि. अवहारकाल}$$

जगत्श्रेणी x चार पृथिवियों की विष्कंभसूची = ^{उपर्युक्त} चार पृथिवियों का मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$84438 \times \frac{24}{98} = 84438 \cdot 2058 \times 24 = 902800 \text{ इ. ती. चौ. के बिना चार पृथिवियों का मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

७) उपर्युक्त चार पृथिवियों की विष्कंभसूची - पाचवी पृथिवी की अपनयन संख्या = पहली, छठी सातवी पृथिवी संबंधी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

$$\frac{24}{98} - \frac{9}{32} = \frac{24 \times 2}{98 \times 2} - \frac{9}{32} = \frac{40-9}{32} = \frac{31}{32} \text{ उपर्युक्त तीन पृथिवियों की विष्कंभसूची}$$

जगत्श्रेणी ÷ उपर्युक्त तीन पृथिवियों की विष्कंभसूची = उपर्युक्त तीन पृथिवियों का अवहारकाल

$$84438 \div \frac{31}{32} = \frac{84438 \times 32}{31} = \frac{2056942}{31} \text{ उपर्युक्त तीन पृथिवियों का अवहारकाल}$$

जगत्श्रेणी x उपर्युक्त तीन पृथिवियों की विष्कंभसूची = प्रथम, छठी, सातवी पृथिवियों का मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$\frac{84438 \times 31}{32} = 2082 \times 31 = 900342$$

८) उपर्युक्त तीन पृथिवियों की विष्कंभसूची - छठी पृथिवी की अपनयन संख्या = पहली और सातवी पृथिवी की मि. विष्कंभसूची

$$\frac{31}{32} - \frac{9}{54} = \frac{31 \times 2}{32 \times 2} - \frac{9}{54} = \frac{51-9}{54} = \frac{42}{54} \text{ पहली, सातवी " " "}$$

जगत्श्रेणी ÷ उपर्युक्त दो पृथिवियों की विष्कंभसूची = उपर्युक्त दो पृथिवियों का अवहारकाल

$$84438 \div \frac{42}{54} = \frac{84438 \times 54}{42} = \frac{3958308}{42} = \text{" " " "}$$

जगत्श्रेणी x उपर्युक्त दो पृथिवियों की विष्कंभसूची = उपर्युक्त दो पृथिवियों का मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$84438 \times \frac{42}{54} = 29024 \times 42 = 993228 \text{ " " " "}$$

8) उपर्युक्त दो पृथिवीसंबंधी विष्कंभसूची - सातवी पृथिवीकी अपनयन संख्या = प्रथम पृथिवीसंबंधी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

$$\frac{56}{58} - \frac{9}{92} = \frac{56 \times 2 - 9}{58 \times 2 - 92} = \frac{958 - 9}{92} = \frac{953}{92} \text{ प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची}$$

जगत्श्रेणी ÷ प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूची = प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

$$\frac{54438}{92} = \frac{54438 \times 92}{953} = \frac{5006296}{953} \text{ प्र. पृ. मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

जगत्श्रेणी x प्रथम पृथिवीकी विष्कंभसूची = प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$54438 \times \frac{953}{92} = 592 \times 953 = 56296 \text{ " " " "}$$

अब सामान्य अवहारकालका जितना प्रमाण है उतनीवार यह पृथिवियोंके द्रव्यका आश्रय लेकर प्रत्येक पृथिवीके प्रति प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं लाते हैं।

9) दूसरी पृथिवीकी आश्रय लेकर अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं →

प्रथम पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य = लब्ध
द्वितीय पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य = उक्त लब्धप्रमाण स्थानोंपर स्थापित दूसरी

पृथिवीसंबंधी मिथ्यादृष्टि द्रव्य = प्रथम पृथिवीसंबंधी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

उदा.

$$\frac{56296}{953} = 59 \frac{492}{953} = 59 \frac{9}{32} \quad 953 \times 59 \frac{9}{32} = 56296 \text{ प्र. पृ. मि. द्रव्य.}$$

$$953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32}$$

9 अवहार प्रक्षेप शलाका

$$953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32} + 953 \times 9 \frac{9}{32}$$

1028/95380
2 अवहार प्रक्षेप शलाका

ऐसे सामान्य अवहारकालमात्र बार स्थापित द्वितीय पृथिवीसंबंधी मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें जगत्श्रेणीके असंख्यातवे भागमात्र अवहारकाल प्रक्षेप शलाकाएं प्राप्त होती हैं। इसको त्रैशिक विधिसे लाते हैं।

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि
जंगलनेणी बारहवा वर्गमूल x प्र.पृ. मि. : विष्कंभसूची इतने स्थान जाकर	9 अव. प्रक्षेप शलाका	सामान्य अवहारकालमें कितनी प्रक्षेपशलाका
$8 \times 193 = \frac{153}{92}$	9	32664

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 32664}{953} = \frac{32664 \times 32}{953} = \frac{10844064}{953}$$

$$= \frac{4833}{953}$$

दूसरी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं
विरलम = $4833 \frac{10}{953}$

देय राशि = सामान्य अवहार x द्वि.पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य = इनको समान
रखण्ड करके देनेपर एकै पर प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य माता है।
= $32664 \times 95368 = 43660092$

$$43660092 \div \frac{10844064}{953} = \frac{43660092 \times 953}{10844064} = 38196$$

$$\begin{matrix} 38196 & 38196 & 38196 & 38196 \\ 9 & 9 & 9 & 9 \end{matrix} \dots \dots \dots 4833 \frac{10}{953} \text{ बार}$$

2) तीसरी पृथिवीका आश्रय लेकर अवहारकाल प्रक्षेप शलाकाएं

प्र.पृ. मि. द्र. = लब्ध प्रमाण तृ.पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य = प्र.पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य
तृ.पृ. मि. द्र.

$$\frac{38196}{1952} = 92 \frac{492}{1952} = 92 \frac{9}{98} \quad \frac{1952 \times 38196}{1952} = 38196 \text{ प्र.पृ.}$$

$$\begin{matrix} 1952 & 1952 & 1952 & 1952 & 1952 & 1952 & 1952 & 1952 & 1952 & 1952 & 1952 \\ 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 \end{matrix}$$

$$\begin{matrix} 1952 & 1952 & 1952 & 1952 & 1952 \\ 9 & 9 & 9 & 9 & 9 \end{matrix} \dots \dots \dots 32664 \text{ बार}$$

एक अवहार प्रक्षेप शलाका

प्रमाणराशि	फलराशि	इच्छाराशि
जगत्प्रेणी दशवा वर्गमूल x प्र.पू. मि. विष्कम्भ सूची	9	सामान्य अवहारकाल
$C \times \frac{953}{922} = \frac{959}{9E}$	9	3206C

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 3206C}{\frac{953}{9E}} = \frac{3206C \times 9E}{953} = \frac{42822C}{953} = 269E \frac{900}{953}$$

= तीसरी पृथिवीका आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहार शलाकाएं। उपर्युक्त विरलनपर सामान्य अवहार x तृ.पू. मिथ्यादृष्टि द्रव्य = इनको समान खण्ड करके देनेपर प्रत्येक पर प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है।

$3206C \times 952 = 2E283484E$ इनके समान खण्ड करके देना

प्र.पू. $\frac{9229E}{9} \quad \frac{9229E}{9} \quad \frac{9229E}{9} \quad \frac{9229E}{9} \quad \dots \quad \frac{269E}{953} \frac{900}{953}$ वार

$$2E283484E \div \frac{42822C}{953} = \frac{2E283484E \times 953}{42822C} = 9229E$$

चौथी पृथिवीका आश्रय लेकर अवहारकाल प्रक्षेपशलाकाएं

प्रमाण	फलराशि	इच्छाराशि
जगत्प्रेणी आठवा वर्गमूल x प्र.पू. मि. विष्कम्भ सूची	9	सामान्य अवहारकाल
$9E \times \frac{953}{922} = \frac{953}{9E}$	9	3206C

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{3206C \div 953}{9E} = \frac{3206C \times 9E}{953} = \frac{2E2984}{953}$$

$$= 934C \frac{90}{953} = \text{चौथी पृथिवीके आश्रयसे प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं}$$

इसका विरलन करके प्रत्येक पर सामान्य अवहारकालगुणित चौथी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खण्ड कर देनेपर एकैक विरलनपर प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है।

सा. अवहार चौ.पू. मि. द्र.

$$3206C \times 808E = 93829662C$$

$$\frac{93829662C}{953} \div \frac{2E2984}{953} = \frac{93829662C \times 953}{2E2984} = 9229E$$

प्र.पू. मिथ्यादृष्टि द्रव्य

९८८१९ ९८८१९ ९८८१९ ९८८१९

छठी पृथिवी के आश्रयसे १ १ १ १ - - - ३३३ $\frac{९९}{९९३}$ वार

सातवी पृथिवीके आश्रयसे उत्पन्न अवहारशलाकाएं →

प्रमाण	फल	इच्छाराशि
जगत्त्रेणी दूसरा वर्गमूल x प्र.पू. मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची	१	सामान्य अवहारकाल
$\frac{१२८ \times ९९३}{९२८} = ९९३$	१	३२७६८

$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{१ \times ३२७६८}{९९३} = ९६९ \frac{९५१}{९९३} =$ सातवी पृथिवीके

आश्रयसे उत्पन्न हुई प्रक्षेप अवहारकाल शलाकाएं = विरलन राशि सामान्य अवहारकाल x सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य = समान रूपसे देना

$३२७६८ \times ९९२ = ९६७७७२९६$

$\frac{९६७७७२९६}{३२७६८} = \frac{९६७७७२९६ \times ९९३}{३२७६८} = ९८८१९$ प्र.पू. मिथ्या-दृष्टि द्रव्य

प्र.पू.मि ९८८१९ ९८८१९ ९८८१९ ९८८१९

सातवी पृथिवीके आश्रयसे विरलन १ १ १ १ - - - ९६९ $\frac{९५१}{९९३}$ वार

सातवी पृथिवीके प्रक्षेपरूप अवहारकालकी अपेक्षा इतर पृथिवियोंके प्रक्षेप अवहारकालका प्रमाण

पृथिवी	प्रक्षेप अवहारकाल	प्रमाण
सातवी	$३२७६८ \div ९९३$	१
छठी	$६५५३६ \div ९९३$	२
पाचवी	$१३१०७२ \div ९९३$	४
चौथी	$२६२१४४ \div ९९३$	८
तीसरी	$५२४२८८ \div ९९३$	१६
दूसरी	$१०४८५७६ \div ९९३$	३२
प्रथम	$\frac{१२८ \times ९९३}{९२८}$	९९३
		२५६

उपर्युक्त शलाका X सातवी पृथिवीका प्रक्षेप अवहारकाल = प्रथम पृथिवी
मिथ्यादृष्टि अवहार
काल

$$\frac{34E \times 320E \angle}{953} = \frac{\angle 3 \angle \angle 60 \angle}{95E} \quad \text{प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि
अवहारकाल}$$

अथवा

पृ. 960

जगत्प्रेणी

प्र.पृ.मि विष्कंभसूची X सा. नारक मि. विष्कंभसूची X जगत्प्रेणी द्वितीय वर्गमूल

= पूर्वोक्त शलाका
प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

$$\frac{E443E}{\left(\frac{953 \times 2 \times 92\angle}{92\angle}\right) \div 24E}$$

$$\frac{E443E}{3\angle E \div 24E} = \frac{E443E \div 953}{92\angle} = \frac{E443E \times 92\angle}{953}$$

$$\frac{E443E}{3\angle E \div 24E}$$

$$= \frac{E443E \div 953}{92\angle} = \frac{E443E \times 92\angle}{953}$$

$$\frac{E443E}{3\angle E \div 24E} = \frac{E443E \div 953}{92\angle} = \frac{E443E \times 92\angle}{953}$$

अथवा

जगत्प्रेणी

जगत्प्रेणीका द्वितीय वर्गमूल X प्रथम पृ. मि. विष्कंभसूची X सामान्य विष्कंभसूची
एव पृथिवी पूर्वोक्त सर्व शलाका

= सर्वत्र उत्पन्न प्रक्षेप अवहारकाल

$$\frac{E443E}{\frac{92\angle}{E3} \times \frac{953}{92\angle} \times 2}$$

$$= \frac{E443E}{\frac{3\angle E}{E3}}$$

$$= \frac{E443E \times 320E \angle}{E443E \times E3}$$

$$= \frac{20E43\angle\angle}{953}$$

$$\frac{3\angle E}{953}$$

$$= \frac{20E43\angle\angle}{953} \quad \text{प्रक्षेप अवहार
काल}$$

जगत्प्रेणी

सामान्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल X सामान्य मि. विष्कंभसूची
प्रक्षेप अवहार काल

= प्रथम पृथिवीका
मिथ्यादृष्टि अवहार
काल

एक + पूर्वोक्त गुणकार

$$\frac{EY43E}{(326E \div 20E83C8) \times 2} = \frac{EY43E}{326E \times 953 \div 20E83C8} \times 2 = \frac{EY43E}{953 \times 2}$$

$$9 + \frac{326E \div 20E83C8}{953} = 9 + \frac{326E \times 953}{20E83C8} = 9 + \frac{953}{E3}$$

$$\frac{EY43E}{\frac{3CE}{E3} \div \frac{953}{E3} + 9} = \frac{EY43E}{\frac{3CE}{E3} \div \frac{24E}{E3}} = \frac{EY43E}{\frac{3CE \times E3}{E3 \times 24E}}$$

$$\frac{EY43E \div 3CE}{24E} = \frac{EY43E \times 24E}{3CE \times 953} = \frac{E3CE0E}{953}$$

प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि अवलोकन

अथवा

सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची = $1 + \frac{9}{\text{असंख्यातवा भाग}}$
 प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

$$\frac{2}{953 \div 92C} = \frac{2 \times 92C}{953} = \frac{24E}{953} = 9 \frac{E3}{953}$$

एक का असंख्यातवा भाग लानेके लिए प्रतिभाग = जगत्प्रेणी का कुलकम 92C
 नर्गमूल x प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

$$\frac{953}{E3} \times \frac{92C}{92C} = \frac{953}{E3}$$

एक का असंख्यातवा भाग लानेके लिए प्रतिभाग

$$1 \div \frac{953}{E3} = \frac{E3}{953}$$

एक का असंख्यातवा भाग

प्रमाण राशि	फल राशि	इच्छा राशि
सा. ना. मिथ्यादृष्टि राशिमें	$1 + \frac{9}{\text{असंख्यातवा}}$	सामान्य ना. मि अवलोकन
प्र. पृ. मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवलोकन		x सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशि

$$939062 \qquad 9 \frac{E3}{953} = \frac{24E}{953} \qquad 326E \times 939062$$

$$\frac{\text{प्रमाण} \times \text{फल}}{\text{इच्छा}} = \frac{24E \times 326E \times 939062}{953 \times 939062} = \frac{E3CE0E}{953}$$

प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि अवलोकन

पृ. 905 अथवा, प्रथम पृथिवीका मिथ्यादृष्टि अवलोकन दूसरे प्रकारसे लाते हैं।
 विरलन = छठी पृथिवीका अवलोकन ६४
 दैय = जगत्स्रोणीको समान खंड करके देना ६५५३६
 $\frac{६५५३६}{६४} = १०२४$ छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य

छठी पृ. मिथ्यादृष्टि उपरिम विरलन
 $\frac{१०२४}{१} \quad \frac{१०२४}{१} \quad \frac{१०२४}{१} \quad \frac{१०२४}{१} \quad \frac{१०२४}{१} \quad \frac{१०२४}{१}$ ६४ वार
 छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य = जगत्स्रोणीका तीसरा वर्गमूल
 सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य अधस्तन विरलन
 $\frac{१०२४}{५१२} = २$ अधस्तन विरलन

अधस्तन विरलनपर दैयशांति \rightarrow उपरिम विरलनके प्रथम अंकपर स्थित
 छठी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खंड करके.
 $\frac{१०२४}{२} = ५१२$ सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य

अधस्तन विरलन
 $\frac{५१२}{१} \quad \frac{५१२}{१}$
 उपरिम विरलन के प्रथम शून्य स्थानको छोड़कर द्वितीयादि विरलनपर स्थित शांतिमें अधस्तन विरलनपर स्थित शांतिको क्रमसे जोड़ने पर प्रत्येक एकके प्रति छठवी और सातवी पृथिवीके द्रव्यका प्रमाण प्राप्त होता है ३
 $\frac{१०२४+५१२}{१} \quad \frac{१०२४+५१२}{१}$
 भागद्वारे एक अंककी हानि
 पुनः उपरिम विरलनके चौथे अंक पर स्थित शांतिको अधस्तन विरलनपर समान खंड करके देना

अधस्तन विरलन
 $\frac{५१२}{१} \quad \frac{५१२}{१}$
 पुनः उपरिम विरलनके पांचवे अंकपर स्थित शांतिको अधस्तन विरलनमें जोड़ना

४ ५ ६
 $\frac{१०२४+५१२}{०} \quad \frac{१०२४+५१२}{०}$ यहां दूसरे अंककी हानि होती है।
 इसप्रकार एक अधिक अधस्तन विरलनमात्र स्थान जाकर एक एककी हानि होती है। इसप्रकार जबतक उपरिम विरलन समाप्त होवे तबतक

4 पुनः पुनः यही विधि करते जाना चाहिये।

अ वास्तविक गणितमें अश्वस्तन और उपरिम विरलन समान है इसलिए एक भी अंककी हानि नहीं होती है। फिरभी यहा कितनी हानि होती है उसको बताते है।

प्रमाण	फल	इच्छा
एक अधिक अश्वस्तन विरलनप्रमाण स्थान जाकर	9 हानि	संपूर्ण उपरिम विरलनमें कितनी हानि

$$2 + 9 = 3 \quad 9 \quad 68 ?$$

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 68}{3} = 29 \frac{2}{3} \text{ हानिरूप अंक}$$

अ वास्तविक गणितमें हानिरूप अंक = जगत्श्रेणी तृतीय वर्गमूल = एकका असंख्यात बहुकाग

उपरिम विरलन - हानिरूप अंक = छठी और सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भागहार

$$68 - \frac{68}{3} = \frac{(68 \times 3) - 68}{3} = \frac{68 \times 2}{3} = \frac{92}{3} = 82 \frac{2}{3} = \text{छठी सातवी}$$

वास्तविक गणितमें पृथिवीका भागहार

$$\text{जगत्श्रेणीका तृतीय वर्गमूल} = \frac{\text{जगत्श्रेणी तृतीय वर्गमूल}}{\text{एक} + \text{जगत्श्रेणी तृतीय वर्गमूल}} = \frac{\text{जगत्श्रेणी द्विवर्गमूल}}{1 + \text{जगत्श्रेणी तृ. मू.}}$$

जगत्श्रेणी ÷ छठी सातवी पृथिवीका भागहार = छठी सातवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$64336 \div \frac{92}{3} = \frac{64336 \times 3}{92} = 20800 \quad \text{" " " " " "}$$

पृ: 902 पांचवी, छठी और सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका भागहार →

$\frac{\text{जगत्श्रेणी}}{\text{जगत्श्रेणीका छठा वर्गमूल}} = \text{पाचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$

$$\frac{64336}{32} = 2010 \text{ पाचवी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

वि: उपरिम विरलन = जगत्श्रेणीका छठा वर्गमूल 32

देयराशी = जगत्श्रेणीको समान संड करके देना 2010

पाचकी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य = $\frac{\text{जगत्त्रयी तृ.मू. x च.मू. x पं.मू. x षष्ठमू.}}{9 + \text{तृतीय वर्गमूल}}$
 छठी सातकी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$\frac{2084}{953E} = 9 \frac{492}{953E} = 9 \frac{1}{3} = \text{अधस्तन विरलन } \frac{4}{3}$

अधस्तन विरलनपर देयशशि = उपरिम विरलनके एक अंकपर स्थित पाचकी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$2084 \div \frac{2084}{953E} = \frac{2084 \times 953E}{2084} = 953E$ छठी सातकी पृथिवी द्रव्य

2084 2084 2084 2084 2084 2084

उपरिम विरलन 9 9 9 9 9 9 - - - 32 वार

953E 492

अधस्तन विरलन 9 $\frac{1}{3}$

उपरिम विरलनके प्रथम शून्य स्थानको छोडकर द्वितीयादि विरलनस्थित पा.पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्यमे प्रथमादि अधस्तन विरलनपर स्थित शशिको मिलानेपर प्रत्येक पर पाचकी छठी सातकी पृथिवीका द्रव्य होता है। तब एक अंककी हानि होती है। अबोभी इसीप्रकार ... उपरिम विरलन समाप्त होनेतक प्रक्रिया करनी चाहिए

$2084 + 953E = 3428$ पाचकी, छठी, सातकी पृथिवीका मि. द्रव्य हानिरूप विरलनांको को श्राशिक विधिसे लाते है

प्रमाण	फल	इच्छाराशि
9 + अधस्तने विरलन	9 की हानि	उपरिम विरलन
$9 + \frac{4}{3} = \frac{16}{3}$	9	32

$\frac{9 \times 32}{16 \div 3} = \frac{32 \times 3}{16} = \frac{96}{16} = 6$ हानिरूप अंक

वास्तविक गणित

प्रमाण $9 + \frac{\text{जगत्त्रयी तृ.मू. x च.मू. x पं.मू. x षष्ठमू.}}{9 + \text{तृतीय वर्गमूल}}$ फल इच्छा 9 की हानि जग. छठा वर्गमूल

प्रमाण $\frac{\text{जगत्त्रयी तृ.मू. x च.मू. x पं.मू. x षष्ठमू.}}{9 + \text{तृतीय वर्गमूल}}$ फल इच्छा $9 + \frac{\text{जगत्त्रयी तृ.मू. x च.मू. x पं.मू. x षष्ठमू.}}{9 + \text{तृतीय वर्गमूल}}$

उपरिम विरलन - हामिरुप अंक = पांचवी छठी और सातवी पृथिवीका भागहार

$$\frac{\text{जगत्प्रेणी छठा वर्गमूल} - \text{छठा वर्गमूल}}{9 + \left(\frac{\text{तृ. मू.} \times \text{च. मू.} \times \text{पं. मू.} \times \text{षष्ठ मू.}}{9 + \text{तृतीय वर्गमूल}} \right)} = \frac{\text{द्वितीय वर्गमूल}}{9 + \text{तृ. मू.} + \text{तृ. मू.} \times \text{च. मू.} \times \text{पं. मू.} \times \text{षष्ठ मू.}}$$

अंकगणितसे $32 - \frac{96}{6} = \frac{32 \times 6 - 96}{6} = \frac{224 - 96}{6} = \frac{128}{6} = \frac{64}{3}$ पांचवी छठी सातवी पृथिवीका भागहार

जगत्प्रेणी ÷ उपर्युक्त भागहार = पांचवी, छठी सातवी पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य

$$\frac{84432}{6} = \frac{84432 \times 6}{128} = 3924 = \text{पांचवी, छठी, सातवी पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$$

3) चौथी, पांचवी, छठी और सातवी पृथिवीका समुदित अवहारकाल →
जगत्प्रेणी का आठवा वर्गमूल = चौथी पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य
उपरिम विरलन

उदा. $\frac{84432}{96} = 808$ चौथी पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य

चौथी पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य - अधस्तन विरलन
पांचवी, छठी, सातवी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य

$$\frac{808}{3924} = \frac{1}{6} \text{ अधस्तन विरलन}$$

अधस्तन विरलन पर देयद्रव्य = उपरिम एक अंकपर स्थित चौथी पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देना।

$$\frac{808}{6} = \frac{808 \times 6}{6} = 3924 \text{ देयद्रव्य = पांचवी यदि तीन पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$$

चौ. पृ. द्रव्य	808	808	808	808	
उपरिम विरलन	9	9	9	9	96 वार

उपरिम विरलनके शून्य स्थानको छोडकर द्वितीयादि विरलनांको पर स्थित द्रव्यमें अधस्तन विरलनांको पर स्थित द्रव्यको जोडनेपर चौथी यदि चार पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य होता है।

अधस्तन विरलन $\frac{3924}{9} = \frac{436}{1}$

हानिरूप अंकों का प्रमाण —

प्रमाण फल इच्छा
अधस्तम विरलन + 7 स्थान 9 की हानि उपरिम विरलन मात्र स्थानों में जाकर कितनी हानि ?

$$\frac{6}{6} + 9 = \frac{94}{6} = 15 \frac{4}{6} = 15 \frac{2}{3} = 15.666$$

$$\frac{94 \times 9}{94} = \frac{94 \times 6}{94} = \frac{992}{94} \text{ हानिरूप अंक}$$

उपरिम विरलन \leftarrow हानिरूप अंक = चौथी आदि चार पृथिवियों का अवहार काल

$$94 - \frac{992}{94} = \frac{94 \times 94 - 992}{94} = \frac{2800 - 992}{94} = \frac{1808}{94} = 19.127 \text{ चार पृ. अवहार}$$

अर्थात् जगत्प्रेणीका द्वितीय वर्गमूल सातवीं पृथिवीकी अपेक्षा चौथी आदि 4 पृथिवियोंकी शलाका $9+2+8+1$

$$\frac{924}{94} = \text{चौथी आदि चार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

जगत्प्रेणी \div उपर्युक्त चार पृथिवियोंका अवहारकाल = चौथी आदि चार पृथिवियोंका मि. द्रव्य

$$\frac{54538}{94} \div \frac{924}{94} = \frac{54538 \times 94}{924} = 6620$$

8) तीसरी आदि पांच पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल \rightarrow

जगत्प्रेणी = तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य.

जगत्प्रेणीका दशवा वर्गमूल \leftarrow उपरिम विरलन

$$\frac{54538}{10} = 5453.8 \text{ तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य = अधस्तम विरलन \leftarrow चौथी आदि चार पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$\frac{5453.8}{6620} = 9 \frac{512}{6620} = 9 \frac{2}{94} \text{ अधस्तम विरलन}$$

अधस्तम विरलनपर देयरशि = तीसरी पृथिवीके द्रव्यको समान खंड करके देना

तीसरी पृथिवी मि. द्रव्य : अधस्तन विरलन = चौथी आदि चार पृथिवीका द्रव्य

$$\frac{1952}{6800} \div \frac{1952}{6800} = \frac{1952 \times 6800}{1952} = 6800 \text{ चौथी आदि चार पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

ती.पृ. द्रव्य	1952	1952	1952	1952	1952	
उपरिम विरलन	9	9	9	9	9	... ४ वार

अधस्तन विरलन 9 9/95

उपरिम विरलन और अधस्तन विरलन का पूर्वोक्त प्रकारसे समीकरण करके हानिरूप अंक लाना चाहिए।

प्रमाण	फल	इच्छा
9 + अधस्तन विरलन	9 अंक	उपरिम विरलन
$9 + \frac{9}{95} = 2 \frac{9}{95} = \frac{39}{95}$	1	८

39 ~~प्रमाण~~ फल x इच्छा = $\frac{9 \times 8}{39 \div 95} = \frac{8 \times 95}{39} = \frac{720}{39}$ हानिरूप अंक

उपरिम विरलन - हानिरूप अंक = तीसरी आदि पांच पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

$$8 - \frac{720}{39} = \frac{39 \times 8 - 720}{39} = \frac{288 - 720}{39} = \frac{928}{39} = 23 \text{ " " "}$$

तीसरी आदि पांच पृथिवियोंका मि. अवहारकाल = जगत्श्रेणी द्वितीय वर्गमूल तृतीयादि पांच पृथिवियोंकी शलाका

$$= \frac{928}{9+2+8+8+98} = \frac{928}{39}$$

जगत्श्रेणी = उपर्युक्त तृतीयादि पांच पृथिवियोंका अवहारकाल = तृतीयादि पांच पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$84438 \div \frac{928}{39} = \frac{84438 \times 39}{928} = 95462 \text{ तृतीयादि पांच पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

य) द्वितीयादि सह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल →
 उपरिम विरलन = जगत्श्रेणीका बारहवा वर्गमूल
 देयराशि = जगत्श्रेणीको समान खण्ड करके देना।

जगत्श्रेणी = द्वितीय पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$\frac{84438}{95462} = \frac{95462}{84438} \text{ द्वि.पृ. मि द्रव्य}$$

द्वितीय पृथिविका मिथ्यादृष्टि द्रव्य = अधस्तन विरलन
तृतीयादि पांच पृथिवियोंका द्रव्य

$$\frac{98348}{95262} = 9 \frac{492}{95262} = 9 \frac{1}{39} = \frac{39 \times 1 + 1}{39} = \frac{32}{39} \text{ अधस्तन विरलन}$$

अधस्तन विरलन पर देय = द्वितीय पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यको समान खंड करके देना
 $98348 \div \frac{32}{39} = \frac{98348 \times 39}{32} = 95262 =$ तृतीयादि पांच पृथिवियोंका द्रव्य

द्वि.पू. द्रव्य 98348 98348 98348 98348
उपरिम विरलन 9 8 9 9 - - -

तृतीयादिपू. द्रव्य 95262 492
अधस्तन विरलन 9 $\frac{1}{39}$
उपरिम और अधस्तन विरलन का समीकरण करके हानिरूप अंकोंका प्रमाण लाना।
 $98348 + 95262 = 32258$ द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि द्रव्य

प्रमाण	फल	इच्छा
अधस्तन विरलन + 9	9	उपरिम विरलन
$\frac{32}{31} + 1 = \frac{32+31}{31} = \frac{63}{31}$	9	8

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 8}{63 \div 31} = \frac{8 \times 31}{63} = \frac{928}{63} \text{ हानिरूप अंक}$$

उपरिम विरलन - हानिरूप अंक = द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

$$8 - \frac{928}{63} = \frac{8 \times 63 - 928}{63}$$

$$\frac{252 - 928}{63} = \frac{924}{63} = \text{द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

वास्तविक गणितसे \Rightarrow जगत्त्रेणीका द्वितीय वर्गमूल = द्वि. छह पृथिवी पूर्वोक्तद्वितीयादि छह पृथिवियोंकी मिथ्यादृष्टि शतका मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

$$\frac{924}{32+18+1+8+2+9} = \frac{924}{63}$$

$$\text{जगत्त्रेणी} \div \text{द्वितीयादि छह पू. अवहारकाल} = \text{द्वितीयादि छह पृथिवियोंका मि. द्रव्य}$$

$$\frac{84438}{63} = \frac{84438 \times 63}{924} = 32258 \quad " \quad " \quad " \quad "$$

अगल्लेणी

सामान्य नाशक मि. विष्कंभसूर्पी - द्वितीयादी छह पृ. मिथ्या द्रव्य = प्रथम पृथिवी मिथ्या -
अगल्लेणी इष्टि अवहारकाल

$$\frac{६५५३६}{२ - ३२२५६} = \frac{६५५३६}{२ - ६३} = \frac{६५५३६}{१२८ \times २ - ६३}$$

भाज्य भागहारको ५१२ का भाग देना

$$= \frac{६५५३६ \times १२८}{२५६ - ६३} = \frac{६५५३६ \times १२८}{१९३} = \frac{८३८८६०८}{१९३} = \text{प्रथम पृथिवी मिथ्या इष्टि अवहारकाल}$$

अथवा

सामान्य मिथ्या इष्टि अवहारकाल + सामान्य मि. अवहार \times छह पृ. मिथ्या द्रव्य = प्रथम पृथिवी मिथ्या इष्टि द्रव्य

प्रथम पृथिवी मिथ्या इष्टि अवहारकाल

$$३२५६८ + \frac{३२५६८ \times ३२२५६}{९६८१६} = \text{भाज्य भागहार शशिको ५१२ का भाग देने पर}$$

$$३२५६८ + \frac{६४ \times ३२२५६}{१९३} =$$

$$\frac{३२५६८ + २०६४३८४}{१९३} = \frac{३२५६८ \times १९३ + २०६४३८४}{१९३}$$

$$\frac{८३८८६०८}{१९३} = \text{प्रथम पृथिवी मिथ्या इष्टि अवहारकाल}$$

हानिरूप और प्रक्षेपरूप अंकोंका ज्ञान करानेके लिए उदाहरण देकर समझाते हैं।
विरलन १६, देयराशि = २५६ को समान खंड करके देना $\frac{२५६}{१६} = १६$

१६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६

यहां एक एक विरलन पर तीन संख्या बढ़ानी हो तो भागहार में कितना बढ़ेगा उसका प्रमाण निकालनेकी विधि \rightarrow

उपर्युक्त देयराशि = अधस्तन विरलन $\frac{१६}{३} = \frac{५१}{३}$
प्रवृद्ध शशिको + ५

अधस्तन विरलन पर देयराशि = उपरि ^{एक} विरलन प्रति प्राप्त सोलह

$9E \div 3 = 5 \frac{1}{3}$ अधस्तन विरलन $9E \div \frac{1E}{3} = 3$ देखराशि

	3	3	3	3	3	9
अधस्तन विरलन	9	9	9	9	9	9
						3

उपरिम विरलनपर स्थित राशि + अधस्तन विरलनपर स्थित राशि

$9E + 3 = 99$

उपरिम विरलनका प्रथम स्थान शून्य हो गया है क्योंकि उसको अधस्तन विरलनपर समान खंड करके दिया है। उसके द्वितीयादि पान विरलन अंकोपर स्थित पाय सोलह अंकोके उपर अधस्तन विरलन अंकोपर स्थित राशिको देना

	3	3	3	3	3	9
0	9E	9E	9E	9E	9E	$5 \frac{1}{3}$
9	9	9	9	9	9	9

यहांपर भागहारमें एक अंककी हानि होती, सप्तम विरलनरूप एक अंकके तीन विभाग करके सोलह को विभाग करके देना $5 \frac{1}{3}$ $5 \frac{1}{3}$ $5 \frac{1}{3}$ एक त्रिभाग सालवे विरलनपर ही रहना। दो एक त्रिभागोंको अलग स्थापित करना

उपर्युक्त एक त्रिभागमें प्राप्त $5 \frac{1}{3}$ अंकोमें अधस्तन 9 विरलनपर प्राप्त एक अंक मिलाकर स्थापित करना। यहांपर एक विरलन अंककी अर्थात् भागहारमें एक अंककी हानि होती है। वह उपर दिखाया है।

पुनः आठवे विरलनपर स्थित सोलह अंकको अधस्तन विरलन पर समान खंड करके देना। एकैक पर तीन-तीन अंक प्राप्त होते हैं और एक त्रिभागमें एक प्राप्त होता है।

	3	3	3	3	3	9
	9	9	9	9	9	9
						3

पूर्वोक्त प्रकारसे नववे आदि उपरिम विरलनपर स्थित सोलह में इनको मिलाना। अलग स्थापित एक त्रिभागके उपर स्थित $5 \frac{1}{3}$ में अधस्तन विरलनके एक त्रिभाग प्राप्त एक अंकको मिलाना। यहांपर एक विरलनांककी हानि होती है।

	3	3	3	3	3	9
0	9E	9E	9E	9E	9E	$5 \frac{1}{3}$
9	9	9	9	9	9	9

यहां दूसरे विरलनांककी हानि होती है।

उसके अनन्तर उपरिम विरलन तीन शेष हैं। उसमें से प्रथम अंकित जो एक पर स्थित सोलह को अधस्तन विरलन पर समान खंड करके

देना 3 3 3 3 3 9
9 9 9 9 9 9
3

इसमें से दो विरलनों में प्राप्त तीन अंकों को उपरिम दो विरलनों पर स्थित सोलह में मिलाना $0 \frac{9^3}{9} \frac{9^3}{9} \frac{9^3}{9}$

अधस्तन विरलनके शेष तीन अंकोंके प्रति प्राप्त नौ अंक उसी प्रकार स्थित रहते हैं। नौ अंकोंका विरलन कितना होता है यह त्रैशिक से निकालते हैं।

प्रमाणराशि फलराशि इच्छाराशि
99 अंकोंके प्रति 9 विरलन तो 9 अंकोंके प्रति कितना ?

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 9}{99} = \frac{9}{11} \text{ विरलन नौके प्रति}$$

हानिरूप अंक लाने के लिए त्रैशिक \rightarrow

प्रमाण फल इच्छाराशि
अधस्तन विरलन + 9 स्थान जाकर 9 की हानि 9 त्रिभाग सहित तीन विरलन स्थानोंके प्रति कितनी हानि ?
 $4 \frac{9}{3} + 9 = 6 \frac{9}{3} = \frac{27}{3}$ 9 $3 \frac{1}{3} = \frac{10}{3}$

$$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{90}{3} \div \frac{99}{3} = \frac{90}{3} \times \frac{3}{99} = \frac{90}{99} \text{ हानिरूप अंक}$$

पहले दो हानि अंक प्राप्त हुए थे और तिसरी बार $\frac{90}{99}$ हानि अंक प्राप्त हुआ सब मिलाकर $2 + \frac{90}{99} = 2 \frac{90}{99}$ हानिरूप अंक होते हैं।

संपूर्ण हानिरूप अंकोंको एकवारमें लाते हैं।

प्रमाण फल इच्छा
अधस्तन विरलन + 9 स्थान जाकर एककी हानि उपरिम विरलनमें कितनी हानि ?
 $6 \frac{9}{3} = \frac{27}{3}$ 9 99 ?

$$\frac{96}{3} \div \frac{99}{3} = \frac{96 \times 3}{99} = \frac{86}{99} = 2 \frac{90}{99} \text{ हानिरूप अंक}$$

उपरिम विरलन = हानिरूप अंक = नया अवहारकाल

$$9E - \frac{8C}{95} = \frac{9E \times 95 - 8C}{95} = \frac{308 - 8C}{95} = \frac{24E}{95} = 93 \frac{9}{95}$$

नया अवहारकाल

24E को इस भागहारसे भाग देनेपर उन्नीस अंक प्राप्त होते हैं

$$24E \div \frac{24E}{95} = \frac{24E \times 95}{24E} = 95 \text{ नया लब्ध}$$

अब शशिके हानि करना हो तो भागहार बढ़ेगा। जितना भागहार बढ़ा उसको प्रक्षेपरूप अंक कहते हैं। उसको लानेका निधान कहते हैं।

उपरिम विरलन 9E, देयराशि 24E

$$\begin{array}{cccccccccccccccccccc} 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E & 9E \end{array}$$

इनमें तीन अंक कम करना है तो प्रत्येक सोलहमें से 3 अंक कम करके अलग स्थापित करना

$$\begin{array}{cccccccccccccccc} 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 & 3 \end{array}$$

इनको उपरिम विरलन पर शेष रहे 93 प्रमाण करते हैं।

चार विरलनों पर स्थित 3 अंकोंको और पांचवे अंकपर स्थित तीनमेंसे एक त्रिभाग को घटाने पर 93 प्राप्त होते हैं।

$$3 + 3 + 3 + 3 + 9 = 93, \quad 3 + 3 + 3 + 3 + 9 = 93$$

$$3 + 3 + 3 + 3 + 9 = 93, \quad 3 + 3 + 3 = 9$$

$$\begin{array}{cccccccccccccccccccc} 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 & 13 \end{array}$$

प्रक्षेपरूप अंक

अब नौ अंकों का विरलन प्रमाण उत्पन्न करते हैं।

प्रमाण

फल

इच्छामि

अधस्तन विरलन-9 स्थान जाकर एक प्रक्षेप तो तीन स्थानों के प्रति कितना प्रक्षेप

$$9 \frac{1}{3} - 1 = 8 \frac{1}{3} = \frac{25}{3}$$

$$3 \div \frac{25}{3} = \frac{3 \times 3}{25} = \frac{9}{25} = 9 \text{ अंकोंका प्रक्षेप अवहार काल}$$

संपूर्ण प्रक्षेपरूप अवहारकालको एकवारमें लाते हैं।

प्रमाण फल इच्छा
 अधस्तन विरलन - 9 स्थान जाकर 9 अवहार प्रक्षेप उपरिम विरलनमें
 शंलका कितनी अवहार प्रक्षेप शलाका का 2

$$8 \frac{2}{3} = \frac{93}{3}$$

फल x इच्छा प्रमाण $98 \div \frac{93}{3} = \frac{98 \times 3}{93} = \frac{294}{93} = 3 \frac{2}{93}$ प्रक्षेप शलाकाएं

उपरिम विरलन + प्रक्षेप शलाकाएं = इच्छित अवहारकाल

$$98 + \frac{294}{93} = \frac{98 \times 93 + 294}{93} = \frac{9114 + 294}{93} = \frac{9408}{93} = 99 \frac{2}{93}$$

294 में इसका भाग देनेपर 93 लब्ध आता है। नया इच्छित अवहारकाल

$$294 \div \frac{294}{93} = \frac{294 \times 93}{294} = 93$$

नया लब्ध

पृ. 953 अधवा विरलने = सामान्य अवहारकाल, देयराशि = जगत्प्रतरके समान खंड करके देना

$\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{सामान्य अवहारकाल}} = \text{सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीवराशि}$

$$\frac{84438 \times 84438}{32688} = 939062 \text{ सा.ना. मि. जीवराशि}$$

939062 939062 939062 939062 939062
 9 अवहार 9 अवहार 9 अवहार 9 अवहार 9 अवहार - 32688 वार

एक विरलनके प्रति प्राप्त सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यको सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणरूपसे करके बतलाने हैं।

प्रमाणराशि	फल	इच्छा
जगत्क्षेत्री	एकवार सातवी	सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि
जगत्क्षेत्री द्वितीय वर्गमूल	पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण	द्रव्यमें कितनी वार प्राप्त होगा?
$\frac{84438}{928}$	9	939062
$\frac{\text{फल} \times \text{इच्छा}}{\text{प्रमाण}} = \frac{9 \times 939062}{84438} = \frac{939062 \times 928}{84438} = 294 = 928 \times 2$		इतनी वार स.प. द्रव्य

सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि में
जगत्त्रेणीका द्वितीय वर्गमूल x विष्कंभसूची = सातवी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि
द्रव्यके खंड

$$924 \times 2 = 2448$$

इसीप्रकार सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवहारकालकी संख्याके
ऊपर स्थित प्रत्येक सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि जीववारीको सातवी
पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके प्रमाणकपसे कर लेना चाहिये।
उन खंडोंमें किस पृथिवीका द्रव्य कितने खंडप्रमाण होता है वह बताते
हैं।

पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण	खंडोंका प्रमाण	अंक संज्ञा
१) सातवी	१	१
२) छठी	जगत्त्रेणीका तृतीय वर्गमूलमात्र	२
३) पाचवी	जगत्त्रेणीके तिसरे वर्गमूलसे लेकर चार वर्गोंका परस्पर गुणनमात्र	४
४) चौथी	जगत्त्रेणीके तिसरे वर्गमूलसे छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणनमात्र	८
५) तीसरी	" " " आठ " " "	१६
६) दूसरी	" " " दस " " "	३२
		६३

(जगत्त्रेणी द्वि. वर्गमूल x विष्कंभसूची) - छह पृथिवीसंबंधी प्रि खंडशलाका = प्र.पृ.मि.द्र.के
(924 x 2) - 63 = 2448 - 63 = 993 = प्र.पृ.मि.द्र.के खंड
खंड

इसीप्रकार सामान्य अवहारकालगुणिल सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि द्रव्यमें
खंडशलाकाएं पृथक् पृथक् निकाल करके दिखलाना चाहिए। इसप्रकार
खंडशलाकाएं स्थापित करके प्रथम पृथिवीका अवहार काल उत्पन्न करते हैं।

प्रमाणा राशि

फलराशि

इच्छाराशि

प्रथम पृथिवीसंबंधी मिथ्यादृष्टि
खंडशलाकाओंसे

एक अवहारकालशलाका

सामान्य अवहारकाल x सामान्य
नारक मिथ्यादृष्टि खंडशलाकाएं

993

9

3264 x 2448

फल x इच्छा
प्रमाण

$$= \frac{3264 \times 2448}{993}$$

$$= \frac{8000000}{993}$$

= प्रथम पृथिवीके मिथ्या-
दृष्टि द्रव्यका अवहारकाल

अथवा

$$\frac{\text{सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवतारकाल}}{\text{प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि खंडशलाका}} \times \text{कुल पृ. मिथ्या. खंडशलाका} = \text{प्रक्षेप अवतारकाल}$$

$$\frac{32688}{953} \times 63 = \frac{2068368}{953} \text{ प्रक्षेप अवतारकाल}$$

अथवा

$$\frac{\text{सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि अवतारकाल}}{\text{प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि खंडशलाका}} \times \text{अपनी अपनी खंडशलाका} = \text{अपना अपना प्रक्षेप अवतारकाल}$$

$$1) \frac{32688}{953} \times 1 = \frac{32688}{953} \text{ सातवी पृथिवीकी प्रक्षेप अवतारकाल}$$

$$2) \frac{32688}{953} \times 2 = \frac{65376}{953} \text{ छठी " " " "}$$

$$3) \frac{32688}{953} \times 8 = \frac{261504}{953} \text{ पाचवी " " " "}$$

$$4) \frac{32688}{953} \times 4 = \frac{130752}{953} \text{ चौथी " " " "}$$

$$5) \frac{32688}{953} \times 9 = \frac{294192}{953} \text{ तीसरी " " " "}$$

$$6) \frac{32688}{953} \times 32 = \frac{1046016}{953} \text{ दूसरी " " " "}$$

$$\text{सबका जोड़} \frac{2068368}{953} \text{ प्रक्षेप अवतार काल}$$

$$\text{सामान्य अवतारकाल} + \text{प्रक्षेप अवतारकाल} = \text{प्रथम पृथिवीकी मिथ्यादृष्टि अवतारकाल}$$

$$\frac{32688}{953} + \frac{2068368}{953} = \frac{32688 \times 953 + 2068368}{953}$$

$$\frac{3115200 + 2068368}{953} = \frac{5183568}{953} \text{ प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि अवतारकाल}$$

पृ. 95L

दूसरी पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवीतक प्रत्येक पृथिवीमें नारकियोंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात है।
कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणीयोंऔर उत्सर्पिणीयों क्षेत्रकी अपेक्षा जगत्प्रेणी = असंख्यात कोटि योजन = जगत्प्रेणीके असंख्यात

संख्यात प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणनप्रमाण

पृथिवी	मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण	
दूसरी	<u>जगत्प्रेणी</u> जगत्प्रेणीका बांखा वर्गमूल	= जगत्प्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर नीचेके बारह वर्गमूलोंका परस्पर गुणकारमात्र
तीसरी	<u>जगत्प्रेणी</u> जगत्प्रेणी दशवा वर्गमूल	= जगत्प्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर नीचेके वंश वर्गमूलोंका परस्पर गुणकारमात्र
चौथी	<u>जगत्प्रेणी</u> जगत्प्रेणी आठवा वर्गमूल	= जगत्प्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर आठ वर्गमूलोंका परस्पर गुणकारमात्र
पाचवी	<u>जगत्प्रेणी</u> जगत्प्रेणी छठा वर्गमूल	= जगत्प्रेणीके प्रथम वर्गमूलसे लेकर छह वर्गमूलोंका परस्पर गुणकारमात्र
छठी	<u>जगत्प्रेणी</u> जगत्प्रेणी तीसरा वर्गमूल	जगत्प्रेणीके प्रथमादि तीन वर्गमूलोंका परस्पर गुणकारमात्र
सातवी	<u>जगत्प्रेणी</u> जगत्प्रेणी द्वितीय वर्गमूल	= जगत्प्रेणीके प्रथम वर्गमूल x द्वितीय वर्गमूल

एक वर्गात्मक राशिको उसके जितनेके वर्गमूलका भाग देंगे उसकी ^{लब्ध} प्रमाण जिस वर्गमूलका भाग दिया उस वर्गमूलतक प्रथमादि वर्गमूलोंके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि उत्पन्न होगी उतना ही होगा।

उदा. ६५५३६ का चौथा वर्गमूल २

$$\frac{६५५३६}{२} = ३२७६८ = \text{प्रथम मू} \times \text{द्वि. मू} \times \text{तृ. मू} \times \text{चौ. मू}$$

$$२५६ \times १६ \times ४ \times २$$

$$४०९६ \times ४ = ३२७६८$$

पंद्रह भाग होते हैं।

पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यसे दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके उत्पन्न करनेकी विधि -

1) प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य = दूसरी पृथिवीका
प्रथम पृ. मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची X जगत्प्रेणीका 92 वा मूल मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$\frac{92298}{\cancel{4} \times \frac{993}{32} \times \cancel{4}} = \frac{92298}{993} = \frac{92298 \times 32}{993} = 98328 \text{ दूसरी पृ. मिथ्या. द्रव्य.}$$

2) उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार भज्यमान शशि अर्थात् प्रथम पृथिवीके द्रव्यके अर्धच्छेद करनेपर भी दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

3) जगत्प्रेणी के बारहवें वर्गमूलके अर्धच्छेद + प्र. पृ. मिथ्यादृष्टि विष्कंभ सूचीके अर्धच्छेद = विरलन शशि

प्रत्येक विरलनपर दो रखकर परस्पर गुणा करनेसे जो शशि उत्पन्न हो उससे पहली पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके भाजित करने पर दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण आता है।

ये तीन भाग + पूर्वोक्त पन्द्रह भाग = दूसरी पृथिवीके मिथ्यादृष्टि द्रव्यके 98 भाग होते हैं।

इसीप्रकार सभी पृथिवियोंमें प्रत्येक पृथिवीके अठारह अठारह भाग उत्पन्न कर लेना चाहिये। इन सब भागोंका जोड़ एक सौ छब्बीस होता है।

द्वितीयादि छह पृथिवियोंकी अपेक्षा पहली पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य आता है -

दूसरी पृ. अपेक्षा

$$\cancel{4} \times \frac{993}{32} \times \frac{98328}{993} = 993 \times 98 = 98328 \text{ प्रथम पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

तीसरी पृ. अपेक्षा

$$\cancel{4} \times \frac{993}{32} \times 98 = 993 \times 98 = 98328 \text{ प्रथम पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

चौथी पृ. अपेक्षा जगत्त्रेणी आठवा वर्गमूल x प्रथम पृ. मि. विष्कंभसूची x चौ. पृ. मि. द्रव्य = प्र. पृ. मि. द्रव्य

$$\frac{98 \times 953}{222} \times 4098 = 953 \times 492 = 92298 \text{ प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

पाचवी पृ. अपेक्षा जगत्त्रेणी छठा वर्गमूल x प्रथम पृ. मि. विष्कंभसूची x पाचवी पृ. मि. द्रव्य = प्र. पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$\frac{32 \times 953}{222} \times 2088 = 953 \times 492 = 92298 \text{ प्रथम पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

छठी पृ. अपेक्षा जगत्त्रेणी तीसरा वर्गमूल x प्रथम पृ. मि. विष्कंभसूची x छठी पृ. मि. द्रव्य = प्र. पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$\frac{84 \times 953}{222} \times 9228 = 953 \times 492 = 92298 = \text{प्रथम पृथिवी मि. द्रव्य}$$

सातवी पृ. अपेक्षा जगत्त्रेणी दूसरा वर्गमूल x प्र. पृ. मि. विष्कंभसूची x सातवी पृ. मि. द्रव्य = प्र. पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य

$$\frac{922 \times 953}{222} \times 492 = 953 \times 492 = 92298 = \text{प्रथम पृथिवी मि. द्रव्य}$$

तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य प्रथमादि पृथिवियोंकी अपेक्षा ->

प्रथम पृ. अपेक्षा $\frac{\text{प्र. पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य}}{\text{प्रथम पृ. मि. विष्कंभसूची} \times \text{जगत्त्रेणी का दसवा वर्गमूल}} = \text{तीसरी पृथिवीका मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$

$$\frac{92298}{953 \times 10} = \frac{92298}{9530} = \frac{92298 \times 18}{9530} = 1752 \text{ ती. पृ. मि. द्रव्य}$$

दूसरी पृ. अपेक्षा $\frac{\text{दूसरी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य}}{\text{जगत्त्रेणी आठवा वर्गमूल} \times \text{बारहवा वर्गमूल}} = \text{तीसरी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$

चौथी पृ. अपेक्षा जगत्त्रेणी 9 वा मू. x 90 वा मूल x चौथी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य = तीसरी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य

पाचवी पृ. अपेक्षा जगत्त्रेणी 6 वा मू. x 12 वा मू. x 9 वा मू. x 90 वा मू. x पाचवी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य = तीसरी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

छठी पृ. अपेक्षा जगत्त्रेणी 4 था मू. x 15 वा मू. x 6 वा मू. x 12 वा मूल x 9 वा मू. x 90 वा मू. x छठी पृथिवीका द्रव्य = तीसरी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

सातवी पृ. अपेक्षा जगत्त्रेणी 3 रा मू. x 18 था मू. x 15 वा मू. x 6 वा मू. x 12 वा मू. x 15 वा मू. x 90 वा मू. x सातवी पृथिवीका द्रव्य = तीसरी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

चौथी पृथिवीका द्रव्य प्रथमादि पृथिवियोंकी अपेक्षा लाले है -

प्रथम पृ. अपेक्षा $\frac{\text{प्रथम पृ. मि. द्रव्य}}{\text{प्रथम पृ. मिथ्याहृष्टि विष्कंभसूची} \times \text{जगत्प्रेणी आठवां वर्गमूल}} = \text{चौथी पृथिवी मिथ्या. द्र.}$

$$\frac{9229E}{993 \times 2E} = \frac{9229E \times 4}{258} = 405E = \text{चौथी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$$

द्वितीय पृ. अपेक्षा $\frac{\text{द्वितीय पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}}{\text{जगत्प्रेणी 9 वा मू.} \times 90 \text{ वा मू.} \times 99 \text{ वा मू.} \times 92 \text{ वा मू.}} = \text{चौथी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$

तृतीय पृ. अपेक्षा $\frac{\text{तृतीय पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}}{\text{जगत्प्रेणी 9 वा मू.} \times 90 \text{ वा मू.}} = \text{चौथी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$

पाचवी पृ. अपेक्षा $\frac{\text{जगत्प्रेणी 10 वा मू.} \times 4 \text{ वा मू.} \times \text{पाचवी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}}{\text{जगत्प्रेणी 8 था मू.} \times 9 \text{ वा मू.} \times 6 \text{ ठा मू.} \times 7 \text{ वा मू.} \times 4 \text{ वा मूल.} \times \text{छठी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य}} = \text{चौथी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$

सातवी पृ. अपेक्षा $\frac{\text{जगत्प्रेणी 3 रा. मू.} \times 8 \text{ था मू.} \times 9 \text{ वा. मू.} \times 6 \text{ ठा मू.} \times 7 \text{ वा मूल.} \times 4 \text{ वा मू.} \times \text{सातवी पृथिवीका द्रव्य}}{\text{जगत्प्रेणी 8 था मू.} \times 9 \text{ वा मू.} \times 6 \text{ ठा मू.} \times 7 \text{ वा मूल.} \times \text{छठी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य}} = \text{चौथी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$

पाचवी पृथिवीका द्रव्य प्रथमादि पृथिवियोंकी अपेक्षा लाले है -

प्रथम पृ. अपेक्षा $\frac{\text{प्रथम पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}}{\text{प्रथम पृ. मिथ्याहृष्टि विष्कंभसूची} \times \text{जगत्प्रेणी छठां वर्गमूल}} = \text{पाचवी पृथिवीका मि. द्रव्य}$

$$\frac{9229E}{993 \times 32} = \frac{9229E \times 8}{993} = 592 \times 8 = 2084 = \text{पाचवी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$$

द्वितीय पृ. अपेक्षा $\frac{\text{द्वितीय पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}}{\text{जगत्प्रेणी 10 वा मू.} \times 4 \text{ वा मू.} \times 9 \text{ वा मू.} \times 90 \text{ वा मू.} \times 99 \text{ वा मू.} \times 92 \text{ वा मू.}} = \text{पाचवी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$

तृतीय पृ. अपेक्षा $\frac{\text{तृतीय पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य}}{\text{जगत्प्रेणी 10 वा मू.} \times 4 \text{ वा मू.} \times 9 \text{ वा मू.} \times 90 \text{ वा मू.}} = \text{पाचवी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य}$

चौथी पृ. अपेक्षा चौथी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य - पाचवी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य
 अगल्फ्रेणीका ७ वा मू. x ८ वा मू.

दुही पृ. अपेक्षा अगल्फ्रेणी का ४ था मू. x ५ वा मू. x ६ ठा मू. x छठी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य = छठे पाचवी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य

सातवी पृ. अपेक्षा अगल्फ्रेणी का ३ रा मू. x ४ था मू. x ५ वा मू. x ६ ठा मू. x सातवी पृ. मि. द्रव्य = पाचवी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य

छठी पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य प्रथमादि पृथिवियोंकी अपेक्षा जाते हैं :-

प्रथम पृ. अपेक्षा प्रथम पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य = छठी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य
 प्रथम पृ. मिथ्याहृष्टि विक्रमसूची x अगल्फ्रेणी ३ रा वर्गमूल

$$\frac{9696}{12 \times 2} \times 68 = \frac{9696 \times 2}{963} = 1028$$

दूसरी पृ. अपेक्षा द्वितीय पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य
 अगल्फ्रेणी ४ था मू. x ५ वा मू. x ६ ठा मू. x ७ वा मू. x ८ वा मू. x ९ वा मू. x १० वा मू. x ११ वा मू. x १२ वा मू.
 = छठी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य

तीसरी पृ. अपेक्षा तृतीय पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य = छठी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य
 अगल्फ्रेणी ४ था मू. x ५ वा मू. x ६ ठा मू. x ७ वा मू. x ८ वा मू. x ९ वा मू. x १० वा मू.

चौथी पृ. अपेक्षा चौथी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य = छठी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य
 अगल्फ्रेणी ४ था मू. x ५ वा मू. x ६ ठा मू. x ७ वा मू. x ८ वा मू.

पाचवी पृ. अपेक्षा पाचवी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य = छठी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य
 अगल्फ्रेणी ४ था मू. x ५ वा मू. x ६ ठा मू.

सातवी पृ. अपेक्षा अगल्फ्रेणी तीसरा वर्गमूल x सातवी पृ. मिथ्याहृष्टि द्रव्य = छठी पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य

सातवी पृथिवीका मिथ्याहृष्टि द्रव्य प्रथमादि पृथिवियोंकी अपेक्षा जाते हैं :-

प्रथम पृ. अपेक्षा प्रथम पृथिवी मिथ्याहृष्टि द्रव्य = सातवी पृथिवी मिथ्या. द्रव्य
 प्रथम पृ. मिथ्याहृष्टि विक्रमसूची x अगल्फ्रेणी का दूसरा वर्गमूल

$$\frac{9229E}{953 \times 922} = \frac{9229E}{953} = 972 \text{ सातवी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य}$$

द्वितीय पृ. अपेक्षा
जगत्प्रेणी उ रा मू. X ४ था मू. X ५ वा मू. X ६ ठा मू. X ७ वा मू. X ८ वा मू. X ९ वा मू. X १० वा मू. X ११ वा मू. X १२ वा मू.
 - सातवी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

तृतीय पृ. अपेक्षा
जगत्प्रेणी उ रा मू. X ४ था मू. X ५ वा मू. X ६ ठा मू. X ७ वा मू. X ८ वा मू. X ९ वा मू. X १० वा मू.
 - सातवी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

चौथी पृ. अपेक्षा
जगत्प्रेणी उ रा मू. X ४ था मू. X ५ वा मू. X ६ ठा मू. X ७ वा मू. X ८ वा मू.
 - सातवी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

पाचवी पृ. अपेक्षा
जगत्प्रेणी उ रा मू. X ४ था मू. X ५ वा मू. X ६ ठा मू.
 - सातवी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

छठी पृ. अपेक्षा
जगत्प्रेणी का तीसरा वर्गमूल
 - सातवी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य

- किसी भी पृथिवीका द्रव्य निकालने के लिए ध्यान देनेयोग्य बातें -
- 1) उपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय उपरकी पृथिवियोंके द्रव्यको भाज्यराशि करके जिस वर्गमूलसे भाग देनेपर नीचेकी पृथ्वीका द्रव्य आता है उस वर्गमूलसे नीचे का जो वर्गमूल उस वर्गमूलसे लेकर उपरकी पृथ्वीके भागहारभूत वर्गमूलों तकके वर्गमूलों को परस्पर गुणा करके भाग देनेपर नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है।
 - 2) नीचेकी पृथिवियोंसे उपरकी पृथ्वीका द्रव्य उत्पन्न करते समय नीचेकी पृथ्वीके भागहारभूत वर्गमूलसे लेकर उपरकी पृथ्वीके भागहारभूत वर्गमूल तकके वर्गमूलोंका परस्पर गुणा करके पुनः नीचेकी पृथ्वीके द्रव्यसे गुणा करनेपर उपरकी पृथ्वीका द्रव्य आता है।

पहले जहां उपरकी पृथिवियोंसे नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य उत्पन्न करते समय जो जो भागहार कह आये हैं उस उसके अर्धच्छेद करके तत्प्रमाण भाज्य राशिके आधे आधे करनेपर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है। अथवा अर्धच्छेदप्रमाण दो रखकर उनके

परस्पर गुणा करनेसे जो राशि आवे उसका भाज्य राशिमें भाग देनेपर भी नीचेकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है।

उसीप्रकार नीचेकी पृथिवियोंसे ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य लाने समय जहां जो गुणाकार हो उसके अर्धच्छेदोंका जितना प्रमाण हो उतनीवार गुण्य राशिके दूने दूने करनेपर ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आता है।

अथवा उक्त अर्धच्छेदप्रमाण को देखकर उनके परस्पर गुणा करनेसे जो राशि हो उससे गुण्य राशिके गुणित कर देनेपर भी ऊपरकी पृथिवियोंका द्रव्य आ जाता है।

इसप्रकार प्रत्येक पृथिवीके $6+6+6=18$ अंग होते हैं। सब पृथिवियोंके मिलकर $18 \times 7 = 126$ अंग होते हैं।

प्रथमादि पृथिवियोंके असंयत सम्यग्दृष्टि आदिके अवहारकाल

$$1) \text{ सामान्य ना. असंयत अवहारकाल} + \frac{\text{सामान्य नारक असंयत अवहारकाल}}{\text{आवलीका असंख्यातवा भाग}} = \text{प्रथम पृ. असंयत अवहारकाल}$$

$$2) \text{ प्रथम पृ. असंयत अवहारकाल} \times \frac{\text{आवली का असंख्यातवा भाग}}{\text{अवहारकाल}} = \text{प्रथम पृ. सम्यग्दृष्टि अवहारकाल}$$

$$3) \text{ प्रथम पृ. सम्यग्दृष्टि अवहारकाल} \times \text{संख्यात} = \text{प्रथम पृ. सासादन अवहारकाल}$$

$$4) \text{ प्रथम पृ. सासादन अवहारकाल} \times \frac{\text{आवलीका असंख्यातवा भाग}}{\text{काल}} = \text{द्वि. पृ. असंयत अवहारकाल}$$

$$5) \text{ द्वि. पृ. असंयत अवहारकाल} \times \frac{\text{आवली}}{\text{अवहारकाल}} = \text{द्वि. पृ. सम्यग्दृष्टि अवहारकाल}$$

$$6) \text{ द्वि. पृ. सम्यग्दृष्टि अवहारकाल} \times \text{संख्यात} = \text{द्वितीय पृ. सासादन अवहारकाल}$$

इसीप्रकार तीसरी पृथिवी से लेकर सातवी पृथिवी तक अवहारकाल परिपाटी क्रमसे उत्पन्न करना चाहिये।

भागभाग →

$$\text{संपूर्ण जीवराशिका अनन्त बहुभाग तिर्यच} \frac{\text{संपूर्ण जीवराशिका प्रमाण } 65938 \text{ अनन्त असंख्यात } \times 10}{2982} = 50388$$

$$\text{शेष एकभागका अनन्त बहुभाग सिद्ध} \frac{9022 \times 10}{2982} = 6980$$

$$\text{शेष एकभागका असंख्यात बहुभाग देव} \frac{248 \times 1022 \times 3}{8} = 680$$

$$\text{शेष एकभागका असंख्यात बहुभाग नारकी} \frac{248 \times 1022 \times 3}{8} = 952$$

$$\text{शेष एकभाग मनुष्य} \frac{248 \times 1022 \times 3}{8} = 680$$

$$\frac{65938}{8} = 8237.25$$

नारक जीवशास्त्रिका भागभाग

नारक जीवशास्त्रिका	असंख्यात बहुभागप्रमाण	प्रथम पृ. मिथ्यादृष्टि
शेष असंख्यातके एकभागका	"	द्वितीय पृ. मिथ्यादृष्टि
शेष	"	तृतीय पृ. मिथ्यादृष्टि
शेष	"	चतुर्थ पृ. मिथ्यादृष्टि
शेष	"	पंचम पृ. मिथ्यादृष्टि
शेष	"	छठी पृ. मिथ्यादृष्टि
"	"	सातवी पृ. मिथ्यादृष्टि
"	"	प्रथम पृ. असंयत सम्यग्दृष्टि
"	"	प्रथम पृ. सम्यग्मिथ्यादृष्टि
"	संख्यात	प्रथम पृ. आसादन सम्यग्दृष्टि
"	"	द्वितीय पृ. असंयत सम्य
"	"	द्वितीय पृ. सम्यग्मिथ्यादृष्टि
"	संख्यात	द्वितीय पृ. आसादन

इसीप्रकार तृतीय पृथिवीसे लेकर सातवी पृथिवीतक गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका भागभाग करना चाहिये।

स्वस्थान अल्पबहुत्व - सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि

अंकसंज्ञिसे स्थान प्रमाण	अल्पबहुत्व स्थान का नाम	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण	अंकसंज्ञिसे गुण. प्रमाण
2	1) सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची	स्तोक		
3206E 2)	" " " " अवहारकाल	असंख्यातगुणा	1) अवहारकाल विष्कंभसूची	3206E 2
			2) जगत्प्रेणी विष्कंभसूची	8443E 2
			3) जगत्प्रेणी धनांगुल प्र. मू.	8443E 8
8443E 3)	जगत्प्रेणी	असंख्यातगुणी	विष्कंभसूची	2
939062 4)	सामान्य नारक मिथ्यादृष्टि राशि	असंख्यातगुणी	विष्कंभसूची	2
8443E 2 5)	जगत्प्रतर	असंख्यातगुणा	सा. ना. मि. अवहारकाल	3206E
8443E 3 6)	धनलोक	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी	8443E

सामान्य नारक सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्बद्धि जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व सामान्य स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। इसीप्रकार प्रथम पृथिवीमें स्वस्थान अल्पबहुत्व है।

द्वितीय पृथिवीमें मिथ्यादृष्टि स्वस्थान अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व स्थान	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण	अंकसंज्ञादृष्टि गुण. प्रमाण	स्थानके प्रमाण अंकसंज्ञादृष्टि
1 मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	स्तोक			४
2 मिथ्यादृष्टि जीवराशि	असंख्यात गुणी	1) मिथ्याजीवराशि अवहारकाल 2) जगत्त्रेणी अवहारकाल 3) जगत्त्रेणी जगत्त्रेणी 99वाम्.	$\frac{9E374}{8}$ $\frac{E443E}{9E}$ $\frac{E443E}{9E}$	9E374
3 जगत्त्रेणी	असंख्यात गुणी	जगत्त्रेणीका बारहवा वगमूल	४	E443E
4 जगत्त्रेणर	असंख्यात गुणा	जगत्त्रेणी	E443E	E443E ²
5 घनलोक	असंख्यात गुणा	जगत्त्रेणी	E443E	E443E ³

सामान्य नारक शशिका परस्थान अल्पबहुत्व

1 असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल	स्तोक			
2) सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहार	असंख्यात गुणा	आकलि		
3) सासादन अवहारकाल	संख्यात गुणा	असंख्यात		
4) पल्योपम	असंख्यात गुणा	पल्योपम = सासा. अवहारकाल		
5) सामान्य ना. मि. विष्कंभसूची	असंख्यात गुणी	1) निष्कंभ सूची = पल्योपम 2) सूच्यंगुल		सूच्यंगुल म.मू X डि.मू
		पल्योपम x सूच्यंगुल डि.मू		

इस विष्कंभसूचीके उपर परस्थान अल्पबहुत्व स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये। इसीप्रकार पलली पृथिवीके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना।

पृ. 299-299

सर्व परस्थान अल्पबहुत्व →

अल्पबहुत्व स्थान का नाम	अल्पबहुत्व	गुणकारक प्रमाण
प्रथम पृ. असंयत सम्य. अवहारकाल	स्तोक	
प्रथम पृ. सम्यग्भिध्याद्दृष्टि "	असंख्यातगुणा	आवलि असंख्यात
प्रथम पृ. सासादन अवहारकाल	संख्यातगुणा	संख्यातसम्य
द्वितीय पृ. असंयत सम्य. अवहारकाल	असंख्यात गुणा	आवलि
" ५। अ सम्यग्भिध्याद्दृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	असंख्यात
" " सासादन अवहारकाल	संख्यातगुणा	संख्यातसम्य
⋮	⋮	
सप्तम पृ. सासादन अवहारकाल	संख्यातगुणा	
" " सासादन द्रव्य	असंख्यातगुणा	
" " सम्यग्भिध्याद्दृष्टि द्रव्य	संख्यातगुणा	
" " असंयत सम्य. द्रव्य	असंख्यातगुणा	आवलि-असंख्यात
⋮	⋮	
प्रथम पृ. असंयत सम्य. द्रव्य	असंख्यातगुणा	आवलि-असंख्यात
पत्थोपम	असंख्यातगुणा	
प्रथम पृ. मि. विष्कंभसूची	असंख्यातगुणी	
सामान्य ना. मि. विष्कंभसूची	विशेष अधिक	933 922
दूसरी पृ. मि. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	2 5
		जगत्प्रेणी 92 वा मू. धमांगुल द्वि. मू.
तीसरी पृ. मि. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी 90 वा मू. जगत्प्रेणी 92 वा मू.
चौथी पृ. मि. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी 8 वा मू. जगत्प्रेणी 90 वा मू.
पाचवी पृ. मि. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी 6 वा मू. जगत्प्रेणी 8 वा मू.
छठी पृ. मि. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी 3 वा मू. जगत्प्रेणी 6 वा मू.
सातवी पृ. मि. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी 3 वा मू.
सातवी पृ. मिथ्याद्दृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी 9 मू.

छठी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी तीसरा वर्गमूल 1) जगत्प्रेणी २ था मू. x ५ वा मू. x ६ ठा मू. 2) जगत्प्रेणी ३ रा मू. ÷ ६ ठा मू.
पाचवी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	"	1) जगत्प्रेणी ७ वा मू. x ८ वा मू. 2) जगत्प्रेणी ६ ठा मू. ÷ ८ वा मू.
चौथी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	1) जगत्प्रेणी ९ वा मू. x १० वा मू. 2) जगत्प्रेणी ८ वा मू. ÷ १० वा मू.
तीसरी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	1) जगत्प्रेणी ११ वा मू. x १२ वा मू. 2) जगत्प्रेणी १० वा मू. ÷ १२ वा मू.
दूसरी पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी १२ वा मू. ÷ घनांगुल इ. मू.
सामान्य ना. मि. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	सा. ना. मि. अवहारकाल + सा. ना. मि. अवहारकाल
प्रथम पृ. मि. अवहारकाल	विशेष अधिक असंख्यातगुणी	सा. ना. मि. अवहारकाल + सा. ना. मि. अवहारकाल + असंख्यात
जगत्प्रेणी		प्रथम पृ. मि. विष्कंभसूची
प्रथम पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणी	प्रथम पृ. मि. विष्कंभसूची
सामान्य ना. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	विशेष अधिक	दूसरी पृथिवी से लेकर सातवी पृथिवी तक छह पृ. मिथ्यादृष्टि द्रव्य
जगत्प्रतरं	असंख्यातगुणा	सामान्य ना. मि. अवहारकाल
घनलोक	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी

स्वस्थान अल्पबहुत्व → प्रत्येक भेदों के प्रत्येक गुणस्थानों का पृथक् पृथक् अल्पबहुत्व कहना वह स्वस्थान अल्पबहुत्व है।

परस्थान अल्पबहुत्व → प्रत्येक भेदों में सब गुणस्थानों का मिलकर अल्पबहुत्व कहना वह परस्थान अल्पबहुत्व है।

सर्व परस्थान अल्पबहुत्व → सब भेदों के सब गुणस्थानों का मिलकर अल्पबहुत्व कहना सर्व परस्थान अल्पबहुत्व है।

नरक गतिका वर्णन समाप्त

$$\begin{aligned}
 & \text{पृ. 298} \quad \left(\text{संपूर्ण जीवराशि} + \text{गुणस्थान प्रतिपन्न तीन गतिसंबंधी जीवराशि} + \text{सिद्धराशि} \right) + \\
 & \text{सिद्ध} \left(\text{गुणस्थान प्रतिपन्न तीन गतिसंबंधी जीवराशि} + \text{सिद्धराशि} \right)^2 = \frac{\text{तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशि}}{\text{तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशि}} = \text{तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशि} \\
 & \frac{\left(\text{संपूर्ण जीवराशि} \right)^2}{\text{ध्रुवराशि}} = \text{तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवराशि}
 \end{aligned}$$

$$\begin{aligned}
 & \text{तिर्यंच असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल} = \text{देव सासा. अवहारकाल} \times \frac{\text{आवली असंख्यात}}{\text{असंख्यात}} \\
 & \text{तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल} = \text{तिर्यंच असंयत} \quad \text{''} \quad \times \frac{\text{आवली असंख्यात}}{\text{असंख्यात}} \\
 & \text{तिर्यंच सासादन अवहारकाल} = \text{तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि} \quad \text{''} \quad \times \text{संख्यात} \\
 & \text{तिर्यंच देशसंयत अवहारकाल} = \text{तिर्यंच सासादन अवहारकाल} \times \frac{\text{आवली असंख्यात}}{\text{असंख्यात}}
 \end{aligned}$$

$$\text{पल्योपम} = \frac{\text{अपना अपनी अवहारकाल}}{\text{अपनी अपनी गुणस्थान प्रतिपन्न तिर्यंच राशि}}$$

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि ^{जीव} द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात काल प्रमाणसे असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी प्रमाण क्षेत्रप्रमाणसे जगत्प्रतर = प्रतरांगुलका असंख्यातवा भाग पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंका अवहारकाल देवोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणों हीन है। सूच्यंगुल = 96, आवली = 4, असंख्यात = 8 माना.

$$1) \frac{(248 \times \text{सूच्यंगुल})^2}{(\text{आवली} \div \text{असंख्यात})^2} = \text{पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

$$= \frac{(248 \times 96)^2}{(4 \div 8)^2} = \frac{248 \times 96 \times 248 \times 96}{8} = \frac{59538 \times 248}{8}$$

$$2) \frac{(248 \times \text{सूच्यंगुल})}{(\text{आवली} \div \text{असंख्यात})} = \text{पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

$$= \frac{(248 \times 96)}{4 \div 8} = \frac{248 \times 96}{8} = 248 \times 12 = 2976$$

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मि. अवहार

$$3) \frac{59538 \times \text{प्रतरांगुल}}{(\text{आवली} \div \text{असंख्यात})^2} = \text{पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

$$= \frac{59538 \times 248}{(4 \div 8)^2} = \frac{59538 \times 248}{8} = 59538 \times 31$$

$$1) \frac{\text{प्रतरांगुल}}{(\text{आवली} \div \text{असंख्यात})^2} = \text{पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

$$6443E$$

$$24E \div \frac{(4 \div 8)^2}{6443E} = 24E \div 8 = \frac{24E \times 6443E}{8} = \frac{6E \times 6443E}{2}$$

पंचे. तिर्यच मि. अवहारकाल

पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकालका खंडित आदिकके द्वारा वर्णन करते हैं -

9) खंडित =

..... प्रतरांगुल के असंख्यात खंड
 एक खंडप्रमाण पंचे. मि. अवहारकाल

अंकगणितसे प्रतरांगुल 24E, आवलीका असंख्यातवा भाग 2 माना

$$\frac{1}{92L} \quad \frac{1}{92L}$$

$$2) \text{भाजित} = \frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{आवली का असंख्यातवा भाग}} = \frac{24E}{2} = 92L$$

ऊपर के अंकगणित से यक्ष के अंकगणित में अंतर पड रहा है क्योंकि यहा 6443E से प्रतरांगुल का प्रमाण छोटा माना है। वास्तविक गणितमें अंतर नहीं है। 6443E प्रतरांगुल को आवलीके असंख्यातवे भागके वर्गसे भाग देनेपर जो लब्ध आता है वही प्रतरांगुलको आवलीके असंख्यातवे भागसे भाग देनेपर आता है।

3) विरलित -

$$\text{विरलन} = \frac{\text{आवली}}{\text{शांशी असंख्यात}} \quad \text{देवशांशी} = \frac{\text{प्रतरांगुल}}{92L \quad 92L}$$

एक विरलनके प्रति प्राप्त एक खंडप्रमाण तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल होता है

$$4) \text{अपहत} \rightarrow \begin{array}{r} \text{शलाका} = \text{आवली} \div \text{असंख्यात} \\ \frac{2}{-9} \\ \hline 9 \\ -9 \\ \hline 0 \end{array} \quad \begin{array}{r} \text{प्रतरांगुल} \\ 24E \\ -92L \\ \hline 92L \\ -92L \\ \hline 000 \end{array}$$

एकवार घटायी हुई राशि पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवतारकाल होता है।

4) प्रमाण $\rightarrow \frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{असंख्यात}} = \text{असंख्यात सूच्यंगुल प्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मि. अवतारकाल}$
 $\frac{24E}{2} = 12C = 9E \times C$

5) कारण $\rightarrow \frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{सूच्यंगुल}} = 9 \text{ सूच्यंगुल} \frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{सूच्यंगुल का प्रथम वर्गमूल}} = \text{सूच्यंगुल} \times \text{सूच्यंगुल प्र.म.}$
 $\frac{24E}{9E} = 9E \quad \frac{24E}{8} = 3E \times 8 = 9E \times 8$

इस प्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर

प्रतरांगुल \div आवलीका असंख्यातवा भाग = असंख्यात सूच्यंगुल

$$24E \div 2 = 12C = 9E \times C$$

6) निरुक्ति $\rightarrow \text{सूच्यंगुल} \div \text{आवलीका असंख्यातवा भाग} = \text{लब्धप्रमाण सूच्यंगुल पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवतारकाल}$

$$9E \div 2 = C \quad C \text{ सूच्यंगुल प्रमाण पं. ति. मि. अवतारकाल है।}$$

अथवा

सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल

आवलीका असंख्यातवा भाग

\times सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल = लब्धप्रमाण

सूच्यंगुल पं. ति. मि. अवतारकाल होता है।

$$\frac{9}{2} \times 8 = C \quad C \times 9E = \text{पं. ति. मि. अवतारकाल}$$

इसी प्रकार असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर

आवली

\times आवली \times प्रतरावली \times प्रतरावली वर्ग $\dots \times$ सूच्यंगुल

आवलीका असंख्यातवा भाग

प्रथम वर्गमूल = लब्धप्रमाण सूच्यंगुल पं. ति. मि. अवतारकाल 3

7) विकल्प \rightarrow अधस्तन विकल्प = सूच्यंगुल \times सूच्यंगुल = पं. ति. मि. अवतारकाल
आवली का असंख्यातवा भाग

$$\frac{9E}{2} \times 9E = 12C \quad \text{पं. ति. मि. अवतारकाल}$$

सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल \times सूच्यंगुल प्र. वर्गमूल \times सूच्यंगुल = पं. ति. मि. अवहार काल
आवली का असंख्यातवा भाग

$$\frac{28}{4} \times 7 \times 9E = 924 \text{ पं. ति. मि. अवहारकाल}$$

असंख्यात वर्गस्थान नीचे जाकर

आवली \times आवली \times प्रतरावली $\dots \dots \times$ सूच्यंगुल प्र. वर्गमूल \times सूच्यंगुल =
आवली का असंख्यातवा भाग पं. ति. मि. अवहार

2) अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प =

घनांगुल = पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टी अवहारकाल
आवली असंख्यातवा भाग \times सूच्यंगुल

$$\frac{9E^3}{2 \times 9E} = \frac{9E^2}{2} = \frac{25E}{2} = 924 \text{ पंचेन्द्रिय तिर्यच मि. अवहारकाल}$$

3) घनाधनमें अधस्तन विकल्प

घनाधनांगुल का प्रथम वर्गमूल = पं. ति. मि. अवहारकाल
आवली का असंख्यातवा भाग \times सूच्यंगुल \times घनांगुल का प्रथम वर्गमूल

घनाधनांगुल = $9E^3$ उसका प्रथम वर्गमूल निकालने के लिए
घातमें दो का भाग देना $9E^2 = 9E \times 9E \times 9E \times 9E \times 8$

घनांगुल = $9E^3$ उसका प्रथम वर्गमूल $9E^2 = 9E \times 8$

उपर के सूत्रानुसार

$$\frac{9E \times 9E \times 9E \times 9E \times 8}{2 \times 9E \times 9E \times 8} = \frac{25E}{2} = 924 = \text{पं. ति. मि. अवहारकाल}$$

4) द्विरूपमें श्रुति उपरिम विकल्प -

प्रतरांगुल = पं. ति. मि. अवहारकाल $\frac{9E \times 9E}{4} = 924$
आवली का असंख्यातवा भाग

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार उक्त भज्यमान राशिके अर्धच्छेद करनेपर भी पंचेन्द्रिय तिर्यच मिथ्यादृष्टी अवहारकाल आता है।

भागहार 2 के अर्धच्छेद 9 है भाज्य 24E का एकार
अर्धच्छेद करनेपर 92 < पं. ति. मि. अवहारकाल आता है

4) प्रतरांगुल का वर्ग = पं. ति. मि. अवहारकाल
आवलीका असंख्यातवा भाग \times प्रतरांगुल

$$\frac{9E^2 \times 9E^2}{2 \times 9E^2} = \frac{9E^2}{2} = \frac{24E}{2} = 92 < \text{पं. ति. मि. अवहारकाल}$$

भागहार $2 \times 9E^2$ के अर्धच्छेद 9 आते हैं $9E = 8493E$ के इतनीवार अर्धच्छेद करनेपर
E) अक्षरूपमें उपरिम विकल्प \rightarrow 92 < पं. ति. मि. अवहारकाल आता है

घनांगुल का वर्ग = पं. ति. मि. अवहारकाल
आवलीका असंख्यातवा भाग \times प्रतरांगुल का वर्ग

$$\frac{9E^3 \times 9E^3}{2 \times 9E^2 \times 9E^2} = \frac{9E^{3+3}}{2 \times 9E^{2+2}} = \frac{9E^6}{2 \times 9E^4} = \frac{9E^{6-4}}{2} = \frac{9E^2}{2} = 92 <$$

भागहार $2 \times 9E^4$ के $9 + 9E = 936$ अर्धच्छेद होते हैं
क्यों कि 9E के 8 अर्धच्छेद होते हैं तो 9E के 8 गुणे अर्धच्छेद
होते हैं इसलिए 9E के 9E अर्धच्छेद होते हैं

इतनीवार अर्थात् 96 वार भाज्यराशि 9E के अर्धच्छेद करनेपर
92 < पं. ति. मि. अवहारकाल आता है।

9E के 28 अर्धच्छेद होते हैं 92 < के 6 अर्धच्छेद होते हैं इसलिए
 $28 - 6 = 96$ इसलिए 9E के 96 अर्धच्छेद करनेपर 92 < आते हैं यह
सिद्ध होता है।

6) घनाधनमें गृहीत उपरिम विकल्प -

घनाधनांगुलका उपरिम वर्ग = पं. ति. मि. अवहार
आवलीका असंख्यातवा भाग \times प्रतरांगुल² \times (घनांगुल²)² = पं. ति. मि. अवहार
काल

$$\frac{9E^9 \times 9E^9}{2 \times (9E^2)^2 \times (9E^3)^2} = \frac{9E^9}{2 \times 9E^4 \times 9E^6} = \frac{9E^9}{2 \times 9E^{10}} = \frac{9E^{9-10}}{2} = \frac{9E^{-1}}{2} = \frac{9E}{2} = \frac{24E}{2} = 92 < \text{पं. ति. मि. अवहारकाल}$$

भागदार $2 \times 9E$ के अर्धच्छेद $9 + 9E \times 8 = 9 + E8 = E9$ होते हैं
उतने ही भाज्यराशि $9E$ के अर्धच्छेद करनेपर $92 < 4$ पं. सि. मि.
अवहारकाल आता है।

$9E$ के अर्धच्छेद 92 और $92 <$ के 6 अर्धच्छेद
 $92 \leftarrow 92 - 6 = E8$ इसलिये $9E$ के $E9$ वार अर्धच्छेद करनेपर
 $92 <$ आते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि अवहारकाल = प्रतरांगुल का असंख्यातवा भाग;
घनांगुल का असंख्यातवा भाग, अथवा घनाघनांगुलके प्रथम वर्गमूलका असंख्यातवा
भाग है।

जगत्प्रती = पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची
पंचेन्द्रिय तिर्यंच मि. अवहारकाल

विष्कंभसूची अर्थात् जितनी जगत्प्रतीप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका
प्रमाण होता है वह संख्या.

जगत्प्रतर = पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्यका प्रमाण
अवहारकाल

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादन सम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्यग्दृष्टि,
संयतासंयत गुणस्थानवर्ती = $\frac{\text{पल्योपम}}{\text{असंख्यात}}$

पु. 22E पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात
कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी
क्षेत्रप्रमाणसे जगत्प्रतर \div देव अवहारकालसे संख्यातगुणा हीन अवहारकाल

जगत्प्रतर \div प्रतरांगुलका संख्यातवा भाग = पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मि. अवहारकाल

$\left(\frac{\text{सूत्रांगुल}}{\text{संख्यात}}\right)^2 = \text{पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$

अथवा $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{संख्यात}^2} = \text{पंचे. ति. फ. मि. अवहारकाल}$

सासादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे संयतासंयत गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती
पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त जीव = पल्योपम \div असंख्यात

पृ. 229

पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिनी मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी प्रमाण क्षेत्रप्रमाणसे जगत्प्रतर \div ६०० योजनके ^{अंगुली} वर्ग ६०० योजन के अंगुल करके उसका वर्ग करनेपर -
 १ योजन = ४ कोस , १ कोस = दौ हजार (२०००) धनुष्य
 १ धनुष्य = ४ हाथ , १ हाथ = २४ अंगुल

१ योजनके अंगुल = $४ \times २००० \times ४ \times २४ = ७६८०००$
 ६०० योजनके अंगुल = $६०० \times ७६८००० = ४६,०८,०००००$
 ४६,०८,०००,००० का वर्ग २१,२३,३६,६४०,०००,०००,००० प्रतरांगुल
 इसलिये ६०० योजनके अंगुल करके वर्ग करनेपर इक्कीस सौ कोडाकोडी तेवीस कोडाकोडी, छत्तीस लाख कोडी और चौसठ हजार कोडी प्रतरांगुल प्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिनी मिथ्यादृष्टियोंका अवहारकाल होता है।

पृ. 233

अवहारकालके खंडित आदिक विधिको कहते है -

- १) खंडित \rightarrow प्रतरांगुलके उपरिम वर्गके प्रतरांगुलके संख्यातवे भागमात्र खंड करनेपर उनमेंसे एक खंडप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिनी मि. अवहारकाल होता है।

प्रतरांगुल २५६ माना उसका उपरिम वर्ग ६५५३६
 संख्यात ४ माना

$२५६ \div ४ = ६४$, ६५५३६ के ६४ खंड करनेपर एक खंड १०२४ आता है।

- २) भाजित $\frac{\text{प्रतरांगुल}^2}{\text{प्रतरांगुल} \div \text{संख्यात}} = \text{पंचेन्द्रिय तिर्यच योनिनी मि. अवहारकाल}$

$$\frac{२५६ \times २५६}{२५६ \div ४} = \frac{२५६ \times २५६}{६४} = २५६ \times ४ = १०२४ \text{ पं. ति. यो. मि. अवहारकाल}$$

- ३) विरलित = विरलन = प्रतरांगुलका संख्यातवा भाग $\frac{२५६}{४} = ६४$
 देयशशि = प्रतरांगुलका वर्ग $२५६^2 = ६५५३६$

9028 9028 9028 9028 9028
 9 9 9 9 9 - - - - - ६४ वार

9028 = पं. ति. योनिनि^{मि.} अवहारकाल

४) अपहत → शलाकाराशि = $\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{संख्यात}}$ प्रतरांगुल का वर्ग

$\frac{24E}{9} = ६४$	६४	६४४३६
	-१	-१०२४
	६३	६४५१२
	-१	-१०२४
	६२	६३४८८
	-१	-१०२४
	६१	६२४६४

कौनो राशि एकसाथ समाप्त होती है।

एकवार घटाया हुआ प्रमाण उतना पंचेन्द्रिय तिर्यक चि. योनिनी मि. अवहारकाल होता है।

५) प्रमाण = $\frac{\text{प्रतरांगुल}^2}{\text{असंख्यात}} = \frac{\text{संख्यात}}{\text{प्रतरांगुल}} \times \text{प्रमाण}$ पं. ति. यो. मि. अवहारकाल
 $६४४३६ \div ६४ = १०२४$ अर्थात् २४६×४ चार प्रतरांगुल प्रमाण

६) कारण —

$$\frac{\text{प्रतरांगुल}^2}{\text{प्रतरांगुल}} = १ \text{ प्रतरांगुल} \quad ६४४३६ \div २४६ = २५९$$

$$\frac{\text{प्रतरांगुल}^2}{2} = 2 \text{ प्रतरांगुल} \quad ६४४३६ \div \frac{२४६}{2} = ५१२$$

$$\frac{\text{प्रतरांगुल}^2}{3} = 3 \text{ प्रतरांगुल} \quad ६४४३६ \div \frac{२४६}{3} = ७६८$$

$$\frac{\text{प्रतरांगुल}^2}{\text{संख्यात}} = \text{संख्यात प्रतरांगुल} \quad ६४४३६ \div \frac{२४६}{९} = १०२४$$

प्रतरांगुल का संख्यातवा भाग यह संख्या असंख्यात प्रमाण है अतः ३५२ असंख्यात से भाग दिया उसका लब्ध संख्यात प्रतरांगुल प्रमाण आया।

७) निरुक्ति —

$$\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{संख्यात}} = \text{लब्ध प्रमाण प्रतरांगुल योनिनी मिथ्यादृष्टि अवहारकालमे होते है।}$$

$$२४६ \div \frac{२४६}{९} = २४६ \div ६४ = ४ \text{ प्रतरांगुल योनिनी मि. अवहारकाल}$$

८) विकल्प → अधस्तन विकल्प =

$$\frac{\text{प्रतरांगुल} \times \text{प्रतरांगुल}}{\text{प्रतरांगुल का संख्यातवा भाग}} = \text{पं. ति. योनिनी मि. अवहारकाल}$$

$$\frac{24E \times 24E}{E8} = 9028 \text{ पं.ति. योनिनी मि. अवहारकाल.}$$

अवस्थापमे अधस्तन विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{प्रतरांगुल का धन}}{\text{प्रतरांगुलका संख्यातवा भाग} \times \text{प्रतरांगुल}} = \text{पं.ति. योनिनी मि. अवहार काल}$$

$$\frac{24E \times 24E \times 24E}{E8 \times 24E} = 9028 \text{ पं.ति. योनिनी मि. अवहारकाल}$$

धनाधनमे अधस्तन विकल्प \rightarrow

$$\frac{\text{धनाधनांगुल}}{\text{प्रतरांगुल संख्यातवा भाग} \times \text{प्रतरांगुल} \times \text{प्रतरांगुलके धनका प्रथम वर्गमूल}} = \text{पं.ति. यो. मि. अवहार काल}$$

$$\text{धनाधनांगुल} = 9E^3 \text{ अर्थात् } 24E \times 24E \times 24E \times 24E \times 9E$$

$$\text{प्रतरांगुलके धनका प्रथम वर्गमूल अर्थात् धनांगुल} = 9E^3 = 24E \times 9E$$

$$\text{प्रतरांगुल धन } 24E^3 \text{ उसका प्रथम वर्गमूल } 9E^3$$

किसी भी संख्याके वर्गके धनका प्रथम वर्गमूल उस संख्याका धन ही होता है जैसे 2 का वर्ग 4 उसका धन 48 उसका प्रथम वर्गमूल 2 यह दो का धन ही है।

$$\frac{24E \times 24E \times 24E \times 24E \times 9E}{E8 \times 24E \times 24E \times 9E} \rightarrow = 9028 = \text{पं.ति. यो. मि. अवहारकाल}$$

द्विरूपमे गृहीत उपरिम विकल्प -

$$\frac{\text{प्रतरांगुल}^2}{E8 \text{ संख्यात}} = \text{पंचेन्द्रिय तिर्य्य योनिनी मि. अवहारकाल}$$

$$24E^2 \div 24E = \frac{24E \times 24E \times 24E}{24E} = 9028 \text{ पं.ति. यो. मि. अवहार काल}$$

$$\text{अथवा } \frac{E443E}{E8} = 9028$$

भागहार ६४ के अर्धच्छेद ६ होते हैं उतनीवार भान्यराशि ६५५३६ के अर्धच्छेद करनेपर १०२४ पं. ति. यो. मि. अवहारकाल आता है।

यह मध्यम विकल्प है जो उपरिम विकल्पका निर्णय करानेके लिये बतलाया गया है।

$$\frac{(\text{प्रतरांगुल}^2)^2}{\text{प्रतरांगुलका संख्यातका भाग} \times \text{प्रतरांगुल}^2} = \text{पं. ति. यो. मि. अवहारकाल}$$

$$\frac{(24E^2)^2}{64 \times 24E^2} = \frac{24E^4}{64 \times 24E^2} = \frac{24E^2}{64} = 9024 \text{ पं. ति. यो. मि. अवहारकाल}$$

अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्प →

$$\frac{(\text{घनांगुल}^2)^2}{\text{प्रतरांगुलका संख्यातका भाग} \times (\text{प्रतरांगुल}^2)^2} = \text{पं. ति. यो. मि. अवहारकाल}$$

$$\frac{((9E^3)^2)^2}{64 \times 24E^6} = \frac{9E^{12}}{64 \times 24E^6} = \frac{24E^6}{64 \times 24E^6} = \frac{24E^2}{64} = 9024 \text{ पं. ति. यो. मि. अव.}$$

उक्त भागहार ६४ × २५६ के अर्धच्छेद ६ + ३२ = ३८ होते हैं

उतनी वार २५६ भान्यराशिके अर्धच्छेद करनेपर १०२४ अंबेन्द्रिय तिर्यक योनिनी, मि. अवहारकाल आता है।

घनाधनमें गृहीत उपरिम विकल्प →

$$\frac{(\text{घनाधनांगुल}^2)^2}{\text{प्रतरांगुलका संख्यातका भाग} \times (\text{प्रतरांगुल}^2)^2 \times (\text{घनांगुल}^2)^2} = \text{पं. ति. यो. मि. अवहारकाल}$$

$$\frac{((9E^3)^2)^2}{64 \times (24E^2)^2 \times (9E^3)^2} = \frac{9E^{12}}{64 \times 24E^4 \times 9E^6} = \frac{24E^6}{64 \times 24E^4 \times 24E^6} = \frac{24E^6}{64 \times 24E^6} = \frac{24E^2}{64} = \frac{65536}{64} = 9024 \text{ पं. ति. यो. मि. अवहारकाल}$$

$$\frac{(\text{धनांगुलांगुल}^2)^2}{(\text{धनांगुल}^2)^2} = (\text{धनांगुल}^2)^2$$

$$\frac{((9E^3)^2)^2}{((9E^3)^2)^2} = \frac{9E^{3 \times 2}}{9E^{2 \times 2}} = 9E^{92} \text{ अर्थात् } ((9E^3)^2)^2$$

$$\frac{(\text{धनांगुल}^2)^2}{(\text{प्रतरांगुल}^2)^2} = \text{प्रतरांगुल}^2 = \frac{(9E^3)^2}{(9E^2)^2} = \frac{9E^{92}}{9E^{42}} = 9E^{50}$$

अर्थात् 25E²

$$25E^2 \div 25 = 1028 \text{ पं. ति. यो. मि. अवहारकाल}$$

उक्त भागहार 25E² के अर्धच्छेद 25 + (9E x 2) = 25 + 18 = 43 होते हैं। उतनीवार भाज्यराशि 25E² के अर्धच्छेद करनेपर 1028 पं. ति. यो. मि. अवहारकाल आता है।

25E² के अर्धच्छेद 988 होते हैं और 1028 के 90 अर्धच्छेद होते हैं। 988 - 90 = 938 होते हैं। इससे सिद्ध होता है कि 25E² के 938 वार अर्धच्छेद करनेपर 1028 आता है।

जगत्प्रेणी ÷ अवहारकाल = पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी मि. विष्कंमसूयी
 जगत्प्रतर ÷ अवहारकाल = पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी मि. जीवराशि

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी सासादन सम्यग्दृष्टि से लेकर संयतासंयततक = $\frac{\text{पल्योपम असंख्यात}}{\text{असंख्यात}}$

पंचे. ति. पर्याप्त असंयत अवहारकाल x आवलीका असंख्यातवा भाग = पं. ति. यो. असंयत अवहारकाल

पं. ति. यो. असंयत अवहारकाल x आवलीका असंख्यातवा भाग = पं. ति. यो. सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

पं. ति. यो. सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल x संख्यात = पं. ति. यो. सासादन सम्यग्दृष्टि अवहारकाल

// // सासादन सम्यग्दृष्टि अवहार x आवलीका असंख्यातवा भाग = पं. ति. यो. संयतासंयत अवहारकाल

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात, कालप्रमाणसे असंख्याता - संख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी, क्षेत्रप्रमाणसे जगत्प्रतर ÷ क्षेत्रोंके अवहारकालसे असंख्यात गुण्य हीन काल

पृ. 280

तिर्यच जीवराशिमें भागभाग

तिर्यच राशिके अनन्त बहुभागप्रमाण एकन्द्रिय व विकलेन्द्रिय जीव शेष अनन्तवे एकभागका संख्यात बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यच लब्धपर्याप्तक शेष एकभागका असंख्यात बहुभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यच पर्याप्त मिथ्यादृष्टी शेष एकभागका असंख्यात बहुभागप्रमाण पंचे. तिर्यच चोनिनी मिथ्यादृष्टीजीव शेष एकभागका असंख्यात बहुभाग पंचेन्द्रिय तिर्यच तीन वेदवाले असंयत सम्प्र. शेष एकभागका संख्यात बहुभाग पंचे. तिर्यच तीन वेदवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव शेष एकभागका असंख्यात बहुभाग पंचे. तिर्यच तीन वेदवाले साम्प्र. सम्यग्दृष्टिजीव शेष एकभागप्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यच तीन वेदवाले संयतासंयत सम्यग्दृष्टि जीव

पंचे. तिर्यच मिथ्यादृष्टिभोका स्वस्थान अल्पबहुत्व -

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकार
१) पंचे. तिर्यच मिथ्यादृष्टि अवहार.	स्तोक	१) विष्कुंभसूची ÷ अवहारकाल २) जगत्प्रेणी ÷ (अवहारकाल) ³ ३) असंख्यात घनांगुल
२) पंचे. ति. मिथ्या. विष्कुंभसूची	असंख्यातगुणी	
३) जगत्प्रेणी	असंख्यातगुणी	अवहारकाल
४) पंचे. तिर्यच मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	विष्कुंभसूची
५) जगत्प्रतर	असंख्यातगुणा	अवहारकाल
६) लोक	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी

तिर्यच परस्थान अल्पबहुत्व -

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकार
१) असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार कालमे पल्योपमतक	ओद्य परस्थानके समान	ति. मि. नंपुसकुवेदी ÷ संख्यात
२) मिथ्यादृष्टि द्रव्य	अनंतगुणा	

पंचेन्द्रिय तिर्यच परस्थान अल्पबहुत्व -

अल्पबहुत्व पद		गुणकार का प्रमाण
1) असंयत पंचे. ति. अवहारकालसे पल्योपमतेक	ओद्य परस्थानके समान	
2) मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	प्रतरांगुल ÷ असंख्यात पल्योपम असंख्यात सूच्यंगलप्रमाण

सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व -

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकार का प्रमाण
1) असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार	स्तोक	
2) पल्योपमपर्यन्त	ओद्यसमान	
3) पंचे. ति. मि. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	प्रतरांगुल ÷ असंख्यात
4) " " अपर्याप्त अवहार.	विशेष अधिष्ठ	पंचे. ति. मि. अव. ÷ आवली असंख्यात
5) पंचे. ति. प. मिथ्यादृष्टि अव.	असंख्यातगुणा	आवलीका असंख्यातवा भाग ÷ संख्यात
6) " ति. योनिनी मि. अवहार.	संख्यातगुणा	संख्यात समय
7) " " " " विष्कुंभसूची	असंख्यातगुणी	संख्यात सूच्यंगुल मात्र घनांगुल
8) " " पर्याप्त मि. विष्कुंभसूची	संख्यातगुणी	संख्यात समय
9) " " अप. मि. विष्कुंभसूची	असंख्यातगुणी	आवली ÷ असंख्यात
10) " " मिथ्या. विष्कुंभसूची	विशेष अधिष्ठ	प. ति. अप. विष्कुंभ. ÷ आवली असंख्यात
11) जगत्प्रेणी	असंख्यातगुणी	अवहारकाल
12) पंचे. ति. योनिनी मि. द्रव्य	असंख्यातगुणा	विष्कुंभसूची
13) " " पर्याप्त मिथ्या. द्रव्य	संख्यातगुणा	संख्यात समय
14) " " अपर्याप्त द्रव्य	असंख्यातगुणा	आवलीका असंख्यातवा भाग ÷ संख्यात
15) " " मिथ्यादृष्टि द्रव्य	विशेष अधिष्ठ	पंचे. ति. अप. द्रव्य ÷ आवली ÷ असंख्यात
16) जगत्पतर	असंख्यातगुणा	पंचे. ति. मि. अवहार. असंख्यात काल
17) लोक	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी
18) तिर्यच मिथ्यादृष्टि द्रव्य	अनन्तगुणा	अभव्यसिद्धोसे अनन्तगुणा, सिद्धोसे भी अनन्तगुणा, भव्यसिद्धोके अनन्त बहुभाग असंख्यात

पृ. 288

मनुष्यगति

मनुष्योंमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी व उत्सर्पिणी क्षेत्रकी अपेक्षासे जगत्प्रेणी \div असंख्यात (सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल \times तृ. वर्गमूल) जगत्प्रेणीके असंख्यातवे भाग का प्रमाण असंख्यात करोड योजन लेना।

मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल = सूच्यंगुलका प्रथम वर्गमूल \times तृतीय वर्गमूल अथवा सूच्यंगुल \div सूच्यंगुल द्वि. वर्गमूल \times तृतीय वर्गमूल = मनुष्य अवहार कालपर सूच्यंगुल का प्रमाण 298 माना, द्वि. वर्गमूल 8; तृतीय वर्गमूल 2 इस अवहारकालके खंडित, भाजित, विरलित और अपहतका जानकर कथन करना चाहिये।

5) प्रमाण - सूच्यंगुल \div असंख्यात = सूच्यंगुलके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण

6) कारण - 1) सूच्यंगुल \div सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल = सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल
 $298 \div 98 = 98$

2) सूच्यंगुल \div सूच्यंगुल द्वितीय वर्गमूल = द्वितीय वर्गमूलप्रमाण प्रथम वर्गमूल
 $298 \div 8 = 37.25$ अथवा 98×8

इसीप्रकार सूच्यंगुल \div सूच्यंगुलका द्वि. मू \times तृ. मू = असंख्यात प्रथम वर्गमूल
 $298 \div 8 \times 2 = 37.25 = 98 \times 2$

7) निरुक्ति \rightarrow $\frac{\text{सूच्यंगुल द्वितीय वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल तृतीय वर्गमूल}} = \frac{\text{लब्धप्रमाण सूच्यंगुलके प्रथम वर्गमूल मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}}{\text{अवहारकाल}}$
 $8 \div 2 = 2 \times 98 = 32$ मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

8) विकल्प \rightarrow अधस्तन विकल्प \rightarrow

$\frac{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल} \times \text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यं. द्वि. मू} \times \text{सूच्यं. तृ. मू}} = \text{मनुष्य मि. अवहारकाल}$
 $\frac{98 \times 98}{8 \times 2} = 32$ मनुष्य मि. अवहारकाल

अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प \rightarrow $\frac{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल द्वि. मू} \times \text{सूच्यंगुल तृ. मू} \times \text{प्र. मू}} = \text{मनुष्य मि. अवहारकाल}$
 $\frac{98 \times 98 \times 98}{8 \times 2 \times 98} = 32$ मनुष्य मि. अवहारकाल

3
 $25\text{E} = \text{घनांगुल और उसका प्र. वर्गमूल } 9\text{E}^3$

$$\frac{\text{घनांगुल प्रथम वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल}} = \text{सूच्यंगुल} \frac{9\text{E} \times 9\text{E} \times 9\text{E}}{9\text{E}} = 25\text{E} \text{ सूच्यंगुल}$$

किसी भी संख्याके घनके प्रथम वर्गमूलको उस संख्याके प्रथम वर्गमूल से भाग देनेपर वही संख्या आती है।

जैसे 9E संख्याका घन 809E उसका प्रथम वर्गमूल 9E

$$9\text{E} \text{ का प्रथम वर्गमूल } 9 \quad 809 \div 9 = 9\text{E}$$

यहांपर 25E को सूच्यंगुल माना है। उसका घन 25E^3 होता है।
 उसका प्रथम वर्गमूल 9E का घन होता है। 25E का प्रथम वर्गमूल 9E होता है। 9E का घन $= \frac{9\text{E} \times 9\text{E} \times 9\text{E}}{9\text{E}} = 25\text{E}$ सूच्यंगुल आता है।

घनाघनमें अधस्तन विकल्प -

$$\frac{\text{घनाघनांगुलका द्वितीय वर्गमूल}}{\text{सूच्यंगुल द्वि. मू.} \times \text{तृ. मू.} \times \text{प्र. मू.} \times \text{घनांगुल द्वि. वर्गमूल}} = \text{मनुष्य प्रि अवहारकाल}$$

घनाघनांगुल $= 25\text{E}^3$ उसका द्वि. वर्गमूल $= 8^3$

$$\frac{8^3}{8 \times 2 \times 9\text{E} \times 8^3} = \frac{8^6}{8 \times 2 \times 9\text{E}} = \frac{8^3}{2 \times 9\text{E}} = \frac{9028}{2 \times 9\text{E}} = 32$$

$$\frac{\text{घनाघनांगुल द्वितीय वर्गमूल}}{\text{घनांगुल द्वितीय वर्गमूल}} = \text{घनांगुल प्रथम वर्गमूल}$$

$$\frac{8^3}{8^3} = 8^{\text{E}} \quad \text{अर्थात् } 9\text{E}^3 = 809\text{E} \text{ घनांगुल प्र. वर्गमूल}$$

गृहीत उपरिम विकल्प -

$$\frac{\text{प्रतरांगुल}}{\text{सूच्यंगुल द्वि. मू.} \times \text{तृ. मू.} \times \text{सूच्यंगुल}} = \text{मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

$$\frac{25\text{E}^2}{8 \times 2 \times 25\text{E}} = \frac{25\text{E}}{8 \times 2} = 32 \text{ मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

अष्टरूपमें गृहीत उपरिम विकल्प

$$\frac{\text{धनांगुल}}{\text{सूच्यंगुल द्वि. मू.} \times \text{तृ. मू.} \times \text{प्रतरांगुल}} = \text{मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल}$$

$$\frac{24E^3}{8 \times 2 \times 24E^2} = \frac{24E}{8 \times 2} = 32 \text{ मनुष्य मि. अवहारकाल}$$

धनाधनमें गृहीत उपरिम विकल्प

$$\frac{\text{धनाधनांगुल}}{\text{सूच्यंगुल द्वि. मू.} \times \text{तृ. मू.} \times \text{प्रतरांगुल} \times \text{धनांगुल}^2} = \text{मनुष्य मि. अवहारकाल}$$

$$\frac{24E^3}{8 \times 2 \times 24E^2 \times 24E^3} = \frac{24E^3}{8 \times 2 \times 24E^2 \times 24E^3}$$

$$= \frac{24E^3}{8 \times 2 \times 24E^4} = \frac{24E}{8 \times 2} = 32 \text{ मनुष्य मि. अवहार.}$$

उक्त भागहारके जितने अर्धच्छेद हो उतनीवार धनाधनांगुलके अर्धच्छेद करनेपर भी मनुष्य मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल आता है।

$8 \times 2 \times 24E^4$ इसके अर्धच्छेद = $2 + 9 + (2 \times 2) = 3 + 18 = 21$ होते हैं। इतनी बार $24E^3$ इसके अर्धच्छेद करनेपर 32 मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल आता है।

जगत्प्रेणी = एक अधिक मनुष्यराशि
उक्त अवहारकाल

राशि			
ओजराशि		युग्मराशि	
लेजाज	कलिओज	कृतयुग्म	बादरयुग्म
95	93	98	98
8)95(3	8)93(3	8)98(3	8)98(3
<u>92</u>	<u>92</u>	<u>92</u>	<u>92</u>
3 शेष	9 शेष	6	2 शेष

मनुष्यराशि तेजोराशि है और जगत्प्रेणीमें सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलका गुणा करके भाग देनेपर कृतधुम राशि आती है इसलिए उसमेंसे एक कम कर देनेपर तेजोरूप मनुष्यराशि आती है।

जगत्प्रेणी
सूच्यंगुल प्रथम वर्गमूल \times तृ.मू = एक अधिक सामान्य मनुष्यराशि

लब्ध - 9 = सामान्य मनुष्यराशि

लब्ध - (9 + सासादनादि तेरह गुणस्थानवर्ती राशि) = मनुष्य मिथ्यादृष्टि राशि

इसलिए पूर्वमें जो मनुष्य मिथ्यादृष्टिका अवहारकाल बताया है वहां सामान्य मनुष्यराशिका ही अवहारकाल समझना। सासादनादि तेरह गुणस्थानवर्ती राशि संख्याते ही होनेसे उसे गौण करके सामान्य अवहारकालको ही मिथ्यादृष्टि अवहारकाल बताया है।

र	गुणस्थानवर्ती जीव	संख्याप्रमाण
	सासादन	बावन करोड़ 52,00,00,000
	मिश्रा	एकसौ चार करोड़ 908,00,00,000
	असंयत	सातसौ करोड़ 700,00,00,000
	संयतासंयत	तेरह करोड़ 93,00,00,000
प्रमत्तसे	अयोगकेवलितक	सामान्य गुणस्थानके समान

मनुष्य पर्याप्तोंमें मिथ्यादृष्टि मनुष्य कोडाकोडाकोडिके ऊपर और कोडाकोडा कोडाकोडिके नीचे छठवे वर्गके (एकड़िके) ऊपर और सातवे वर्गके नीचेकी संख्यातप्रमाण संख्या हैं।

अन्य आचार्योंके उपदेशानुसार -

द्विसप्तके पांचवा वर्ग \times छठवा वर्ग = मनुष्य पर्याप्त राशि

अर्थात् बादलका घन $425496298^3 = 9980608082458808394344$
खंडित \rightarrow बादलकी संक्षिप्त संदृष्टि $42 = 820948$

सातवे वर्गके संख्यात खंड करनेपर उनमेंसे एक खंडप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि होती है। सातवा वर्ग = $42 = \sqrt{42} = \sqrt{42} = \sqrt{42} = \sqrt{42}$ इसमें बादल $42 =$ प्रमाण खंड करनेपर उनमेंसे एक खंडप्रमाण मनुष्य पर्याप्त राशि होती है।

2) भाजित \rightarrow सातवा वर्ग \div पांचवा वर्ग = मनुष्य पर्याप्त राशि

$$82 = \times 82 = \times 82 = \times 82 = \div 82 = \rightarrow 82 = \times 82 = \times 82 = \text{मनुष्य पर्याप्त राशि}$$

इसी प्रकार ^{3) अपहत व विरलितका कथन करना चाहिए।}

4) प्रमाण \rightarrow ^{द्विरूपका} सातवा वर्ग \div संख्यात = संख्यात छठवे वर्ग प्रमाण मनुष्य पर्याप्त

$$82 = \times 82 = \times 82 = \times 82 = \div 82 = = \text{मिथ्यादृष्टि राशि}$$

5) कारण \rightarrow द्विरूपका सातवा वर्ग = द्विरूपका छठवा वर्ग $82 = 82 = 82 = 82 = 82 =$
 $82 = \times 82 = \times 82 =$

$$\frac{\text{द्विरूपका सातवा वर्ग}}{\text{द्विरूपका पांचवा वर्ग}} = \text{संख्यात छठवे वर्ग}$$

$$\frac{82 = \times 82 = \times 82 = \times 82 =}{82 =} = 82 = \times 82 = \times 82 = \dots$$

बादल प्रमाण छठवा वर्ग लब्ध आता है

द्विरूप वर्गधारा \rightarrow 1) 8 2) 9E 3) 29E 4) 5493E 5) 82989E62
 संक्षेपमे 82 = 6) 82 = $\times 82 =$ एकट्टी 7) 82 = $\times 82 = \times 82 = \times 82 =$

दो वेदवाले (पुरुष और नपुंसक) मनुष्य पर्याप्तोंका अवहारकाल =
 बादल \times चार $82 = \times 8$

सातवा वर्ग = मनुष्य पर्याप्त दो वेदवाले जीवोंकी राशि
अवहारकाल

$$\frac{82 = 82 = 82 = 82 =}{82 = \times 8} = \frac{82 = \times 82 = \times 82 =}{8} \text{ मनुष्य पर्याप्त दो वेदी जीव}$$

कुसी भी विवक्षित वर्गात्मक राशिको चार से गुणित करके लब्धका उस वर्गात्मक राशिके उपरिम वर्गके उपरिम वर्गमें भाग देनेपर उस विवक्षित वर्गराशिके धनका चौथा भाग लब्ध आता है।

जैसे वर्गात्मक राशि 8 है, उसका उपरिम वर्ग 9E, उसका वर्ग 29E

$$8 \times 8 = 9E$$

$$\frac{29E}{9E} = 9E$$

$$8 \text{ का धन } 8 \times 8 \times 8 = 88$$

$$88 \text{ का चौथा भाग } = 9E$$

जम्बूद्वीप का क्षेत्रफल -

$$\text{परिधि} = \sqrt{(\text{व्यास})^2 \times 10}$$

जम्बूद्वीप व्यास - 9 लाख योजन

$$\text{जम्बूद्वीप परिधि} = \sqrt{9 \text{ लाख योजन}^2 \times 10}$$

$$= \sqrt{9000000 \times 9000000 \times 10}$$

$$= \sqrt{100000000000000} \text{ योजन}$$

अर्थात् दहा हजार करोड योजन

उसका वर्गमूल -

3	90000000000000	(3)E220	828809	योजन
3	9		E32848	
9	900			
9	E9			
E2E	3E00			
E	3E4E			
E322	98800			
2	92E88			
E32E2	904E00			
2	92E8E8			
E32880	8999E00			
0	8822929			
E32848	828809			

शेष $\frac{828809}{E32848}$ योजनका कोसमें अंतर करने के लिए 8 से गुणा करना

$$\frac{828809}{E32848} \times 8 = \frac{9E30668}{E32848} = 3 \frac{80422}{E32848} \text{ कोस}$$

शेष $\frac{80422}{E32848}$ कोसका धनुष्यमें अंतर करने के लिए 2000 से गुणा करना.

$$\frac{80422}{E32848} \times 2000 = \frac{19084000}{E32848} = 921 \frac{E9E11}{E32848} \text{ धनुष्य}$$

शेष $\frac{892226}{832858}$ धनुषका हाथोंमें उपांतर करने के लिए 8 से गुणा करना

$$\frac{892226}{832858} \times 8 = \frac{349442}{832858}$$

अंगुलोंमें उपांतर करने के लिए 28 से गुणा करना

$$\frac{349442}{832858} \times 28 = \frac{1228224}{832858} = 93 \frac{800386}{832858} \text{ अंगुल}$$

इसलिए जम्बूद्वीपकी परिधि 398226 योजन, 3 कोस 928 धनुष्य कुछ अधिक 93½ अंगुल आती है।

लेकिन धवलामें कुछ कम साडे तैरह अंगुल कहा है ^{इसका कुछ} कारण प्रतीत नहीं होता।

कुछ कमका प्रमाण $\frac{9}{2} \times \frac{44}{6000}$ विका है इससे हीन अर्धांगुल

$$\frac{9}{2} - \left(\frac{9}{2} \times \frac{44}{6000} \right) = \frac{9}{2} - \frac{44}{98966} = \frac{9 \times 6000 - 44}{2 \times 6000} = \frac{98966}{98966}$$

$$= \frac{6000 - 44}{98966} = \frac{6033}{98966} \text{ हीन अर्धांगुल}$$

क्षेत्रफल = परिधि \times व्यास

$$\text{जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल} = 398226 \frac{88869}{832858} \times \frac{900000}{8} \times 25000$$

$$398226 \times 25000 \times \frac{8}{8} = 6904660000 \text{ योजन}$$

$$3 \text{ कोस} \times 25000 \text{ यो.} = 69000 \text{ कोस} \div 8 = 92640 \text{ योजन}$$

$$928 \text{ धनुष्य} \times 25000 \text{ यो.} = 32000000 \div 2000 = 9200 \text{ कोस} \div 8 = 800 \text{ यो.}$$

$$93 \frac{1}{2} \text{ अंगुल} \times 25000 \text{ यो.} = 3365000 \text{ अंगुल} = 9 \text{ कोस} 9595 \text{ धनुष 2 हाथ और}$$

92 अंगुल

$$9 \text{ कोस} = 2000 \times 8 \times 28 = 952000 \text{ अंगुल होते हैं।}$$

$$3365000 - 952000 = 985500 \text{ अंगुल शेष, उसका धनुषमें उपांतर}$$

$$985500 \div 88 = 9595 \text{ धनुष 60 अंगुल शेष}$$

$$60 \div 28 = 2 \text{ हाथ 92 अंगुल शेष रहे।}$$

$$6904660000 + 92640 + 800 = 690488990 \text{ योजन 9 कोस 9595 धनुष 2 हाथ और 92 अंगुल जम्बूद्वीप का सूक्ष क्षेत्रफल हुआ}$$

मनुष्यनियोंमें मिथ्यादृष्टि = कोडाकोडाकोडी के ऊपर और कोडाकोडाकोडा-
कोडीके नीचे छठवे वर्गके ऊपर और सातवे वर्गके नीचे

द्विरूपमें पांचवा वर्ग + पांचवा वर्ग = मनुष्यनियोंका अवहारकाल

$$४२ = \frac{+४२}{३} = \frac{४२ \times ३ + ४२}{३} = \frac{४२ \times ४}{३}$$

सातवा वर्ग ÷ उक्त अवहारकाल = मनुष्यनियोंका द्रव्य

$$\frac{४२ \times ४२}{४२ \times ४} = \frac{४२ \times ४२}{४२ \times ४} = \frac{४२ \times ४२}{४२ \times ४} = \frac{३}{४}$$

मनुष्योंकी संख्याका $\frac{३}{४}$ भाग मनुष्यनियोंका प्रमाण है।
 $\frac{१}{४}$ भाग दो वेदी मनुष्य होते हैं।

इसमेंसे सासादन आदि तेरह गुणस्थानवती शशिका प्रमाण धरा देनेपर
मिथ्यादृष्टि स्त्रियोंका प्रमाण होता है।

लब्धपर्याप्त मनुष्य \Rightarrow जगत्प्रेणी ÷ सूच्यंगुल तृतीय वर्गमूल \times प्रथम वर्गमूल

- १ = सामान्य मनुष्यराशि

सामान्य मनुष्यराशि - पर्याप्त मनुष्यराशि = लब्धपर्याप्त मनुष्यराशि

पृ. २६४ मनुष्योंमें भागाभाग -

मनुष्य राशिका	असंख्यात	बहुभाग	लब्धपर्याप्त मनुष्य
शेष एकभागका	संख्यात	बहुभाग	मनुष्यिनी मिथ्यादृष्टि जीव
शेष एकभागका	संख्यात	"	मनुष्य पर्याप्त " "
" "	"	"	असंयत सम्यग्दृष्टि मनुष्य
" "	"	"	सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य
" "	"	"	सासादनसम्यग्दृष्टि "
" "	"	"	संयतासंयत "
" "	"	"	प्रमत्तसंयत "
" "	"	"	अप्रमत्तसंयत "

इसके ऊपर सामान्य प्ररूपणाके समान भागाभाग जानना चाहिये।

मनुष्यों में स्वस्थान अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व पदकानाम	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण
1) मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	स्तोक	1) अपना द्रव्य ÷ अपना अवहार
2) " " द्रव्यप्रमाण	असंख्यातगुणा	2) जगत्श्रेणी ÷ अवहारकाल =
3) जगत्श्रेणी	असंख्यातगुणी	3) प्रतरांगुल ÷ असंख्यात = सूत्रगुलके द्वितीय वर्गप्रमाण सूत्रगुल अपना अवहारकाल

मनुष्यों में परस्थान अल्पबहुत्व →

1) चारो गुणस्थानवर्ती उपशामक	स्तोक	
2) पांचो गुणस्थानवर्ती क्षपक	संख्यातगुणे	
3) सयोग केवली	संख्यातगुणे	
4) अप्रमत्तसंयत जीव	"	
5) प्रमत्तसंयत "	"	
6) संयतासंयत मनुष्य	"	
7) सासादन सम्यग्दृष्टि "	"	
8) सम्यग्मिथ्यादृष्टि "	"	
9) असंयतसम्यग्दृष्टि "	"	
10) मनुष्य मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	अपना अवहारकाल
11) " " द्रव्यप्रमाण	असंख्यातगुणा	असंयत सम्यग्दृष्टिमनुष्य उपर्युक्त
12) जगत्श्रेणी	असंख्यातगुणी	अपना अवहारकाल

मनुष्य पर्याप्तिकोमें असंयत सम्यग्दृष्टिक अल्पबहुत्व मनुष्योंके समान ही समझना उसके आगे मिथ्यादृष्टि पर्याप्त मनुष्य संख्यातगुणे संख्यात समय गुणकार

इसीप्रकार मनुष्यिनियोंमें भी परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करना चाहिये।

मनुष्योंमें सर्व परस्थान अल्पबहुत्व -

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण
अयोगकेवली	स्तोक	
चारो उपशामक	संख्यातगुणे	
चारो क्षपक	"	
सयोगकेवली स असंयतक	परस्थान अल्पबहुत्वके समान	
मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि	संख्यातगुणे	
मनुष्यिनी "	"	
मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल	असंख्यातगुणा	
मनुष्य अपर्याप्तोंका द्रव्य	असंख्यातगुणा	

पृ. 266

देवगति - संख्याप्ररूपणा

देवगतिमें मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात
कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात अक्सर्पिणी उत्सर्पिणी प्रमाण
क्षेत्रप्रमाणसे जगत्प्रतर ÷ दोसो छप्पन ^{अंगुलिका वर्ग} = अर्थसिद्धि
जगत्प्रतर ÷ 64438 प्रतरांगुल ₈₄₌₁₆

देव असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल = सामान्य असं. अव. + सामान्य असं. अव.
आवली ÷ असंख्यात

देव सम्याग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल = देव असंयत अवहारकाल × आवली
" सासादनसम्यग्दृष्टि " = देव सम्यग्मिथ्या. अवहारकाल × संख्यात _{असंख्यात}

पत्न्योपम ÷ अपना अपना अवहारकाल = अपना अपना द्रव्य

भवनवासी मिथ्यादृष्टि जीव क्षेत्रप्रमाणसे जगत्प्रतर ÷ असंख्यात =
असंख्यात जगत्प्रेणीप्रमाण = सूच्यंगुल × सूच्यंगुलका प्रथम कर्मिलप्रमाण
असंख्यात जगत्प्रेणी

वाणान्यंतर मिथ्यादृष्टि देव = जगत्प्रतर ÷ संख्यात शौ योजनोंका वर्ग
जगत्प्रतर ÷ 300 योजनोंके अंगुलिका वर्ग

300 योजनोंके अंगुल = 300 × 4 × 2000 × 4 × 24 = 230400000

ज्योतिषी देवोंके सामान्य देवोंके समान संख्या जानना

पृ. 280

देवोंका नाम	संख्याप्रमाण
1) सौधर्म व ऐशान ^{कल्पवासी} मिथ्यादृष्टि	सूच्यंगुल द्वि. मू x तृ. मू. प्रमाण जगत्प्रेणी
2) " " सासादनद्वि	पत्न्योपम ÷ असंख्यात
3) सानकुमार माहेन्द्र मिथ्यादृष्टि	जगत्प्रेणी ÷ जगत्प्रेणीका 99 वा मू.
4) ब्रह्म ब्रह्मोत्तर " "	जगत्प्रेणी ÷ " 3 वा मू.
5) लान्तव कापिष्ठ " "	" ÷ " 4 वा मू.
6) शुक, महाशुक " "	जगत्प्रेणी ÷ " 5 वा मू.
7) शतार सहस्रार " "	जगत्प्रेणी ÷ " 6 वा मू.
8) आनत प्राणतसे लेकर नौ ग्रैवेयक तक मिथ्यादृष्टिसे असंयत सम्यग्दृष्टि तक	पत्न्योपम ÷ असंख्यात (अन्तर्मुहूर्त)
9) अनुदिश से अपराजित विमानतक असंयत सम्यग्दृष्टि	पत्न्योपम ÷ असंख्यात
10) सर्वार्थसिद्धि विमानवासी	मनुष्यिनी x 3

सौधर्मादि देवोंके असंयत सम्यग्दृष्ट्यादिकोंके अवहारकाल

देवोंके अवहारकालका नाम	अवहारकालका प्रमाण
1) सौधर्म ऐशान असंयत सम्य. अवहार	देव असंयत सम्य. अवहार + देव असंयत अवहार आवली असंख्यात
2) सौधर्म ऐशान मिश्र अवहारकाल	सौ. ऐ. असंयत सम्य. अवहार x आवली असंख्यात
3) " " सासादन " "	सौ. ऐ. मिश्र अवहारकाल x संख्यात
4) सानकुमार माहेन्द्र असंयत अवहार	सौ. ऐ. सासादन " x आवली असंख्यात
5) शतार सहस्रार कल्पतक	पूर्वोक्त प्रकार
6) शतार सहस्रार सासादन अवहार	शतार सह. मिश्र अवहार x संख्यात
7) ज्योतिषी असंयत सम्य. अवहार	शतार सह. सासादन अवहार x आवली असंख्यात
8) ज्योतिषी मिश्र अवहारकाल	ज्योतिषी असंयत सम्य. अवहार x आवली असंख्यात
9) ज्योतिषी सासादन अवहारकाल	ज्योतिषी मिश्र अवहारकाल x संख्यात

18) वानव्यन्तर और भवनवासी देवोंमें क्रमसे अवहारकाल पूर्वोक्तप्रकार ले जाना

90) आनत प्राणत असंयत सम्य. अवहार	भवनवासी सासा. अवहार x (आवली :- असंख्यात)
91) आरण अच्युत " " "	आनत प्राणत असंयत अवहार x संख्यात
92) उपरिम उपरिम त्रैवेयक असंयत सम्यगृष्टि अवहारकाल तक	क्रमसे संख्यातसे गुणा करना
93) आनत प्राणत मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	उपरिम उपरिम त्रैवेयक असंयत अव. x संख्यात
94) आरण अच्युत " "	आनत प्राणत मिथ्यादृष्टि अवहार x संख्यात
95) उपरिम उपरि त्रैवेयक मिथ्यादृष्टितक	क्रमसे संख्यातसे गुणा करना
96) नौ अनुदिश असंयत सम्य. अवहार	उपरिम उपरिम त्रैवेयक मिथ्या. अवहार x संख्यात
97) विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित असंयत सम्यगृष्टि अवहारकाल	नौ अनुदिश असंयत अवहार x संख्यात
98) आनत प्राणत मिश्र अवहारकाल	उपर्युक्त 90 नंबरका अवहारकाल x संख्यात
99) आरण अच्युत " "	आनत प्राणत मिश्र अवहारकाल x संख्यात
20) उपरिम उपरिम त्रैवेयक मिश्रलक अवहार	क्रमसे संख्यातगुणित
21) आनत प्राणत सासादन अवहारकाल	उपरिम त्रैवेयक मिश्र अवहारकाल x संख्यात
22) आरण अच्युत " "	आनत प्राणत सासादन " x संख्यात
23) उपरिम उपरिम त्रैवेयक सासादन अवहारकाल तक	क्रमसे संख्यातगुणित

देवोंमें भागाभाग

देवराशि संख्यात	बहुभाग प्रमाण संख्यात	ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि देव
शेष एकभाग असंख्यात	असंख्यात	वानव्यन्तर मिथ्यादृष्टि देव
शेष एकभाग असंख्यात	असंख्यात	भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव
शेष असंख्यातको एकभाग	असंख्यात	सौधर्म ऐशान कल्पके मिथ्यादृष्टि
इसी प्रकार शतार सहस्र कल्पके मिथ्यादृष्टि देवोंतक		पूर्वोक्त असंख्यात बहुभाग,
शेष असंख्यातको एकभाग	असंख्यात	सौधर्म ऐशान कल्पके असंयत सम्यगृष्टि
शेष " "	संख्यात	" " " सम्यमिथ्यादृष्टि
" " "	असंख्यात	" " " सासादन सम्यगृष्टि

इसी प्रकार सानलुमार और माहेन्द्र कल्पसे लेकर सहस्रार कल्पतक ले जाना चाहिये।

शेष एकभागका	असंख्यात बहुभाग	ज्योतिषी असंयत सम्यग्दृष्टि
" " "	संख्यात " "	" सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" " "	असंख्यात " "	" सासादन सम्यग्दृष्टि
" " "	असंख्यात " "	वाणव्यन्तर असंयत सम्यग्दृष्टि
" " "	संख्यात " "	" सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" " "	असंख्यात " "	" सासादन सम्यग्दृष्टि
" " "	असंख्यात " "	भवनवासी असंयत सम्यग्दृष्टि
" " "	संख्यात बहुभाग	" सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" " "	असंख्यात बहुभाग	" सासादन सम्यग्दृष्टि
" " "	संख्यात " "	आनत प्राणत असंयत सम्यग्दृष्टि देव
" " "	" " "	आरण अच्युत " " " "
" " "	" " "	अधो अधो त्रैवेद्य " " " "
" " "	संख्यात बहुभाग	अधो मध्य " " " "
" " "	" " "	अधो उपरिम " " " "
" " "	" " "	मध्य प्रथम " " " "
" " "	" " "	मध्य द्वितीय " " " "
" " "	" " "	मध्य तृतीय " " " "
" " "	" " "	उपरिम प्रथम " " " "
" " "	" " "	उपरिम द्वितीय " " " "
" " "	" " "	उपरिम उपरिम " " " "
" " "	" " "	आनत प्राणत मिथ्यादृष्टि देव
" " "	" " "	आरण अच्युत " " " "
" " "	" " "	उपरिम उपरिम " " " पर्यंत
" " "	" " "	इस प्रकार ले जाना
" " "	" " "	अनुदिश असंयत सम्यग्दृष्टि
" " "	असंख्यात बहुभाग	विजय वैजयंत जयंत अपराजित
" " "	" " "	वेदो ४ अनुतर असंयत सम्यग्दृष्टि
" " "	संख्यात बहुभाग	आनत प्राणत सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" " "	" " "	आरण अच्युत " " " "
" " "	" " "	इसी प्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेद्य पर्यंत

शेष एकभागका	संख्यात बहुभाग	आनत प्राणत सासा. सम्यग्दृष्टि
" "	" "	आरण अच्युत " "
" "	" "	इभीप्रकार उपरिम मध्य ग्रेवैयकु
" "	" "	तकु सासादन सम्यग्दृष्टि
शेष एकभाग	असंख्यात बहुभाग	उपरिम उपरिम सासा. सम्यग्दृष्टि
		सर्वार्थसिद्धि असंयत सम्यग्दृष्टि

पृ. 222 स्वस्थान अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण
१) देव मिथ्यादृष्टि अवहार.	स्तोत्र	
२) " " विष्कुंभसूची	असंख्यातगुणी	१) विष्कुंभसूची ÷ अवहारकाल २) जगत्त्रेणी ÷ अवहारकाल ² ३) ६५५३६ सूच्यगुण प्रमाण एनांगुल
३) जगत्त्रेणी	असंख्यातगुणी	अवहारकाल
४) मिथ्यादृष्टि देव	असंख्यातगुणे	विष्कुंभसूची
५) जगत्प्रतर	असंख्यातगुणा	अपना अवहारकाल
६) एनलोक	"	जगत्त्रेणी

इभीप्रकार ज्योतिषी और वाणव्यंतरोंका भी अल्पबहुत्व जानना चाहिए।

भवनवासिओंका स्वस्थान अल्पबहुत्व -

१) मिथ्यादृष्टि विष्कुंभसूची	स्तोत्र	
२) " अवहारकाल	असंख्यातगुणा	१) अवहारकाल ÷ विष्कुंभसूची २) जगत्त्रेणी ÷ विष्कुंभसूची ² ३) एनांगुल
३) जगत्त्रेणी	असंख्यातगुणी	अपनी विष्कुंभसूची
४) मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	विष्कुंभसूची
५) जगत्प्रतर	"	अवहारकाल
६) लोक	"	जगत्त्रेणी

परस्थान अल्पबहुत्व -

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण
१) असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार	स्तोत्र	
२) इसीप्रकार पत्न्योपम तदु ले जाना चाहिए		
३) मिथ्यादृष्टि अवहार	असंख्यातगुणा	१) अवहारकाल ÷ पत्न्योपम २) प्रतशंगुल ÷ असंख्यात अर्थात् सूच्यंगुल ÷ पत्न्योपमका संख्यातका भागप्रमाण इत्यत्र सूच्यंगुल
४) इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।		

सर्व परस्थान अल्पबहुत्व -

पृ. 250

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण
१) सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव	स्तोत्र	
२) सौधर्म ऐशान असंयत अवहार	असंख्यातगुणा	१) आवलीडा असंख्यातका भाग ÷ संख्यात प्रतिभाग (सर्वार्थसिद्धि देव)
३) सौधर्म ऐशान मिश्र अवहार	"	
४) " " सासा " "	संख्यातगुणा	
५) ज्ञान माहेन्द्र असंयत अवहार	असंख्यातगुणा	
६) इसीप्रकार शतार-सहस्रार तदु जानना चाहिए	"	
७) ज्योतिषी असंयत अवहार	"	
८) " मिश्र " "	"	
९) " सासा " "	संख्यातगुणा	
१०) वाणव्यांतर असंयत " "	असंख्यातगुणा	
११) " मिश्र " "	"	
१२) " सासा " "	संख्यातगुणा	
१३) भवनवासी असंयत " "	असंख्यातगुणा	
१४) " मिश्र " "	"	
१५) " सासा " "	संख्यातगुणा	

१६) आनत प्रा. असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार	असंख्यातगुणा
१७) आरण अच्युत " " "	संख्यातगुणा
१८) इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकुके असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकालतक	संख्यातगुणा
१९) आनत प्राणत मिथ्यादृष्टि अवहार.	"
२०) आरण अच्युत " " "	"
२१) इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकुके मिथ्यादृष्टि अवहारकालतक	"
२२) अनुदिश असंयत सम्य. अवहार.	"
२३) चार अनुत्तर " " "	"
२४) आनत प्राणत मिश्र " "	असंख्यातगुणा
२५) आरण अच्युत " " "	संख्यातगुणा
२६) इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैवेयकु तक जानना चाहिए	"
२७) आनत प्राणत सासा. अवहार.	"
२८) आरण अच्युत " " "	"
२९) उपरिम उपरिम त्रैवेयकुतक सासा. अवहारकालतक जानना चाहिए.	"
३०) उपरिम उपरिम त्रैवेयकु सासा. सम्यग्दृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा
३१) उपरिम मध्यम त्रै. सासा. सम्य. द्रव्य	संख्यातगुणा
३२) उपरिम अधस्तन " " " "	"
३३) मध्यम उपरिम " " "	"
३४) " मध्यम " " "	"
३५) " अधस्तन " " "	"
३६) अधो उपरिम " " "	"
३७) " मध्यम " " "	"
३८) " अधस्तन " " "	"
३९) आरण अच्युत " " "	"
४०) आनत प्राणत " " "	"
४१) उपरिम उपरिम त्रैवे. मिश्र द्रव्य	"
४२) उपरिम मध्यम त्रैवे " "	"

४३)	उपरिम अधस्तन त्रैवे. मिश्र द्रव्य	संख्यातगुणा
४४)	मध्यम उपरिम " " ")
४५)	मध्यम मध्यम त्रैवे " ")
४६)	मध्यम अधस्तन त्रैवे. " ")
४७)	अधो उपरिम त्रैवे. " ")
४८)	अधो मध्यम त्रैवे. " ")
४९)	अधो अधस्तन त्रैवे. " ")
५०)	आरण अच्युत त्रैवे. " ")
५१)	आनत प्राणत त्रैवे. " ")
५२)	चार अनुत्तर असंयत सम्यग्दृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा
	नौ अनुदिश " " "	संख्यातगुणा
	उपरिम उपरिम त्रैवे. मिथ्यादृष्टि द्रव्य)
	उपरिम मध्यम त्रैवे. " द्रव्य)
	उपरिम अधस्तन त्रैवे. " ")
	मध्यम उपरिम त्रैवे. " ")
	मध्यम मध्यम त्रैवे. " ")
	मध्यम अधस्तन त्रैवे. " ")
	अधो उपरिम " " ")
	अधो मध्यम " " ")
	अधो अधस्तन " " ")
	आरण अच्युत " ")
	आनत प्राणत " ")
	उपरिम. उपरिम त्रैवे. असंयत सम्य. द्रव्य)
	अधो अधस्तन त्रैवे. असंयत सम्य. द्रव्य)
	आरण अच्युत त्रैवे. " " ")
	आनत प्राणत त्रैवे. " " ")
	भवनवासी सासादन सम्यग्दृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा
	" मिश्र " "	संख्यातगुणा
	" असंयत " "	असंख्यातगुणा
	वामव्यन्तर सासादन " ")
	वाणव्यन्तर मिश्र " "	संख्यातगुणा

वाणव्यन्तर	असंयत	सम्यग्दृष्टि	द्रव्य	असंख्यातगुणा	
ज्योतिषी	सासादन	"	"	"	
"	मिश्र	द्रव्य		संख्यातगुणा	
"	असंयत	सम्यग्दृष्टि	द्रव्य	असंख्यातगुणा	
शतार	सहस्रार	सासादन	"	असंख्यातगुणा	
"	"	मिश्र	द्रव्य	संख्यातगुणा	
"	"	असंयत	सम्यग्दृष्टि	द्रव्य	असंख्यातगुणा
शुक्र	महाशुक्र	सासादन	"	"	
"	"	मिश्र	द्रव्य	संख्यातगुणा	
"	"	असंयत	"	असंख्यातगुणा	
लान्तव	कापिष्ठ	सासादन	"	"	
"	"	मिश्र	द्रव्य	संख्यातगुणा	
"	"	असंयत	"	असंख्यातगुणा	
ब्रह्म	ब्रह्मोत्तर	सासादन	"	"	
"	"	मिश्र	द्रव्य	संख्यातगुणा	
"	"	असंयत	"	असंख्यातगुणा	
सानकुमार	माहेन्द्र	सासादन	"	"	
"	"	मिश्र	द्रव्य	संख्यातगुणा	
"	"	असंयत	"	असंख्यातगुणा	
सौधर्म	ऐशान	सासादन	सम्यग्दृष्टि	"	
सौधर्म	ऐशान	मिश्र	द्रव्य	संख्यातगुणा	
सौधर्म	ऐशान	असंयत	सम्यग्दृष्टि	द्रव्य	असंख्यातगुणा
पल्योपम				"	

सौधर्म ऐशान मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

असंख्यातगुणी १) विष्कंभसूची = पल्य
२) लीसरा वर्गमूल प्रमण सूच्यं द्वि. मू.
पल्योपम

भवनवासी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

असंख्यातगुणी सूच्यं: तृ. वर्गमूलमत्र

सामान्य देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

सूच्यंगुल = प्रतरांगुल ÷ असंख्यात

ज्योतिषी देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

असंख्यातगुणी सूच्यंगुल ÷ असंख्यात

वाणव्यन्तर मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

सूच्यंगुलक संख्यात प्रथम वर्गमूलप्र

विशेष अधिक प्रतरांगुल ÷ संख्यात

संख्यातगुणा; संख्यात समय गुणकार

सानलकुमार मालेन्द्र मिथ्या. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्त्रेणी 91 वा मू. = वाणव्यन्तर मि. अवहार जगत्त्रेणीके असंख्यात 92 वे वर्गमूल
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर मिथ्या. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्त्रेणी 9 वा वर्गमूल = असंख्यात = जगत्त्रेणीके असंख्यात दशमे वर्गमूल
लान्तव कापिष्ठ मिथ्या. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्त्रेणी 16 वा वर्गमूल = असंख्यात = जगत्त्रेणीके असंख्यात अष्टमे मू.
शुक महाशुक मिथ्या. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्त्रेणी 15 वा वर्गमूल = असंख्यात = जगत्त्रेणीके असंख्यात छठवे वर्गमूल.
शतार सलस्रार मिथ्या. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्त्रेणीको पांचवा वर्गमूल
शतार » मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	अपना द्रव्य = अपना अवहारकाल
शुक महाशुक » »	»	
लान्तव कापिष्ठ » »	»	
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर » »	»	
सानलकुमार मालेन्द्र » »	»	
वाणव्यन्तर मिथ्या. विष्कंभसूची	असंख्यातगुणी	१) विष्कंभसूची = सान. माले. मिथ्या द्रव्य २) जगत्त्रेणी 99 वा मू. = असंख्यात ३) जगत्त्रेणीके असंख्यात 92 वे वर्गमूल
ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची	संख्यातगुणी	संख्यात समय
देव मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची	विशेष अधिक	ज्योतिषी मि. विष्कंभसूची = संख्यात
भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	
सौ. ए. मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	
जगत्त्रेणी	» गुणी	विष्कंभसूची
सौधर्मि. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	विष्कंभसूची
भवनवासी » »	»	
वाणव्यन्तर » »	»	
ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि द्रव्य	संख्यातगुणा	जगत्त्रेणी = भवन. मि. विष्कंभसूची x अवहार काल
देव मिथ्यादृष्टि द्रव्य	विशेष अधिक	संख्यात समय
जगत्प्रतर	असंख्यातगुणा	ज्योतिषी मि. द्रव्य = संख्यात
लोक	असंख्यातगुणा	अवहारकाल जगत्त्रेणी

पृ. 254

सर्व जीवराशि	अनन्त बहुभागप्रमाण	एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय
शेष अनन्तवा एकभाग	" "	सिद्ध
" " "	असंख्यात "	पंचेन्द्रिय तिर्य्य अपर्याप्त
शेष असंख्यातवा "	संख्यात बहुभाग	ज्योतिषी मिथ्याहृष्टि द्रव्य
" संख्यातवा "	" "	वन्तर मिथ्याहृष्टि द्रव्य
" " "	असंख्यात "	पंचेन्द्रिय तिर्य्य योनिनी मि.
" असंख्यातवा "	" "	भवनवासी मिथ्याहृष्टि द्रव्य
" " "	असंख्यात "	प्रथम पृथिवी मिथ्याहृष्टि नारकी
" " "	" "	सौधर्म ऐशान मिथ्याहृष्टि देव
" " "	" "	मनुष्य अपर्याप्त
" " "	" "	द्वितीय पृथिवी मि. नारकी
" " "	" "	सानकु. माहेन्द्र मिथ्याहृष्टि देव
" " "	" "	तीसरी पृथिवी मिथ्या. नारकी
" " "	" "	ब्रह्म ब्रह्मोत्तर मिथ्याहृष्टि देव
" " "	" "	चौथी पृथिवी मिथ्या. नारकी
" " "	" "	लान्तव कापिष्ठ मिथ्या. देव
" " "	" "	पाचवी पृथिवी मिथ्या. नारकी
" " "	" "	शुक महाशुक मिथ्या. देव
" " "	" "	शतार सल्लार मिथ्या. देव
" " "	" "	छाहवी पृथिवी मिथ्या. नारकी
" " "	" "	सातवी पृथिवी मिथ्या. नारकी
" " "	" "	सौधर्म ऐशान असंयत सम्यहृष्टि
" " "	संख्यात बहुभाग	" " सम्यमिथ्याहृष्टि
" संख्यातवा "	असंख्यात बहुभाग	" " सासादन सम्यहृष्टि
" असंख्यातवा "	" "	सानकु. माहेन्द्र असंयत सम्यहृष्टि
" " "	संख्यात बहुभाग	" " मिश्र गुणस्थानवती
" संख्यातवा "	असंख्यात बहुभाग	" " सासादन सम्यहृष्टि
" " "	असंख्यात बहुभाग	इसप्रकार शतार सल्लार कल्पतक
" " "	संख्यात बहुभाग	ज्योतिषी असंयत सम्यहृष्टि
" संख्यातवा "	असंख्यात बहुभाग	" मिश्र गुणस्थानवती
" असंख्यातवा "	" "	" सासादन सम्यहृष्टि
		वाणव्यन्तर असंयत सम्यहृष्टि

शेष एकभागका	संख्यात बहुभाग	वाणव्यन्तर सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" "	असंख्यात "	" सासादन सम्यग्दृष्टि
" "	" "	भवनवासी असंयत सम्यग्दृष्टि
" "	संख्यात बहुभाग	" सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" "	असंख्यात बहुभाग	" सासादन सम्यग्दृष्टि
" "	" "	तिर्य्ये असंयत सम्यग्दृष्टि
" "	संख्यात बहुभाग	" सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" "	असंख्यात "	" सासादन सम्यग्दृष्टि
" "	" "	प्रथम पृथिवी असंयत सम्यग्दृष्टि
" "	संख्यात "	" " सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" "	असंख्यात बहुभाग	" " सासादन सम्यग्दृष्टि
" "	" "	इसीप्रकार सातवी पृथिवी सासादन सम्यग्दृष्टितक ले जाना
" "	संख्यात बहुभाग	आनत प्राणत असंयत सम्यग्दृष्टि
" "	" "	आरण अच्युत " "
" "	" "	इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैकेक के असंयत सम्यग्दृष्टितक ले जाना
" "	संख्यात बहुभाग	आनत प्राणत मिथ्यादृष्टि
" "	" "	आरण अच्युत मिथ्यादृष्टि
" "	" "	उपरिम उपरिम त्रैके. मिथ्यादृष्टितक ले जाना
" "	" "	ले जाना।
" "	" "	अनुदिश असंयत सम्यग्दृष्टि के चार अनुत्तर " " देव
" "	असंख्यात "	आनत प्राणत सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" "	संख्यात "	आरण अच्युत "
" "	" "	इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैके सम्यग्मिथ्यादृष्टितक ले जाना।
" "	" "	आनत प्राणत सासादन सम्यग्दृष्टि
" "	" "	आरण अच्युत " "
" "	" "	अधो उपरिम त्रैके " "
" "	" "	इसीप्रकार उपरिम उपरिम त्रैके सासादन सम्यग्दृष्टितक जानना

शेष एकभागका	असंख्यात बहुभाग	उपरिम उपरिम ग्रैवः सासादन सम्यः
॥ ॥	संख्यात बहुभाग	सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव
॥ ॥	संख्यात बहुभाग	मनुष्यिणी मिथ्यादृष्टि जीव
॥ ॥	॥ ॥	मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव
॥ ॥	॥ ॥	मनुष्य असंयत सम्यग्दृष्टि
॥ ॥	॥ ॥	॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि
॥ ॥	॥ ॥	॥ सासादन सम्यग्दृष्टि
॥ ॥	॥ ॥	॥ संयतासंयत
॥ ॥	॥ ॥	प्रमत्तसंयत मनुष्य
॥ ॥	॥ ॥	अप्रमत्तसंयत मनुष्य
॥ ॥	॥ ॥	सयोगकेवली जिन
॥ ॥	॥ ॥	चार गुणस्थानके क्षपक
॥ ॥	॥ ॥	॥ ॥ उपशामक
शेष एकभागप्रमाण	॥	अयोगकेवली

पृ. 258

-चारों गतिसंबन्धी अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व
अयोगिकेवली	स्तोक
चारों गुणस्थानोंके उपशामक	संख्यातगुणे
॥ ॥ क्षपक	॥
सयोगकेवली क्षपक	॥
अप्रमत्त संयत	॥
प्रमत्त संयत	॥
मनुष्य संयतासंयत	॥
सासादन सम्यग्दृष्टि मनुष्य	॥
सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्य	॥
असंयत सम्यग्दृष्टि मनुष्य	॥
पर्याप्त मिथ्यादृष्टि मनुष्य	॥
मिथ्यादृष्टि मनुष्यिणी	
सर्वार्थसिद्धिके देव	विगुणे/सातगुणे

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकारकी प्रमाण
सौधर्म (१) असंयत समय अवहारकाल	असंख्यातगुणा	आवली का असंख्यातका भाग सर्वार्थसिद्धिके देवोंका प्रमाण
॥ ॥ सम्याग्निध्यादृष्टि ॥	॥	आवली :- असंख्यात
॥ ॥ सासादन समय ॥	संख्यातगुणा	संख्यातसमय
इसीप्रकार क्रमसे शतार सहस्रारक सासादन समय अवहारकालतक		
ज्योतिषी असंयत समय अवहारकाल	असंख्यातगुणा	आवली :- असंख्यात
॥ मिश्र ॥	॥	॥
॥ सासादन ॥	संख्यातगुणा	संख्यातसमय
वाणव्यन्तरे असंयत समय ॥	असंख्यातगुणा	आवली :- असंख्यात
॥ मिश्र ॥	॥	॥
॥ सासादन ॥	संख्यातगुणा	संख्यातसमय
भवनवासी असंयत समय ॥	असंख्यातगुणा	आवली :- असंख्यात
॥ मिश्र ॥	॥	॥
॥ सासादन ॥	संख्यातगुणा	संख्यातसमय
तिर्य्येय असंयत समय ॥	असंख्यातगुणा	आवली :- असंख्यात
॥ मिश्र ॥	॥	॥
॥ सासादन ॥	संख्यातगुणा	संख्यातसमय
॥ संयतासंयत ॥	असंख्यातगुणा	आवली :- असंख्यात
प्रथम पृथ्वी असंयते समय ॥	असंख्यातगुणा	॥
॥ ॥ मिश्र ॥	॥	॥
॥ ॥ सासादन ॥	संख्यातगुणा	संख्यातसमय
इसीप्रकार द्वितीय पृथ्वीसे		
आतवी पृथ्वी सासा. अवहारकालतक		
आनतप्राणत असंयत समय अवहार	असंख्यातगुणा	आवली :- असंख्यात
आरण अच्युत ॥ ॥ ॥	संख्यातगुणा	संख्यातसमय
इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैवेयक	॥	॥
असंयत समय अवहारकालतक		
आनत प्राणत मिश्यादृष्टि अवहार	॥	॥
आरण अच्युत ॥ ॥	॥	॥
इसीप्रकार उपरिम उपरिम ग्रैने. तक	॥	॥

अल्पबहुत्व पद

अल्पबहुत्व

गुणकारका प्रमाण

अनुदिश असंयत सम्य. अवहार

संख्यातगुणा

संख्यात समय

चार अनुतर " " "

"

"

आगत प्रगत मिश्र अवहारकाल

असंख्यातगुणा

आवली :- असंख्यात

आरण अव्युत " "

संख्यातगुणा

संख्यात समय

उपरिम उपरिम त्रै. " " तक

"

"

आगत प्रा. सासादन अवहारकाल

"

"

आरण अव्यु. " "

"

"

उपरिम उपरिम त्रै. " " तक

"

"

उपरिम उपरिम त्रै. सासादन द्रव्य

असंख्यातगुणा

उपरिम मध्यम " " "

संख्यातगुणा

" अधस्तन " " "

"

इस प्रकार अवहारकालके प्रतिलोमक्रमसे सौधर्म ऐशान के असंयत सम्यभृष्टि द्रव्यतक ले जाना। देव सर्व परस्थान अल्पबहुत्वमें देखे।

पल्योपम

सौधर्म ऐ. मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

असंख्यातगुणा

असंख्यातगुणी

सौ. ऐ. असंयत सम्य.
अपनी अवहारकाल

१) सूच्यगुल प्र. मू :- असंख्यात
२) सूच्यं. तृ. मू प्रमाण सूच्यं. द्वि. मू.
पल्योपम

मनुष्य अपर्याप्त अवहारकाल

असंख्यातगुणा

सूच्यगुल द्वितीय वर्गमूल

भारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

असंख्यातगुणी

सूच्यगुल तृतीय "

भवनवासी " "

"

भारक मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची

पंचे. तिर्यंच मिथ्या. अवहारकाल

असंख्यातगुणा

सूच्यं. प्र. मू :- असंख्यात

पंचे. तिर्यंच अपर्याप्त "

विशेष अधिक

आवली :- असंख्यात

पंचे. तिर्यंच पर्याप्त मिथ्या. अवहार

असंख्यातगुणा

आवलीका असंख्यातवा भाग :- संख्यात

देव मिथ्यादृष्टि अवहारकाल

संख्यातगुणा

संख्यात समय

ज्योतिषी मिथ्यादृष्टि " "

विशेष अधिक

देव मि. अवहारकाल :- संख्यात

वीणव्यन्तर " "

संख्यातगुणा

संख्यात समय

पंचे. तिर्यंच योनिती मि. अवहार

"

"

दूसरी पृथिवी मिथ्यादृष्टि "

असंख्यातगुणा

जगत्प्रेणी 92वा मू :- असंख्यात

असंख्यात तेरहवे वर्गमूलप्रमाण

यो. अव.

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणाकार व विशेष अधिक प्रमाण
ज्ञानकु. माहेन्द्र मिथ्या. अवहारकाल	असंख्यातगुणा	जगत्त्रेणी बारहवा वर्गमूल
तीसरी पृथिवी " "	"	" ग्यारहवा " "
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर " "	"	" दशवा " "
चौथी पृथिवी " "	"	" नौवा " "
लान्तव कापिष्ठ " "	"	" आठवा " "
पांचवी पृथिवी " "	"	" सातवा " "
शुक्र महाशुक्र " "	"	" छठा " "
शतार सहस्रार " "	"	" पांचवा " "
छठवी पृथिवी " "	"	" चौथा " "
सातवी पृथिवी " "	"	" तीसरा " "
सातवी पृथिवी मिथ्यादृष्टि द्रव्य	"	जगत्त्रेणी प्रथम वर्गमूल
छठी " " "	"	" तीसरा " "
शतार सहस्रार " "	"	" चौथा " "
शुक्र महाशुक्र " "	"	" पांचवा " "
पांचवी पृथिवी " "	"	" छठा " "
लान्तव कापिष्ठ " "	"	" सातवा " "
चौथी पृथिवी " "	"	" आठवा " "
ब्रह्म ब्रह्मोत्तर " "	"	" नौवा " "
तीसरी पृथिवी " "	"	" दशवा " "
ज्ञानकुमार माहेन्द्र " "	"	" ग्यारहवा " "
दूसरी पृथिवी " "	"	" बारहवा " "
पंचेन्द्रिय तिर्यंच यो. मि. विष्कंभसूची	असंख्यातगुणी	जगत्त्रेणी १२ वा मू. असंख्यात = जगत्त्रेणी असंख्यात १३ वे वर्गमूल
वाणव्यन्तर मिथ्या. विष्कंभसूची	संख्यातगुणी	संख्यात समय
ज्योतिषी मिथ्या. विष्कंभसूची	"	"
देव . मिथ्या. " "	विशेष अधिक	ज्यो. मि. विष्कंभसूची = संख्यात
पंचे. तिर्यंच पर्याप्त मिथ्या. " "	संख्यातगुणी	संख्यात समय
" " अपर्याप्त " "	असंख्यातगुणी	आवली का असंख्यातवा भाग = संख्या.
पंचे. तिर्यंच मिथ्यादृष्टि " "	विशेष अधिक	पंचे. ति. अपर्याप्त विष्कंभ = आवली
भवनवासी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	सूच्ये. प्र. मू. असंख्यात
प्रथम पृथिवी " "	"	नारकी मिथ्या. विष्कंभसूची

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकारण विशेष अधिकता प्रमाण
मनुष्य अपर्याप्त द्रव्य	असंख्यातगुणा	सूच्यगुणका तृतीय वर्गमूल
सौधर्म ए. मिथ्यादृष्टि अवहार	असंख्यातगुणा	" द्वितीय "
जगत्प्रेणी	असंख्यातगुणी	विष्कंभसूची
सौधर्म ए. मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	अपनी विष्कंभसूची
पहली पृथिवी " "	"	सौ. ए. मिथ्यादृष्टि विष्कंभसूची
भवनवासी " "	"	नारकियोंकी मिथ्या. "
पंचेन्द्रिय ति. यो. " "	"	जगत्प्रेणी = सूच्यगुण संख्यात प्रथम वर्गमूल प्रमाण घनांगुल = जग. अस. प्र. मू.
वाढाव्यन्तर " "	संख्यातगुणा	संख्यात समय
ज्योतिषी " "	"	" "
देव " "	विशेष अधिक	ज्योतिषी मिथ्या. द्रव्य ÷ संख्यात
पंचे. तिर्यंच पर्याप्त " "	संख्यातगुणा	संख्यात समय
" " अपर्याप्त " "	असंख्यातगुणा	आवली ÷ असंख्यात
पंचे. तिर्यंच मिथ्यादृष्टि द्रव्य	विशेष अधिक	पंचे. ति. अपर्याप्त द्रव्य ÷ <u>आवली</u> असंख्यात
जगत्प्रतर	असंख्यातगुणा	अपना (पं. ति. मि.) अवहारकाल
लोक	"	जगत्प्रेणी
सिद्ध	अनन्तगुणे	१) अभव्यसिद्धोंसे अनन्तगुणा २) सिद्ध ÷ असंख्यात (लोक)
एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय जीव	अनन्तगुणा	१) अभव्य x अनन्त २) सिद्ध x अनन्त ३) जीवराशि प्र. मू. x अनन्त ४) भव्यसिद्धोंका अनन्त बहुभाग ÷ सिद्ध

पृ. 304

इन्द्रिय मार्गणा - संख्या प्ररूपणा

१) एकेन्द्रिय

२) पर्याप्त

३) अपर्याप्त

सब जीव अनन्त

एकेन्द्रिय

४) वादर, एकेन्द्रिय

५) सूक्ष्म, एकेन्द्रिय

६) पर्याप्त

७) अपर्याप्त

८) पर्याप्त

९) अपर्याप्त

कालप्रमाणकी अपेक्षा
 नौ प्रकारकी एकद्विय राशियां अनन्तानन्त (अतीत) अवसर्पिणि और
 उत्सर्पिणियोंसे अधिक हैं।
 क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं।

पृ. 30

ध्रुवराशिका नाम	ध्रुवराशिका प्रमाण
एकद्विय ध्रुवराशि	संपूर्ण जीवराशि + द्वी.त्री.च.पंचे अनिद्विय + द्वी.त्री.च.पंचे अनिद्विय एकद्विय जीवराशि
एकद्विय पर्याप्त	एकद्विय ध्रुवराशि + (एकद्विय ध्रुवराशि ÷ संख्यात)
एकद्विय अपर्याप्त	एकद्विय ध्रुवराशि × संख्यात
बादर एकद्विय	” ” × असंख्यात लोक
बादर एकद्विय पर्याप्त	बादर एकद्विय ध्रुवराशि × असंख्यात लोक
बादर एकद्विय अपर्याप्त	बादर एक. पर्याप्त ध्रुवराशि + (बादर एक. पर्याप्त ध्रुव. ÷ असंख्यात लोक)
सूक्ष्म एकद्विय	एकद्विय ध्रुवराशि + (एकद्विय ध्रुवराशि ÷ असंख्यात लोक)
सूक्ष्म एकद्विय पर्याप्त	सूक्ष्म एकद्विय ध्रुवराशि + (सूक्ष्म एक. ध्रुवराशि ÷ संख्यात)
सूक्ष्म एकद्विय अपर्याप्त	सूक्ष्म एकद्विय ध्रुवराशि × संख्यात

$$\text{संपूर्ण जीवराशि}^2 \div \text{ध्रुवराशि} = \text{अपनी अपनी राशि}$$

संपूर्ण जीवराशि 258 मानी, एकद्विय जीवराशि 252, द्वी.त्री.च.पंचे अनिद्विय
 लोक-राशि 8 मानी,

$$\begin{aligned} \text{एकद्विय ध्रुवराशि} &= 258 + 8 + \frac{8^2}{252} = 266 + \frac{64}{252} = \frac{252 \times 266 + 64}{252} \\ &= \frac{67032 + 64}{252} = \frac{67096}{252} \text{ एक. ध्रुवराशि} \end{aligned}$$

$$\frac{\text{संपूर्ण जीवराशि}}{\text{एकद्विय ध्रुव.}} = \frac{67096}{252} \div \frac{67096}{252} = \frac{67096 \times 252}{67096} = 252 \text{ एकद्विय जीवराशि}$$

एकेन्द्रियोंका प्रमाण

एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव = $(\text{संपूर्ण जीवराशि} \div \text{संख्यात}) \times \text{संख्यात} - 9$

$$(258 \div 8) \times 8 = 84 \times 8 = 952 \text{ एके. पर्याप्त}$$

एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव = $\text{संपूर्ण जीवराशि} \div \text{संख्यात}$ यहां संख्यात $\frac{258}{\text{माना } 80}$

$$258 \div \frac{258}{80} = \frac{258 \times 80}{258} = 80 \text{ एके. अपर्याप्त}$$

बादर एकेन्द्रिय जीव = $\text{संपूर्ण जीवराशि} \div \text{असंख्यात}$ यहां असंख्यात $\frac{258}{\text{माना } 22}$

$$258 \div \frac{258}{22} = \frac{258 \times 22}{258} = 22 \text{ बादर एके.}$$

बादर एकेन्द्रिय ^अ पर्याप्त जीव = $\text{संपूर्ण जीवराशि} \div \text{असंख्यात}$ यहां असंख्यात $\frac{258}{28}$

$$258 \div \frac{258}{28} = \frac{258 \times 28}{258} = 28 \text{ बादर एके. पर्याप्त}$$

बादर एकेन्द्रिय ~~अ~~ पर्याप्त जीव = $\text{संपूर्ण जीवराशि} \div \text{असंख्यात}$ यहां असंख्यात $\frac{258}{\text{माना } 84}$

$$258 \div 84 = 8 \text{ बादर एके. पर्याप्त}$$

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव = $(\text{संपूर्ण जीवराशि} \div \text{असंख्यात}) \times \text{असंख्यात} - 9$

यहां असंख्यात $<$ माना $(258 \div 8) \times 8 = 32 \times 8 = 228$ सूक्ष्म एकेन्द्रिय

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त = $(\text{संपूर्ण जीवराशि} \div \text{संख्यात}) \times \text{संख्यात} - 9$

यहां संख्यात $\frac{258}{8}$ $(\frac{258 - 258}{8}) \times \frac{258}{8} - 9 = (\frac{258 \times 8}{258}) \times \frac{258 - 8}{8}$

$$= 8 \times \frac{250}{8} = 250 \text{ सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त}$$

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त = $\text{संपूर्ण जीवराशि} \div \text{संख्यात}$ संख्यात $\frac{258}{\text{माना } 58}$

$$258 \div \frac{258}{58} = \frac{258 \times 58}{258} = 58 \text{ सू. एके. अपर्याप्त}$$

एकेन्द्रियोंके प्रमाणका कारण \rightarrow

9) संपूर्ण जीव \div द्वीन्द्रियादि जीव व अनिन्द्रिय जीव राशि = विरलन राशि

$$258 \div 8 = 84 \text{ इसका विरलन करके}$$

उसपर सर्वजीवराशिको समान खंड करके देना

$$\begin{array}{cccccccc} 8 & 8 & 8 & 8 & 8 & 8 & 8 & 8 \\ 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 & 9 \end{array} \text{ --- } 84 \text{ बार}$$

एक विरलनपर प्राप्त द्वीन्द्रियादि व अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण = 4
शेष बहुभागप्रमाण एकेन्द्रिय जीव = 242

2) द्वीन्द्रियादि, अनिन्द्रिय जीव + एकेन्द्रिय अपयक्षि जीव
 $4 + 40 = 44$

संपूर्ण जीवराशि ÷ उपर्युक्त जीवराशि = विरलन राशि
 $248 \div 44 = 5$ विरलन संपूर्ण जीवराशि को समान खंड करके देना

$\frac{44}{9} \frac{44}{9} \frac{44}{9} \frac{44}{9} =$ एक खंडपर प्राप्त राशि = द्वीन्द्रियादि और एकेन्द्रिय अपयक्षि
तीन खंडपर प्राप्त $44 + 44 + 44 = 132$ एकेन्द्रिय पयक्षि राशि
संख्यात बहुभागप्रमाण है।

3) संपूर्ण जीवराशि ÷ एकेन्द्रिय अपयक्षि राशि = विरलन राशि

$248 \div 40 = 6 \frac{8}{10}$ विरलन, संपूर्ण जीवराशि को समान खंड करके देना
 $\frac{40}{9} \frac{40}{9} \frac{40}{9} \frac{40}{9} \frac{8}{9}$

एक खंडपर प्राप्त एकेन्द्रिय अपयक्षि जीव

4) सर्व जीवराशि ÷ द्वीन्द्रियादि, अनिन्द्रिय + बाहर एके जीव = विरलन असंख्यात लोक

$248 \div (4 + 24) = 248 \div 28 = 8$ इसका विरलन करके
संपूर्ण जीवराशि को समान खंड करके देनेपर

$\frac{28}{9} \frac{28}{9} \frac{28}{9} \frac{28}{9} \frac{28}{9} \frac{28}{9} \frac{28}{9} \frac{28}{9}$

एक विरलनपर प्राप्त राशि = 28 बाहर एकेन्द्रिय व द्वीन्द्रियादि, अनिन्द्रिय जीव
शेष सर्व विरलनपर प्राप्त बहुभागप्रमाण 224 सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव

संपूर्ण जीवराशि ÷
5) द्वीन्द्रियादि, अनिन्द्रिय + बाहर एकेन्द्रिय + सूक्ष्म एके अपयक्षि = विरलन राशि

$248 \div (4 + 24 + 48)$
 $248 \div 76 = 3 \frac{20}{76}$ विरलन देयराशि 248

$\frac{76}{9} \frac{76}{9} \frac{20}{76} =$ बहुभागप्रमाण $76 + 20 = 96$ सूक्ष्म एकेन्द्रिय पयक्षि राशि

द) संपूर्ण जीवशांति \div सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्त = संख्यात लब्ध विरलन शांति
 $24\text{E} \div 4\text{E} = 8 \frac{32}{4\text{E}}$ इसका विरलन करके सर्वजीवशांति को समान खंड करके देना

$\frac{4\text{E}}{9} \quad \frac{4\text{E}}{9} \quad \frac{4\text{E}}{9} \quad \frac{4\text{E}}{9} \quad \frac{32}{32}$ एक अंकपर प्राप्त $\frac{4\text{E}}{9}$ सूक्ष्म एकेंद्रिय अपर्याप्त जीव
 इसी प्रकार बाहर एकेंद्रिय, पर्याप्त और अपर्याप्तों का भी कथन करना

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात कालप्रमाणसे असंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणीप्रमाण क्षेत्रकी अपेक्षा जगत्प्रतर \div सूच्यंगुल के असंख्यातवे भागका वर्ग पर्याप्त द्वीन्द्रियादि = जगत्प्रतर \div सूच्यंगुलके असंख्यातवा भाग²
 अपर्याप्त " " \div " असंख्यातवा भाग²
 इसी प्रकार पंचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण जानना।

अवहारकालका नाम	अवहारकालका प्रमाण
द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रिय अपर्याप्त "	$(\text{सूच्यंगुल} \div \text{आवलीका असंख्यातवा भाग})^2$ द्वीन्द्रिय अवहारकाल + $\frac{\text{द्वीन्द्रिय अवहारकाल}}{\text{आवलीका-असंख्यातवा भाग}}$
त्रीन्द्रिय अवहारकाल	द्वी. अपर्याप्त अवहारकाल + $\frac{\text{द्वी. अपर्याप्त अवहारकाल}}{\text{आवली} \div \text{असंख्यात}}$
त्रीन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकाल	त्रीन्द्रिय अवहारकाल + $\frac{\text{त्रीन्द्रिय अवहारकाल}}{\text{आवली} \div \text{असंख्यात}}$
चतुरिन्द्रिय अवहारकाल	त्री. अपर्याप्त अवहार + $\frac{\text{त्री. अपर्याप्त अवहार}}{\text{आवली} \div \text{असंख्यात}}$
चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकाल	चतुरिन्द्रिय अवहारकाल + $\frac{\text{चतुरिन्द्रिय अवहारकाल}}{\text{आवली} \div \text{असंख्यात}}$
पंचेन्द्रिय अवहारकाल	चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त अवहार + $\frac{\text{चतुरिन्द्रिय अप. अवहार}}{\text{आवली} \div \text{असंख्यात}}$

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकाल	पंचेन्द्रिय अवहारकाल + पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकाल आवली : असंख्यात
त्रीन्द्रिय पर्याप्त अवहारकाल	पंचे. अपर्याप्त अवहारकाल + पंचे. अप. अवहारकाल आवली : असंख्यात = प्रतरांगुल : संख्यात
द्वीन्द्रिय " "	त्रीन्द्रिय पर्याप्त अवहारकाल + त्री. पर्याप्त अवहार आवली : असंख्यात
पंचेन्द्रिय " "	द्वीन्द्रिय पर्याप्त अवहार + द्वीन्द्रिय पर्याप्त अवहार आवली : असंख्यात
चतुरिन्द्रिय " "	पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवहारकाल + पंचे. पर्याप्त अवहार आवली : असंख्यात

हृदयमार्गवासबंधी भागाभाग

सर्व जीवराशि	संख्यात बहुभागप्रमाण	सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव
शेष एकभागका	असंख्यात बहुभागप्रमाण	सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त "
" "	" "	बाह्य एकेन्द्रिय अपर्याप्त "
" "	अनन्त "	बाह्य " पर्याप्त "
" "	" "	अभिन्द्रिय जीव

शेष एकभाग - पत्योपमका असंख्यातवा भाग = लब्धप्रमाण एकभाग अलग
आवलीका असंख्यातवा भाग रखना

बहुभाग के समान चार भाग करना

द्वीन्द्रियोंका प्रमाण	त्रीन्द्रियोंका प्र.	चतुरिन्द्रियोंका प्र.	पंचेन्द्रियोंका प्रमाण
बहुभाग ÷ 4	बहुभाग ÷ 4	बहुभाग ÷ 4	बहुभाग ÷ 4
+ शेष एकभागका बहुभाग	+ शेष एकभाग का बहुभाग	+ शेष एकभागका बहुभाग	+ शेष एकभाग

द्वीन्द्रिय जीवराशिका असंख्यात बहुभागप्रमाण द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव, शेष एक भागप्रमाण पर्याप्त जीव है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रियोंका कथन करना चाहिये।

शेष <u>पुल्योपम</u> राशिका असंख्यात	असंख्यात बहुभागप्रमाण	असंयत सम्यग्दृष्टि जीव
शेष एकभागका	संख्यात "	साम्यग्मिथ्यादृष्टि
" "	असंख्यात "	सासादन सम्यग्दृष्टि
" "	असंख्यात बहुभागप्रमाण	संयतासंयत
" "	संख्यात "	प्रमत्तसंयत
" "	" "	अप्रमत्तसंयत
" "	" "	सयोगकेवली
" "	" "	चार क्षपक
" "	" "	चार उपशानक
शेष एकभागप्रमाण		अयोगकेवलि

एकेन्द्रियोंके भागाभागाको अन्यप्रकारसे कहते है -

- 1) एकेन्द्रिय राशि 25E, सूक्ष्म एके. राशि 280, बादर एके. राशि 9E
 सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त 920, सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि 60
 बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त 8, बादर " " " 92

बादर एकेन्द्रिय राशिपर्यंत एकेन्द्रिय राशिको आधी आधी करना

25E, 92E, 8E, 32, 9E
 अर्धच्छेद 9 2 3 8 ^{उत्पर} अर्धच्छेद शलाकाओंका विरलन करके दो रखकर
 गुणा करना $\frac{2}{9} \frac{2}{9} \frac{2}{9} \frac{2}{9} = 9E$ असंख्यात लोकप्रमाण / इसका विरलन
 करके एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देना।

9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E 9E
 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9

एक विरलन पर प्राप्त $\xrightarrow{9E}$ बादर एकेन्द्रिय राशि / शेष बहुभागप्रमाण = 280 सूक्ष्म
 एकेन्द्रिय राशि.

- 2) सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होने तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवराशिको आधा-आधा
 आधा करना 280, 920, 60 अर्धच्छेदका विरलन $\frac{2}{9} \frac{2}{9} = 8$

60 60 60 60 - सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशिको समखंड करके देना
 9 9 9 9

एक विरलन पर प्राप्त 60 सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि
 बहुभागप्रमाण 920 सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि.
 इसीप्रकार बादर एकेन्द्रियोंका भी कथन करना चाहिए।

4.322 एकेंद्रियों में स्वस्थान अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व प्रमाण	गुणकार व विशेष अधिक प्र.
बाहर एकेंद्रिय पर्याप्त जीव	स्तोक	
बाहर एकेंद्रिय अपर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
बाहर एकेंद्रिय जीव	विशेष अधिक	बाहर एके पर्याप्त राशि
सूक्ष्म " अपर्याप्त जीव	सबसे स्तोक	
सूक्ष्म " पर्याप्त जीव	संख्यातगुणे	संख्यात समय
" एकेंद्रिय जीव	विशेष अधिक	सूक्ष्म एके अपर्याप्त राशिप्रमाण

द्वीन्द्रिय जीवों में स्वस्थान अल्पबहुत्व

द्वीन्द्रियों का अवहारकाल	स्तोक	
" की विष्कंभसूची	असंख्यातगुणी	1) विष्कंभसूची ÷ अवहारकाल 2) जगत्प्रेणी ÷ अवहारकाल ²
जगत्प्रेणी	"	अपना अवहारकाल
द्वीन्द्रियों का द्रव्यप्रमाण	असंख्यातगुणा	अपनी विष्कंभसूची
जगत्प्रेतर	असंख्यातगुणा	अपना अवहारकाल
लोक	"	जगत्प्रेणी

प्रथम विकल्प परस्थान अल्पबहुत्व

बाहर एकेंद्रिय जीव	सबसे स्तोक	
सूक्ष्म " " "	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक

दूसरा विकल्प बाहर एकेंद्रिय जीव	स्तोक	
सूक्ष्म एकेंद्रिय जीव	असंख्यातगुणे	"
एकेंद्रिय जीव	विशेष अधिक	बाहर एकेंद्रिय जीवराशिप्रमाण

तीसरा विकल्प		
1) बाहर एकेंद्रिय पर्याप्त	स्तोक	
2) " " अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
3) सूक्ष्म " "	"	" "
4) सूक्ष्म " पर्याप्त	संख्यातगुणे	संख्यात समय

चौथा विकल्प पूर्वोक्तप्रकार ४ पद

५) एकेन्द्रिय जीव

विशेष अधिक

चौथा पद + बादर एकेन्द्रिय जीव

पांचवा विकल्प

१) बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

स्तोक

२) " " अपर्याप्त

असंख्यातगुणा

असंख्यात लोक

३) " एकेन्द्रिय जीव

विशेष अधिक

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव

४) सूक्ष्म " अपर्याप्त

असंख्यातगुण

असंख्यात लोक

५) " " पर्याप्त

संख्यातगुणा

संख्यात समय

६) सूक्ष्म " जीव

विशेष अधिक

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि

छठा विकल्प इसीप्रकार है अर्थात् पूर्वोक्तप्रकार

६ पद

७) एकेन्द्रिय जीव

विशेष अधिक

वा. एकेन्द्रिय राशि

सातवा विकल्प

१) बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त

स्तोक

२) बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त

असंख्यातगुणे

असंख्यात लोक

३) बादर एकेन्द्रिय जीव

विशेष अधिक

बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि

४) सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त

असंख्यातगुणे

असंख्यात लोक

५) एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव

विशेष अधिक

बादर सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि

६) सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव

संख्यातगुणे

संख्यात समय

७) एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव

विशेष अधिक

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि

८) सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव

विशेष अधिक

सूक्ष्म ए. अप. - वा. ए. पर्याप्त

९)

आठवा पूर्वोक्त ८ पद

विकल्प १) एकेन्द्रिय जीव

विशेष अधिक

बादर एकेन्द्रिय जीव राशि

पृ. 325

द्वीन्द्रियोंमें परस्थान

अल्पबहुत्व

१) द्वीन्द्रिय अवहारकाल

स्तोक

२) द्वी. अपर्याप्त

विशेष अधिक

द्वी. अवहार. - आवली

असंख्यात

३) द्वी. पर्याप्त

असंख्यातगुणा

आवली - असंख्यात

४) द्वी " विष्कुम्भसूची

असंख्यातगुणी

१) विष्कुम्भसूची - अवहारकाल

२)

			२) जगत्मेणी ÷ अवहारकाल ²
			३) सूक्ष्मगुल प्रमाण घनांगुल संख्यातप
५) द्वीअप. विष्कुंभसूची	असंख्यातगुणी	आवली ÷ असंख्यात	
६) द्वीन्द्रिय "	विशेष अधिक	द्वी. अप. विष्कुंभसूची ÷ आवली असंख्यात	
७) जगत्मेणी	असंख्यातगुणी	द्वीन्द्रिय जीविका अवहारकाल	
८) द्वी. प. जीव	असंख्यातगुणे	द्वी. पथति विष्कुंभसूची	
९) द्वी. अप. "	"	आवलीका असंख्यातवा भाग ÷ संख्यात	
१०) द्वीन्द्रिय जीव	विशेष अधिक	द्वी. अप. जीव ÷ आवलीका असंख्यातवा भाग	
११) जगत्प्रतर	असंख्यातगुणा	जगत्मेणी असंख्यातवा भाग	

सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व -

अल्पबहुत्व पद	अल्पबहुत्व	गुणकार और विशेष अधिक प्रमाण
१) अयोग केवली	स्तोक	
२) चारों उपशामक	संख्यातगुणे	
३) " अपक	"	
४) अयोग केवली	"	
५) अप्रमत्तसंयत	"	
६) प्रमत्तसंयत	"	
७) असंयत सम्यः अवहार.	असंख्यातगुणा	
८) पल्योपमतक ओष समान		
९) द्वी. अवहारकाल	"	१) अपना अवहार ÷ पल्योपम २) प्रतरांगुल ÷ संख्यात ३) आवली × पल्योपमप्रमाण - असंख्यात सूक्ष्मगुल
१०) द्वी. अपथति अवहार.	विशेष अधिक	द्वी. अवहार ÷ आवली असंख्यात
११) द्वी. अवहारकाल	"	द्वी. अप. अवहार ÷ आवली असंख्यात
१२) द्वी. अप. अवहार.	"	द्वी. अवहार ÷ आवली असंख्यात

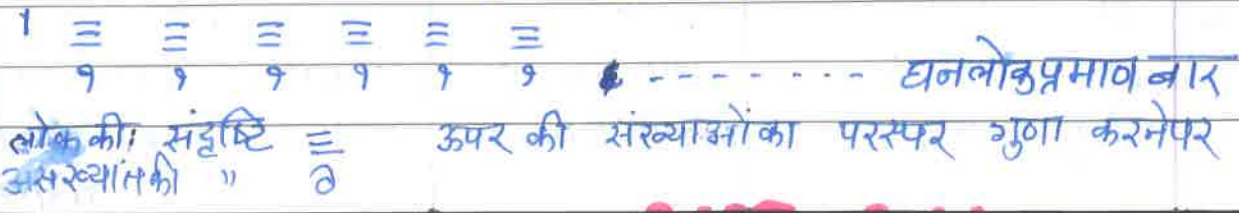
१३) चतुर्निद्रिय अवहार.	विशेष अधिक	त्री. ऋप. अवहार. ÷ आवली असंख्यात
१४) चतु. ऋप. अवहार.	"	चतु. अवहार. ÷ आवली असंख्यात
१५) पंचेन्द्रिय अवहारकाल	"	चतु. ऋप. अवहार. ÷ आवली असंख्यात
१६) पंचेन्द्रिय अप. »	"	पंचे. अवहार ÷ (आवली ÷ असंख्यात)
१७) त्री. प. अवहार.	असंख्यातगुणा	आवली ÷ संख्यात असंख्यात
१८) द्वी. प. अवहार.	विशेष अधिक	त्री. प. अवहार ÷ (आवली ÷ संख्यात)
१९) पंचे. प. "	"	
२०) चतु. प. "	"	
२१) " " विष्कुंभसूची	असंख्यातगुणी	
२२) पंचे. " "	विशेष अधिक	
२३) द्वी. " "	"	
२४) त्री. " "	"	
२५) पंचे. ऋप. "	असंख्यातगुणी	आवली ÷ संख्यात असंख्यात
२६) पंचे. विष्कुंभसूची	विशेष अधिक	पंचे. ऋप. विष्कुंभ. ÷ आवली असंख्यात
२७) चतु. ऋप. "	"	
२८) चतु. " "	"	
२९) त्री. ऋप. "	"	
३०) " विष्कुंभसूची	"	
३१) द्वी. ऋप. "	"	
३२) द्वी. " "	"	
३३) जगत्प्रेणी	असंख्यातगुणी	द्वी. अवहारकाल
३४) चतु. प. जीव	"	अपनी विष्कुंभसूची
३५) पंचे. प. जीव	विशेष अधिक	
३६) द्वी. प. जीव	"	
३७) त्री. " "	"	
३८) पंचे. ऋप. "	असंख्यातगुणे	आवली ÷ असंख्यात
३९) पंचेन्द्रिय जीव	विशेष अधिक	पंचे. ऋप. जीव. ÷ आवली असंख्यात

80) चतु. अप. जीव	विशेष अधिकु	
81) चतु. जीव	"	
82) त्री. अप. जीव	"	
83) त्रीन्द्रिय जीव	"	
84) द्वी. अप. जीव	"	
85) द्वीन्द्रिय जीव	"	
86) जगत्प्रतर	असंख्यातगुणा	द्वी. जीवोंका अकलकाल
87) लोक	"	जगत्प्रेणी
88) अनिन्द्रिय जीव	अनंतगुणा	1) अभव्यसिद्ध x अनंत 2) सिद्ध ÷ लोक
89) बा. ए. पयप्ति	"	3) अभव्यसिद्ध x अनंत 4) सिद्ध x अनंत 5) जीवराशि प्र. वर्गमूळ x अनंत 6) <u>सर्वजीवराशि ÷ असंख्यात अनिन्द्रिय जीव</u>
90) बा. ए. अप. जीव	असंख्यातगुणे	
91) बादर एके. जीव	विशेष अधिकु	
92) सूक्ष्म " अप. "	असंख्यातगुणे	
93) एके. अप. जीव	विशेष अधिकु	बा. ए. अप. राशि
94) सू. एके. प. "	संख्यातगुणे	
95) एकेन्द्रिय प. जीव	विशेष अधिकु	बा. ए. पयप्तिराशि
96) सू. एकेन्द्रिय "	"	
97) एकेन्द्रिय "	"	बादर एकेन्द्रिय जीवराशि

पृ. 334

काय मार्गणा संख्या प्रकृपणा -

तेजस्काधिकु जीवराशिके प्रमावके उत्पन्न करनेकी विधि -
 धनलोकको विश्वून, देय, शलाकरूप लीन राशि करना.



स्थापित करना। विरलन राशिका विरलन करके उसपर देयराशि रखकर परस्पर गुणा करके शलाका राशिमेंसे एक कम करना इसप्रकार पुनः पुनः करके तबतक ले जाना जबतक प्रथम, दूसरी और तीसरीवार स्थापित शलाका राशिओंसे न्यून चौथी बार स्थापित शलाका राशि समाप्त होती है। तब वहां उत्पन्न राशि तेजस्कारिक शशि जीवोंकी संख्या है।

अंक संदृष्टिसे प्रथम शलाका 2088, द्वितीय शलाका 258, तृतीय शलाका 2088 मानी, तीनोंका जोड़ $2088 + 258 + 2088 = 2308$ चौथी शलाका 9838 मानी $9838 - 2308 = 9808$ चौथी बार स्थापित 9838 में से एक एक कम करते हुए जब 9808 कम होंगे तब वहां उत्पन्न राशि तेजस्कारिक शशि जीवोंकी राशि होती है।

पृ. 380 गृहीत उपरिम विकल्प-

- 1) $\frac{\text{तेजस्कारिक शशिका वर्ग}}{\text{तेजस्कारिक शशि}} = \frac{\text{तेजस्कारिक शशि} \cdot 592^2}{592} = 592$ ते.श.
- 2) $\frac{\text{तेजस्कारिक शशिके वर्गका वर्ग}}{\text{तेजस्कारिक शशि} \times \text{तेजस्कारिक शशिका वर्ग}} = \frac{\text{तेजस्कारिक शशि} \cdot 592^2}{592 \times 592} = 592$

तेजस्कारिक शशि घनाघनधारामें आती है अतः यह प्रथम गृहीत विकल्प घनाघनधारिका समझना चाहिए। दूसरा विकल्प अक्षरूपवर्गधारिका है और तिसरा विकल्प द्विरूपवर्गधारिका समझना चाहिए।

द्विरूपवर्गधारिका - $8 \cdot 96 \cdot 258 \cdot 84 = 62 =$

द्विरूपघनधारिका $8 \cdot 88 \cdot 8058 \cdot 8058^2 \cdot 84 = 82 =$

द्विरूपघनाघनधारिका 592, 592, 592

यहांपर तेजस्कारिक शशिका प्रमाण 592 माना

प्राकृतमें तिसरे विकल्पमें 'घनाघनो वत्तइस्सामो' ऐसा पाठ है उसका संशोधन होना चाहिए। तिसरे विकल्पमें द्विरूपवर्गधारिका संख्या भाज्यराशिमें बतायी है इसलिए वह द्विरूपवर्गधारिका विकल्प होना चाहिए।

अष्टरूपमें उपरिम विकल्प

तेजस्कायिक राशि के उपरिम वर्ग के समान धनधारा के वर्ग के वर्ग का वर्ग
तेजस्कायिक राशि \times तेज. राशि के उपरिम वर्ग के समान धनधारा का वर्ग

तेजस्कायिक राशि ५१२ उसका उपरिम वर्ग ५१२^2 उसके समान द्विरूप धनधारा का वर्ग ६४ उसका वर्ग ४०९६ और उसका वर्ग ४०९६^2

$$\frac{४०९६ \times ४०९६}{५१२ \times ६४} = ५१२ \text{ तेजस्कायिक राशि}$$

उक्त भागहार ५१२×६४ के अर्धच्छेद $९ + ६ = १५$ होते हैं। उतनी वार ४०९६^2 भाज्यराशि के अर्धच्छेद करने पर ५१२ तेजस्कायिक राशि आती है। ४०९६^2 के अर्धच्छेद $१२ \times २ = २४$ होते हैं $२४ - ९ = १५$ अर्धच्छेद

द्विरूपमें उपरिम विकल्प =

भागहारभूत द्विरूपवर्ग के वर्ग का वर्ग

तेज. राशि \times तेज. राशि के उपरिम वर्ग के समान धनधारा का वर्ग \times धनधारा के उपरिम वर्ग को छोड़कर उसके उपरिम वर्ग समान द्विरूपवर्ग
धारा का वर्ग

$$\frac{६५५३६ \times ६५५३६}{५१२ \times ६४ \times २५६} = \frac{६५५३६ \times ४}{५१२} = ५१२ \text{ तेज. राशि}$$

उक्त भागहार $५१२ \times ६४ \times २५६$ के अर्धच्छेद $९ + ६ + ८ = २३$ होते हैं। उतनी वार भाज्यराशि $६५ = \times ६५ =$ के अर्धच्छेद करने पर ५१२ तेजस्कायिक राशि आती है।

असंख्यात लोक की संख्या ४ मानी

तेजस्कायिक राशि + तेजस्कायिक राशि
असंख्यात लोक = पृथ्वीकायिक राशि

$$५१२ + \frac{५१२}{४} = ५१२ + १२८ = ६४० \text{ पृथ्वीकायिक राशि}$$

पृथ्वीकायिक राशि + पृथ्वीकायिक राशि
असंख्यात लोक = जलकायिक राशि

$$६४० + \frac{६४०}{४} = ६४० + १६० = ८०० \text{ जलकायिक राशि}$$

जलकायिक राशि + जलकायिक राशि = वायुकायिक राशि
असंख्यात लोक

$$100 + \frac{200}{8} = 100 + 200 = 9000 \text{ वायुकायिक राशि}$$

उपर्युक्त तीनों राशिके अवहारकाल -

तेजस्कायिक राशि = असंख्यात लोक
पृथ्वीकायिक राशि - तेजस्कायिक राशि

$$\frac{492}{680 - 492} = \frac{492}{928} = 8 \text{ असंख्यात लोक}$$

पृथ्वीकायिक अवहारकाल =

तेजस्कायिक राशि - तेजस्कायिक राशि = पृथ्वी. राशि अवहारकाल
असंख्यात लोक + 9

$$492 - \frac{492}{8+9} = 492 - \frac{492}{17} = \frac{492 \times 17 - 492}{17}$$

$$\frac{2480 - 492}{17} = \frac{2088}{17} \text{ पृथ्वीकायिक राशि अवहारकाल}$$

तेजस्कायिक राशि² = पृथ्वीकायिक राशि
पृथ्वी. भागहार

$$\frac{492^2}{2088} = \frac{492 \times 492 \times 17}{2088} = 680 \text{ पृथ्वीकायिक राशि}$$

पृथ्वीकायिक राशि = असंख्यात लोक $\frac{680}{100 - 680} = \frac{680}{980} = 8$ असं. लोक
जल. राशि - पृथ्वी. राशि

पृथ्वीकायिक राशि - पृथ्वी. राशि अवहारकाल = जलकायिक राशि अवहारकाल
अवहारकाल असंख्यात लोक + 9

$$\frac{2088}{17} - \frac{2088}{17 \times 17} = \frac{2088 \times 17 - 2088}{29} = \frac{2088 \times 16}{29} = \frac{1982}{29} \text{ जल. अवहारकाल}$$

$$\frac{\text{तेजस्वायिक शशि}^2}{\text{जलकायिक अवहारकाल}} = \text{जलकायिक शशि}$$

$$\frac{492^2}{\frac{2952}{25}} = \frac{492 \times 492 \times 25}{\frac{2952}{929}} = 100 \text{ जलकायिक शशि}$$

$$\frac{\text{जलकायिक शशि}}{\text{वायुकायिक शशि} - \text{जलकायिक शशि}} = \text{असंख्यात लोक}$$

$$\frac{100}{9000 - 100} = \frac{100}{200} = \frac{1}{2} \text{ असंख्यात लोक}$$

वायुकायिक अवहारकाल -

$$\text{जलकायिक अवहारकाल} - \frac{\text{जलकायिक अवहारकाल}}{\text{असंख्यात लोक} + 9} = \text{वायुकायिक अवहारकाल}$$

$$\frac{2952}{25} - \frac{2952}{25 \times 9} = \frac{2952 \times 4 - 2952}{925} = \frac{2952 \times 8}{925}$$

$$\frac{32064}{925} \text{ वायुकायिक अवहारकाल}$$

वायुकायिक शशि -

$$\frac{\text{तेजस्वायिक शशि}^2}{\text{वायुकायिक अवहारकाल}} = \text{वायुकायिक शशि}$$

$$\frac{492^2}{\frac{32064}{925}} = \frac{492 \times 492 \times 925}{32064} = 9000 \text{ वायुकायिक शशि}$$

बादर तेजस्कायिक राशि = 922

$\frac{\text{तेजस्कायिक राशि}}{\text{बादर तेजस्कायिक राशि}} = \text{अशरब्धान लोड}$

$$\frac{492}{922} = 4 \text{ अशरब्धान लोड}$$

सूक्ष्म तेजस्कायिक अवहार. \rightarrow तेजस्कायिक राशि अवहार. सूक्ष्म
तेजस्कायिक राशि अवहार. + $\frac{\text{अशरब्धान लोड} - 9}{\text{तेज. अवहार.}}$

$$492 + \frac{492}{4-9} = \frac{492 \times 3 + 492}{3} = \frac{492 \times 4}{3}$$

$$\frac{2088}{3} \text{ सूक्ष्म तेज. अवहार.}$$

सूक्ष्म तेजस्कायिक राशि -

$\frac{\text{तेजस्कायिक राशि}^2}{\text{सूक्ष्म तेज. अवहार.}} = \text{सूक्ष्म तेज. राशि}$

$$\frac{492^2}{2088} = \frac{492 \times 492 \times 3}{2088} = 360 \text{ सू. तेज. राशि}$$

सूक्ष्म पृथ्वीकायिक अवहारकाल -

सू पृथ्वीकायिक अवहार. + $\frac{\text{पृथ्वीकायिक राशि अव.}}{\text{अशरब्धान लोड} - 9} = \text{सूक्ष्म पृ. अवहार.}$

$$\frac{2088}{9} + \frac{2088}{4 \times 3} = \frac{2088 \times 3 + 2088}{9} = \frac{2088 \times 4}{9} = \frac{8352}{9}$$

सूक्ष्म पृथ्वीकायिक राशि =

$\frac{\text{तेज. राशि}^2}{\text{सूक्ष्म पृ. अवहारकाल}} = \text{सूक्ष्म पृ. राशि}$

$$\frac{492 \times 492}{8352} = \frac{492 \times 492 \times 9}{8352} = 840 \text{ सू. पृ. राशि}$$

इसी प्रकार सूक्ष्म जलकायिक और वायुकायिक अवहारकाल और राशि निकालना चाहिए।

$$\text{सूत्र - } \frac{\text{सूक्ष्म जीवराशि}}{\text{सूक्ष्म अपर्याप्त राशि}} = \text{संख्यात}$$

$$\frac{\text{सूक्ष्म अवहारकाल} + \text{सूक्ष्म अवहारकाल}}{\text{संख्यात - 9}} = \text{अपने अपने सूक्ष्म पर्याप्त अवहारकाल}$$

$$\frac{\text{सूक्ष्म पर्याप्त तेजस्कायिक अवहारकाल} - \text{तेज. सू. अप. राशि} = 56 \text{ मान}}{\text{सूक्ष्म तेज. राशि}} = \text{संख्यात}$$

$$\frac{328}{56} = 8 \text{ संख्यात}$$

$$\frac{\text{सूक्ष्म तेज. अवहारकाल} + \text{सूक्ष्म तेज. अवहारकाल}}{\text{संख्यात - 9}} = \text{सू. प. तेज. अवहारकाल}$$

$$\frac{208L}{3} + \frac{208L}{3 \times 3} = \frac{208L \times 3 + 208L}{9} = \frac{208L \times 4}{9} = \frac{492}{9} \text{ सू. प. तेज. अवहारकाल}$$

सूक्ष्म पर्याप्त तेज. राशि -

$$\frac{\text{तेज. राशि}^2}{\text{सू. प. तेज. अवहारकाल}} = \text{सू. प. तेज. राशि}$$

$$\frac{492 \times 492}{9} = \frac{492^2 \times 3^2}{9 \times 9} = 222 \text{ सू. प. तेज. राशि}$$

इसीप्रकार सूक्ष्म पर्याप्त पृथ्वी, जल, वायुकयिकका भी निकालना चाहिए।

बादर जीवोंका अवहारकाल -

$$\text{सामान्य अवहारकाल} \times \text{असंख्यात लोक} = \text{बादर जीव अवहारकाल}$$

$$\text{सामान्य पृथ्वी. अवहार.} \times \text{असंख्यात लोक} = \text{बादर पृ. अवहारकाल}$$

$$\frac{208L}{9} \times 8 = \frac{492}{9} \text{ बा. पृ. अवहारकाल}$$

तेजस्वायिक राशि² ÷ बादर पृथिवी अवहारकाल = बादर पृथ्वी. राशि

$$592^2 \div \frac{2952}{5} = \frac{592 \times 592 \times 5}{2952} = 960 \text{ बादर पृथ्वी. राशि}$$

पृ. 383

बादर जीवोंके अर्धच्छेद →

सागरोपम 8056, पल्योपम 256 माना
सागरोपममें से एक पल्योपम ग्रहण करना।

$$8056 - 256 = 7800$$

$$\frac{\text{पल्योपम}}{\text{आवलीका असंख्यातवा भाग}} = \frac{256}{8} = 32 \text{ एकभाग } 32 \times 3 = 96 \text{ बहुभाग}$$

एकभागको पृथक् स्थापित करना

पल्योपम हीन सागरोपम + पल्योपम का बहुभाग = बादर तेजस्वायिक राशिके अर्धच्छेद

$$7800 + 96 = 7896 = \text{बा. ते. राशिके अर्धच्छेद}$$

बादर वनस्पति प्रत्येक शरीर जीवोंके अर्धच्छेद →

$$\frac{\text{पृथक् स्थापित एकभाग}}{\text{आवलीका असंख्यातवा भाग}} = \frac{32}{8} = 4 \text{ एकभाग } 4 \times 3 = 12 \text{ बहुभाग}$$

बादर तेज. राशिके अर्धच्छेद + बहुभाग = बादर वन. प्रत्येक शरीर जी. अर्धच्छेद

$$7896 + 12 = 7908 \quad " \quad " \quad " \quad " \quad "$$

बादर निगोद प्रतिष्ठित जीवोंके अर्धच्छेद →

$$\frac{\text{पूर्वोक्त एकभाग}}{\text{आवलीका असंख्यातवा भाग}} = \frac{4}{8} = 0.5 \text{ एकभाग } 0.5 \times 3 = 1.5 \text{ बहुभाग}$$

बादर वन. राशिके अर्धच्छेद + बहुभाग = बादर निगोद प्रतिष्ठित जी. अर्धच्छेद

$$7908 + 1.5 = 7909.5 \quad " \quad " \quad " \quad " \quad "$$

इसी प्रकार बादर पृथिवीकायिक और बादर अफ्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेदोंका

$$\text{कथन करना चाहिए। } 7909.5 + 3 = 7912.5 \quad 7912.5 + 3 = 7915.5$$

बादर अफ्कायिक जीवराशिके अर्धच्छेद + शेष एकभाग = बादर वायुकायिक अर्धच्छेद

$$7915.5 + \frac{3}{4} = 7916.25 \text{ सागरोपम प्रमाण वा. वा. जीवोंके अर्धच्छेद}$$

पु) अधिक अर्धच्छेद = धनलोकके अर्धच्छेद = विरलन $8 \div 8 = 9$
 धनलोक देयशशि $9E =$ उत्पन्नशशि $9E$
 बादर तेजशशि \times उत्पन्न शशि = वा.वन.प्र.श.जीवशशि
 $809E \times 9E = 8493E$ वा.वन.प्र.श.जीवशशि

बादर निगोद प्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर वायुकायिक जीवशशिका आश्रय करके बादर वनस्पति प्रत्येक शरीर शशिके उत्पन्न करनेपर 92 प्रकार और पूर्वोक्त 5 प्रकार इसप्रकार सत्रह प्रकारसे बादर वनस्पति प्रत्येक शरीर जीवशशिकी प्ररूपणा होती है।

विशेष इतना समझना कि जहां बड़ी शशिका आश्रय लेकर छोटी शशि उत्पन्न की जावे वहांपर छोटी शशिके अर्धच्छेदोंसे बड़ी शशिके अर्धच्छेद जितने अधिक होवे उतनीवार बड़ी शशिके आधे आधे करनेपर अथवा उतने अर्धच्छेदप्रमाण दो के परस्पर गुणित करनेसे जो लब्ध जावे उसका बड़ी शशिके भाग देने पर छोटी शशि आती है। तथा जहां छोटी शशिका आश्रय लेकर बड़ी शशि उत्पन्न की जावे वहां अधिक अर्धच्छेदप्रमाण छोटी शशिके द्विगुणित करने पर अथवा उतने अर्धच्छेदप्रमाण दो के परस्पर गुणित करनेसे जो शशि उत्पन्न हो उससे छोटी शशिके गुणित कर देने पर बड़ी शशि आ जाती है। बादर निगोद प्रतिष्ठित, बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वायुकायिक जीवशशिका इसीप्रकार सत्रह अत्रह प्रकारकी प्ररूपणासे प्ररूपण करना चाहिए।

बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा असंख्यात है।

क्षेत्रप्रमाणकी अपेक्षासे असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी, उत्सर्पिणीप्रमाण क्षेत्र " " जगत्प्रतर $= \frac{\text{सूच्यंगुल}^2}{\text{असंख्यात}}$

बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यात आवलियोंके वर्गरूप हैं जो धनावलीके भीतर हैं।

अवहारकालका नाम	अवहारकालका प्रमाण
बादर अष्ठाधिक पर्याप्त	सूर्यगुल ÷ पल्योपमका असंख्यातवा भाग
» पृथिवीकाधिक »	बादर अष्ठाधिक पर्याप्त अवहारकाल × (आवली ÷ असंख्यात)
» निगोद प्रतिष्ठित »	» पृथिवी. » » × » »
» वनस्थिति प्र.रा »	» निगोद प्रति. » » × » »
बादर तेजस्काधिक »	प्रतरावली ÷ (आवली ÷ असंख्यात)

१) बादर तेजस्काधिक पर्याप्त राशिका प्रमाण → यहाँ आवलीका प्रमाण १६ माना तो प्रतरावलीका ॥ २५६ हुआ।

$$\frac{\text{प्रतरावली}^2}{\text{असंख्यात}} = \text{बादर तेजस्काधिक पर्याप्त राशि} \frac{256^2}{928} = 592 \text{ वा. तेज. राशि}$$
 प्रतरावलीका असंख्यातका प्रमाण १२८ माना

२) कारण → $\frac{\text{प्रतरावली}^2}{\text{प्रतरावली}} = \text{प्रतरावली} \quad 59436 \div 246 = 246$

$$\frac{\text{प्रतरावली}^2}{\text{प्रतरावली}} = 2 \text{ प्रतरावली} \quad 59436 \div \frac{246}{2} = 492$$

$$\frac{\text{प्रतरावली}^2}{\frac{2}{\text{प्रतरावली}}} = 3 \text{ प्रतरावली} \quad 59436 \div \frac{246}{3} = 726 <$$

$$\frac{\text{प्रतरावली}^2}{\text{असंख्यात}} = \text{असंख्यात प्रतरावली} \quad 59436 \div \frac{246}{2} = 492$$

३) निश्चित → $\frac{\text{प्रतरावली}}{\text{असंख्यात}} = \text{लब्धप्रमाण प्रतरावलियां बादर तेजस्का-}$
 िक पर्याप्त जीवोंका प्रमाण है। $246 \div \frac{246}{2} = 2 \text{ प्रतरावलीप्रमाण वा. तेज. प. राशि}$

४) विकल्प → द्विरूपमें अधस्तन विकल्प →

$$\frac{\text{प्रतरावली}}{\text{प्रतरावली का असंख्यातवा भाग}} \times \text{प्रतरावली} = \text{बादर तेजस्काधिक पर्याप्त राशि}$$

$$\frac{246}{928} \times 246^2 = 592 \text{ बादर तेजस्काधिक पर्याप्त राशि}$$

अष्टरूपमें अधस्तन विकल्प →

$$\frac{\text{प्रतरावली}^3}{\text{प्रतरावलीका असंख्यातवा भाग} \times \text{प्रतरावली}} = \text{बादर तेज. प. राशि}$$

उक्त भागहार $92L \times 24E^4$ के अर्धच्छेद $6 + (4 \times 4) = 6 + 16 = 22$ होते हैं। इतनीवार $24E^4$ इस भाज्यराशि के अर्धच्छेद करने पर 492 बाहर तेज. पर्याप्त राशि आती है।

घनाधनमें गृहीत उपरिम विकल्प \rightarrow

$$\frac{(\text{घनाधनावली}^2)^2}{\text{प्रत. असंख्यातवा भाग} \times (\text{प्रतरावली}^2)^2 \times (\text{प्रतरावली}^3)^2} = \text{बा. तेज. पर्याप्त राशि}$$

$$\frac{((9E^9)^2)^2}{92L \times (24E^2)^2 \times (24E^3)^2} = \frac{3E}{92L \times 24E^4 \times 24E^6}$$

$$= \frac{9E}{92L \times 24E^4} = \frac{24E^2}{92L} = 492 \text{ बा. तेज. पर्याप्त राशि}$$

$$\frac{(\text{घनाधनावली}^2)^2}{(\text{प्रतरावली}^3)^2} = (\text{घनावली}^2)^2 = \frac{(9E^9)^2}{(24E^3)^2} = \frac{9E}{24E} = \frac{24E}{24E} = 1$$

$$= 9E^2 = (9E^3)^2 \text{ घनावली के वर्ग का वर्ग}$$

$$\frac{(\text{घनावली}^2)^2}{(\text{प्रतरावली}^2)^2} = \frac{9E^2}{(9E^2)^2} = \frac{9E^2}{9E^4} = 9E^8 \text{ प्रतरावली}^2$$

उक्त भागहार $92L \times 24E^9$ के अर्धच्छेद $6 + (9 \times 4) = 6 + 36 = 42$ होते हैं। उतनीवार $24E^9$ के अर्धच्छेद करने पर 492 बा. तेज. पर्याप्त राशि आती है।

$$\frac{\text{आवली}^2 \times \text{आवली}}{\text{असंख्यात}} = \text{बा. तेज. पर्याप्त राशि} \quad 9E^2 \times \frac{9E}{L} = 24E \times 2 = 492$$

$$\text{बा. तेज. पर्याप्त राशि}$$

बाहर वायुकारिक पर्याप्त जीव असंख्यात जगत्प्रतर = लोक संख्यात

$$\frac{\text{जगत्प्रेणी}^2 \times \text{जगत्प्रेणी}}{\text{संख्यात}} = \text{बाहर वायु. पर्याप्त राशि}$$

पृ. 348

9 वनस्पति
कायिक

2 निगोद जीव

3 बादर

8 सूक्ष्म

9 बादर

10 सूक्ष्म

5 पर्यप्त

6 अपर्यप्त

7 पर्यप्त

8 अपर्यप्त

9 पर्यप्त

12 अपर्यप्त

13 पर्यप्त

18 अपर्यप्त

उपर्युक्त 98 राशियों द्रव्यप्रमाणसे अनन्त कालप्रमाणसे अतीत अनन्तानन्त अवसर्पिणी और उत्सर्पिणियोंसे अधिक हैं। क्षेत्रप्रमाणसे अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं।

पृ. 349

ध्रुवराशिकी प्ररूपणा →

वनस्पति कायिक ध्रुवराशि →

1) सर्व जीवराशि + पृथ्वी, वायु, तेज, वायु, त्रस, अकायिक राशि + $\frac{(\text{पृथ्वीकायिकादि राशि})^2}{\text{वनस्पति कायिक}} =$

वनस्पति कायिक ध्रुवराशि

सर्व जीवराशि 98, पृथ्वीकायिकादि राशि 3, वनस्पति राशि = 93

$$98 + 3 + \frac{3^2}{93} = 98 + 3 + \frac{9}{93} = \frac{(98 \times 93) + (3 \times 93) + 9}{93}$$

$$= \frac{2061 + 279 + 9}{93} = \frac{2349}{93} = \text{वनस्पति कायिक ध्रुवराशि}$$

2) सर्व जीवराशि + $\frac{\text{सर्व जीवराशि}}{(\text{सर्व जीवराशि} \div 3) - 9} = \text{वनस्पति कायिक ध्रुवराशि}$

$$98 + \frac{98}{(98 \div 3) - 9} = 98 + \frac{98}{\frac{98-3}{3}} = 98 + \frac{98}{\frac{95}{3}} = 98 + \frac{98 \times 3}{95}$$

$$= 98 + \frac{294}{95} = \frac{(98 \times 95) + 294}{95} = \frac{2061 + 294}{95} = \frac{2355}{95} = \text{वनस्पति कायिक ध्रुवराशि}$$

2) सूक्ष्म वनस्पति कायिक ध्रुवराशि →

वनस्पति कायिक ध्रुवराशि + वनस्पति का. ध्रुवराशि = सूक्ष्म वन. ध्रुवराशि
असंख्यात लोक

असंख्यात लोक 8 माना

$$\frac{24E}{93} + \frac{24E^8}{93 \times 8} = \frac{24E + E^8}{93} = \frac{320}{93} = \text{सूक्ष्म वन. ध्रुवराशि}$$

बादर वनस्थितिकायिक ध्रुवराशि →

वनस्थितिकायिक ध्रुवराशि × (असंख्यात लोक + 9) = बादर वनस्थितिकायिक ध्रुवराशि

$$\frac{24E}{93} \times (8+9) = \frac{24E \times 17}{93} = \frac{408E}{93}$$

सूक्ष्म वनस्थितिकायिक अपर्याप्त ध्रुवराशि →

$\frac{\text{सूक्ष्म वनस्थितिकायिक जीवराशि}}{\text{सूक्ष्म वन. अपर्याप्त जीवराशि}} \times \text{सूक्ष्म वनस्थितिकायिक ध्रुवराशि} = \text{सूक्ष्म वन. अपर्याप्त ध्रुवराशि}$

सूक्ष्म वनस्थितिकायिक जीवराशि 98308 ; सूक्ष्म वन. अपर्याप्त राशि 2088 माना

$$\frac{98308}{2088} \times \frac{320}{93} = \frac{98308 \times 320}{93 \times 2088} = \frac{24E0}{93} = \text{सूक्ष्म वन. अपर्याप्त ध्रुवराशि}$$

सूक्ष्म वनस्थितिकायिक पर्याप्त ध्रुवराशि →

$\frac{\text{सूक्ष्म वनस्थितिकायिक ध्रुवराशि}}{\left(\frac{\text{सूक्ष्म वनस्थितिकायिक जीवराशि}}{\text{सूक्ष्म वन. अपर्याप्त जीवराशि}} - 9 \right)}$ + सूक्ष्म वन. ध्रुवराशि = सूक्ष्म वन. पर्याप्त ध्रुवराशि

$$\frac{320}{93} \div \left(\frac{98308}{2088} - 9 \right) + \frac{320}{93}$$

$$= \frac{320}{93} \div 10 = \frac{320}{93 \times 10} + \frac{320}{93} = \frac{320 + 320 \times 10}{93} =$$

$$\frac{320 \times 11}{93} = \frac{24E0}{93} = \text{सूक्ष्म वनस्थितिकायिक पर्याप्त ध्रुवराशि}$$

बादर वनस्थितिकायिक पर्याप्त ध्रुवराशि →

$\frac{\text{बादर वन. जीवराशि}}{\text{बादर वन. पर्याप्त जीवराशि}} \times \text{बादर वन. ध्रुवराशि} = \text{बादर वन. पर्याप्त ध्रुवराशि}$

बादर वनस्पति जीवराशि ४०९६ और बादर वनस्पति पर्याप्त जीवराशि १०२४ मानी

$$\frac{4096}{1024} \times \frac{9200}{93} = \frac{4 \times 9200}{93} = \frac{36800}{93}$$

बादर वनस्पति कायिक अपर्याप्त ध्रुवराशि →

$$\frac{\text{बा. वनस्पति ध्रुवराशि}}{\left(\frac{\text{बा. वनस्पति जीवराशि}}{\text{बा. वन. पर्याप्त जीवराशि}} - 9 \right)} + \text{बा. वन. ध्रुवराशि} = \text{बा. वन. अप. ध्रुवराशि}$$

$$93 \times \left(\frac{4096}{1024} - 9 \right) + \frac{9200}{93} = \frac{9200}{93 \times 9} + \frac{9200}{93} = \frac{9200 + 9200 \times 9}{93}$$

$$= \frac{9200 \times 8}{93} = \frac{36800}{93} \text{ बादर वन. अपर्याप्त ध्रुवराशि}$$

पृ. ३६०

त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी प्रमाण क्षेत्रप्रमाणसे त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि = जगत्प्रतर ÷ $\left(\frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{असंख्यात}} \right)^2$
अर्थात् जगत्प्रतर ÷ प्रतरांगुलका असंख्यातवा भाग
त्रसकायिक पर्याप्त मिथ्यादृष्टि ⇒ जगत्प्रतर ÷ $\left(\frac{\text{सूच्यंगुल}}{\text{संख्यात}} \right)^2 = \text{जगत्प्रतर} ÷$
प्रतरांगुलका संख्यातवा भाग

पृ. ३६३

कायमार्गणामे भागाभाग

सर्व जीवराशि	संख्यात बहुभागप्रमाण	सूक्ष्म निगोद पर्याप्त जीव
शेष एकभाग	असंख्यात "	सूक्ष्म " अपर्याप्त "
" "	" "	बादर " " "
" "	अनंत बहुभागप्रमाण	" " पर्याप्त जीव
" "	" "	अकायिक जीव
" "	" "	

शेष एकभाग - असंख्यात लोकप्रमाण राशि = शेष राशि
असंख्यात लोकप्रमाण राशिको मिलाव रखना।

शेष राशि = एकभाग जलवा रचना $\frac{4000}{4} = 1000$ एकभाग
असंख्यात लोक 4000 बहुभाग

शेष राशि \times असंख्यात लोक $- 9 =$ बहुभाग राशि बहुभागके चार समान भाग करना।

सूक्ष्म वायुकायिक	सूक्ष्म अणुकायिक	सूक्ष्म पृथ्वी	सूक्ष्म तेजस्कायिक
<u>बहुभाग</u>	<u>बहुभाग</u>	<u>बहुभाग</u>	<u>बहुभाग</u>
8	8	8	8

शेष एकभागका	एकभागके एकभागका	एकभागके एकभागके	शेष एकभाग
बहुभाग	बहुभाग	एकभागके एकभागके बहुभाग	

बहुभागका समान भाग	9000	9000	9000	9000
एकभागके बहुभाग	100	980	32	1
	<u>9100</u>	<u>9980</u>	<u>9032</u>	<u>9001</u>

शेष एकभाग असंख्यात लोक = एकभाग $\frac{9000}{4} = 2250$ एकभाग 100 बहुभाग

शेष एकभाग असंख्यात लोक = एकभाग $\frac{200}{4} = 50$ एकभाग 980 बहुभाग

शेष एकभाग असंख्यात लोक = एकभाग $\frac{160}{4} = 40$ एकभाग 32 बहुभाग

अपनी राशि संख्यात = एकभाग प्रमाण अपर्याप्त, बहुभाग प्रमाण पर्याप्त

$\frac{9100}{8} = 1137.5$ एकभाग अपर्याप्त सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त राशि $1137.5 \times 3 = 3412.5$ बहुभाग सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त राशि

$\frac{9980}{8} = 1247.5$ एकभाग सूक्ष्म अणुकायिक अपर्याप्त जीव $1247.5 \times 3 = 3742.5$ बहुभाग प्रमाण सूक्ष्म अणुकायिक पर्याप्त जीव

इसी प्रकार सू. पृथ्वी और तेजस्कायिकका समझना।

पृथक् स्थापित असंख्यात लोक	असंख्यात बहुभाग प्रमाण	बादर वायु. अपर्याप्त जीव
शेष एकभाग	॥ ॥	॥ अपृ. ॥ ॥
॥ ॥	॥ ॥	॥ पृथ्वी ॥ ॥
॥ ॥	॥ ॥	॥ निगोद प्रतिष्ठित वन. अपर्याप्त जीव
॥ ॥	॥ ॥	बादर वन. अपर्याप्त जीव
॥ ॥	॥ ॥	बादर तेज. ॥ ॥
॥ ॥	॥ ॥	बादर वायु. पर्याप्त ॥ ॥
॥ ॥	॥ ॥	॥ अपृ. ॥ ॥
॥ ॥	॥ ॥	॥ पृथ्वी ॥ ॥
॥ ॥	॥ ॥	बा. निगो. प्रति ॥ ॥
॥ ॥	॥ ॥	॥ वन. प्रत्येक. ॥ ॥
॥ ॥	॥ ॥	त्रसकायिक अपर्याप्त
॥ ॥	॥ ॥	त्रसकायिक प. मिथ्यादृष्टि
॥ ॥	॥ ॥	॥ असंयत सम्यग्दृष्टि
॥ ॥	संख्यात ॥	॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि
॥ ॥	असंख्यात ॥	॥ सासादन सम्य-
॥ ॥	॥ ॥	॥ संयतासंयत
॥ ॥	॥ ॥	बादर तेजस्का. पर्याप्त जीव
॥ ॥	संख्यात ॥	प्रमत्तसंयत
॥ ॥	॥ ॥	अप्रमत्तसंयत
॥ ॥	॥ ॥	सयोगकेवली
॥ ॥	॥ ॥	चार क्षपक
॥ ॥	॥ ॥	चार उपद्रामक
॥ ॥	॥ ॥	अयोगकेवली

पृ. 385 स्वस्थान अल्पबहुत्व - बादर पृथ्वीकायिक का स्वस्थान अल्पबहुत्व

अल्पबहुत्व स्थान	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण
1) बादर पृथ्वी. पर्याप्त जीव	स्तोक	
2) ॥ ॥ अपर्याप्त ॥	असंख्यातगुणो	असंख्यात लोक
3) ॥ ॥ जीव	विशेष अधिक	

सूक्ष्म पृथ्वीकायिक स्वस्थान अल्पबहुत्व →

अल्पबहुत्व स्थान	अल्पबहुत्व	गुणकारका प्रमाण
1) सूक्ष्म पृथ्वी. अपर्याप्त जीव	स्तोक	
2) " " पर्याप्त "	असंख्यातगुणे	संख्यात समय
3) " " जीव	विशेष अधिक	सू. पृथ्वी. अपर्याप्त जीवप्रमाण

बादर वनस्पतिकायिक स्वस्थान अल्पबहुत्व

1) बादर वनस्पति. पर्याप्त जीव	स्तोक	
2) " " अपर्याप्त "	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
3) " " जीव	विशेष अधिक	

सूक्ष्म वनस्पतिकायिक स्वस्थान अल्पबहुत्व -

1) सूक्ष्म वनस्पति. अप. जीव	स्तोक	
2) " " प. "	असंख्यातगुणे	संख्यात समय
3) " " जीव	विशेष अधिक	

त्रसकायिक स्वस्थान अल्पबहुत्व -

1) त्रसकायिक अवहारकाल	स्तोक	
2) " " विलुंभसूची	असंख्यातगुणे	
3) जगत्मेणी	असंख्यातगुणे	अपना अवहारकाल
4) त्रसकायिक द्रव्य	असंख्यातगुणे	अपनी विलुंभसूची
5) जगत्प्रतर	"	अपना अवहारकाल
6) लोड	"	जगत्मेणी

परस्थान अल्पबहुत्व -

प्रथम विकल्प 1) बादर पृथिवी. जीव	स्तोक	
2) सूक्ष्म " "	असंख्यातगुणे	असंख्यातलोक

दूसरा
विकल्प

पूर्वोक्त 2 अल्पबहुत्व स्थान

3) पृथिवीकायिक जीव विशेष अधिक

तीसरा विकल्प	1) वादर पृथिवी ^{पर्याप्त} जीव	स्तोक	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोड
	2) " " अप.			
	3) सूक्ष्म " अप.			
	4) " " पर्याप्त		संख्यातगुणे	

चौथा

पूर्वोक्त 4 अल्पबहुत्व स्थान

विकल्प 5) पृथिवी जीव विशेष अधिक

पांचवा विकल्प	1) वादर पृथिवी प. जीव	स्तोक		
	2) " " अप. "	असंख्यातगुणे		असंख्यात लोड
	3) " " जीव	विशेष अधिक		
	4) सूक्ष्म " अप. "	असंख्यातगुणे		असंख्यात लोड
	5) " " प. "	संख्यातगुणे		संख्यात समय
	6) " " जीव	विशेष अधिक		

छठा

पूर्वोक्त 6 अल्पबहुत्व स्थान

विकल्प 7) पृथिवीकायिक जीव विशेष अधिक

सातवा विकल्प	1) वादर पृथिवी प. जीव	स्तोक		
	2) " " अप. "	असंख्यातगुणे		असंख्यात लोड
	3) " " जीव	विशेष अधिक		
	4) सूक्ष्म " अप. "	असंख्यातगुणे		असंख्यात लोड
	5) पृथिवी ^{अपर्याप्त} जीव	विशेष अधिक		वादर पृथिवी अपर्याप्त
	6) सूक्ष्म पृथिवी प. जीव	संख्यातगुणे		संख्यात समय
	7) पृथिवी प. जीव	विशेष अधिक		वादर पृथिवी पर्याप्त
	8) सूक्ष्म पृथिवी जीव	"		सू. पृ. अप. - वा. पृ. पर्याप्त

आठवा

पूर्वोक्त 1 अल्पबहुत्व स्थान

विकल्प 9) पृथिवीकायिक जीव विशेष अधिक

अंतिम १) बादर पृथिवी. प. अवहारकाल	स्तोत्र	
विकल्प २) " " " विष्कुंभसूची	असंख्यातगुणी	१) विष्कुंभसूची - असंख्यात २) जगत्प्रेणी - अवहारकाल = जगत्प्रेणी असंख्यात प्र. सू.
३) जगत्प्रेणी	असंख्यातगुणी	अपना अवहारकाल
४) वा. पृथिवी. प. द्रव्य	असंख्यातगुणा	विष्कुंभसूची
५) जगत्पतर	"	अपना अवहारकाल
६) लोक	"	जगत्प्रेणी
७) वा. पृथिवी. अपयत्न द्रव्य	"	असंख्यात लोक
८) " " जीव	विशेष ऋद्धि	
९) सूक्ष्म " अप. जीव	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
१०) पृथिवी अप. जीव	विशेष ऋद्धि	
११) सूक्ष्म पृथिवी. प.	संख्यातगुणे	संख्यात समय
१२) पृथिवी. प. जीव	विशेष ऋद्धि	
१३) सूक्ष्म पृथिवी. "	"	
१४) पृथिवी. जीव.	"	

इसीप्रकार अपकायिक, वायुकयिक, तेजस्कयिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्व जानना चाहिए।

वनस्पतिकायिक जीवोंके परस्थान अल्पबहुत्व -

पहिला १) बादर वनस्पति. जीव	स्तोत्र	
विकल्प २) सूक्ष्म " "	असंख्यातगुणे	
दूसरा पूर्वोक्त २ अल्पबहुत्व स्थान		
विकल्प ३) वनस्पति. जीव	विशेष ऋद्धि	
तीसरा १) बादर वनस्पति. प. जीव	स्तोत्र	
विकल्प २) " " अप. "	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
३) सूक्ष्म " अप. "	"	"
४) " " प. "	संख्यातगुणे	संख्यात समय.

चौथा पूर्वोक्त ४ अल्पबहुत्व स्थान
विकल्प १) वनस्पति. जीव विशेष अधिदु

पांचवा १) बादर वनस्पति प. जीव	स्तोत्र	
विकल्प २) बादर. वनस्पति. अप. जीव	असंख्यातगुणे	
३) " " जीव	विशेष अधिदु	बा. वनस्पति. पर्याप्तौडे प्रमाण
४) सूक्ष्म " अप. जीव	असंख्यातगुणे	असंख्यात. नोदु
५) " " प. "	संख्यातगुणे	
६) " " जीव "	विशेष अधिदु	सू. वनस्पति अप. के प्रमाण

छठा पूर्वोक्त ६ अल्पबहुत्व स्थान
विकल्प ७) वनस्पति. जीव. विशेष अधिदु

सातवा १) बादर वनस्पति. प. जीव	स्तोत्र	
विकल्प २) " " अप. "	असंख्यातगुणे	
३) " " जीव	विशेष अधिदु	
४) सूक्ष्म " अप. "	असंख्यातगुणे	
५) वनस्पति. अप. "	विशेष अधिदु	बा. वनस्पति अप. के प्रमाण
६) सूक्ष्म वनस्पति प. "	संख्यातगुणे	
७) वनस्पति. प. "	विशेष अधिदु	बा. वनस्पति प. के प्रमाण
८) सूक्ष्म वनस्पति "	"	सू. वनस्पति अप. - बा. वन. प. ^{१५६५}

आठवा पूर्वोक्त ८ अल्पबहुत्व स्थान
विकल्प ९) वनस्पति. जीव विशेष अधिदु

नोंवा १) बादर निगोद प. जीव स्तोत्र
विकल्प २) " वनस्पति प. " विशेष अधिदु बा. वनस्पति. प्रत्येदु शरीर पराप्ति
३) पूर्वोक्त ७ वे विकल्पके आठ स्थान

दसवा १) बा. निगोद प. जीव स्तोत्र
विकल्प २) " वनस्पति " " विशेष अधिदु



3) बा. निगोद अप. जीव असंख्यातगुणे असंख्यात लोड
 4) " वनस्पति " " विशेष अधिक बा. वनस्पति प्रत्येक शरीर अपर्याप्त अर्थात् असंख्यात लोड

ऊपर 6 वे विकल्पके इसके पूर्वोक्त अन्तिम स्थान लेना

आरंभवा विकल्प	वा. निगोद पर्याप्त जीव	स्तोक	
2)	बा. वनस्पति. " "	अविशेष अधिक	
3)	" निगोद अपर्याप्त " "	असंख्यातगुणे	
4)	" वनस्पति " "	विशेष अधिक	
5)	" निगोद जीव	" "	बा. निगोद पर्याप्त - बा. वन. प्र. श. अपर्याप्त
6)	" वनस्पति जीव	" "	बादर वनस्पति प्र. शरीर जीवोंका प्रमाण
6-92)	इसके ऊपर 6 स्थान पूर्वोक्त लेना		

आरंभवा विकल्प	बादर निगोद पर्याप्त जीव	स्तोक	
2)	" वनस्पति " "	विशेष अधिक	
3)	" निगोद अपर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	
4)	" वनस्पति " "	विशेष अधिक	
5)	" निगोद जीव	" "	
6)	" वनस्पति " "	" "	
7)	सूक्ष्म " अपर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	
8)	निगोद अपर्याप्त जीव	विशेष अधिक	
9)	वनस्पति " "	" "	असंख्यात लोकप्रमाण प्रत्येक शरीर जीव
90-93)	इसके ऊपर 6 वे विकल्पके अन्तिम 8 स्थान लेना		

आरंभवा विकल्प	आरंभवे विकल्पके प्रथम		
90	8 स्थान लेना		
91)	सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव	संख्यातगुणे	
92)	निगोद पर्याप्त जीव	विशेष अधिक	बादर निगोद पर्याप्त जीवप्रमाण
93)	वनस्पति " "	" "	प्रत्येक शरीर पर्याप्त "

93) सूक्ष्म वनस्पति. जीव	विशेष अधिक	
94) वनस्पतिकायिक "	" "	बादर वनस्पति जीवप्रमाण

चौदहवा 9 प्रथम तेरा स्थान
विकल्प 3) तेरहवे विकल्पके लेना

94) निगोद जीव	विशेष अधिक	बादर निगोद जीवप्रमाण
95) वनस्पतिकायिक "	" "	प्रत्येक शरीर वन. जीवप्रमाण

पन्द्रहवा 9) बादर वनस्पति. प्रत्येक पर्याप्त जीव	स्तोक	
विकल्प 2) " निगोद " "	अनंतगुणा	बा. नि. प. जीव ÷ बा. वन. प्र. प. जीव
3-96) इसके ऊपर चौदहवे विकल्पके अन्तिम चौदह स्थान लेना।		

सोलहवा 9) बादर वनस्पति प्र. पर्याप्त जीव	स्तोक	
विकल्प 2) " निगोद प्रति: " "	असंख्यातगुणा	आवली ÷ असंख्यात
3-97) इसके ऊपर 95 स्थान पन्द्रहवे विकल्पके अन्तिम 95 स्थानवत्		

सत्रहवा 9) बादर वन. प्रत्येक श. पर्याप्त	स्तोक	
विकल्प 2) " निगोद प्रति. " "	असंख्यातगुणा	
3) " वनस्पति प्र. श. अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक = प्रतिभाग प्रमाण
4) बादर " " जीव	विशेष अधिक	जगत्प्रतिर ÷ असंख्यात
5) बादर निगोद पर्याप्त "	अनन्तगुणे	प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवप्रमाण
6-98) इसके ऊपर चौदह स्थान पूर्ववत्		स्वराक्षि ÷ बादर वन. प्र. श. जीव

अठारहवा 9) बादर वन. प्रत्येक शरीर पर्याप्त	स्तोक	
2) बादर निगोद प्रति. पर्याप्त	असंख्यातगुणे	
3) " वन. प्रत्येक श. अपर्याप्त	"	
4) बादर " " जीव	विशेष अधिक	
5) " निगोद प्रति. अपर्याप्त	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
6-20) इसके ऊपर पन्द्रह स्थान पूर्ववत् लेना		

उष्णीसवा विकल्प)	बादर वनस्पति प्रत्येक श. पर्याप्त	स्तोक	
2)	निगोद प्रति. पर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	
3)	वनस्पति प्र.श. अपर्याप्त	"	
4)	" " " जीव	विशेष अधिक	
5)	निगोद प्रति. अपर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	
6)	" प्रतिष्ठित जीव	विशेष अधिक	बा. निगोद प्रति. पर्याप्त जीव प्रमाण
7-2)	इसके उपर पन्द्रहस्थान पूर्ववत्		

1)	बादर. निगोद प्रति. पर्याप्त अवहारकाल	स्तोक	
2)	" वन. प्रत्येक श. " "	असंख्यातगुणा	आवली = असंख्यात
3)	" " " " " विष्कम्भभूयी	असंख्यातगुणी	
4)	बादर निगोद प्रति. पर्याप्त "	"	" "
5)	जगत्प्रेणी	"	
6)	बादर वन. प्रत्येक श. पर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	
7)	" निगोद प्रति. " "	"	" "
8)	जगत्प्रतर	असंख्यातगुणा	बा. निगोद. प्रति. प. अवहार
9)	लोक	असंख्यातगुणा	जगत्प्रेणी
10)	बादर. वन. प्रत्येक श. अपर्याप्त जीव	"	असंख्यात लोक
11)	" " " " जीव	विशेष अधिक	बा. वन. प्र. श. पर्याप्त जीव प्रमाण
12)	" निगोद प्रति अपर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
13)	" " " " जीव	विशेष अधिक	बा. निगोद प्रति. पर्याप्त जीव प्रमाण
14)	" " पर्याप्त जीव	अनन्तगुणे	स्वराशि = बा. नि. प्रति जीव
15)	बादर वन. पर्याप्त जीव	विशेष अधिक	बा. वन. प्रत्येक श. पर्याप्त जीव प्रमाण
16)	बादर निगोद अपर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
17)	बादर वनस्पति " "	विशेष अधिक	बा. वन. प्रत्येक श. अपर्याप्त प्रमाण
18)	बादर निगोद जीव	" "	बा. नि. पर्याप्त - प्रत्येक श. अपर्याप्त
19)	" वनस्पति जीव	" "	बा. वन. प्रत्येक शरीर जीव प्रमाण
20)	सूक्ष्म वन. अपर्याप्त जीव	असंख्यातगुणे	असंख्यात लोक
21)	निगोद अपर्याप्त जीव	विशेष अधिक	बादर निगोद अपर्याप्त जीव
22)	वनस्पति. अपर्याप्त जीव	" "	बा. वन. प्रत्येक श. अपर्याप्त जीव
23)	सूक्ष्म वनस्पति. पर्याप्त जीव	संख्यातगुणे	संख्यात समर्थ

28) निगोद पर्याप्त जीव	विशेष अधिक	बादर निगोद पर्याप्त जीवप्रमाण
29) वनस्पति " "	" "	बादर वन. प्रत्येक शरीर पर्याप्त
26) सूक्ष्म वनस्पति जीव	" "	सूक्ष्म वन. अपर्याप्त - बा. वन. पर्याप्त
27) निगोद जीव	" "	बादर निगोद जीवप्रमाण
28) वनस्पति जीव	" "	बादर वन. प्रत्येक शरीर जीव

सर्व परस्थान

1) अयोगकेवली जीव	2-लोक	
2) चार उपशामक अयोगकेवली	संख्यात गुणे	
3) चार अपक *	संख्यातगुणे	
4) सयोगकेवली जीव	संख्यातगुणे	
5) अप्रमत्त संयत जीव	संख्यातगुणे	
6) प्रमत्त संयत	संख्यात गुणे	
7) बादर वायु. पर्याप्त अवहारकाल	अज्ञात	
8) असंयत सभ्यगृष्टि अवहार काल	असंख्यातगुणे	
9) सभ्यगृष्ट्यादृष्टि अवहारकाल	अर्थ "	
10) साक्षात् सभ्यगृष्टि अवहार काल	संख्यातगुणे	
11) संयतासंयत अवहार काल	असंख्यातगुणे	
12) बादर तेज. पर्याप्त जीव	"	
13) संयतासंयत प्रत्य	"	
14) पल्योपम लोक	पूर्ववत्	
15) बादर अप्रकायिक जीव अवहारकाल	असंख्यातगुणे	
16) बादर पृथिवी. पर्याप्त जीव "	"	आवली : असंख्यात
17) बादर निगोद प्रति. प्रत्येक जीव "	"	आवली : असंख्यात
18) बादर वन. प्रत्येक शरीर पर्याप्त "	"	आवली : असंख्यात
19) त्रसफायिक मिथ्यादृष्टि "	"	पल्योपम : असंख्यात
20) " अपर्याप्त जीव "	विशेष अधिक	मिथ्यादृष्टि अवहारकाल : आवली : असंख्यात - एक भाग लब्ध
21) त्रसफायिक पर्याप्त जीव "	असंख्यातगुणे	आवली : असंख्यात : संख्यात
22) त्रसफायिक पर्याप्त विष्टुंभसूची	"	

23) त्रसकायिक अपयज्ञि विष्टंभसूची	असंख्यातगुणी
24) " विष्टंभसूची	विशेष अधिक
25) वादर वन. प्रत्येक शरीर पयज्ञि विष्टंभसूची	असंख्यातगुणी
26) " निगोद प्रतिष्ठित " "	"
27) " पृथिवीकायिक पयज्ञि " "	"
28) वादर त्रसकायिक पयज्ञि " "	"
29) वादर वायुकायिक " "	"
30) जगत्प्रेणी	संख्यातगुणी
31) त्रसकायिक पयज्ञि द्रव्य	असंख्यातगुणी
32) " अपयज्ञि " "	"
33) त्रसकायिक द्रव्य	विशेष अधिक
34) वादर वन. प्रत्येक शरीर पयज्ञि	असंख्यातगुणी
35) " निगोद प्रतिष्ठित पयज्ञि	"
36) " पृथिवीकायिक पयज्ञि द्रव्य	"
37) " त्रसकायिक " "	"
38) जगत्प्रतर	"
39) वादर वायुकायिक पयज्ञि द्रव्य	"
40) लोक	संख्यातगुणी
41) वादर तेज. अपयज्ञि द्रव्य	असंख्यातगुणी
42) " " द्रव्य	विशेष अधिक
43) " वन. प्रत्येक शरीर अपयज्ञि द्रव्य	असंख्यातगुणी
44) " वन. " " " जीव द्रव्य	विशेष अधिक
45) " निगोद प्रतिष्ठित अपयज्ञि द्रव्य	असंख्यातगुणी
46) " निगोद प्रतिष्ठित जीव	विशेष अधिक
47) " पृथिवी. अपयज्ञि	असंख्यातगुणी
48) " " द्रव्य	विशेष अधिक
49) " त्रसकायिक अपयज्ञि द्रव्य	असंख्यातगुणी
50) " " " " " "	विशेष अधिक
51) " वायुकायिक अपयज्ञि " "	असंख्यातगुणी
52) " " " " " "	विशेष अधिक
53) सूक्ष्म तेजस्कायिक अपयज्ञि	असंख्यातगुणी
54) तेजस्कायिक अपयज्ञि द्रव्य	विशेष अधिक

५५) सूक्ष्म पृथिवीकायिक अपयष्टि प्रत्य	विशेष अधिक
५६) पृथिवीकायिक अपयष्टि प्रत्य	विशेष अधिक
५७) सूक्ष्म अल्कायिक अपयष्टि प्रत्य	विशेष अधिक
५८) अल्कायिक अपयष्टि प्रत्य	" "
५९) सूक्ष्म वायुकायिक अपयष्टि प्रत्य	" "
६०) वायुकायिक अपयष्टि प्रत्य	" "
६१) सूक्ष्म तेजस्कामिक पयष्टि जीव	असंख्यातगुणे
६२) तेजस्कामिक पयष्टि जीव	विशेष अधिक
६३) सूक्ष्म पृथिवीकायिक पयष्टि जीव	" "
६४) पृथिवीकायिक जीव	" "
६५) सूक्ष्म अल्कायिक पयष्टि जीव	" "
६६) अल्कायिक पयष्टि जीव	" "
६७) सूक्ष्म वायुकायिक पयष्टि जीव	" "
६८) वायुकायिक पयष्टि जीव	" "
६९) सूक्ष्म तेजस्कामिक	" "
७०) तेजस्कामिक जीव	" "
७१) सूक्ष्म पृथिवीकायिक	" "
७२) पृथिवीकायिक जीव	" "
७३) सूक्ष्म अल्कायिक	" "
७४) अल्कायिक जीव	" "
७५) सूक्ष्म वायुकायिक जीव	" "
७६) वायुकायिक जीव	" "
७७) अल्कायिक जीव	अनन्तगुणे
७८) वादर निगोद पयष्टि जीव	"
७९) वादर वनरूपति पयष्टि जीव	विशेष अधिक
८०) वादर निगोद अपयष्टि जीव	असंख्यातगुणा
८१) वादर वनरूपति अपयष्टि जीव	विशेष अधिक
८२) वादर निगोद जीव	" "
८३) " वनरूपतिकायिक जीव	" "
८४) सूक्ष्म वनरूपतिकायिक अपयष्टि जीव	असंख्यातगुणा
८५) निगोद अपयष्टि जीव	विशेष अधिक
८६) वनरूपति अपयष्टि जीव	" "

८७) सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त जीव	संख्यातगुणों
८८) निगोद पर्याप्त जीव	विशेष अधिक
८९) वनस्पतिकार्यिक पर्याप्त जीव	" "
९०) सूक्ष्म वनस्पति जीव	" "
९१) निगोद जीव	" "
९२) वनस्पति कार्यिक जीव	" "

पृ. 326

योग मार्गण

पाँच मनोयोगी, तीन वचनयोगी (अनुभव और सामान्य छोड़कर) मिथ्यादृष्टि जीव - द्रव्यप्रमाण से देवः संख्यात सत्यमनोयोगका काल ४ समय माना, संख्यातका प्रमाण ४ माना योगकाल के आक्रम से अल्पबहुत्व -

योगका नाम	कालका प्रमाण
सत्य मनोयोग	स्तोक ४
असत्य "	संख्यातगुणा 96 = ४x४
उभय "	" ६४ = १६x४
अनुभव "	" 2५६ = ६४x४
मनोयोग	विशेष अधिक 3४0 = चारों का जोड़
सत्य वचनयोग	संख्यातगुणा 93६0 = 3४0x४
असत्य "	" ५४४0 = 93६0x४
उभय "	" 29७६0 = ५४४0x४
अनुभव "	" ८७0४0 = 29७६0x४
वचनयोग	विशेष अधिक 99५६00 = सबका जोड़
कार्ययोग	संख्यातगुणा ४६2४00 = 99५६00x४

वचनयोगी, अनुभव वचनयोगी मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणसे असंख्यात, कालप्रमाणसे असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी उलसर्पिणीप्रमाण, क्षेत्र " जगत्प्रतरः = प्रतरांगुल का संख्यातवा भाग.

अनुभव वचनयोगियों का प्रमाण -

$$\frac{\text{द्विन्द्रिय} + \text{त्रीन्द्रिय} + \text{चतुरिन्द्रिय} + \text{असंख्यी पंचन्द्रिय}}{\text{वचनयोग काल} + \text{काययोगकाल}} = \text{एकभाग}$$

$$\text{अपर्युक्त एकभाग} \times \text{वचनयोग काल} + \text{पंचन्द्रिय अनुभव वचनयोगी} = \text{अनुभव वचनयोगी जीवराशि}$$

$$\text{अनुभव वचन योगी} + \text{शेष सत्यादि वचन योगी जीवराशि} = \text{वचनयोगी जीवराशि}$$

कालके अल्पबहुत्वके बलसे राशियोंके अवहारकाल

योगका नाम	अवहारकालका प्रमाण
1) वचनयोगियोंका अवहारकाल	$(\text{सूच्यंगुल} \div \text{संख्यात})^2$
2) अनुभव " "	वचनयोगी अवहारकाल + (वचनयोगी अवहार \div संख्यात)
3) वैक्रियिक काययोगी " "	अनुभव वचन योगी अव. \times संख्यात
4) उभय वचन " "	वैक्रि. काययोगी अवहार \times संख्यात
5) असत्य " " "	उभय वचन " " \times "
6) सत्य " " "	असत्य " " " \times "
7) मनोयोगी-अवहारकाल	सत्य " " " \times संख्यात
8) अनुभव मनोयोगी-अवहारकाल	मनोयोगी-अवहारकाल + (मनोयोगी अव. \div संख्यात)
9) उभय " "	अनुभव मनो योगी अवहार \times संख्यात
10) असत्य " "	उभय " " " \times "
11) सत्य " "	असत्य " " " \times "
12) वैक्रियिक मिश्र काययोगी "	सत्य " " " \times "
13) काययोगी असंयत सम्य. अवहार	असंयत सम्य. अवहारकाल + (असंयत अवहार \div संख्यात)
14) वैक्रियिक काय. " " "	काययोगी " " + काययोगी असंयत अवहार \div असंख्यात
15) वचनयोगी " " "	वैक्रियिक काय. असंयत सम्य. अवहार \times संख्यात
16) अनुभव वचन योगी " " "	वचनयोगी असंयत सम्य. अवहार \times संख्यात
17) उभय " " " "	अनुभव वचन योगी " " " \times "
18) असत्य " " " "	उभय " " " " \times "
19) सत्य " " " "	असत्य " " " " \times "
20) मनोयोगी अवहारकाल	सत्य " " " " \times "

अवहार कालका नाम	अवहारकालका प्रमाण
९) अनुभव मनोयोगी अवहारकाल	मनोयोगी अवहार + (मनोयोगी अवहार ÷ संख्यात)
१०) उभय " "	अनुभव मनोयोगी अवहार X संख्यात
११) असत्य " "	उभय " " X "
१२) सत्य " "	असत्य " " X "
१३) औदा. काय. असंयत " "	सत्य मनो. अवहारकाल X (आवली ÷ असंख्यात)
१४) वैक्रि. काय. " "	औदा. काय असंयत अवहार X (आवली ÷ असंख्यात)
१५) कर्मण काय. " "	वैक्रि. मिश्र. काय असंयत अव. X (" ")
१६-२८) इसी प्रकार सम्यग्भिश्चादृष्टियोंके अवहार काल जानना	
१६) काययोगी सासादन सम्य. अवहार	ओध सासा. सम्य. अवहार + सासा. सम्य. अवहार संख्यात
१७) वैक्रि. काय. " " "	काययोगी " " " + काययोगी सासा. अवहार आवली ÷ असंख्यात
१८) वचनयोगी " " "	वैक्रि. काय " " " X संख्यात
१९) अनुभव वचन सासा. सम्य. अवहार	वचनयोगी सासा. सम्य. अवहार + वचनयो. सा. अवहार संख्यात
२०) उभय वचन यो. " "	अनुभव वचन यो. सासा. सम्य. अवहार X संख्यात
२१) असत्य " " "	उभय " " " " " X "
२२) सत्य " " "	असत्य " " " " " X "
२३) मनोयोगी " " "	सत्य " " " " " X "
२४) अनुभव मनो यो. " " "	मनो योगी सासा. सम्य. अवहार + मनोयोगी सासा. अव. संख्यात
२५) उभय " " " " "	अनुभव मनो " " " " X संख्यात
२६) असत्य " " " " "	उभय " " " " " X "
२७) सत्य " " " " "	असत्य " " " " " X "
२८) औदारिक काययोगी सासा. अवहार	सत्य " " " " " X आवली ÷ असंख्यात
२९) औदा. मिश्र " " "	औदा. काय. " " " " X " "
३०) वैक्रि. मिश्र " " "	औदा. मिश्र काय. सासा. अवहार X " "
३१) कर्मण काययोगी " " "	वैक्रि. " " " " " X " "
इसी प्रकार संयतासंयत वचनयोगी मनोयोगियोंका अवहारकाल जानना	
३२) औदा. काययोगी संयतासंयत अवहार	ओध संयतासंयत अवहारकाल + संयतासंयत अवहार संख्यात

33) वचनयोगी संयतासंयत अवहार औदा. काययोगी संयतासंयत अवहार x संख्यात
34) शेष अवहार काल पूर्ववत्

पृ. 354 ध्रुवराशिकी विधिका कथन - 1) काययोगी ध्रुवराशि प्रमाण -

$$\text{सर्व जीवराशि} + \frac{\text{मनोयोगी} + \text{वचनयोगी} + \text{सिद्धराशि} + \text{अयोगिशशि} + \text{पूर्वोक्त चार राशि}^2}{\text{काययोगी राशि}} =$$

$$98 + 3 + \frac{3^2}{93} = \frac{(98 \times 93) + (3 \times 93) + 9}{93} = \frac{2072 + 279 + 9}{93} = \frac{2360}{93}$$

औदारिक काययोगी ध्रुवराशि →

$$\text{काययोगी ध्रुवराशि} + (\text{काययोगी ध्रुवराशि} \div \text{संख्यात}) = \text{औदा. काययोगी ध्रुवराशि}$$

$$\frac{2360}{93} + \frac{2360}{93 \times 3} = \frac{(2360 \times 3) + 2360}{30} = \frac{2360 \times 4}{30} = \frac{9028}{30}$$

औदारिक मिश्र काययोगी ध्रुवराशि →

औदारिक काययोगी ध्रुवराशि x संख्यात = औदा. मिश्र काययोगी ध्रुवराशि

$$\frac{9028}{30} \times 3 = \frac{3002}{30} = \text{ " " " " }$$

पर्याप्त काल 92 समय, अपर्याप्त काल 8 समय, तिर्य्यराशि 2360 मानी

$$\frac{\text{तिर्य्य राशि}}{\text{पर्याप्तकाल} + \text{अपर्याप्त काल}} \times \text{अपर्याप्त काल} = \text{औदारिक मिश्र काययोगी राशि}$$

$$\frac{2360}{92+8} \times 8 = \frac{2360}{100} \times 8 = 188 \text{ औदा. मिश्र. राशि}$$

$$\frac{\text{तिर्य्य राशि}}{\text{पर्याप्त} + \text{अपर्याप्त काल}} \times \text{पर्याप्त काल} = \text{औदारिक काययोगी राशि}$$

$$\frac{2360}{92} \times 92 = 952 \text{ " " " "}$$

अपर्याप्त कालसे पर्याप्त काल संख्यातगुणा है इसलिए औदारिक मिश्र काययोगी जीवराशिसे औदारिक काययोगी जीवराशिसे संख्यातगुणी लीन है।

पृ. 354 वैक्रियिक काययोगी मिथ्याहृष्टि जीव = देव - (देव ÷ संख्यात)

$$\text{देव नास्कराशि} \times \frac{\text{अपना अपना काल}}{\text{क्षिणों योगोंका काल}} = \text{अपनी अपनी राशि}$$

मनोयोगी जीवराशि, वयनयोगी जीवराशि = देव ÷ संख्यात

वैक्रियिक काययोगी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल =

देव नारक मिथ्यादृष्टि राशि

मनोयोगी वयनयोगी + वैक्रि. मिश्र काययोगी + कर्मण काययोगी देव नारक मिथ्यादृष्टि राशि

= संख्यात लब्ध

देव नारक जोडरूप अवहारकाल + देव नारक जोडरूप अवहारकाल = वैक्रि. काय.
उपर्युक्त संख्यात लब्ध - 9 मिथ्या. अवहार

गुणस्थान प्रतिपन्न देव नारक राशि = संख्यात लब्ध

उपर्युक्त चार राशि

देव नारक जोडरूप अवहारकाल + देव नारक जोडरूप अवहारकाल = वैक्रि. काय.
संख्यात लब्ध - 9 गुणस्थान प्रतिपन्न अवहारकाल

वैक्रियिक मिश्रकायकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीव देवोंके संख्यातके भाग

प्रेराशिक राशि

प्रमाणराशि

फलराशि

इच्छाराशि

आवली = असंख्यात
उपक्रमण कालसे

देवराशि

आवली

वैक्रि. मिश्र
कालमे

कितने जीव

उपक्रमण कालसे

असंख्यात × संख्यात

फलराशि × इच्छाराशि
प्रमाणराशि

देवराशि × आवली
असंख्यात × संख्यात

देवराशि
संख्यात

आवली ÷ असंख्यात

वै. मि. का. मि
थ्यादृष्टि

वैक्रियिक मिश्र काययोगी सासादन अवहारकाल =

औदारिक मिश्र काययोगी सासादन अवहारकाल × (आवली ÷ असंख्यात) = वै. मि. सा. अव

वैक्रियिक मिश्र काययोगी असंयत सम्य. अवहारकाल =

औदारिक काययोगी असंयत अवहारकाल × (आवली ÷ असंख्यात) = वैक्रि. मिश्र. असंयत अवहारकाल

कर्मण काययोगी ध्रुवराशि = काययोगी ध्रुवराशि × अन्तर्मुहूर्त

प्रेराणिक

प्रमाण फलराशि इच्छा
संख्यात आवली सर्व जीवराशि उ समयमे कितने जीव ?

$$\frac{\text{सर्व जीवराशि} \times \text{उ समय}}{\text{संख्यात आवली}} =$$

कार्मण काययोगी असंयत सम्यग्दृष्टि अवतारकाल =

वैक्रि. मिश्र असंयत सम्यग्दृष्टि अवतारकाल \times (आवली \div असंख्यात)

कार्मण काययोगी सासादन सम्यग्दृष्टि अवतारकाल =

वैक्रि. मिश्र सासादन अवतारकाल \times (आवली \div असंख्यात)

योग भागिा मे भागाभाग

(1)	सर्वजीव राशि	संख्यात बहुभाग	औदारिक काययोगी जीवराशि
(2)	शेष एकभाग	असंख्यात बहुभाग	औदारिक मिश्र काययोगी "
(3)	शेष एकभाग	अनंत बहुभाग	कार्मण काययोगी मिथ्यादृष्टि संज्ञि
(4)	" "	" "	सिद्ध जीवराशि
(5)	" "	संख्यात "	अनुभयवचनयोगी मिथ्यादृष्टि "
(6)	" "	" "	वैक्रियिक काययोगी " "
(7)	" "	असंख्यात "	उभयवचनयोगी " "
(8)	" "	संख्यात "	मृषा वचनयोगी " "
(9)	" "	" "	सत्यवचनयोगी " "
(10)	" "	" "	अनुभय मनोयोगी " "
(11)	" "	संख्यात "	उभय मनोयोगी " "
(12)	" "	" "	मृषा मनोयोगी " "
(13)	" "	" "	सत्य मनोयोगी " "
(14)	" "	असंख्यात "	वैक्रियिक मिश्र काययोगी " "
(15)	" "	संख्यात "	वैक्रियिक काययोगी असंयत सम्यग्दृष्टि
(16)	" "	" "	अनुभय वचनयोगी " "
(17)	" "	" "	उभयवचनयोगी " "
(18)	" "	" "	मृषा वचनयोगी " "
(19)	" "	" "	सत्यवचनयोगी " "

(20)	शेष एक भाग	संख्यात बहुभाग	अनुभय मनोयोगी	असंयत सम्यग्दृष्टि
(21)	"	"	उभय मनोयोगी	"
(22)	"	"	मृषामनोयोगी	"
(23)	"	"	असंख्यात	"
(24)	"	"	संख्यात	"
(25)	"	"	संख्यात	"
(26)	"	"	अनुभय मनोयोगी	सत्यमनोयोगी
(27)	"	"	उभयवचनयोगी	सम्यग्मिथ्यादृष्टि
(28)	"	"	मृषावचनयोगी	"
(29)	"	"	सत्यवचनयोगी	"
(30)	"	"	अनुभय मनोयोगी	"
(31)	"	"	उभयमनोयोगी	"
(32)	"	"	मृषामनोयोगी	"
(33)	"	"	सत्यमनोयोगी	"
(34)	"	"	वैद्विषिक काययोगी	सासादन सम्यग्दृष्टि
(35)	"	"	अनुभय वचनयोगी	"
(36)	"	"	उभयवचनयोगी	"
(37)	"	"	मृषावचनयोगी	"
(38)	"	"	सत्यवचनयोगी	"
(39)	"	"	अनुभय मनोयोगी	"
(40)	"	"	उभय मनोयोगी	"
(41)	"	"	मृषामनोयोगी	"
(42)	"	"	असंख्यात	"
(43)	"	"	संख्यात	"
(44)	"	"	असंख्यात	"
(45)	"	"	संख्यात	"
(46)	"	"	"	अनुभयवचनयोगी
(47)	"	"	"	उभयवचनयोगी
(48)	"	"	"	मृषावचनयोगी
(49)	"	"	"	सत्यवचनयोगी
(50)	"	"	"	अनुभयमनोयोगी
(51)	"	"	"	उभयमनोयोगी
(52)	"	"	"	मृषामनोयोगी
(53)	"	"	"	सत्यमनोयोगी

(23)	शेष एक भाग	असंख्यातकुम्भ	वैक्रियिक मिश्रकाययोगी	असंयत	सम्यग्दृष्टि
(24)	"	"	कार्मिककाययोगी	"	"
(25)	"	"	औदारिक मिश्रकाययोगी	सासादन	सम्यग्दृष्टि
(26)	"	"	वैक्रियिक मिश्रकाययोगी	"	"
"	"	"	कार्मिककाययोगी	"	"

पररूपान में अल्पबहुत्व -

	अल्पबहुत्व स्थान	अल्पबहुत्व प्रमाण
(1)	अनुमय मनोयोगी चारों उपशामक	श्लोक
(2)	" " " अपक	संख्यातगुणा
(3)	" " सयोगीकेवली जीव	" "
(4)	" " अप्रमत्तसंयत "	" "
(5)	" " प्रमत्तसंयत "	" "
(6)	" " असंयतसम्यग्दृष्टि" अवधार काल	असंख्यातगुणा
(7)	" " सम्यग्मिथ्यादृष्टि " " "	" "
(8)	" " सासादन सम्यग्दृष्टि " " "	संख्यात गुणा
(9)	" " संयतासंयत " " "	असंख्यात गुणा
(10)	" " संयतासंयत प्रव्य	" "
(11)	" " सासादन सम्यग्दृष्टि प्रव्य	" "
(12)	" " सम्यग्मिथ्यादृष्टि "	संख्यातगुणा
(13)	" " असंयतसम्यग्दृष्टि	असंख्यातगुणा
(14)	पल्योपम	" "
(15)	अनुमयमनोयोगी मिथ्यादृष्टि अवधारकाल	" "
(16)	" " " विपरकर्मसूची	" "
(17)	जगत्क्षेत्री	" "
(18)	अनुमय मनोयोगी मिथ्यादृष्टि प्रव्य	" "
(19)	जगत्प्रतर	" "
	श्लोक	" "

इसी प्रकार शेष चार मनोयोगी और पाँच वचनयोगियों का पररूपान अल्पबहुत्व जानना चाहिए।

वैदिक मिश्रकाययोग में -	
असंयत सम्पद्दृष्टि अवधार काल	स्तोक
सासादन सम्पद्दृष्टि " "	असंख्यात गुण
" " वैदिक मिश्रकाययोगी अवधारकत	" "
असंयत सम्पद्दृष्टि " " " " " " " "	" "

नोट - मनोयोगियों के परस्परान अल्पबहुत्व के समान जानना चाहिए।

काययोगी

(1) काययोगी उपशामक	स्तोक
(2) " शपक	संख्यात गुण
इसी प्रकार पल्योपम तक ले जाना चाहिए।	
काययोगी मिश्रदृष्टि जीव	अनन्त गुण

नोट - इसी प्रकार औदारिक मिश्रकाययोगियों का भी कथन जानना चाहिए।

(1) औदारिक मिश्रकाययोगी सयोगिकेवली	स्तोक
(2) " " असंयत सम्पद्दृष्टि	संख्यात गुण
(3) सासादन सम्पद्दृष्टि अवधार काल	असंख्यात गुण
(4) " " " " " " " " " " " "	" "
(5) पल्योपम	" "
(6) औदारिक मिश्रकाययोगी मिश्रदृष्टि जीव	अनन्त गुण

नोट - आहारक काययोगी और आहारक मिश्रकाययोगी में स्वरूपान अथवा परस्परान अल्पबहुत्व नहीं पाया जाता है।

(1) कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली	स्तोक
(2) असंयत सम्पद्दृष्टि अवधार काल	असंख्यात गुण
(3) सासादन सम्पद्दृष्टि " "	" "

- (8) सासादन सम्पग्रहित् डव्य असंख्यातगुणा
- (2) असंयत सम्पग्रहित् " " " "
- (6) पल्थोपम " " " "
- (4) कार्मण कामयोगी मिष्ट्याहित् डव्य अनन्तगुणा

सर्वपररूपान् अल्पबहुत्व

- 9) आहारक मिश्रकाययोगी श्लोक
- 2) आहारक काययोगी संख्यातगुणा
- 3) अपमत्तसंयत " " " "
- 4) प्रमत्तसंयत " " " "
- 5) सभी का असंयतसम्पग्रहित् अवहारकाल असंख्यातगुणा
इसी प्रकार पल्थोपम तक ले जाना चाहिए।
- 6) वचनयोगी अवहारकाल असंख्यातगुणा
- 7) अनुभववचनयोगी " " विशेष अधिक
- 8) वैक्रियिक काययोगी " " संख्यातगुणा

नोट - इसी प्रकार 9 उभयवचनयोगी, 10 मृषावचनयोगी और 11 सत्यवचनयोगी जीवों के अवहारकाल क्रम से संख्यातगुणे हैं।

- 92 अनुभवमनोयोगी अवहारकाल विशेष अधिक
- 93 उभय " " " " संख्यातगुणा

नोट - इसी प्रकार 12 असत्यमनोयोगी, 14 सत्यमनोयोगी और 15 वैक्रियिक मिश्रकाययोगी का अवहारकाल उत्तरोत्तर संख्यातगुणा हैं।

- 96 वैक्रियिक मिश्रकाययोगी विपकंसूची [अवहारकाल से] असंख्यातगुणा
- 97 सत्यमनोयोगी " " संख्यातगुणा

नोट - इसी प्रकार 18 मृषामनोयोगी, 20 उभयमनोयोगी और 21 अनुभव मनोयोगी की विपकंसूची भी जानना चाहिए।

- 22 मनोयोगी विरुंभसूची [अनुभवमनोयोगी विरुंभसूची से] विशेष अधिक
23 सत्यवचनयोगी " संख्यातगुणी

नोट - इसी प्रकार ²⁸ मृषावचनयोगी, ²⁴ उभयवचनयोगी, ²⁸ वैद्विधिक काययोगी
और ²⁶ अनुभववचनयोगियों की विरुंभसूचियाँ भी उत्तरोत्तर
संख्यातगुणी हैं।

- 24 वचनयोगी विरुंभसूची [अनुभववचनयोगी विरुंभसूची से] विशेष अधिक
25 जगत्क्षेत्री असंख्यातगुणी
30 वैद्विधिक मिश्रकाययोगी 5व्य " "
39 सत्यमनोयोगी 5व्य संख्यातगुणी

नोट - इसी प्रकार ³² मृषामनोयोगी, ³³ उभयमनोयोगी, ³⁸ अनुभवमनोयोगी
का 5व्य यथाक्रम से संख्यातगुणी हैं।

- 34 मनोयोगी 5व्य [अनुभवमनोयोगी 5व्य से] विशेष अधिक
38 सत्यवचनयोगी 5व्य संख्यातगुणी

नोट - इसी प्रकार ³⁶ मृषावचनयोगी, ³⁶ उभयवचनयोगी, ³⁸ वैद्विधिक
काययोगी और ³⁶ अनुभववचनयोगी का 5व्य यथाक्रम
से संख्यातगुणी हैं।

- 41 ~~अनुभववचनयोगी~~ 5व्य [अनुभववचनयोगी 5व्य से] विशेष अधिक
42 जगत्पतर असंख्यातगुणी
43 लोक " "
44 भयोगी जीव अनन्तगुणी
45 कार्मणकाययोगी " "
46 औदारिक मिश्रकाययोगी असंख्यातगुणी
47 औदारिक काययोगी मिथ्यादृष्टि जीव संख्यातगुणी

इस प्रकार योगमार्गिता समाप्त हुई।

वेदमार्गणा संख्या प्ररूपणा

स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव द्रव्यप्रमाणसे देवियोंसे कुछ अधिक
देवी + मनुष्यिनी + तिर्य्य योनिनी = स्त्रीवेद जीवराशि

स्त्रीवेदी अवहारकाल =

$$\left(\frac{\text{देव अवहारकाल} + \text{देव अवहारकाल}}{32} \right) - \frac{\text{प्रतरांगुल संख्यात}}{32} = \text{स्त्रीवेदी अवहारकाल}$$

$$\text{जगत्प्रतर} \div \text{उपर्युक्त अवहारकाल} = \text{स्त्रीवेद जीवराशि}$$

$$\frac{9500 + 40}{32} - \frac{90}{32} = \frac{9540}{32} - \frac{90}{32} = \frac{9450}{32} = 295.3125$$

$$\frac{9540}{32} - \frac{90}{32} = \frac{9450}{32} = 295.3125$$

अवहारकालका नाम	अवहारकालका प्रमाण
1) स्त्रीवेदी असंयत सम्य. अवहारकाल	ओघ असंयत अवहार x (आवली ÷ असंख्यात)
2) " सम्यगमिथ्यादृष्टि "	स्त्रीवेदी 3) " x " ÷ "
3) " सासादन सम्य. "	" मिश्र अवहार x संख्यात
4) " संयतासंयत "	" सासादन " x (आवली ÷ असंख्यात)

पल्लोपम ÷ उपर्युक्त स्व अवहारकाल = अपनी अपनी राशि

ओघ प्रमत्तादि राशि ÷ संख्यात = स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतादि जीवराशि

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीव = देवोंसे कुछ अधिक

देव + पुरुषवेदी मनुष्य + पुरुषवेदी तिर्य्य = पुरुषवेदी जीवराशि

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल = $\frac{\text{देव अवहारकाल } 40, \text{ प्रतरांगुल } 90}{\text{संख्यात } 32, \text{ माना}}$

$$\left(\frac{\text{देव अवहारकाल} \times 33}{32} + \frac{\text{प्रतरांगुल} \times \text{संख्यात}}{32} - 9 \right) = \text{पुरुषवेदी मिथ्या. अवहारकाल}$$

$$\left(\frac{40 \times 33}{32} + \frac{90 \times 8}{32} - 9 \right) = \frac{1320}{32} + \frac{720}{32} - 9 = \frac{2040}{32} - 9 = 63.75 - 9 = 54.75$$

जगत्प्रतर ÷ पुरुषवेदी मिथ्या. अवहारकाल = पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि राशि

पुरुषवेदी असंयत सम्य. अवहारकाल = ओघ असंयत अवहार + ओघ असंयत अवहार
आवली ÷ असंख्यात

1) मिश्र अवहारकाल	= पुरुषवेदी असंयत अवहार x (आवली ÷ असंख्यात)
2) सासादन "	" मिश्र " x संख्यात
3) संयतासंयत "	" सासादन " x (आवली ÷ असंख्यात)

पृ. 498 नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि

$$\frac{\text{सर्व जीवराशि} + (\text{स्त्रीवेदी} + \text{पुरुषवेदी} + \text{अपगतवेदी}) + \text{पूर्वोक्त 3 राशि}^2}{\text{नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि राशि}} =$$

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि ध्रुवराशि

$$\frac{9E + 3 + 3^2}{93} = \frac{20E + 3E + 9}{93} = \frac{24E}{93} = \text{नपुंसकवेदी मिथ्या. ध्रुवराशि}$$

सर्व जीवराशि² ÷ ध्रुवराशि = नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवराशि

$$\frac{24E}{93} \div \frac{24E}{93} = \frac{24E \times 93}{24E} = 93 \text{ नपुंसकवेदी " "}$$

अवहारकालों के नाम

अवहारकाल का प्रमाण

- 1) नपुंसकवेदी असंयत सम्य अवहारकाल = स्त्रीवेदी असंयत अवहार X (आवली ÷ असंख्यात)
- 2) " मित्र अवहारकाल = नपुंसक " " X (" ")
- 3) " सासादन " = " मित्र " X संख्यात
- 4) " संयतासंयत " = " सासादन " X आवली ÷ असंख्यात

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतादि राशि ÷ संख्यात = नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयतादि राशि

स्त्रीवेदी उपब्रामक 90 नपुंसकवेदी उपब्रामक 5
" क्षपक 20 " क्षपक 90

पृ. 829 वेदमार्गविामे भागाभाग

सर्व जीवराशि	अनन्त बहुभागप्रमाण	नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि
शेष एकभाग	" "	अपगतवेदी जीव
" "	संख्यात "	स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीव
" "	असंख्यात "	पुरुषवेदी " "
" "	" "	सर्व असंयत सम्यग्दृष्टि
शेष कथन ओधकत्		

स्वस्थान अल्पबहुत्व

स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी जीवोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व देव मिथ्यादृष्टि स्वस्थान अल्पबहुत्व के समान
सासादन गुणस्थानसे संयतासंयत " " ओध स्वस्थान अल्पबहुत्व के समान

अल्पबहुत्व स्थान	अल्पबहुत्व प्रमाण
१) स्त्रीवेदी उपशामक	स्तोक
२) " क्षपक	संख्यातगुणे
३) " अप्रमत्तसंयत	"
४) " प्रमत्तसंयत	"
५) " असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा
६) " सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	"
७) " सासादन समय. "	संख्यातगुणा
८) " संयतासंयत अवहारकाल	असंख्यातगुणा
९) " " जीव	"
१०) " सासादन समय. जीव	"
११) " सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव	संख्यातगुणा
१२) " असंयत सम्यग्दृष्टि जीव	असंख्यातगुणा
१३) पल्योपम	"
१४) स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	"
१५) " विष्कंभसूयी	" गुणी
१६) जगत्प्रेणी	"
१७) स्त्रीवेदी द्रव्य	" गुणा
१८) जगत्प्रतर	"
१९) लोक	"

इसीप्रकार पुरुषवेद और नपुंसक वेदका अल्पबहुत्व जानना। विशेष इतना है कि नपुंसकवेदियोंमें कहते समय मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणे कहना चाहिये।
सर्व परस्थाने अल्पबहुत्व →

अल्पबहुत्व स्थान	अल्पबहुत्व का प्रमाण
१) नपुंसकवेदी उपशामक	स्तोक
२) " क्षपक	संख्यातगुणे
३) स्त्रीवेदी उपशामक	समान
४) " क्षपक	संख्यातगुणे
५) पुरुषवेदी उपशामक	"
६) " क्षपक	"
७) नपुंसकवेदी अप्रमत्तसंयत	"

नपुंसकवेदी प्रमत्तसंयत जीव	संख्यातगुणे
स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत "	"
" प्रमत्तसंयत "	"
सयोगकेवली "	"
पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयत "	"
" प्रमत्तसंयत "	"
पुरुषवेदी असंयत सम्य. अवलोककाल	असंख्यातगुणा
" सम्यग्मिथ्यादृष्टि "	"
" सासादन सम्य. "	संख्यातगुणा
" संयतासंयत "	असंख्यातगुणा
स्त्रीवेदी असंयत सम्य. "	"
" सम्यग्मिथ्यादृष्टि "	"
" सासादने सम्य. "	संख्यातगुणा
" संयतासंयत "	असंख्यातगुणा
नपुंसकवेदी असंयत सम्य. "	"
" सम्यग्मिथ्यादृष्टि "	"
" सासादन सम्य. "	"
" संयतासंयत "	"
" " द्रव्य	"
पत्न्योपमतक प्रतिलोमक्रमसे	
स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि अवलोककाल	"
पुरुषवेदी " "	संख्यातगुणा
" " विष्कंभसूची	असंख्यातगुणी
स्त्रीवेदी " "	संख्यातगुणी
जगत्प्रेणी	असंख्यातगुणी
पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा
स्त्रीवेदी " "	संख्यातगुणा
जगत्प्रतरे	असंख्यातगुणा
लोक	"
अपगतवेदी	अनन्त गुणे
नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीव	"

कषाय मार्गणा

पृ. 828

क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी मिथ्यादृष्टि से संयत्ता-संयततक जीव सामान्य प्ररूपणाके समान हैं।

तिर्यंच मनुष्योंमें	मानका काल	स्तोक	विशेषअधिकक प्रमाण	माना हुआ
क्रोधका काल		विशेषअधिक	आवली: असंख्यात	४
मायाका	"	"	"	६
लोभका	"	"	"	८
				१०

चारों कषायोंके कालोंका योग $४ + ६ + ८ + १० = २८$

चार कषाययुक्त मिथ्यादृष्टि राशि \times अपना अपना काल = अपनी अपनी राशि
 चारों कषायोंके कालोंका योग

चार कषाययुक्त प्रिराशि = ५६० मानी

$$\frac{५६०}{२८} = २० \times ४ = ८०$$

$$२० \times ६ = १२०$$

$$२० \times ८ = १६०$$

$$२० \times १० = २००$$

$$५६०$$

मानकषायी मिथ्यादृष्टि
 क्रोध " "
 माया " "
 लोभ " "

चार कषायवाली मिथ्यादृष्टि राशिका अवहारकाल

सर्व जीवराशि + (चार कषाययुक्त गुणस्थान प्रतिपन्न + अकषाय) + (पूर्वोक्त २ राशि)^२

$$\frac{१६ + ३ + ३^२}{१३} = \frac{१६ \times १३ + ३ \times ३ + ९}{१३} = \frac{२०८ + ३६ + ९}{१३} = \frac{२५३}{१३}$$

$$\frac{२५३ \times ४}{१३} = \frac{१०१२}{१३}$$

४ कषाय युवराशि $\times ४$ + ४ कषाय युवराशि $\times ४$ = मानकषाय १) युवराशि

$$\frac{१०१२}{१३} + \left(\frac{१०१२}{१३} \div \frac{१६}{२} \right) = \frac{१०१२}{१३} + \frac{१०१२}{१३ \times ८} = \frac{१०१२ \times ८ + १०१२}{१३}$$

४ कषाय युवराशि $\times ४$ + ४ कषाय युवराशि $\times ४$ = क्रोधकषाय ३) युवराशि
 पूर्वसे अधिक भागहार

$$\frac{१०१२}{१३} + \frac{१०१२}{१३}$$

४ कषाय ध्रुवराशि x ४ + ४ कषाय ध्रुवराशि x ४ = माया कषायी ध्रुवराशि
क्रोधसे अधिक भागहार

४ कषाय ध्रुवराशि x ४ = लोभ कषायी ध्रुवराशि
मायासे अधिक भागहार
असंख्यात

सर्वजीवराशि² = उपर्युक्त अपना अवहारकाल = अपनी अपनी राशि

तीनों कषायवाले मिथ्यादृष्टियोंका पृथक् पृथक् प्रमाण = सर्वजीवराशिका कुछ कम चौथा भाग
लोभकषायवाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण = सर्व जीवराशिका कुछ अधिक चौथा भाग

गुणस्थान प्रतिपन्न^{जीवोंमें} अर्थात् 2, 3, ४ गुणस्थानवर्ती जीवोंमें देवराशि प्रधान है
क्योंकि शेष तीन गतियोंकी गुणस्थान प्रतिपन्न जीवराशि गुणस्थान प्रतिपन्न देवराशि
के असंख्यातवे भाग है।

गुणस्थान^{प्रतिपन्न} देवराशि = शेष तीन गतियोंकी गुणस्थान प्रतिपन्न जीवराशि
असंख्यात

देवोंमें क्रोध का काल सबसे लोक	क्रोधसंख्यातसे
मान का काल = क्रोधकाल x संख्यात	2 x 2 = 4
माया का काल = मानकाल x संख्यात	4 x 2 = 8
लोभ का काल = मायाकाल x संख्यात	8 x 2 = 16
	चारों कालोंका योग
	30

देवोंमें कु असंयत सम्यदृष्टि जीवराशि 300 मानी

देव असंयत राशि = लब्ध
उपर्युक्त कषाय कालोंका योग = लब्ध
उपर्युक्त लब्धको अपने क्रोधादिकके कालोंसे गुणित करनेपर अपनी अपनी राशियां होती हैं।

$$\frac{300}{30} = 90$$

क्रोध कषाय काल $2 \times 90 = 20$ क्रोध कषाय युक्त राशि

मान कषाय काल $4 \times 90 = 40$ मान " "

माया " " $2 \times 90 = 20$ माया " "

लोभ " " $9 \times 90 = 90$ लोभ " "

नारकीयोम लोभ का काल सबसे कम, माया का काल = लोभ काल \times संख्यात,
मान का काल = माया काल \times संख्यात, क्रोध काल = मान काल \times संख्यात.

संयता संयतों का प्रमाण लाते समय लिये गति संबंधी कषायों के काल का योग करके और उससे ओष संयता संयत राशियों को खंडित करके जो लब्ध आवे उसकी चार प्रतिराशियाँ करके क्रमसे क्रोधादिक के कालों से गुणित करने पर अपनी अपनी राशियाँ होती हैं।

पूर्वोक्त राशियों के अवहार काल की उत्पत्ति \rightarrow

ओष असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार काल + ओष असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार काल

संख्यात

= लोभ कषाय युक्त असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार काल

लोभ कषाय युक्त असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार काल \times संख्यात = माया कषाय युक्त असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार काल

माया कषाय युक्त " " \times " = मान कषाय युक्त असंयत अवहार काल

मान कषाय युक्त " " \times " = क्रोध कषाय युक्त असंयत अवहार काल

इसी प्रकार सम्यग्दृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टियों का भी कथन करना चाहिये।

ओष संयता संयत अवहार काल $\times 4$, इसकी चार प्रतिराशी करके

1) संयता संयत अवहार काल $\times 4 + \frac{\text{संयता संयत अवहार} \times 4}{\text{असंख्यात}} = \text{मान कषायी संयता संयत अवहार काल}$

2) " " $\times 4 + \frac{\text{संयता संयत अवहार} \times 4}{\text{पूर्व से अधिक असंख्यात}} = \text{क्रोध कषायी संयता संयत अवहार काल}$

ओध संयतासंयत अवहार x ४ + संयतासंयत अवहार x ४ = मायाकषायी संयतासंयत अवहारकाल
 कोध कषाय से अधिक असंख्यात

ओध संयतासंयत अवहार x ४ - संयतासंयत अवहार x ४ = लोभकषायी संयतासंयत अवहारकाल

प्रमत्त संयत गुणस्थान से अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक चारों कषायवाले जीव द्रव्य प्रमाण की अपेक्षा → संख्यात

प्रमत्तसंयत राशि × कोध कषाय काल = प्रमत्तसंयत कोधकषायी जीव चार कषायों का काल का जोड़

इसी प्रकार अपने अपने काल से जुगित करने पर अपनी अपनी राशियाँ होती हैं।

अथवा अन्य प्रकार से विधान का कथन करते हैं -

प्रमत्त राशि संख्यात = एकभाग को अलग करके शेष बहुभाग के समान चार खंड करना. जैसे प्रमत्तराशि 2400 मानी, संख्यात 5 मन्वा

$\frac{2400}{5} = 480$	एकभागी 400 अलग रखने दुये	बहुभाग 2000	$\frac{2000}{5} = 400$	एकभागी 400
लोभी	मायावी	क्रोध	मान	कषायवाले
480	400	400	400	400
800	100	96	8	700
<u>500</u>	<u>500</u>	<u>596</u>	<u>508</u>	

शेष एकभाग 900, उसका बहुभाग दूसरे पुंज में देना $\frac{900}{5} = 20$ एकभाग 10 बहुभाग

शेष एकभाग 20, उसका बहुभाग तिसरे पुंज में देना $\frac{20}{5} = 4$ एकभाग 96 बहुभाग

शेष एकभाग 4, चौथे पुंज में देना, यही क्रम से लोभ, माया, क्रोध, मान कषायवालों का प्रमाण जानना.

लोभ कषायी जीवों में सूक्ष्मसांपराधिक शुद्धिसंयत उपद्रामक और क्षपक → ओधके समान कषायरहित जीवों में उपशान्त कषाय, क्षीणकषाय, सयोग केवली, अयोगकेवली ओध के समान हैं।

कषाय मार्ग में भागाभाग

सर्वजीवराशि का अनन्त बहुभाग एक भाग प्रमाण चार कषाय मिथ्याहृष्टि जीवराशि अकषायी और सासादनादि गुणस्थान वर्ती

चार कषाय मिथ्याहृष्टि राशि में भागाभाग → बहुभागे समभागो' निधान के अनुसार

चार कषाय मिथ्याहृष्टि राशि - एकभाग प्रत्येक रखना आवली- असंख्यात शेष बहुभागे के समान खंड करके ४ जगह रखना शेष बहुभाग शेष एकभाग के बहुभाग बहुभाग निकालकर ४ से देने पर

लोभ कषाय राशि	माया कषायी	क्रोध कषायी	मान कषायी
बहुभाग ÷ ४	बहुभाग ÷ ४	बहुभाग ÷ ४	बहुभाग ÷ ४
+ एकभाग का बहुभाग	+ शेष एकभाग का बहुभाग	+ शेष एकभाग का बहुभाग	+ शेष एकभाग

अंकसंदृष्टीसे प्रमत्तसंघत में जैसा बताया है वैसा समझना।

अकषाय और गुणस्थान प्रतिपन्ना राशि का	अनन्त बहुभाग संख्यात बहुभाग	अकषाय जीव
शेष एकभाग का		लोभकषाय असंघतसम्य. राशि
" " "	" "	माया " " "
" " "	" "	मान " " "
" " "	" "	क्रोध " " "
" " "	" "	लोभकषाय सम्यमिथ्याहृष्टि
" " "	" "	मायाकषाय " "
" " "	" "	मानकषाय " "
" " "	" "	क्रोधकषाय " "
" " "	" "	लोभकषाय सासादनसम्यहृष्टि
" " "	" "	मायाकषाय " "
" " "	" "	मानकषाय " "
" " "	" "	क्रोधकषाय " "
" " "	" "	असंख्यात बहुभाग चार कषाय संघतासंघत

संयत्तासंयत राशि के भी चार विभाग 'बहुभागे समभागो' के विधानानुसार करना। उनमें लोभी, माया, क्रोध, मान ऐसा क्रम जानना।

मनुष्य और तिर्यचों में लोभी, माया, क्रोधी, मानी क्रम से कम, कम जानना इसलिए मिथ्यादृष्टि का विभाग करते समय यह क्रम कहा है क्योंकि मिथ्यादृष्टि राशि में अनंत जीव तिर्यचि है शेष जीव असंख्यात ही हैं। चौथे, तिसरे व दूसरे गुणस्थान में देवों की मुख्यता है, इसलिए उनका विभाग करते समय लोभी, मायावी, मानी, क्रोधी क्रम से कम करते हैं।

पांचवे गुणस्थान में तिर्यचों की मुख्यता है, छठे आदि गुणस्थानों में मनुष्य ही होते हैं इसलिए लोभी, मायावी, क्रोधी, मानी यह क्रम बताया है।

अल्पबहुत्व →

मिथ्यादृष्टि का स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं है क्योंकि जहाँपर अवहारकाल छोटा और द्रव्य का प्रमाण बड़ा होता है वहाँ स्वस्थान अल्पबहुत्व नहीं कहते हैं।

असंयत सम्प्रकृष्टि से संयत्तासंयत तक स्वस्थान अल्पबहुत्व ओष के समान

परस्थान अल्पबहुत्व → क्रोधकषाय जीवों में परस्थान अल्पबहुत्व जीव

जीव	अल्पबहुत्व
क्रोधकषायी उपशामक	सब से स्तोक
" क्षपक	संख्यातगुणे
" अप्रमत्तसंयत	संख्यातगुणे
" प्रमत्तसंयत	"
" असंयतसम्प्रकृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा

पत्योपम तक
क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि अनंतगुणे

इसी प्रकार मान, माया और लोभकषाय के परस्थान अल्पबहुत्व जानना।

कषाय रहित जीवों में अल्पबहुत्व

जीव	अल्पबहुत्व
उपशान्त कषाय जीव	सब से कम
क्षीणकषाय जीव	संख्यातगुणे
अयोग केवली	उतमे ही
सयोग केवली	संख्यातगुणे
सिद्ध जीव	अमन्तगुणे

सर्व परस्थान अल्पबहुत्व

मान कषायी उपशान्त	सब से कम
क्रोध " "	विशेष अधिक
माया " "	" "
लोभ " "	" "
मान कषायी क्षपक	" "
क्रोध कषायी क्षपक	" "
माया " "	" "
लोभ " "	" "
कषायरहित संसारी जीव	संख्यातगुणे
मान कषायी अप्रमत्तसंयत	"
क्रोध " "	विशेष अधिक
माया " "	"
लोभ " "	"
मान कषायी प्रमत्तसंयत	"
क्रोध " "	"
माया " "	"
लोभ " "	"
लोभ कषायी असंयत सम्यग्दृष्टि अवलर	असंख्यातगुणा
माया " " " "	संख्यातगुणा
मान " " " "	"
क्रोध " " " "	"
लोभ कषायी सम्यग्दृष्टि	असंख्यातगुणा
माया " " " "	संख्यातगुणा
मान " " " "	संख्यातगुणा

क्रोधकषायी	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	अवहारकाल	संख्यातगुणा
लोभकषायी	सासादन	अवहारकाल	"
माया "	"	"	"
मान	"	"	"
क्रोध	"	"	"
लोभकषाय	संयतासंयत	अवहारकाल	असंख्यातगुणा
मायाकषाय	"	"	विशेष अधिक
क्रोधकषाय	"	"	"
मानकषाय	"	"	"
मानकषाय	संयतासंयत	अवहारकाल	असंख्यातगुणा
अवहारकाल के उल्टे क्रम से देख लेना			"
पत्न्योपम			असंख्यातगुणा
कषायरहित जीव			अनन्तरुणे
मानकषायी	मिथ्यादृष्टि		"
क्रोधकषायी	"		विशेष अधिक
मायाकषायी	"		"
लोभकषायी	"		"

ज्ञानमार्गिणा

मत्स्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि → सामान्य गुणस्थान के समान

मत्स्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवराशि का प्रकराशि →

सर्व जीवराशि + सिद्ध, तेरह गुणस्थान राशि + सिद्ध, तेरह गुणस्थान राशि
 मत्स्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि राशि

विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव = देवराशि + नारक मिथ्यादृष्टि + तिर्यच विभंगज्ञानी
 तिर्यच विभंगज्ञानी जीवों का प्रमाण = $\frac{\text{जगत्प्रतर}}{\text{असंख्यात}} = \text{असंख्यात जगत्प्रेणी प्रमाण}$

असंख्यात का प्रमाण असंख्यात घनांगुल
 असंख्यात घनांगुल अर्थात् पत्न्योपम घनांगुल

विभंगज्ञानी जीव प्रमाण उदा.

देव मिथ्यादृष्टि राशि - अपर्णास मिथ्यादृष्टि देवराशि + (नारक विभंगज्ञानी, तिर्यच विभंगज्ञानी)
 $90,000 - 2000 (200 + 40) = 2000 + 240 = 2240$

अपर्णास अवस्था में विभंगज्ञान उत्पन्न नहीं होता अतः देव मिथ्यादृष्टि राशि में से अपर्णास जीवों का प्रमाण घटाने पर विभंगज्ञानी देवों का प्रमाण आता है।

और त्रिचि विभंगजानियों का प्रमाण मिलाना है वह कम है और अपचति देव धराने है वे उनसे असंख्यात गुणे हैं अतः देवों से साधिक विभंगजानियों का प्रमाण नहीं होता ऐसी शंका नहीं करना क्योंकि यहांपर विभंगजानी देवों से साधिक, ऐसा ग्रहण करना चाहिए।
दुसरा प्रमाण यह है कि वैक्रियिक मिश्रणों सान्तर होने के कारण देव अपचति जीव सर्वदा नहीं होते तब विभंगजानियों का प्रमाण देवों से साधिक होता है।

$$\text{देव मिथ्याहृष्टि अवहारकाल} - \text{प्रतरांगुल} + \left(\frac{\text{प्रतरांगुल} \times \text{असंख्यात}}{\text{असंख्यात}} - 9 \right) =$$

विभंगजानी मिथ्याहृष्टि अवहारकाल

$$\text{जगत्प्रतर} \div \text{उपयुक्त अवहारकाल} = \text{विभंगजानी मिथ्याहृष्टि जीवराशि}$$

विभंगजानी सासादनसम्यहृष्टि → ओध के समान पत्योपमः असंख्यात आभिनिबोधिक, शानी, श्रुतजानी, अविधिलानी असंयतसम्यहृष्टि गुणस्थान से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव → ओध के समान है।

अवहारकालों की उत्पत्ति →

ओध असंयतसम्यहृष्टि अवहारकाल = भतिज्ञानी, श्रुतजानी जीवों का अवहारकाल

$$\text{भतिश्रुतजानी असंयत अवहारकाल} + \text{भतिश्रुतजानी असंयत अवहारकाल} = \text{अविधिलानी असंयत आवली} \div \text{असंख्यात अवहारकाल}$$

$$\text{अविधिलानी असंयत अवहारकाल} \times \text{आवली} \div \text{असंख्यात} = \text{मिश्रदो ज्ञानी सम्यमिथ्याहृष्टि अवहारकाल}$$

$$\text{मिश्रदो ज्ञानी सम्यमिथ्याहृष्टि अवहारकाल} + \text{मिश्रदो ज्ञानी सम्यमिथ्याहृष्टि अवहारकाल} = \text{तीन ज्ञानवाले आवली} \div \text{असंख्यात सम्यमिथ्याहृष्टि अवहारकाल}$$

$$\text{तीन ज्ञानवाले सम्यमिथ्याहृष्टि अवहारकाल} \times \text{असंख्यात} = \text{मत्यज्ञानी, श्रुतज्ञानी}$$

सासादन सम्यहृष्टियों का अवहारकाल

$$\text{दो अज्ञानी सासादन अवहारकाल} + \text{दो अज्ञानी सासादन अवहारकाल} = \text{विभंगजानी सासादन सम्यहृष्टि अवहारकाल} \div \text{आवली} \div \text{असंख्यात}$$

$$\text{विभंगजानी सासादन सम्यहृष्टि अवहारकाल} \times \text{आवली} \div \text{असंख्यात} = \text{आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी संयतासंयत अवहारकाल}$$

$$\text{भतिश्रुतज्ञानी संयतासंयत अवहारकाल} \times \text{आवली} \div \text{असंख्यात} = \text{अविधिलानी संयतासंयत अवहारकाल}$$

अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयत से क्षीयकषाय तक जीव → संख्यात
 मनःपर्ययज्ञानी " " " " → " "
 " उपब्रामक → 90
 " शेषक → 20
 केवलज्ञानी अयोगकेवली, अयोगकेवली → ओष के समान

भागभाग

सर्व जीवराशि के	अनंत बहुभाग	मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी मिथ्याहृष्टि
शेष एकभाग के	अनंत बहुभाग	केवलज्ञानी
शेष एकभाग के	असंख्यात बहुभाग	विभंगज्ञानी मिथ्याहृष्टि
" "	" "	मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी असंयत सम्यग्दृष्टि

प्रतिश्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि - मतिश्रुतज्ञानी असंयत = अवधिज्ञानी असंयत
 आवली ÷ असंख्यात सम्यग्दृष्टि जीव

शेष एकभाग संख्यात मिश्र दोज्ञानी सम्यग्मिथ्याहृष्टि

मिश्र दो ज्ञानी सम्यग्मिथ्याहृष्टि - मिश्र दोज्ञानी सम्यग्मिथ्याहृष्टि = मिश्र तीन ज्ञानी
 आवली ÷ असंख्यात सम्यग्मिथ्याहृष्टि

शेष एकभाग असंख्यात बहुभाग मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी सासादन सम्यग्दृष्टि
मत्यज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि - मत्यज्ञानी श्रुतज्ञानी सासादन = विभंगज्ञानी सासादन
 श्रुताज्ञानी आवली ÷ असंख्यात सम्यग्दृष्टि जीव

शेष एकभाग के असंख्यात बहुभाग आभिनिबोधिक श्रुतज्ञानी संयत
 शेष एकभाग के असंख्यात बहुभाग अवधिज्ञानी संयतसंयत
 अथवा

सर्व जीवराशि के अनन्त बहुभाग मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी मिथ्याहृष्टि
 शेष एकभाग के " " केवलज्ञानी

" " असंख्यात बहुभाग विभंगज्ञानी मिथ्याहृष्टि

" " " " तीन ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि

" " संख्यात " तीन मिश्रज्ञानवाले सम्यग्मिथ्याहृष्टि

" " असंख्यात बहुभाग तीन अज्ञानवाले सासादन सम्यग्दृष्टि

" " असंख्यात " दो ज्ञानवाले असंयतसम्यग्दृष्टि

" " संख्यात बहुभाग दो मिश्रज्ञानी सम्यग्मिथ्याहृष्टि

इसी प्रकार अवधिज्ञानी गोंका परस्थान अल्पवहुल जानना

मनःपर्ययज्ञानी उपशामक	सब से स्तोक
" क्षपक	संख्यातगुणे
" अप्रमत्तसंयत	"
" प्रमत्तसंयत	"

केवलज्ञानी संयोगकेवली	सब से स्तोक	
" अयोगकेवली	अनन्तगुणे	१० गों गुणस्थान + सिद्ध गणि

सर्व परस्थान अल्पवहुल

मनःपर्ययज्ञानी उपशामक	सब से स्तोक	दश
अवधिज्ञानी उपशामक	विशेष अधिक	
मनःपर्ययज्ञानी क्षपक	" "	बीस
अवधिज्ञानी क्षपक	" "	अड़ईस
मनःपर्ययज्ञानी अप्रमत्तसंयत	संख्यातगुणे	
अवधिज्ञानी "	विशेष अधिक	
मनःपर्ययज्ञानी प्रमत्तसंयत	" "	
अवधिज्ञानी प्रमत्तसंयत	" "	
दो ज्ञानी असंयतसम्ब अवहारकाल	असंख्यातगुणा	
तीन ज्ञानवाले " "	विशेष अधिक	
दो ज्ञानवाले साक्षात्प्रियादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	
तीन " " "	विशेष अधिक	
दो " सासादेन " "	संख्यातगुणा	
तीन " " "	विशेष अधिक	
दो " संयतासंयत " "	असंख्यातगुणा	
तीन " " "		
" " " द्रव्य	असंख्यातगुणा	
अवहारकाल के प्रतिलोमक्रम से पत्योपमतक		
पत्योपम	असंख्यातगुणा	
विभंगज्ञानी प्रियादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	

विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि विष्वक्मसूची	असंख्यातगुणी
जगत्प्रेणी	"
विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा
जगत्प्रतर	"
लोक	"
केवलज्ञानी	अनन्तगुणे
मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव	अनन्तगुणे

पृ. 831-832

संयम मार्गणा

भाग्यभाग →		
सर्व जीवराशि के	अनन्त बहुभाग	मिथ्यादृष्टि जीव
दोष एकभाग के	" "	शिद्ध जीव
" "	असंख्यात बहुभाग	असंयत साम्यदृष्टि
" "	संख्यात "	सम्यग्मिथ्यादृष्टि
" "	असंख्यात "	सामादनसम्यग्दृष्टि
" "	" "	संयतसंयत
" "	संख्यात बहुभाग	सामायिक छेदोपस्थापनशुद्धिसंयत
" "	" "	यथाख्यात शुद्धिसंयत
" "	" "	परिवारविशुद्धि संयत
दोष एकभाग		सूक्ष्मसांपरायिकशुद्धिसंयत

परस्थान अल्पबहुत्व

सामायिक छेदो. शुद्धिसंयत उपशामक	सब से स्तोक
" " " " " " " "	संख्यातगुणे
अप्रमत्तसंयत	"
प्रमत्तसंयत	"
परिवारविशुद्धि अप्रमत्तसंयत	सब से स्तोक
" " " " " " " "	संख्यातगुणे
सूक्ष्मसांपरायिक शुद्धिसंयत उपशामक	सब से कम
" " " " " " " "	संख्यातगुणे

यद्यथाव्याल संयतो मे उपज्ञामक	सब से थोड़े
क्षपक	संख्यातगुणे
स्योगकेवली	”

असंयतो मे असंख्यतसम्य अवहारकाल	सब से स्तोक
” सम्यग्मिथ्यादृष्टि ”	असंख्यातगुणा
सासादमसम्यग्दृष्टि अवहार	संख्यातगुणा
” इव्य	असंख्यातगुणा
पल्योपमतक ले नाना पल्योपम	”
मिथ्यादृष्टि जीव	अनन्तगुणे

सर्वपरस्थान अल्पबहुत्व

1) सूक्ष्मसांप्रसारिक शुद्धिसंयत	सब से स्तोक
परिहारविशुद्धि संयत	संख्यातगुणे
यथाख्यात शुद्धिसंयत	संख्यातगुणे
सामायिक छेदोपस्थापनसंयत	”
असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा
पल्योपमतक परस्थान अल्पबहुत्व के समान	
मिथ्यादृष्टि जीव	अनन्तगुणे

पृ. 843

दर्शन मार्ग

- 1) चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवों का प्रमाण → असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अक्सर्पिणी क्षेत्र की अपेक्षा → जगत्प्रतर ÷ (सूक्ष्मगुण + संख्यात) अथवा प्रतरांगुल का संख्यातयं चक्षुदर्शनी जीवों के प्रमाण में चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों का प्रमाण लेना।
- 2) चक्षुदर्शनी सासादन से क्षीणकषायतक जीवों का प्रमाण ओष के समान
अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि से क्षीणकषायतक प्रत्येक गुणस्थान में जीव ओष के समान
” ” ध्रुवराशि भी सामान्य मिथ्यादृष्टि के ध्रुवराशि के समान
अवधिदर्शनी अवाधिशानी के समान, केवलदर्शनी केवलज्ञानी के समान

उत्तरज्ञान की उत्पत्ति के निमित्तभूत प्रयत्नविशिष्ट स्वसंवेदन को दर्शन कहते हैं।
अवहारकाल का कथन

अचक्षुदर्शनी, चक्षुदर्शनी असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल = ओष असंयत सम्यग्दृष्टि अवहारकाल
अवधिदर्शनी असंयत अवहारकाल = चक्षुदर्शनी असंयत अवहारकाल + चक्षुदर्शनी असंयत अवहारकाल
आवली ÷ असंख्यात

चक्षुदर्शनी, अचक्षुदर्शनी सम्याभिध्याहृष्टि अवहार = अवधिदर्शनी असंयत संय. अवहारकाल
 " " सासादन अवहारकाल = सम्याभिध्याहृष्टि अवहार × संख्यात
 " " संयतासंयत " = सासादन अवहार × आवली असंख्यात
 " " अवधिदर्शनी " = चक्षुदर्शनी संयतासंयत अवहार × आवली असंख्यात

भागभाग

सर्व जीवराशि के	अनंत बहुभाग	अचक्षुदर्शनी मिथ्याहृष्टि
शेष एकभाग के	अनंत बहुभाग	केवलदर्शनी जीव
" "	असंख्यात बहुभाग	चक्षुदर्शनी मिथ्याहृष्टि
" "	" "	" अचक्षुदर्शनी असंयत सम्याहृष्टि
" "	संख्यात बहुभाग	" " सम्याभिध्याहृष्टि
" "	असंख्यात "	" " सासादन सम्याहृष्टि
" "	" "	" " संयतासंयत
" "	" "	अवधिदर्शनी संयतासंयत

स्वस्थाने अल्पबहुत्व

चक्षुदर्शनी मिथ्याहृष्टियों का स्वस्थान अल्पबहुत्व त्रसपर्याप्त मिथ्याहृष्टि के समान
 सासादन सम्याहृष्टि आदिका " " गुणस्थान के समान

परस्थाने अल्पबहुत्व - अचक्षुदर्शनीयों में

उपशामक जीव	सब से स्तेक	
क्षपक जीव	संख्यातगुणे	
अप्रमत्तसंयत	"	
प्रमत्तसंयत	"	
पल्योपमत्तक	असंख्यातगुणे	पंचेन्द्रियों के परस्थान अल्पबहुत्व के समान
मिथ्याहृष्टि जीव	अनन्तगुणे	

इसी प्रकार चक्षुदर्शनीयों का परस्थान अल्पबहुत्व जानना।

विशेष → पल्योपम से चक्षुदर्शनी मिथ्याहृष्टि असंख्यातगुणे है।

अवधिदर्शनीयों का अल्पबहुत्व अवधिदर्शनीयों के समान

केवल " " केवल " "

सर्वपरस्थान अल्पबुद्धत्व

जीव

1) अवधिदर्शनी उपशामक	सक से रत्नोक
" " क्षपक	संख्यातगुणे
चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी उपशामक	"
" " क्षपक	"
अवधिदर्शनी अप्रमत्तसंयत	"
" " प्रमत्तसंयत	"
दो दर्शनी अप्रमत्तसंयत	"
" " प्रमत्तसंयत	"
दो दर्शनी असंयत सम्यग्दृष्टि अवहार	असंख्यातगुणा
तीन " " " "	विशेष अधिक
दो दर्शनी भावमिथ्यादृष्टि	असंख्यात गुणा
" " सासादन	संख्यातगुणा
दो " संयतासंयत	असंख्यातगुणा
तीन " " "	"
" " " द्रव्य	"
अवहारकाल के प्रतिलोम क्रम से द्रव्य जानना	"
प्रत्योपम	"
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	"
" " विषकंधसूची	"
जगत्स्रेणी	"
चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि द्रव्य	"
जगत्प्रतर	"
लोक	"
केवलदर्शनी	अनन्तगुणे
अचक्षुदर्शनी	अनन्तगुणे

भाग से भाग लेकर वहाँ जो बहुभाग जाता है उसे प्रथम खंड मिलाने पर कृष्णलेश्या वाले जीवों का प्रमाण होता है। शेष एकभाग का बहुभाग। दूसरे पुंज में मिलाने पर नीललेश्यायुक्त जीव, शेष एकभाग तिसरे पुंज में मिलाने पर कापोतलेश्यायुक्त जीवों का प्रमाण होता है।

कापोतलेश्यायुक्त राशि का भागांश

कापोतलेश्यायुक्त राशिका	अनन्त बहुभाग	मिथ्याहृष्टि
शेष एक अनन्त भाग का	असंख्यात "	असंयत सम्यग्दृष्टि
शेष एक भाग के	संख्यात "	सम्यग्मिथ्याहृष्टि
" " प्रमाण	" "	सासादनसम्यग्दृष्टि

इसी प्रकार नील और कापोतलेश्यावालों का भागांश जानना।

तेजोलेश्यावाली जीवराशि का	असंख्यात बहुभाग	मिथ्याहृष्टि जीवराशि
शेष एक असंख्यात के भाग का	" "	असंयत सम्यग्दृष्टि जीव
" " " "	संख्यात "	सम्यग्मिथ्याहृष्टि
" " " "	असंख्यात "	सासादनसम्यग्दृष्टि
" " " "	" "	संयतासंयत जीव
शेष एक भागप्रमाण	" "	प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत

इसी प्रकार पद्मलेश्यावालों का भागांश जानना

शुक्ललेश्यावाली जीवराशि का	संख्यात बहुभाग	असंयत सम्यग्दृष्टि
शेष एक भाग का	असंख्यात "	मिथ्याहृष्टि
" " "	संख्यात "	सम्यग्मिथ्याहृष्टि
" " "	असंख्यात "	सासादन
" " "	" "	संयतासंयत
शेष एक भागप्रमाण	" "	प्रमत्तसंयतादि

स्वस्थान उत्पन्नबहुत्व →

तेजोलेश्यक मिथ्याहृष्टि अवहारकाल	सब से स्तोक
" " विष्कंभसूत्री	असंख्यातगुणी
जगत्प्रेणी	"
तेजोलेश्यक मिथ्याहृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा
जगत्प्रतर, लोक	"

परस्थान में अल्पबहुत्व → कापोतलेश्या में

कापोतलेश्यक	असंयतसम्यग्दृष्टि अवहारकाल	सब से स्तोक	आवृत्ति-असंख्यात
"	सम्यग्मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	असंख्यातगुणा	अंतर्मुहूर्त
"	सासादनसम्यग्	"	"
"	" द्रव्य	संख्यातगुणा	"
३	"	असंख्यातगुणा	पल्योपम-असंख्यात
"	सम्यग्मिथ्यादृष्टि द्रव्य	संख्यातगुणा	"
"	असंयतसम्यग्दृष्टि द्रव्य	असंख्यातगुणा	"
पल्योपम		"	"
कापोतलेश्यक	मिथ्यादृष्टि द्रव्य	अनन्तगुणा	कुछ कम संयुक्तजीव

इसी प्रकार नील और कुष्णलेश्यक जीवों का परस्थान अल्पबहुत्व जानना

तेजोलेश्यक	अप्रमत्तसंयत	सब से स्तोक	
"	प्रमत्तसंयत	संख्यातगुणे	
"	असंयतसम्यग् अवहारकाल	असंख्यातगुणा	अन्तर्मुहूर्त
"	सम्यग्मिथ्यादृष्टि	"	"
"	सासादनसम्यग्	संख्यातगुणा	"
"	संयतासंयत	असंख्यातगुणा	"
"	" द्रव्य	"	"

इसी प्रकार पल्योपम तक जानना

तेजोलेश्यक	मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	"	संख्यात प्रतरंगुत
------------	-----------------------	---	-------------------

इसके ऊपर स्वस्थान अल्पबहुत्व के समान

इसी प्रकार पद्मलेश्या में परस्थान अल्पबहुत्व जानना

शुक्ललेश्या में चारों	उपशामक	सब से स्तोक	
"	" क्षापक	असंख्यातगुणे	
"	" संयोगकेवली	"	
"	अप्रमत्तसंयत	"	
"	प्रमत्तसंयत	"	
"	असंयतसम्यग् अवहारकाल	असंख्यातगुणा	अंतर्मुहूर्त
"	मिथ्यादृष्टि अवहारकाल	संख्यातगुणा	"

शुक्ललेस्यामे	साम्याग्निध्याहुष्टि	अवहारकाल	असंख्यातगुणा
"	सासादनसम्य	"	संख्यातगुणा
"	असंयतासंयत	"	असंख्यातगुणा
"	द्रव्य	"	असंख्यातगुणा
अवहारकाल	के प्रतिलोमक्रमसे द्रव्य जानना	"	"
पत्न्योपम	"	"	"
सर्व परस्थान	अल्पवहुत्व	"	"
चारो	उपशामक	सर्व से स्तोत्र	"
	क्षपक	संख्यातगुणो	"
	सयोगकेवली	"	"
शुक्ललेश्यक	अप्रमत्तसंयत	"	"
"	प्रमत्तसंयत	"	"
पद्मलेश्यक	अप्रमत्तसंयत	"	"
"	प्रमत्तसंयत	"	"
तेजोलेश्यक	अप्रमत्तसंयत	"	"
"	प्रमत्तसंयत	"	"
"	असंयतसम्यग्दृष्टि	अवहारकाल	असंख्यातगुणा
"	साम्याग्निध्याहुष्टि	"	"
"	सासादन सम्य	"	संख्यातगुणा
पद्मलेश्यक	असंयतसम्यग्दृष्टि	"	असंख्यातगुणा
"	साम्याग्निध्याहुष्टि	"	"
"	सासादन	"	संख्यातगुणा
कापोतलेश्यक	असंयतसम्य	"	असंख्यातगुणा
कृष्णलेश्यक	असंयतसम्य	"	असंख्यातगुणा
नीललेश्यक	"	"	विशेष अधिक
कापोतलेश्यक	साम्याग्निध्याहुष्टि	"	असंख्यातगुणा
"	सासादनसम्य	"	संख्यातगुणा
हृष्णलेश्यक	साम्याग्निध्याहुष्टि	"	असंख्यातगुणा
नीललेश्यक	"	"	विशेष अधिक
हृष्णलेश्यक	सासादनसम्य	"	संख्यातगुणा

नीललेश्यक	सासादन सम्य	अवहारकाल	विशेष अधिक
तेजोलेश्यक	संयतासंयत	"	असंख्यातगुणा
पद्मलेश्यक	"	"	संख्यातगुणा
शुक्ललेश्यक	असंयतसम्यदृष्टि	"	असंख्यातगुणा
"	मिथ्यादृष्टि	"	संख्यातगुणा
"	सम्यमिथ्यादृष्टि	"	असंख्यातगुणा
"	सासादनसम्य	"	संख्यातगुणा
"	संयतासंयत	"	असंख्यातगुणा
"	"	द्रव्य	"

अवहारकाल के उलटक्रम से सभी का द्रव्य

पल्योपम			"	
तेजोलेश्यक	मिथ्यादृष्टि	अवहारकाल	असंख्यातगुणा	संख्यात प्रतरांगुल
पद्मलेश्यक	"	"	संख्यातगुणा	" "
"	"	विष्कंभसूची	असंख्यातगुणी	असंख्यात घनांगुल
तेजोलेश्यक	"	"	संख्यातगुणी	" "
जगत्प्रणी			असंख्यातगुणी	
पद्मलेश्यक	मिथ्यादृष्टि	द्रव्य	असंख्यातगुणा	जगत्प्रतर = संख्यात प्रतरांगुल
तेजोलेश्यक	"	"	संख्यातगुणा	"
जगत्प्रतर			असंख्यातगुणा	
लोक			"	
लेश्यारहित जीव			अनन्तगुणे	
कापोतलेश्यक	मिथ्यादृष्टि	जीव	"	
नीललेश्यक	"	"	विशेष अधिक	
कुष्ठलेश्यक	"	"	विशेष अधिक	

पृ. 862

भव्यमार्गणा

भव्यसिद्धियों में मिथ्यादृष्टि से अयोगकेवोलितक प्रत्येक गुणस्थान में जीव ओष के समान

अभव्यसिद्धिक जीव - जघन्य युक्तानन्तप्रमाण

भागभाग

सर्व जीवराशि के	अनन्त बहुभाग	भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि
शेष एकभाग के	अनन्त बहुभाग	भव्य अभव्य विकल्पपरित
शेष एकभाग के	अनन्त बहुभाग	अभव्यसिद्धिक जीव
शेष "	असंख्यात "	असंयतसम्यदृष्टि